कामरत्नम् ।

भाषाटीकासमलंकृतम् ।

श्रीः ।

कामरत्नम् ।

योगेश्वरश्रीयुतगौरीपुत्रनित्यनाथविरचितम् ।

मुरादाबादनिवासीश्रीयुतपण्डितज्वालाप्रसादमिश्रकृत-
भाषाटीकासमलंकृतम् ।

तच्च

खेमराज श्रीकृष्णदास इत्यनेन

मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणयन्त्रालये

मुद्रयित्वाप्रकाशितम् ।

शके १८२१, संवत १९५६.

प्रस्तावना ।

उस सर्व्व शक्तिमान् परब्रह्म परमात्माको कोटिशः धन्यवादहै जिसने इस असार संसार सागरमें नाना विद्वान् पुरुष रत्न उत्पन्न किये हैं जिन्होंने लौकिक जीवोंके उपकारार्थ व्याकरण, वैद्यक, ज्योतिषादि अनेक विषयके ग्रंथ निर्माण कियेहैं–

उन्हीं महाशयोंकी गणनामें यह एक श्रीयुत योगेश्वर गौरीपुत्र नित्यनाथजी भीहैं जिन्होंने परमअद्भुत यह "कामरत्न" ग्रंथ निर्मित कियाहै वास्तवमें लोकोपकार हित यह ग्रंथ तो अद्वितीयही है । संसारमें यावत् आवश्यकीय प्रयोग मारण, मोहन, उच्चाटन, विद्वेषण, वशीकरण स्तंभनादिकहैं सबकी विधि सविस्तर इसमें लिखीहै इसके सिवाय सर्व व्याधि निवारण चिकित्सा और यंत्र मंत्र तंत्रादि सब पदार्थोंसहित कल्पवृक्ष इव अभीष्टदायकहै अब और विशेष हम क्या प्रशंसा करैं अवलोकनसे सब वृत्त ज्ञात होगा.

यह परमोपयोगी ग्रंथ हमको श्री त्रिविक्रम मिश्र स्टूडेण्ट मेडिकल कालिज आगरा द्वारा प्राप्त हुआहै, हमने पं० श्री ज्वालाप्रसाद जी मिश्र द्वारा इसका सरल भाषानुवाद कराय निज "श्रीवेंकटेश्वर" यन्त्रालयमें मुद्रितकर प्रकाशितकिया है–आशाहै कि, पाठक गण उक्त हमारे–हितैषियोंको धन्यवाद देतेहुए हमारे परिश्रमको सफल करेंगे ।

आप सज्जनोंका कृपापात्र–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष–बंबई.

भूमिका ।

भारतवर्ष की विद्याओंमें तंत्र शास्त्रभी एक अनुपम सामग्री है इस शास्त्रके मुख्य आचार्य भूतभावन देवादि देव महादेवजी हैं, इन्होंने प्राणियोंका अल्प सामर्थ्य देख थोड़े परिश्रमसे ही भक्तोंकी कार्य सिद्धिके निमित्त तंत्र शास्त्रका उपदेश किया है, तंत्रमें मंत्र यंत्र और औषधी तीनोंका प्रयोग होनेसे शीघ्रही कार्य सिद्धि होती है, इसी कारण तंत्र शास्त्रकी महिमा सर्वत्र बड़े प्रभावके साथ सुनी जाती है, जब कालक्रमसे शास्त्र लुप्त हुआ तब बड़े २ सिद्ध योगी महात्माओंने अपने तपके द्वारा मंत्र और यंत्रोंको देखकर उनमें दैवी शक्ति स्थापन कर चराचरके उपकारकी इच्छाकी, तन्त्रोंमें आदि आचार्य होने और सब विषय महेश्वरीसे कथन करनेके कारण शिवजीका सर्वत्र सम्वाद पाया जाता है, सिद्ध योगियोंने तपसे उस वार्ताको जान अपने ग्रंथोंमें भी प्रायः वैसाही लिखाहै, देशकाल पात्र राशि मुहूर्त योग मिलाकर मंत्र साधनेसे साधकको शीघ्र सिद्धि होतीहै. तंत्र, मंत्र, यंत्र पूर्वक औषधी का प्रयोग करनेसे रोगीको बहुत शीघ्र आरोग्यता होती है, तथा षट् कर्ममें कुशलता होती है, इन्हीं सबयोगोंसे यह विद्या एक समय सम्पूर्ण विश्वमें व्याप्तथी अथर्व वेदमें इसका मूल है, बड़ी २ गूढ़ विद्या मंत्र शास्त्रमें प्रत्यक्ष फल देनेवाली विद्यमान हैं, जिनके अनुष्ठानसे साधक मनोरथ बहुत शीघ्र प्राप्त कर सकतेहैं, परन्तु मंत्रानुष्ठानमें गुरूकी बडी आवश्यकता है, जो कृतज्ञ कृतकार्य अनुभवी जितेन्द्रिय गुरुके मुखसे विधि ग्रहणकर उनकी आज्ञासे शुभ दिनमें अनुष्ठान प्रारंभ करते हैं, वे सिद्धि लाभ करतेहैं और जो निरक्षर भट्टाचार्य विनागुरुके मंत्र सिद्धि करना चाहते हैं उनके मनोरथकी प्राप्ति नहीं होती. इस कारण गुरुके द्वाराही तंत्र विधानमें प्रवृत्त होना चाहिये और कठिन प्रयोगोंमें तो कृत कार्य गुरुकी बडी ही आवश्यकता है कालक्रमसे इस समय फिर तंत्रशास्त्र का

प्रचार घट चला है, कोई २ देशतो ऐसे होगये कि,तंत्र क्या पदार्थ है इसको भी नहीं जानते और कार्य सिद्धिके निमित्त इधर उधर भटकते फिरते तथा सैकडों रुपये व्ययकर भी पूर्णरूपसे कृतकार्य नहीं होते हैं. तंत्र द्वारा स्वल्प व्यय और स्वल्प परिश्रमसे कृतकार्यता हो यही विचारकर परोपकार दृष्टिसे वैश्यवंशदिवाकर जगद्विख्यात सेठजी श्रीयुत खेमराज श्रीकृष्णदासजी महोदयने सत्प्राचीन तंत्रोंके प्रचार करनेकी इच्छासे कितने एक तंत्र भाषाटीका सहित प्रकाशित किये और करते जाते हैं जिनमें ६४ तंत्रोंका सार "महानिर्वाण तंत्र बलदेव प्रसाद मिश्रकृत भाषाटीका सहित, तथा रावणकृत बालतंत्रादि मुख्य हैं प्रकाशित हुए" ऐसे ग्रंथोंमें "कामरत्न" ग्रंथ बहुत उत्कृष्ट और सर्व साधारणको लाभदायक है इसकी एक लिखी हुई पोथी सेठजीने मेरे पास भेजकर भाषाटीका करनेको कहा, यद्यपि वह लिखी पुस्तक विशेष रूपसे अशुद्ध थी परन्तु दो और पुस्तक मिल जानेके कारण उसके शुद्धकरनेमें विशेष कठिनाई न पडी और भाषाटीका सहित तैयारकर पुस्तक प्रेषणकी.

इस ग्रंथमें कितने विषय हैं इसके कहनेकी तो कोई आवश्यकता नहीं कारण कि इसकी सूचीमें वह विषय विस्तारसे लिखे हैं. परन्तु यह कहनेमें अत्युक्ति नहीं है कि, इस समयतक जितने 'तंत्र' प्रकाशित हुए हैं उनसे यह उत्कृष्ट है और प्रायः इसमें सब विषय सन्निविष्ट हैं. इसकी उत्तमताका एक और भी प्रमाण यह है कि, प्रकाशित होते ही शीघ्रतासे यह ग्रंथ निकल गया और किन्हीं असहन शील ईर्षापरवश लोलुप जनोंको यहांतक क्षोभ हुआ कि, (बम्बई सरकारमें पुस्तकको अश्लील कहकर अभियोग उपस्थित कर दिया, परन्तु 'यतो धर्मस्ततोजयः' जहां धर्म वहां जय सत्यकी जय होती है अनृतकी नहीं अन्तमें पुस्तक उपयोगी और प्रकाशनीय सिद्ध होकर श्रीयंत्रालयाध्यक्षकी जय हुई.)

अबकी बार द्वितीयावृत्तिमें यह प्राचीन लिखित कामरत्नकी पुस्तकोंसे मिलाकर इसको विशेष शुद्धकर दिया है, तथा जहाँ कहीं कोई विशेषता उनमें देखी वह भी इसमें संयुक्तकर दीगई है जिस्से प्रथमकी अपेक्षा पुस्तक बहुत शुद्ध और बृहत् भी होगई है.

ओषधी और मंत्रके प्रयोगोंके साथ ग्रंथकारने यंत्रभी लिखे हैं वह यंत्र सब एक स्थानपर लिखे गये हैं और उनमें नम्बर डालकर यह वार्ता भी सूचित करदी है कि, इस स्थलमें अमुक यंत्रभी लिखना चाहिये पाठक गण अंक देखकर वह यंत्र परिशिष्टमें पावेंगे.

तंत्र शास्त्रके प्रचार करनेमें इस समय मुरादाबाद निवासी पण्डित बलदेवप्रसाद मिश्रभी अतिशय यत्नवान् हैं और उन्होंने बहुतसे तंत्र बडीखोजके साथ प्रकाशित भी किये हैं जिस्से इस विद्याके प्रचारकी शीघ्र सम्भावना है, परन्तु साथही इस तंत्र शास्त्रका प्रचार होता देख उदरम्भर स्वार्थी केवल द्रव्य उपार्जनकी इच्छासे तंत्रोंमें स्वमेलकरने को कटिबद्ध होरहे हैं कोई तो कहींके सौ पचास श्लोक संग्रहकर उसका प्राचीन तंत्रोंके नामोंमें से कोई चमकतासा नाम रख देते हैं कोई मिथ्याही किसी पुस्तकको तंत्र कहकर अनर्थ करते हैं कोई अपने तंत्रको अथर्व वेदान्तर्गत प्रगटकर सहृदय पुरुषोंको प्रतारण करनेको आसुरी लीला प्रगट कर रहे हैं, कोई भूत प्रेत सिद्धि वीरभद्र सिद्धि दो दो चार २ पत्रोंकी पुस्तकोंको बड़े आडम्बरके साथ प्रकाश करके बड़ी कीमत लेकर ग्राहकों के चित्त संकुचित कर रहे हैं किन्हींकी यथार्थ तंत्रों को देख इतनी आत्मा कुलबुलाती है कि, तंत्रोंके ऊपर वरुणालयका प्रयोग करके चिल्ला रहे हैं, कोई कहींसे दो चार पत्रे उठाय तंत्र बनाय यहीतंत्रहै २ कहते हुए ढोल पीटते हुए दान पात्र बन रहे हैं. बहुत क्या इन मिथ्यातंत्र और कल्पों के नामसे जो पुस्तकें प्रकाशित होतीहैं इनसे बडी हानि है कारण कि, जबकभी वे असली पुस्तक प्रकाशित होंगी तब लोगोंको बड़ा भ्रम होगा कि, इसमें सत्य ग्रन्थ कौनसाहै ? एक नामके दो ग्रन्थोंका वखेडा

पाठक जानही सकते हैं केटलाक आफ संस्कृत मेन्यूस्कृप्ट्स (Catalogue of Sanskrit Manuscrts) जिसमें प्रायः संस्कृतकी पुस्तकोंके बहुतसे नाम उनके पत्रों और श्लोकोंकी संख्या सम्वत् निर्माता का नाम तथा जिसके पास वह पुस्तकें हैं उनका पता लिखा रहता है जो गवर्नमेण्टके आर्डरसे प्रकाशित हुई हैं इसके देखनेसे विदित होता है कि,कई मिथ्या तंत्र लोगोंने प्रकाशित किये हैं जो कि, उस ग्रंथमें बृहत् और इस समय चार पांच पत्रोंमें प्रकाश किये गये हैं फिर ऐसे तंत्रोंको ग्रहण कर उनसे लाभ न होनेसे सज्जनोंकी अरुचि होनेकी संभावना क्यों नहो इन नकली तंत्रोंके प्रचारसे असली तंत्रोंकेभी रिलजानेका संदेहहै अनुवाद तथा तंत्रके खोजने वालोंसे हमारा यह कहना है कि यदि आपसे तंत्र प्रकाशकिये विना नहीं रहाजाता तौ असली तंत्रो का अनुवाद और प्रकाशकर यशके भागी हूजिये प्रपंचसे लाभ नहीं होता.

पाठक महाशयोंसे प्रार्थना है कि, इस ग्रंथको आद्योपान्त देखकर लाभ उठावै यद्यपि यथा शक्ति इसको ठीककर दिया है तथापि यदि कहीं कुछ त्रुटि रहगई तो क्षमाकर हंसके समान गुण ग्राही हूजिये.

आपका-

ज्वालाप्रसाद मिश्र,

(दिनदारपुरा)-मुरादाबाद.

विज्ञप्ति।

जो तोलका प्रमाण इस ग्रन्थ में आगया है उस का प्रमाण इस प्रकारहै
चार जौंकी एक चौंटली वा रत्ती होती है ॥
छः रत्तीका एक माशा वा धान्यक होता है ॥
चारमाशेको एक शाण वा टंक कहते हैं ॥
दो टंकका एक कोल कहाता है ॥ (आठमासे)
दो कोलका एक कर्ष (तोला) होता है ॥
दोकर्षका आधापल होता है इसे शुक्ति कहते हैं ॥
दो पलकी एक प्रसृति होती हैं ॥ (८ तोले)
दो प्रसृतिकी एक अंजली और उसीको कुडव कहते हैं ॥ (१६ तोले)
इस प्रकार परिभाषा समझनी चाहिये ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना-मुंबई.

श्रीः ।

अथ कामरत्नकी अनुक्रमणिका ।

इति कामरत्नस्यानुक्रमणिकासमाप्ता।

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ कामरत्नं-

पण्डितज्वालाप्रसादमिश्रकृत-

भाषाटीकासहितम् ।

श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः ।

यस्येश्वरस्यविमलंचरणारविंदं
संसेव्यतेविबुधसिद्धमधुव्रतेन ॥
निर्वाणसूचकगुणाष्टकवर्गपूर्णं
तंशंकरंसकलदुःखहरंनमामि ॥ १ ॥

दोहा–गौरीशंकरपदकमल, प्रेमसहितहियलाय ॥
कामरत्नभाषातिलक, बहुविधिलिखतबनाय ॥ १ ॥
श्रीगणेशमंगलकरन, हरनसकलभयशूल ॥
द्विजज्वालाप्रसादपर, सदारहहुअनुकूल ॥ २ ॥

जिन ईश्वरके निर्मल चरणारविंद देवता सिद्धभ्रमरके समान उपासना करते रहतेहैं, जिनके गुणानुवाद स्मरणसे मुक्ति होजातीहै उन अष्टमूर्ति वेदपूर्ण सम्पूर्ण दुःखहरनेवाले शंकरको मैं नमस्कार करताहूं. कहीं "निर्माणशातकगुणाष्टकवर्गपूर्णं" पाठहै. अर्थ–जो सम्पूर्ण सृष्टिके संहार गुण ध्यान धारणादि अष्टांग योग और धर्मादि चार वर्ग में विराजित हैं उन सम्पूर्ण दुःख नाशक शिवको प्रणाम है ॥ १ ॥

देव्युवाच ।

" ज्ञातंतवप्रसादेनयथाकालस्यबंधनम् ।
मंत्रस्यसारसम्भूतमिदानीमौषधंवद ॥
औषधान्यप्यनेकानिमनुजानांहितायवै ।
पूर्वंतुयत्त्वयाप्रोक्तंप्रत्यक्षंकथयस्वमे ॥

देवी कहने लगीं-हे भगवन् ! आपकी कृपासे मैंने यथा योग्य कालका बंधन जाना अब इस समय आप मंत्रके सारसे प्रगट होने वाली ओषधी कहिये, मनुष्योंके हित करनेवाली आपने पहले अनेक ओषधी कही हैं अब प्रत्यक्ष कहिये ॥

ईश्वर उवाच ।

तिथिनक्षत्रवारेणऋतुभेदैःपरिग्रहः ।
खननोत्पाटनंमंत्रैःकारयेद्वैचिकित्सकः ॥
औषधंकालयोगेनगृह्णातिपरमंबलम् ।
शरद्धेमान्तिकेदेवित्वचोमूलपरिग्रहः ॥
शिशिरेचफलंसम्यग्मूलंसारसमन्वितम् ।
वसन्तेपुष्पपत्रंचग्रीष्मेचफलबीजके ॥
स्वकालेबलवन्तोऽपिवर्षासुतरवःसदा ।
मूलेशुष्केबलंचार्द्धमलादौभिषजेतथा ॥
ग्रीष्मवार्षिकयोरेतच्छरत्संपूर्णताभवेत् ।
वृक्षादीनांफलंबीजंस्वकीयेचार्तवेतथा ॥
फलपुष्पलताह्येतेस्वकालेबलिनस्तथा ।
निशायांवनजावीर्याजलजाबलिनोदिवा ॥

शिवजी कहने लगे—हे देवि ! तिथि नक्षत्र वार और ऋतुवोंके भेद-से औषधियोंका ग्रहण, खनन, उखाड़ना मंत्र पूर्वक वैद्यको करना चाहिये, समय योगमें ग्रहण की हुई ओषधी परम बल करती है शरद् और हेमन्तमें त्वचा (छाल) और मूल ग्रहण करना, शिशिरमें फल मूल और सार ग्रहण करना चाहिये, वसन्तमें पुष्प पत्र और ग्रीष्ममें फल बीज ग्रहण करने चाहियें, अपने काल और वर्षा में वृक्ष सदा बलवान् होते हैं, मूल शुष्क होनेसे आधा बल होताहै तथा मलादि स्थानकी निर्बल होतीहैं ग्रीष्म वर्षा और शरद् में सम्पूर्णता होतीहै, वृक्षादिके फल बीज अपनी ऋतु में ग्रहण करने चाहियें, यह फल पुष्प लता अपने समयमें बलवान् होती हैं रात में वनके होने वाली बली होती हैं, और दिनमें जलमें होने वाली ओषधी आदि बली होती हैं ॥

शान्तिवश्यस्तंभनानिद्वेषणोच्चाटनंतथा ।
मारणान्तानिशंसन्तिषट्कर्माणिमनीषिणः ॥

शान्ति, वशीकरण, स्तंभन, विद्वेषण, उच्चाटन, मारण यह छः कर्म विद्वानोंने कहे हैं ” ॥

कामरत्नमिदंचित्रंनानातन्त्रार्णवान्मया ॥
वश्यादियक्षिणीमंत्रसाधनान्तंसमुद्धृतम् ॥ २ ॥
वश्याकर्षणकर्म्माणिवसन्तेयोजयेत्प्रिये ॥

यह विचित्र “कामरत्न नामक ग्रंथ अनेक सागररूप ग्रंथोंसे संग्रह करके वशीकरणसे प्रारंभकर यक्षिणी मंत्रके साधन पर्यन्त उद्धृत कियाहै । हे पार्वति ! वशीकरण और आकर्षण कर्म वसन्त ऋतुमें करने चाहियें ॥ २ ॥

ग्रीष्मेविद्वेषणंकुर्य्यात्प्रावृषिस्तंभनंतथा ॥ ३ ॥
शिशिरेमारणञ्चैवशांतिकंशरदिस्मृतम् ॥

ग्रीष्मऋतुमें विद्वेषण, वर्षाऋतुमें स्तंभन, शिशिरमें मारण, शरद्में शान्तिकर्म ॥ ३ ॥

हेमन्तेपौष्टिकंकुर्य्यादुक्तंकर्मविशारदैः ॥ ४ ॥
वसन्तेचैवपूर्वाह्णेग्रीष्मेमध्याह्नउच्यते ॥

हेमन्तमें पुष्टिकर्म, इन कर्मोंके जाननेवालोंको करने चाहियें, दुपहरसे पहले वसन्त, मध्याह्नमें ग्रीष्म ॥ ४ ॥

वर्षाज्ञेयाऽपराह्णेतुप्रदोषेशिशिरस्तथा ॥ ५ ॥
अर्द्धरात्रेशरत्कालेउषाहेमन्तउच्यते ॥

तीसरे प्रहरको वर्षा, प्रदोषमें शिशिर, आधीरातमें शरद्, उषःकाल (चारघड़ीके तड़के) में हेमन्तऋतु जाननी उचित है ॥ ५ ॥

ऋतवःकथिताह्येतेसर्वेह्येवक्रमेणतु ॥ ६ ॥
तद्विहीनानसिद्ध्यन्तिप्रयत्नेनापिकुर्वतः ॥

यह क्रमसे ऋतुओंका वर्णन कियाहै, कालके विना यत्न करनेपरभी मंत्र सिद्धिको प्राप्त नहीं होते ॥ ६ ॥

अनन्यकरणात्तेहिध्रुवंसिद्ध्यंतिनान्यथा ॥ ७ ॥
इतिवश्यादिकर्मणामृतुनिर्णयः ॥

और अपने कालमें करनेसे वे सिद्ध होतेहैं,इसमें सन्देह नहीं॥७॥

इति ऋतुनिर्णयः ॥

वशीकरणकर्माणिसप्तम्यांसाधयेद्बुधः ॥
तृतीयायांत्रयोदश्यांतथाकर्षणकर्मवै ॥ ८॥

चतुर पुरुषको उचितहै कि, सप्तमीमें वशीकरण कर्मका साधन करै, तीज और तेरसके दिन आकर्षण कर्म करना चाहिये ॥ ८ ॥

---

१ दशम्यामित्यपिपाठः ।

उच्चाटनंद्वितीयायांषष्ठ्याञ्चैवप्रकारयेत् ॥
स्तम्भनञ्चचतुर्दश्याञ्चतुर्थ्याम्प्रातिपद्यपि ॥ ९ ॥

दोयज और छठको उच्चाटन कर्म करै चौथ और चौदसको स्तंभनकर्म करै तथा पड़वाको भी स्तम्भन करै ॥ ९ ॥

मोहनन्तुनवम्याञ्चतथाऽष्टम्यांप्रयोजयेत् ॥
द्वादश्याम्मारणञ्चैवमेकादश्यान्तथैवच ॥ १० ॥

नौमी और अष्टमीको मोहनकर्म करै एकादशी द्वादशीको मारण कर्म करना चाहिये ॥ १० ॥

पञ्चम्याम्पौर्णमास्याञ्चयोजयेच्छांतिकादिकम् ॥
सर्वविद्याप्रसिद्ध्यर्थंतिथयःकथिताःक्रमात् ॥ ११ ॥

पंचमी और पौर्णमासीको मारण कर्म करना चाहिये, यह तिथि सर्व विद्याओंकी प्रसिद्धिके निमित्त कही है ॥ ११ ॥

इति तिथिनिर्णयः ॥

अथवाराः ।

शुक्रेलक्ष्मीःशनौवश्यंरवौमारणकर्मच ॥
उच्चाटनंबुधेभौमेविद्वेषादिशुभम्भवेत् ॥ १२ ॥

शुक्रवारमें लक्ष्मी, शनिको वशीकरण, रविवारको मारण बुधको उच्चाटन, मंगलको विद्वेषणकर्म शुभ होताहै ॥ १२ ॥

स्तंभनंमोहनञ्चैववशीकरणमुत्तमम् ॥
माहेन्द्रेवारुणेचैवकर्त्तव्यमिहसिद्धिदम् ॥ १३ ॥

स्तंभन मोहन और उत्तम वशीकरण माहेन्द्र व वारुण मंडलमें करनेसे सिद्धिका देनेवाला है ॥ १३ ॥

विद्वेषोच्चाटनम्वह्निवायुयोगेनकारयेत् ॥
ज्येष्ठाचैवोत्तराषाढाह्यनुराधाचरोहिणी ॥ १४ ॥

विद्वेषण और उच्चाटन अग्नि और वायुके योगमें अर्थात् इन तत्वोंके उदयमें करावै, ज्येष्ठा उत्तराषाढा अनुराधा रोहिणी ॥१४॥

माहेन्द्रमण्डलस्थाश्चप्रोक्ताःकर्मप्रसिद्धिदाः ॥
स्यादुत्तराभाद्रपदामूलाशतभिषातथा ॥ १५ ॥

यह माहेन्द्र मण्डलमें स्थितहुए कर्म सिद्धिके देनेवाले हैं उत्तरा भाद्रपदा, मूल, शतभिषा ॥ १५ ॥

पूर्वाभाद्रपदाश्लेषाज्ञेयावारुणमध्यगाः ॥
पूर्वाषाढाचतत्कर्म्मसिद्धिदाशम्भुनास्मृताः ॥१६ ॥

पूर्वाभाद्रपदा, आश्लेषा यह वारुणमण्डलके मध्यचारी कहातेहैं, और इसीप्रकार शिवजीने पूर्वाषाढको कर्मसिद्धिका देनेवाला कहाहै॥

स्वातीहस्तोमृगशिराश्चित्राचोत्तरफाल्गुनी ॥
पुष्यःपुनर्वसुर्वह्निमण्डलस्थाःप्रकीर्तिताः ॥ १७ ॥

स्वाती, हस्त, मृगशिर, चित्रा, उत्तराफाल्गुनी, पुष्य, पुनर्वसु यह वह्निमण्डलमें स्थित हैं ॥ १७ ॥

अश्विनीभरणीचार्द्राधनिष्ठाश्रवणंमघा ॥
विशाखाकृत्तिकापूर्वाफाल्गुनीरेवतीतथा ॥ १८ ॥

अश्विनी, भरणी, आर्द्रा, धनिष्ठा, श्रवण, मघा, विशाखा, कृत्तिका, पूर्वाफाल्गुनी, रेवती ॥ १८ ॥

वायुमण्डलमध्यस्थास्तत्तत्कर्म्मप्रसिद्धिदाः ॥
शांतिकंपौष्टिकञ्चैवह्यभिचारिककर्म्मच ॥ १९ ॥

यह वायुमण्डलमें स्थितहुए उन उन कर्मोंकी सिद्धि देनेवाले हैं, शान्ति पुष्टि और अभिचारके कर्म आगे लिखी अंगुली द्वारा करैं सिद्ध होते हैं ॥ १९ ॥ इति माहेन्द्रादिनिर्णयः ॥

तर्जन्यादिसमारूढंकुर्याद्यत्नाक्रमंसुधीः ॥
तथांगुष्ठासमारूढासर्वकर्मशुभेतथा ॥ २० ॥

पूर्वोक्तकर्म तर्जनी (अँगूठेके निकटकी अंगुली) आदि द्वारा यथाक्रमसे करै और अंगुष्ठसे सब शुभकर्म प्रयोग करने चाहियें अर्थात् अंगुष्ठ और तर्जनी द्वारा शान्तिकार्य, मध्यमा और अंगुष्ठसे पौष्टिक, अनामिका और अंगुष्ठसे अभिचारकर्म करै ॥ २० ॥

इति अंगुलीनिर्णयः ।

अथ मूलिकाग्रहणविधिः ।

विधिमंत्रसमायुक्तमौषधंसफलंभवेत् ॥
विधिमंत्रविहीनंतुकाष्ठवद्भेषजंभवेत् ॥ २१ ॥

विधिपूर्वक मंत्रद्वारा लाईहुई औषधी सफल होतीहै और विधि तथा मंत्रकेविना लाईहुई औषधी काठकी समान होतीहै ॥ २१ ॥

एकान्तेतुशुभारण्येतिष्ठत्येवयदौषधम् ॥
कार्यसिद्धिर्भवेत्तेनवीर्यमस्तिचतत्रवै ॥ २२ ॥

जो औषधी एकान्तमें अच्छे वनमें स्थित होतीहै उससे कार्य-सिद्धि होतीहै कारण कि, उसमें बल रहताहै ॥ २२ ॥

वल्मीककूपरथ्यातरुतलदेवालयश्मशानेषु ॥
जाताविधिनाविहिताऔषधयःसिद्धिदानस्युः॥२३॥

बाँबी कूप (कुआ) मार्ग वृक्षके नीचेकी देवालय श्मशानमें उत्पन्न हुई औषधी विधिपूर्वक लाई हुईभी सिद्धि देनेवाली नहीं होती ॥२३॥

जलजीर्णमग्निकवलितमकालजातंक्रुमिक्षतशरीरञ्च ॥
न्यूनन्तथाधिकंवाद्रव्यमद्रव्यञ्गुर्भिषजः ॥ २४ ॥

जलसे गलीहुई अग्निसे जलीहुई अकालमें उत्पन्नहुई कृमिसे

खाई हुई बहुत थोड़ी तथा अधिक औषधी (द्रव्य) होनेपरभी, नहीं होनेके समानहै, ऐसा विद्वान् कहतेहैं ॥ २४ ॥

भूतादियुक्तमभ्यर्च्यगिरीशंप्रातरुत्थितैः ॥
श्राद्धैरुपासितैर्वापिसंग्राह्यंसर्वमौषधम् ॥ २५ ॥

प्रातःकाल उठकर भूतादिके सहित शिवका पूजन कर शुद्धव्रतादिसे युक्तहो सम्पूर्ण औषधियोंको ग्रहण करना चाहिये ॥ २५ ॥

इत्येवंसर्वमूलानांविधिमंत्रश्चकथ्यते ॥
आदौवृक्षस्यमूलञ्चगत्वातमभिमंत्रयेत् ॥ २६ ॥

इस प्रकारसे सब मूलोंकी विधि और मंत्रको कहतेहैं—पहले वृक्ष मूलमें जाकर उसको अभिमंत्रित करै ॥ २६ ॥

ॐ वेतालाश्चपिशाचाश्चराक्षसाश्चसरीसृपाः ॥
अपसर्पन्तुतेसर्वेवृक्षादस्माच्छिवाज्ञया ॥ २७ ॥

यह मंत्रहै कि, वेताल पिशाच राक्षस सरीसृप शिवकी आज्ञासे सब इस वृक्षसे दूर हों ॥ २७ ॥

ततोनमस्कारः ।

ॐनमस्तेऽमृतसम्भूतेबलवीर्य्यविवर्द्धिनि ॥
बलमायुश्चमेदेहिपापान्मेत्राहिदूरतः ॥ २८ ॥

फिर नमस्कार करके यह मंत्र पढ़े अमृतसे उत्पन्न, ब्रह्म वीर्यकी बढ़ानेवाली, बल और आयु मुझेदो और दूरसेही पापों सेमेरी रक्षा करो ॥ २८ ॥

ततःखननम् ।

येनत्वांखनतेब्रह्मायेनत्वांखनतेभृगुः ॥
येनहीन्द्रोथवरुणोयेनत्वामपचक्रमे ॥ २९ ॥

यह कहकर खोदे जिसकारण कि तुमको ब्रह्मा और भृगुजीने खोदाहै, जिसकारण कि तुमको इन्द्र और वरुणने खोदाहै ॥ २९ ॥

तेनाहंखनयिष्यामिमंत्रपूतेनपाणिना ॥

मापातेमानिपतितेमातेतेजोन्यथाभवेत् ॥ ३० ॥

इसीकारण मंत्रसे पवित्र हाथोंसे मैं तुमको खनन करताहूं, खोदने और उखाड़नेमें तुम्हारा तेज अन्यथा न हो ॥ ३० ॥

अत्रैवतिष्ठकल्याणिममकार्य्यकरीभव ॥
ममकार्य्येकृतेसिद्धेततस्स्वर्गंगमिष्यसि ॥ ३१ ॥

हे कल्याणि ! यहीं स्थित होकर तुम हमारा कार्य करो मेरे कार्यकी सिद्धि होने से फिर तुम्हारा स्वर्गमें गमन होगा ॥ ३१ ॥

ॐह्रींचण्डेहूंफट्स्वाहा ॥
अनेनमंत्रेणादित्यवारेपुष्यनक्षत्रेवापुष्यार्कयोगे वा सर्वाओषधीरुत्पाटयेत् ।
ॐह्रींक्षौंफट्स्वाहा ॥
अनेनमूलिकांछेदयेत् । इतिमूलिकाग्रहणविधिः ॥
ॐवनदण्डेमहादण्डायस्वाहा ॥
ॐ शू (सूत्री) द्रीकपालमालिनीस्वाहा ॥
प्रत्येकंसप्तधाजप्त्वावन्दाग्राह्या॥ततःकार्य्यसिद्धिः ॥
इतिवन्दाग्रहणविधिः ॥
इत्येवंसर्वविद्यानांसिद्ध्येऋतुनिर्णयः ॥
कथितंचात्रयत्नेनमूलिकाग्रहणादिकम् ॥ ३२ ॥

"ओंह्रीं चण्डेहूं फट् स्वाहा" इस मंत्रसे रविवारके दिन, पुष्य नक्षत्र वा पुष्य अर्क योगमें सम्पूर्ण औषधी उखाडै, "ओंह्रींक्षौं फट् स्वाहा" इस मंत्रसे मूलिका छेदन करे (इति मूलिकाग्रहणकी विधि) " ओं वनदण्डे महादण्डायस्वाहा ओंशूद्री कपालमालिनी स्वाहा" यह प्रत्येक सातवार जपकर वन्दाग्रहण करै तौ कार्य की सिद्धि हो (इतिवंदाग्रहणमंत्रः) इसप्रकार सब विद्याओंकी सिद्धिमें ऋतुका निर्णयहै यह यत्नपूर्वक मूलग्रहणादिकी विधि कहीहै ॥ ३२ ॥

अथवशीकरणम् । तत्रसर्वजनवशीकरणम् ॥
वर्णानामुत्तमम्वर्णंमंत्रस्थानान्तथैवच ॥
ॐकारंशिरसंचापिओंकारंशिरसन्ततः ॥ ३३ ॥
अधोभागेचरेफञ्चदत्वामंत्रंसमुद्धरेत् ॥
निरामिषान्नभोक्ताचजप्तव्योमन्त्रएवच ॥ ३४ ॥

प्रथम सम्पूर्ण जनोंको वश करनेकी विधि, जो वर्णोंमें उत्तम वर्ण है वही मंत्र का स्थानहै, ओंकार शिरके स्थानमें और दूसरे क प व लिखकर अधोभागमें रेफ देकर मंत्रका उद्धार करै मांसरहित अन्न खाकर मंत्रको जपै ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

क्रोंप्रोंव्रोंअनेनमंत्रेण ।
असाध्यमपिराजानंपुत्रमित्राश्चबांधवाः ।
यन्मेगोत्रसमुत्पन्नाःपशवोयेचसर्वतः ॥ ३५ ॥

"क्रों प्रों व्रों" इसमंत्रसे असाध्य राजा पुत्र मित्र बांधव जो अपने गोत्रमेंहै और जो पशुप्राय हैं ॥३५॥ म्रौं ड्रौं कहीं परयह मंत्र है ॥

तेसर्वेवशतांयांतिसहस्राद्धस्यजापनात् ॥
पृष्ठाद्दृष्टाचयेसाध्यागृहीत्वानामतत्रवै ॥ ३६ ॥

---

१ " ओं ह्रीं क्लीं कलिकुण्डस्वामिनी अमृतवक्रे अमुकं जृम्भय मोहयस्वाहा" यह मंत्र इक्कीसवार जपनेसे सिद्धि होती है॥१॥उद्भ्रान्त पत्र मँजीठ कुंकुम तगर यह समान ले खान पान और स्पर्श में देने से वशी करता है। पुष्यनक्षत्रमें सिंहीकी मूल लाय कमरमें बांधनेसे जगत्प्रिय होता है। कृष्णचतुर्दशीमें श्मशानसे महानीललावै॥२॥उसे उखाड़ नरतेलसे अंजन करनेसे लोक वशीभूत होता है। अथवा इसीकी मूल अपने वीर्यसे अंजनकरे तो लोकवशमें होता है ॥३॥ अथवा इसीकी मूल हाथमें बांधनेसे सर्व प्रिय होता है ॥ ४ ॥ चन्द्रवार पुष्यनक्षत्रमें ब्रह्मदंडीकी मूल लाय अंजन करनेसे सब जीव वशमें होते हैं ॥५॥ उल्लू के नेत्र घीकुवार वंशलोचन इन के अञ्जनसे लोक वशीभूत होतेहैं ॥६॥ "ओंनमो महायक्षिणी अमुकं वशमानय स्वाहा" इस मंत्रका दशसहस्रजपनेसे सिद्धि होती है ॥

वे ५०० मंत्र जपकरनेसे सब वशीभूत होजातेहैं उनसाध्योंसे पूछकर तथा देखकर उनके नाम लेकर सिद्ध करै ॥ ३६ ॥

इत्यादिकाःसर्वमंत्राग्राह्याभक्त्यागुरोस्तदा ॥
सिध्यंतिसर्वकार्य्याणिनान्यथासिद्धिभाग्भवेत् ॥३७॥

सम्पूर्ण मन्त्र भक्तिपूर्वक गुरुसे ग्रहण करने चाहियें तौ सब कार्य सिद्धि होजाते हैं अन्यथा कार्यसिद्धि नहीं होती ॥ ३७ ॥

ॐनमःकटविकटघोररूपिणीस्वाहा ॥
अनेनमंत्रेणसप्ताभिमंत्रितंभक्तपिंडं
यस्यनाम्नासप्ताहंखाद्यतेसध्रुवमेववश्योभवति ॥
ॐवश्यमुखीराजमुखीस्वाहा ॥
अनेनसप्तधामुखप्रक्षालनात्सर्वैवश्याभवन्ति ॥
ॐराजमुखिवश्यमुखिस्वाहा ॥
वामहस्तेतैलंसंस्थाप्यअनामिकयात्रिधा
आमंत्र्यपुनर्मूलमंत्रंत्रिधापठित्वामुखकेशादौविलेपयेत् ।
प्रातःकालेशय्यायांस्थित्वातदासर्वेजनावश्याभवन्ति
व्याघ्रोपिनखादति ॥
ॐचामुण्डेजयजयस्तम्भयस्तम्भयजंभयजंभयमोहयमोहय
सर्वसत्वान्नमःस्वाहा अनेनपुष्पाण्य
भिमंत्र्ययस्मैदीयतेसवश्योभवति ॥
एकचित्तास्थितामंत्रीमंत्रंजप्त्वाऽयुतत्रयम् ॥
ततःक्षोभयतेलोकान्दर्शनादेवसाधकः ॥ ३८ ॥

“ ओंनमः कट विकट घोर रूपिणी स्वाहा” इस मंत्रसे सातवार अभिमंत्रितकर भोजन पिण्डको जिसका नाम लेकर बराबर

सात दिनतक खाय वह अवश्य वशमें हो जाताहै " ओंवश्यमुखी राजमुखी स्वाहा " इस मंत्रको पढ सातवार मुख धोनेसे सब वशमें हो जातेहैं " ओंराजमुखि वश्यमुखि स्वाहा " बायें हाथमें तेल लेकर कन अंगुलीसे तीन वार अभिमंत्रितकर फिर मूलिका को तीनवार पढकर मुख और केशादिमें लगावे प्रातःकाल शय्यामें स्थित होकर लगावे तब सब मनुष्य वशमें होते हैं व्याघ्रभी उसको नहीं खाता मंत्र यहहै "ओंचामुण्डे जय २ स्तम्भय२जंभय २ मोहय २ सर्व सत्वान्नमस्स्वाहा " इस मंत्रसे पुष्प अभिमंत्रित करके जिसको दियाजाय वह वशीभूत हो जाता है, मंत्र जपने वाला स्थिर चित्त होकर बीससहस्र मंत्रजप करके अपने दर्शनसेही लोकोंको क्षुभितकर सकता है ॥ ३८ ॥

भूताख्यवटमूलञ्चजलेनसहघर्षयेत् ॥
विभूत्यासंयुतंमन्त्रंतिलकंलोकवश्यकृत् ॥ ३९ ॥

शाखोटवृक्षकी जड़ यत्नसे घिसकर विभूतिके साथ तिलक लगावै तौ लोक वशीभूत होजातेहैं ॥ ३९ ॥ कहीं रुद्राक्ष पाठ है ॥

पुष्येपुनर्नवामूलंकरेसप्ताभिमंत्रितम् ॥
बध्वासर्वत्रपूज्यःस्यान्मंत्रस्त्वत्रैवकथ्यते ॥ ४० ॥
ऐरौंडंक्षोभयभगवातित्वंस्वाहा ॥
मंत्रमिममुक्तयोगस्यपूर्वमयुतद्वयजपेत्ततःसिद्धिः ॥
अपामार्गस्यमूलन्तुपेषयेद्रोचनेनच ॥
ललाटेतिलकंकुर्य्याद्वशीकुर्य्याज्जगत्रयम् ॥ ४१ ॥

पुष्य नक्षत्रमें पुनर्नवाकी जड़को हाथमें सातवार अभिमंत्रितकर बांधै तौ सर्वत्र पूजित होताहै वह मंत्र यह है "ऐरौंडंक्षोभय भगवातित्वं स्वाहा " यहमंत्र २०००० जपनेसे सिद्धि होती है अपामार्ग (चिर

चिटे) की जड़को गोरोचनके साथ पीसले इसका तिलक मस्तकमें करनेसे त्रिलोकीको अपने वशमें करसकता है ॥ ४१ ॥

ॐनमःकन्दर्प[1]शरविजालिनिमालिनीसर्वलो

कवशंकरीस्वाहा ॥

इतिमंत्रमुक्तयोगस्याष्टोत्तरसहस्रंजपेत्ततःसिद्धिः ॥

कृष्णपक्षेचतुर्दश्यामष्टम्यांवाह्युपोषितः ॥

बलिन्दत्वासमुद्धृत्यसहदेवींसचूर्णयेत् ॥ ४२ ॥

"ॐनमःकन्दर्पशर विजालिनि मालिनि सर्व लोकवशंकरी स्वाहा" यह मंत्र कथितयोगमें १०८ वार जपनेसे सिद्धि होतीहै कृष्ण पक्षकी चौदस और अष्टमीको व्रत रहकर बलि देकर सहदेईकी जड़को उखाड़के चूर्ण करै ॥ ४२ ॥

ताम्बूलेनतुतच्चूर्णदत्तंवश्यकरंध्रुवम् ॥

स्नानेलेपेचतच्चूर्णयोज्यंवश्यकरम्भवेत् ॥ ४३ ॥

पानमें रखकर जिसको दीजाय वह अवश्य वशीभूत होजाताहै, और इसीका चूर्ण स्नानीय जलमें मिलाकर न्हानेसे अथवा शरीरमें लेपनकरनेसे वश्यता होतीहै ॥ ४३ ॥

रोचनासहदेवीभ्यांतिलकंलोकवश्यकृत् ॥

शिरसाधारयेत्तच्चचूर्णसर्वत्रवश्यकृत् ॥ ४४ ॥

गोरोचन और सहदेई मिलाकर तिलक करनेसे लोकवशीभूत होतेहैं और उसका चूर्ण शिरपर धारणकरनेसे लोक वशीभूत होतेहैं ॥ ४४ ॥

मुखेक्षिप्त्वाचतन्मूलंकट्यांबध्वाचकामयेत् ॥

यांनारींसाभवेद्वश्यामंत्रयोगेनकथ्यते ॥ ४५ ॥

---

१ कोदण्डशरइतिवापाठः ।

ॐनमोभगवतीमातंगेश्वरीसर्वमुखरंजिनि
सर्वेषांमहामायेमातंगीकुमारिकेलहलहजिह्वे
सर्वलोकवशंकरीस्वाहा ॥
सहस्रंजप्त्वाउक्तयोगानांसिद्धिः ॥
श्वेतापराजितामूलंचंद्रग्रस्ते(मृगऋक्षे)समुद्धृतम् ॥
रंजिताक्षोनरस्तेनवशीकुर्य्याज्जगत्त्रयम् ॥ ४६ ॥
तन्मूलंरोचनायुक्तंतिलकेनजगद्वशम् ॥
ग्राह्यंकृष्ण(शुक्ल)त्रयोदश्यांश्वेतगुंजीयमूलकम् ४७॥

उसको अन्यस्त्रियोंकेद्वारा जिसके मुखमें डालदे या कमरमें मन्त्रयोगसे बाँधदे वह स्त्री वशमें होजातीहै मंत्र यहहै "ॐनमो भगवति मातंगेश्वरि सर्वमुखरंजिनि सर्वेषां महामाये मातंगी कुमारिके लहहल[1]जिह्वे सर्वलोकवशंकरी स्वाहा" सहस्र मंत्र जपकरनेसे ऊपरकहे योगकी सिद्धि होतीहै श्वेतविष्णुक्रान्ताकी जड़ चन्द्रग्रहणमें उखाड़कर लावै उसको पीसकर आंखोंमें आंजनेसे त्रिलोकी वशमें होतीहै, और इसीकी जड़का गोरोचनकेसाथ तिलक लगानेसे जगत् वशमें होताहै कृष्णपक्षकी त्रयोदशीके दिन सफेद चौंटलीकी जड़को लावै ॥४५॥४६॥४७ ॥

ताम्बूलेनप्रदातव्यंसर्वलोकवशंकरम् ॥
शिलारोचनताम्बूलंवारिणातिलकेकृते ॥ ४८ ॥

उसको ताम्बूलकेसाथ देनेसे सबलोक वशीभूत होतेहैं, मनसिल और गोरोचन इनको ताम्बूल जलके साथ घिसकर तिलक लगानेसे ॥ ४८ ॥

संभाषणेनसर्वेषांवशीकरणमुत्तमम् ॥

---

१ अथवा हल हल ।

स्वर्णेनवेष्टितंकृत्वातेनैवतिलकेकृते ॥ ४९ ॥
दृष्टमात्रेवशंयातिनारीवापुरुषोपिवा ॥
ॐवज्रकिरणेशिवेरक्षभवेममाद्यअमृतंकुरु२स्वाहा[1] ॥
इमंमंत्रमुक्तयोगेनसहस्रजपेत्ततःसिद्धिः ॥ ५० ॥
हृत्पादचक्षुर्नासानांमलंपूगेप्रदापयेत् ॥ ५१ ॥
तत्पूगंखाद्यतेयेनयावज्जीवंवशीभवेत् ॥ ५२ ॥

जिसकेसाथ संभाषण करै वह वशमें होसकताहै तथा स्वर्णसे वेष्टितकर इसका तिलक करनेसे नारी या पुरुष कोई हो देखतेहीवशीभूत होजाताहै, मंत्र यहहै "ॐवज्रकिरणे शिवे रक्षभवेममाद्याअमृतं कुरुकुरु स्वाहा" हृदय चरण नेत्र नासिकाका मैल पूग (सुपारी)में किंचित्भी देनेसे खानेवाला जीवनपर्यन्त उसके वशमें होजाताहै ॥ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

मंत्राभिमंत्रितंकृत्वादण्डेन्दीवरमूलकम् ॥
रोचनाभिस्ताम्रपात्रेमृष्ट्वानेत्रद्वयांजनात् ॥ ५३ ॥

नीलकमलकी जड़ मन्त्रसे अभिमंत्रित करके गोरोचन सहित ताम्रपात्रमें पीसकर दोनों नेत्रोंमें आंजनेसे ॥ ५३ ॥

प्रियोभवतिसर्वेषांदृष्टमात्रेनसंशयः ॥
तन्मूलंमधुसंयुक्तंललाटेतिलकेकृते ॥ ५४ ॥

देखतेही वह मनुष्य सबका प्यारा होजाताहै इसमें सन्देह नहीं और इसीकी जड़का सहतके साथ तिलक लगानेसे ॥ ५४ ॥

ताम्बूलेवाप्रदातव्यंवशीकरणमुत्तमम् ॥
तन्मूलंरंजनोत्थंवामूलंपिष्ट्वाप्रयोजयेत् ॥ ५५ ॥

---

१ ग्राह्यं शुक्लचतुर्दश्यां श्वेतगुंजीय मूलकम्। ताम्बूलेन प्रदातव्यं सर्वलोक वशंकरम् ॥ इत्यस्यैतदुत्तरपाठः अन्यत्र। २ ओंवज्रकिरणे शिवेरक्षभये ममा द्यामृतं कुरुकुरुस्वाहा वा पाठः।

वा ताम्बूलके साथ देनेसे उत्तम वशीकरण होजाताहै तथा नीलकमलकी जड़ तिरिच्छ की जड़ पीसकर प्रयोगकरै ॥ ५५ ॥

ताम्बूलेनतुतद्भुक्तेध्रुवंवश्यंसमानयेत् ।
पिंगलायैनमः ।
अनेनमंत्रेणाभिमंत्र्योक्तयोगान्साधयेत् ।
रक्तगृध्रोभयंनेत्रंनेत्रंवाकृष्णपेचकम् ।
कृष्णपेचिकमाहृत्यतत्तैलेनप्रदीपकम् ॥ ५६ ॥
कृत्वाचमधुनालिप्त्वावर्त्तिकज्जलपातने ॥
तेननेत्रांजनंकृत्वात्रैलोक्यंवशमानयेत् ॥ ५७ ॥

लाल गृध्रके दोनों नेत्र और काले उल्लूका नेत्र लेकर काले उल्लूको लाकर उसे तेलसे प्रदीप्त करके और सब प्रकार सावधानी करके उसको सहतसे लपेटकर बत्ती बनाय काजर पारै उसका काजर नेत्रोंमें लगानेसे त्रिलोकी वशमें करसकता है ॥ ५७ ॥

देवदालीवासिद्धार्थंगुटिकांकारयेद्बुधः ॥
मुखेनिःक्षिप्यसर्वेषांप्रियोभवतिनान्यथा ॥ ५८ ॥
भृङ्गमूलंमुखेक्षिप्त्वासर्वस्संपूजितोभवेत् ॥
रोहिण्यांवटवन्दाङ्कंसङ्ग्राह्यंधारयेत्करे ॥ ५९ ॥

देवदाली (घघरवेल) सरसों इनका गुटका बनाकर मुखमें रखनेसे सबका प्रिय होताहै कहीं " देवदानव सिद्ध्यर्थं " पाठहै, कि देव दानवकी सिद्धिके निमित गुटिका करै इसमें संदेह नहीं, भांगरेकी जड़ मुखमें डालकर सर्वत्र पूजित होताहै रोहिणीनक्षत्रमें वटके बन्देको संग्रहकर हाथमें धारण करै ॥ ५९ ॥

वश्यंकरोतिसकलंविश्वामित्रेणभाषितम् ॥
कुङ्कुमन्तगरंकुष्टंहरितालंसमंत्रयम् ॥ ६० ॥

वह सबको वशीभूत करसकताहै ऐसा विश्वामित्रने कहाहै केशर (कश्मीरमें उत्पन्न) तगर कूठ हरिताल इनको बराबर लेकर ॥६०॥

अनामिकायारक्तेनतिलकंलोकवश्यकृत् ॥
विष्णुक्रांताशुभाभृंगीश्वदंष्ट्रा(ण्डा)मूलरोचनाम् ॥६१॥

कनऊंगलीके रक्तकेसाथ तिलक करनेसे सबलोक वशीभूत होजातेहैं विष्णुक्रान्ता भांगरा गोखरूकी जड़ गोरोचन ॥ ६१ ॥

पिष्ट्वातुवटिकांकृत्वातिलकंवशकृत्परम् ॥
पुष्योद्धृतंश्वेतभानुमूलंमूत्रैरजाभवैः ॥ ६२ ॥

इन सबको पीसकर गोली बनाले इनका तिलक करनेसे लोकवशीभूत होजातेहैं पुष्यनक्षत्रमें श्वेतमन्दारकी जड़ लेकर तथा जवासा यह अजामूत्रसेपीसे ॥ ६२ ॥

वटिकांकारयेत्प्राज्ञस्तिलकेनजगद्वशम् ॥
अजारक्तेनतन्मूलंपुष्यार्केपेषयेद्बुधः ॥ ६३ ॥

वटी बनाकर उसका तिलक करनेसे सब जगत् वशीभूत होजाताहै और भेडके रुधिरकेसाथ मन्दारकी जड़ पुष्यनक्षत्रमें पीसनेसे॥

कज्जलंपातयित्वातुचक्षुषीरञ्जयेन्नरः ॥
त्रैलोक्यंवशतांयातिदृष्टमात्रेनसंशयः ॥ ६४ ॥

उसमें काजर डालकर जो मनुष्य नेत्रोंमें लगावै तो देखतेही त्रिलोकी वशमें होजातीहै इसमें सन्देह नहीं ॥ ६४ ॥

मूलन्तुश्रवणाऋक्षेपिंडीतगरसंभवम् ॥
संग्राह्यंधारयेद्वश्यंकुरुतेसकलंजगत् ॥ ६५ ॥

श्रवण नक्षत्रमें पुष्करमूलकी जड लेकर तगर मिलाकर धारण करै तो सम्पूर्ण जगत् वशमें होजाता है ॥ ६५ ॥

कृष्णापराजितामूलंपुष्येणोद्धृत्यचूर्णयेत् ॥

गोघृतेनसमालोडच्यकज्जलंधारयेद्बुधः ॥ ६६ ॥

कृष्णक्रान्ताकोयलकी जड़ पुष्यनक्षत्रमें लाकर चूर्ण करै उसमें गौका घृत मिलाकर कज्जल धारण करै कहीं गोमूत्र लिखाहै॥ ६६॥

तेनैवाञ्जितमात्रेणवशीकुर्य्याज्जगत्रयम् ॥
पुत्रजीवकपत्रंचातिलकंरोचनायुतम् ॥ ६७ ॥

उसके आंजने मात्रसेही त्रिलोकी वशमें होजाती है, जियें पोते वृक्षके कोमल पत्तोंको पीसकर उसमें गोरोचन मिलाकर तिलक करनेसे ॥ ६७ ॥

प्रियोभवतिसर्वेषांनरःकृत्वाललाटके ॥
श्वेतापराजितामूलंतथाश्वेतजवाग्रजा (जयाल)(श्व)(योः)

इस मस्तकके तिलकके दर्शन करतेही सब मनुष्य इसको प्यार करने लगतेहैं, श्वेत विष्णुक्रान्ताकी जड तथा श्वेत गुडहर ॥ ६८ ॥

नासाग्रेतिलकंकृत्वावशीकुर्य्यान्नसंशयः ॥ ६९ ॥

नासाके अग्र भागमें इन दोनोंका तिलक लगानेसे वशीकरण होताहै इसमें सन्देह नहीं ॥ ६९ ॥

मंजिष्ठतोयदवचाशितसूर्यमूलैः
स्वीयाङ्गशोणितयुतैःसमकुष्टकैश्च ॥
कृत्वाललाटफलकेतिलकंकृतज्ञो
लोकत्रयंवशयतिक्षणमात्रकेण ॥ ७० ॥

मँजीठ मोथा वच श्वेतआककी जड़ अपने शरीरका रुधिर इनकी बराबर कूठ लेकर इनका तिलक मस्तकपर करनेसे क्षण मात्रमें त्रिलोकी वशमें होती है ॥ ७० ॥

शम्भोर्जलंचमधुकंचकृताञ्जलिश्च
हव्यंसमंनिजशरीरमलेनमिश्र (पिष्ट) म् ॥
आलेपभक्षणविधौतिलकेकृतेवा
योगोयमेवभुवनानिवशीकरोति ॥ ७१ ॥

शुद्धपारा सहत लज्जावन्ती हव्य और अपने शरीरका मल इनका लेपन भक्षण वा तिलक करनेसे सब भुवनोंको वशीभूत कर सकताहै ॥ ७१ ॥ कहीं " घृतंजलंचमधुकंच " पाठहै ॥

मूलंजटातगरमेषविषाणिकानां
पंचांगजंनिजशरीरमलंतथैव ॥
एकीकृतानिमधुनादिवसेकुजस्य
कुर्वंतिवक्रतिलकेनवशंजगन्ति ॥ ७२ ॥

रुद्रजटा तगर मेढासिंगी का पंचांग और अपने शरीरका मल इन सबको एकत्र कर मंगलके टेढा दिन तिलक लगानेसे त्रिलोकीको अपने वशमें कर सकताहै ॥ ७२ ॥

भृंगस्यपक्षयुगलंशुक (कुश) मांसयुक्तं
स्वानामिकारुधिरकर्णमलंस्वबीजम् ॥
एतानिलेपविधिनाप्यथभक्षणाद्वा
कुर्वंतिवश्यमखिलंजगदप्यकस्मात् ॥ ७३ ॥

भौंरेके दोनों पंख तोतेका मांस अनामिका उँगलीका रुधिर कानका मैल अपना वीर्य इनका लेप वा भक्षण करनेसे तत्काल जगत् वशमें होताहै इसमें सन्देह नहीं ॥ ७३ ॥

तालीशकुष्टतगरैःपरिलिप्यवर्त्तिं
सिद्धार्थतैलसहितांदृढपट्टवस्त्राम् ॥

पुंसःकपालफलकेविनिपातितेन
तेनांजनेनवशतांकिलयातिलोकः ॥ ७४ ॥

तालीस कूठ तगर इनका लेप करके दृढ़ रेशमी कपड़ेकी बत्ती बनावै और सरसों के तेलसे युक्तकर पुरुषके कपालमें कज्जल पार नेत्रोंमें आंजे तो तिससे जन निश्चय वशीभूत होजाते हैं ॥ ७४ ॥

गोरोचनापद्मपत्रंप्रियंगुंरक्तचन्दनम् ॥
एकीकृत्यांजयेन्नेत्रंयंपश्यतिवशोभवेत् ॥ ७५ ॥

गोरोचन पद्मपत्र प्रियंगु लालचन्दन इनको एकत्र कर नेत्रोंमें आंजनेसे जिसे देखे वह वशमें हो जाताहै ॥ ७५ ॥ इति सर्वजन-वशी करणम् । १०।११।१२।१३। १४ इत्यादि ३० तकयंत्रलिखने ॥

अथ राजवशीकरणम् ।

कुंकुमश्चन्दनश्चैवरोचनंशशिमिश्रितम् ॥
गवांक्षीरेणतिलकंराजवश्यकरंध्रुवम् ॥ ७६ ॥

कुमकुम चन्दन गोरोचन इनमें भीमसेनी कपूर मिलाकर गौके दूधसे युक्त कर तिलक करनेसे राजा अपने वशमें होजाताहै ॥ ७६ ॥

ॐह्रींसःअमुकंमेवशमानयस्वाहा ॥
पूर्वमेवसहस्त्रंजप्त्वानेनमंत्रेणसप्ताभिमंत्रितंतिलकंकार्यम्
चंपकस्यतुवन्दाकंकरेबध्वाप्रयत्नतः ॥
संगृह्यभरणीऋक्षेपुष्यर्क्षेवाविधानतः ॥ ७७ ॥

"ओंह्रींसः अमुकंमे वशमानय स्वाहा" यह मंत्र सहस्र बार पहले जपकर फिर सातवार इन औषधियोंको अभिमंत्रितकर तिलक लगावे । चम्पेके वन्देको यत्नपूर्वक भरणी नक्षत्रमें अथवा पुष्य नक्षत्रमें या विधानसे संग्रह करके हाथमें बांधे ॥ ७७ ॥

राजानंतत्क्षणादेवमनुष्योवशमानयेत् ॥
करेसुदर्शनामूलंबध्वाराजप्रियोभवेत् ॥ ७८ ॥

राजाको दिखानेसे उसीसमय राजा वशमें होजाताहै अथवा सुदर्शनाकी जड़ हाथमें बांधनेसे राजाका प्यारा होताहै ॥ ७८ ॥

इति राजवशी करणम् ।

अथ स्त्रीवशीकरणम् ।

पुष्येपुष्पंचसंगृह्यभरण्यान्तुफलंतथा ॥
शाखांचैवविशाखायांहस्तेपत्रंतथैवच ॥ ७९ ॥

पुष्यनक्षत्रमें कालेधतूरेके फूल भरणीमें फल विशाखामें शाखा हस्तमें पत्ते ॥ ७९ ॥

मूलेमूलंसमुद्धृत्यकृष्णोन्मत्तस्यतत्क्रमात् ॥
पिष्ट्वाकर्पूरसंयुक्तंकुंकुमंरोचनासमम् ॥ ८० ॥

मूलमें जड़ काले धतूरेकी लावै यह क्रमसे ग्रहणकर कपूर मिलाकर पीसे इसमें कुमकुम और गोरोचन मिलावै ॥ ८० ॥

तिलकात्स्त्रीवशंयातियदिसाक्षादरुंधती ॥
काकजंघावचाकुष्टंशुक्रशोणितमिश्रितम् ॥ ८१ ॥

इसका तिलक करनेसे कैसीभी स्त्रीहो वशमें होजातीहै चाहे साक्षात् अरुन्धती क्यों नहो काकजंघा (चौंटली) वच कूठ वीर्य और अपना रुधिर मिलाकर ॥ ८१ ॥

तद्दत्तेभोजनेबालास्मशानेरोदितिसदा ॥
ॐनमोभगवतेरुद्रायॐचामुण्डेअमुकींमेवशमानय
स्वाहा ॥ उक्तयोगानामयमेवमंत्रः ॥ प्रातर्मुखन्तुप्र
क्षाल्यसप्तवाराभिमंत्रितम् ॥यस्यानाम्नापिबेत्तोयंसा
स्त्रीवश्याभवेद्ध्रुवम् ॥ ८२ ॥

खवा देनेसे स्त्री सदा श्मशानमें रोदनकरतीहै "तद्धस्ते" भी पाठ है अर्थ उसके हाथसे खानेसे अर्थात् जीतेजी साथ न छोडकर मरने पर भी श्मशानमें सदा रोती है (ॐनमोभगवते रुद्राय चामुण्डे असुकीं मे वशमानय स्वाहा) ऊपर कहे योगका यह मंत्रहै सातवार मत्र पढकर अपना मुख सातवार धोनेसे जिस स्त्रीका नाम लेकर जलपिये वह स्त्री अवश्य वशमें हो जाती है ॥ ८२ ॥

ॐनमःक्षिप्रकामिनी(कर्माणि) अमुकींमेवशमानयस्वाहा
कृष्णापराजितामूलंताम्बूलेनसमायुतम् ॥
अवश्यायैस्त्रियैदद्याद्वश्याभवतिनान्यथा ॥
ॐ ह्रूंस्वाहा । अनेनाभिमन्त्र्यदद्यात् ॥ ८३ ॥

मंत्र यहहै " ओंनमः क्षिप्रकामिनी अमुकीं मे वशमानय स्वाहा" काली विष्णुक्रांताकी जड़ पानके साथ जो अवश्या स्त्रीको देताहै वह अवश्या स्त्री वशमें होजातीहै ओं ह्रूं स्वाहा इस मंत्रसे उपरोक्त औषधि अभिमंत्रित करदे ॥ ८३ ॥

साध्यसाधकनाम्नातुकृत्वासप्ताभिमन्त्रितम् ॥
दीयतेकुसुमंयस्यैसावश्याभवतिध्रुवम् ॥ ८४ ॥
सुसाधितोह्ययंमंत्रअवश्यंफलदायकः ॥
तस्मादिमंप्रयत्नेनसाधयेन्मंत्रमुत्तमम् ॥ ८५ ॥

साध्य साधक का नाम लेकर अर्थात् अपना और स्त्रीका सात वार अभिमंत्रित कर जिसको फूलदिये जायँ वह अवश्या वशमें होजातीहै ॥ ८४ ॥ साधना करनेसे यह मंत्र अवश्य फलका देनेवाला होताहै इसकारण इस उत्तम मंत्रको यत्नसे साधे ॥ ८५ ॥

ॐ ह्रूंस्वाहा । विशाखायान्तुवन्दाकंमंगलेचसमाहरेत् ॥
हस्तेबध्वातुकुरुतेवशतांवरयोषिताम् ॥ ८६ ॥

ओं हूं स्वाहा विशाखा नक्षत्रमें और मंगलवारमें दारुहलदीकी जड़ लाकर उसे हाथमें बांधकर श्रेष्ठ स्त्रियोंको अपने वशमें करताहै ८६॥

"ओंपाते वज्राय स्वाहा" इस मंत्रसे अभिमंत्रित कर बांधे ॥

३१ अंकके यंत्रको गोरोचनसे लिखकर देवदत्तके स्थानमें पृथ्वीमें गाडदे अर्थात् जिसे वशीभूत करनाहो उसके स्थानमें गाडे तो वह वशमें हो जाता है ।

३२ अंकका यंत्र गोरोचनसे भोज पत्र पर लिखकर वशमें होने वालेका नाम लिखकर सदा पुष्पवाले वृक्षके नीचे स्थापन करै सात रात्रिमें वशमें हो जाता है ।

३३ अंकका यंत्र भोजपत्र पर लालचन्दनसे लिखकर और वशमें होनेवालेका नाम लिखकर घीके बीचमें तीन रात्रितक स्थापन करनेसे वशीभूत हो जाताहै बीचमें उसका नाम लिखे ।

३४ अंकके यंत्रको और वशमें होनेवालेके नामको कनिष्ठिका उँगलीके रुधिरसे गोरोचनसे लिखकर सहतके बीचमें स्थापनकरै वह अवश्य वशीभूत होजाताहै ।

३५ अंकका यंत्र गोरोचनसे जिसके नामसहित लिखकर लाल डोरेसे लपेटकर हाथमें बांधे वह वशमें होजाताहै ।

३६ अंकवाला यंत्र गोरोचनसे लिख बीचमें साध्यका नाम लिखकर घृत और सहतमें स्थापनकरै वह अपने वशमें होजाताहै ।

ॐ पातेवज्रायस्वाहा। अनेनाभिमंत्र्यबंधयेत् ॥

कृष्णोत्पलंमधुकरस्यचपक्षयुग्मंमूलन्तथातगरजंसित काकजंघा । यस्याःशिरोगतमिदंविहितंविचूर्णंदासीभवे ज्झटितिसातरुणीविचित्रम् ॥ ८७ ॥

काले कमल, भौंरेके दोनों पंख पुष्करमूल तगर श्वेतकाकजंघा इन सबका चूर्णकर जिसके शिरपर डाले वह स्त्री झट दासी होजा-तीहै इसमें सन्देह नहीं ॥ ८७ ॥ कहीं मोर पंख लिखाहै.

सव्येनपाणिकमलेनरतावसानेयोरेतसानिजभवेनवि
लासिनीनाम् ॥ वामंविलंपतिपदंसहसैवयस्यावश्यैव
साभवतिनात्रविकल्पभावः ॥ ८८ ॥

जो मनुष्य रतिके अन्तमें सव्य (बायें) हाथसे अपना वीर्य स्त्रीके वामचरणके तलुएमें मलताहै वह स्त्री उसके वशमें होजाती है इसमें संदेह नहीं ॥ ८८ ॥

सिंधूत्थमाक्षिककपोतमलानिपिष्ट्वालिंगंविलिप्यतरु
णींरमतेनवोढाम्।सान्यंनयातिपुरुषंमनसापिनूनंदासी
भवेदितिमनोहरदिव्यमूर्त्तिः ॥ ८९ ॥

जो मनुष्य सैंधानोंन सहत कबूतरकी बीटको पीसकर मदनांकुशमें लेपकर तरुणीसे रमण करताहै वह स्त्री मनसेभी दूसरे पुरुषके पास नहीं जाती और सदैवकाल पुरुषकी दासी होजातीहै और मनोहर दिव्य मूर्ति मान्तीहै ॥ ८९ ॥

गोरोचनाशिशिरदीधितिशंभुबीजैःकाश्मीरचन्दन
युतैःकनकद्रवैश्च । लिप्त्वाध्वजंपरिरमत्यबलांनरोयां
तस्याःसएवहृदयेमुकुटत्वमेति ॥ ९० ॥

गोरोचन कुमुद और पारा केशर चन्दन धतूरेकारस इनको मदनांकुश पर लेपकर जो रमणकरै वह उसके हृदयसे क्षणमात्रका पृथक् नहीं होता ॥ ९० ॥

पुष्येरुद्रजटामूलंमुखस्थंकारयेद्बुधः ॥
ताम्बूलादौप्रदातव्यंवश्याभवतिनिश्चितम् ॥ ९१ ॥

पुष्य नक्षत्रमें रुद्रजटा (शंकरजटा) की जड़ मुखमें धारणकर ताम्बूलादिमें जिसको दे वह वशमें होजातीहै ॥ ९१ ॥

तथैवपाटलामूलंताम्बूलेनतुवश्यकृत् ॥
त्रिपत्रभंटिकामूलंपिष्ट्वागात्रेतुसंक्षिपेत् ॥ ९२ ॥

इसी प्रकार पाढलकी जड़ ताम्बूलके साथ देनेसे वशीभूत करती है बेल तथा मँजीठकी जड़ पीसकर एक कणभी जिसके शरीरपर डाले ॥ ९२ ॥

यस्यास्सावशतांयातिबिन्दुमात्रेणतत्क्षणात् ॥
स्वकीयकाममादायकामदेवंस्मरेत्पुनः ॥ ९३ ॥

वह अवश्य वशमें होजातीहै इसमें सन्देह नहीं अपने वीर्यको लेकर कामदेवका स्मरण करै ॥ ९३ ॥

तरुण्याह्वदयेदत्तंतत्क्षणात्स्त्रीवशाभवेत् ॥
गिलित्वापारदंकिंचिद्रम्यतेनायिकायदि ॥ ९४ ॥
प्राणान्तेपिचसानारीतंनरंनविमुञ्चति ॥
कामाक्रान्तेनचित्तेनमासार्द्धंजपतेनिशि ॥ ९५ ॥

और तरुणीके हृदयमें रखनेसे तत्काल स्त्री वशमें होजाती है कुछेक शोधे पारेको निगलकर यदि स्त्रीके साथ रमण करै तो प्राणान्त पर्यंत वह स्त्री उस पुरुषको नहीं छोडतीहै काययुक्त चित्त होकर रात्रिके समय जो पन्द्रह दिनतक जप करताहै ॥ ९४॥९५॥

अवश्यंकुरुतेवश्यंप्रसन्नोविश्वचेटकः ॥ ९६ ॥

तौ यह साधक विश्वभरको निश्चयही अपने वशीभूत कर सकता है ॥ ९६ ॥

ऐंपिंस्थांक्लींकामपिशाचिनीशीघ्रं
अमुकींग्राहय२कामेनममरूपेणनखैर्विदारय २
द्रावय२स्नेहेनबंधय२श्रींफट्।अयुतद्वयेनासिद्धिः

नागपुष्पंप्रियंगुश्चतगरंपद्मकेसरम् ॥
जटामांसींसमंनिम्बंचूर्णयेन्मंत्रवित्तमः ॥ ९७ ॥

ऐं पिंस्थांक्लींकामपिशाचिनी शीघ्रं अमुकीं ग्राह्य२ कामेन ममरूपेण नखैर्विदारय विदारय विद्रावय २ स्नेहेन बंधय २ श्राफट् ॥ वीस सहस्र जपकरनेसे सिद्धि होतीहै कहीं मंत्रमें ऐंपिस्त्री पाठहै नागपुष्प प्रियंगु तगर पद्मकेशर जटामांसी इनके समान नीमका-चूर्ण लेना चाहिये ॥ ९७ ॥

स्वाङ्गंतुधूपयेत्तेनभजतेकामवत्स्त्रियः ॥
ॐमूलीमूलीमहामूलीसर्वसंक्षोभयए
भ्यउपद्रवेभ्यःस्वाहा ॥ धूपमंत्रः ॥
पानीयस्यांजलीन्सप्तकृत्वाविद्यामिमांजपेत् ॥
सालंकारांनरःकन्यांलभतेमासमात्रतः ॥ ९८ ॥

इससे अपने अंगको धूपित करै तौ स्त्री काम देवके समान अपने पतिको मानती है मंत्र यह है ॐ मूली मूली महा मूली सर्व संक्षोभय २ एभ्यउपद्रवेभ्यःस्वाहा यह धूपका मंत्रहै अंजलीमें जल लेकर इस विद्याको जपै तौ एक मासमें अलंकार युक्त स्त्रीको प्राप्त होताहै ॥ १० ॥

ॐविश्वावसुर्नामगंधर्वःकन्यानामाधिपतिस्सुरूपांसा
लंकृतांकन्यान्देहिनमस्तस्मैविश्वावसवेस्वाहा ॥
कन्यागृहेशालकाष्ठंक्षिपेदेकादशांगुलम् ॥
ऋक्षेचपूर्वफाल्गुन्यांयस्तांकन्यांप्रयच्छति ॥ ९९ ॥
इति स्त्रीवशीकरणम् । ३१ वाँ यंत्रलिखै ॥

ओं विश्वावसुर्नाम गंधर्वः कन्यानामधिपतिः स्वरूपां सालंकृतां कन्यां देहिनमस्तस्मै विश्वावसवे स्वाहा यह मंत्रहै । कन्याके घरमें ग्यारह अंगुलका शालकाष्ठ पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमें डालदे कन्या उसको स्वीकार करैगी ॥ ९९ ॥

अथ पतिवशीकरणम् ।

खंजरीटस्यमांसन्तु मधुनासहपेषयेत् ॥
अनेनयोनिलेपेनपतिर्दासोभवेद्ध्रुवम् ॥ १०० ॥

अथ पतिवशीकरणम् ॥ खंजरीटकामांस शहतके साथ पीसि जो स्त्री अपनी योनि में लेपन करै तौ उसका पति दासकीतरह वशमें होजाताहै ॥ १०० ॥

पंचांगंदाडिमंपिष्ट्वाश्वेतसर्षपसंयुतम् ॥
योनिलेपात्पतिन्दासंकरोत्यपिचदुर्भगा ॥ १ ॥

श्वेत सरसोंके सहित दाडिमके पंचांग पीसकर योनिमें लेपन करनेसे दुर्भागिनीभी पतिको अपना दास करतीहै ॥ १ ॥

कर्पूरं देवदारुंचसक्षौद्रंपूर्ववत्फलम् ॥ २ ॥

और इसी प्रकार कर्पूर देवदारु सहत यह पूर्ववत् फलके देने वाले हैं ॥ २ ॥

ॐकामकाममालिनीपतिंमेवशमानयठःठः ॥
उक्तयोगानांसप्ताभिमंत्रितेसिद्धिः ॥
रोचनामत्स्यपित्तंचपिष्ट्वापितिलकेकृते ॥
वामहस्तकनिष्ठायांपतिर्दासोभवेद्ध्रुवम् ॥ ३ ॥

(ओं कामकाममालिनीपतिंमे वशमानय ठः ठः)सात वार उपरोक्त औषधियोंको अभिमंत्रितकर प्रयोग करै । गोरोचन मच्छीका पित्ता पीसकर तिलक करनेसे अर्थात् बायें हाथकी कनिष्ठिका उँगलीसे तिलक लगानेसे निश्चय पति अपना दास होजाताहै ॥ ३ ॥

स्वशोणितंरोचनयातिलकंपतिवश्यकृत् ॥
चित्रकस्यतुपुष्पाणिमधुयुक्तानिकारयेत् ॥ ४ ॥

तथा अपने रुधिरमें गोरोचन मिलाय तिलक करनेसे पति अपने वशमें होजाताहै चीतेके फूल सहतके साथ मिलाकर ॥ ४ ॥

खानेपानेप्रदातव्यंपतिवश्यकरंभवेत् ॥
भूर्जपत्रंचमधुनायोनिलेपेपतिर्वशः ॥ ५ ॥

अन्न वा पानमें देनेसे अवश्य पति अपने वशमें हो जाता है अथवा सहतमें भोजपत्र मिलाकर योनिमें लेप करनेसे पति अपने वशमें होजाताहै ॥ ५ ॥

जलौकसांमुखेदेयंशंबूशंखादिचूर्णकम् ॥
तच्चूर्णंतुसमागृह्यताम्बूलेनसमायुतम् ॥ ६ ॥

और शुद्ध पारा और शंखका चूर्ण लेकर जल जीवोंके मुखमें दे उस चूर्णको ताम्बूलमें मिलाकर ॥ ६ ॥

दातव्यंस्वामिनेभोक्तुंवश्योभवतिनान्यथा ॥
गोरोचनानलदकुंकुमभावितायास्तस्याःसदैवकुरुतेति
लकंवशित्वम् ॥ वात्स्यायनेनबहुधाप्रमदाजनानां
सौभाग्यकृत्यसमयेप्रकटीकृतोसौ ॥ ७ ॥

स्वामीको भोजनके निमित्त दे तौ अवश्य पति वशमें होजाताहै गोरोचन नलद (खस) कुमकुम इनको मिलाकर तिलक करनेसे वशीकरण होताहै यह वात्स्यायन ऋषिने स्त्रियोंकी सौभाग्य वृद्धिके निमित्त प्रगट किया है ॥ ७ ॥

सम्भोगशेषसमयेनिजकान्तमेढ्रंयाकामिनीस्पृशति
वामपदाम्बुजेन ॥ तस्याःपतिस्सपादविन्दतिदास

भावंगोणीसुतेनकथितःकिलयोगराजः ॥ ८ ॥

इतिपतिवशीकरणम् ।

इतिश्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेवशीकरणंनामप्रथमोपदेशः ॥ १ ॥

सम्भोगके समय जो स्त्री अपने पतिकी ध्वजाको वामचरणसे छूती है उसका पति सदैव दास होजाताहै यह योगराज गोणी पुत्रने कहा है ॥ ८ ॥ इति पतिवशीकरणम् ।

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पंडित ज्वालाप्रसादमिश्रकृत भाषाटीकायांवशीकरणंनामप्रथमोपदेशः ॥ १ ॥

अथाकर्षणम् ।

चतुर्थवर्णमाकृष्यद्वितीयवर्गसंस्थतम् ॥ कृत्वात्रि विधहाहांततदन्तंहेद्वितीयकम्॥अंकारशिरसंकृत्वा प्रत्यक्षरप्रजापनम् ॥ सहस्रार्द्धस्यजापेनफलंभवति शाश्वतम् ॥ १ ॥ २ ॥

अथ आकर्षणम् । द्वितिय वर्गमें होनेवाला चौथा वर्णसे तीन संयुक्तकर अर्थात् झकारत्रय इनमें आकार अग्रे आकार सहित तीन हकार योजना कर पश्चात् एकारसहित दो हकार मिला सब ऊपर अनुस्वार लगाकर ओंकार प्रथम लगाकर पांचसौ जप करनेसे पूर्णफल होताहै ॥ १ ॥ २ ॥

मन्त्र यह है।

झां झां झां हां हां हां हें हें

मंत्र यह है झां ३ हां ३ हें २ ॥

मानुषासुरदेवाश्चसयक्षोरगराक्षसाः ।
स्थावराजंगमाश्चैव आकृष्टास्तेवरांगने ॥ ३ ॥

मनुष्य असुर देवता यक्ष उरग राक्षस स्थावर जंगम यह सब इससे आकर्षित होतेहैं कहीं झूं ३ पाठ है ॥ ३ ॥

हान्तेरेफंसमादाययकारस्तुविशेषतः ॥
अक्षरत्रितयंतच्चद्विधाकृत्वाप्रजापयेत् ॥ ४ ॥

हकारके अन्तमें रेफ लगाकर और यकारसहित अक्षरको संयुक्त करके दोप्रकारकर जपकरै ॥ ४ ॥

भक्ष्यंद्रव्यंस्वहस्तेनकृत्वामंत्रविभावनम् ॥
दीयतेयस्यभक्ष्यन्तत्सर्वेषांप्राणिनांशुभे ॥ ५ ॥

और भक्ष्यद्रव्यको अपने हाथसे बनाकर उसमें मंत्रकी भावना करकै उसके भक्षण करनेसे सबप्राणी ॥ ५ ॥

तेसर्वेयत्रनीयन्तेतत्रगच्छंतितत्क्षणात् ॥
मन्त्रः । हरय २ ह्रींकारेमंत्रयेत्पाशंहूंकारेणाङ्कु
शन्तथा । त्रिफलंवामगंपाशंदक्षिणेज्वलितांकुशम्॥६ ॥

जहां लेजाओ वहीं तत्काल गमनकरने लगतेहैं,मंत्र यहहै हरय २ ह्रीं से पाशको अभिमंत्रितकर हूं से अंकुशको अभिमंत्रितकर, त्रिफल वाम और पाशको, दक्षिण और प्रज्वलित अंकुशको ॥ ६॥

संधार्य स्वकरेमंत्रीततोमंत्रमिमंजपेत् ॥ ७ ॥

मंत्रवाला अपने हाथमें धारणकर, फिर इसमंत्रको जपै॥ ७ ॥

ॐ ह्रींरक्ष २ चामुण्डेतुरु २ अमुकीमाकर्षय २ ह्रीं अस्यमंत्रस्यपूर्वमेवायुतंजपेत्सिद्धिः । ॐ चामुण्डे ज्वल २ प्रज्वल २ स्वाहा । अमुंमंत्रं स्त्रियंदृष्ट्वाजपेत्तत्क्षणात्सास्त्रीपृष्ठतः समागच्छतिपू र्वमयुतंजपेत्ततस्सिद्धिः । आश्लेषायांसमादायअर्जु नस्यतुवृध्नकम् । अजामूत्रेणसंपिष्यस्त्रीणांशिरसि दापयेत् ॥ पुरुषस्यपशूनांवाक्षिपेदाकर्षणंभवेत् ।

साध्यानामपदस्थांतांमृत्तिकामाहरेत्ततः ॥ कृकला
सस्यरक्तेनप्रतिमांकारयेत्ततः । साध्यानामाक्षरंत
स्यास्तद्रक्तैर्विलिखेद्धृदि ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

"ॐ ह्रीं रक्ष २ चामुण्डेतुरु २ अमुकीमाकर्षय २ ह्रींह्रीं" प्रथम यह मंत्र १०००० वार जपनेसे पश्चात् सिद्धि होतीहै ॥ इसअगले मंत्र को स्त्रीको देखकर जपै तो तत्काल स्त्री उसके पीछे पीछे चली-आतीहै वह मंत्र यहहै ॐचामुण्डेज्वल २ प्रज्वल २ स्वाहा २ यह मंत्रभी प्रथम १०००० जपनेसे सिद्धि होतीहै आश्लेषा नक्षत्रमें अर्जुन वृक्षसे वन्देको लावै, बकरीके मूत्रसे पीसकर जिस स्त्रीके शिरपर डालै अथवा जिस पुरुष वा पशुके ऊपर डालै वह तत्काल आकर्षित होजाता है, जिसका आकर्षण करना हो उसके वामचरणके नीचेकी मृत्तिका लाकर गिरगटकेरुधिरसे उस मट्टीका पुतला बनावै और हृदयमें उसके रुधिरसे आकर्षणवाले प्राणीका नाम लिखै ॥८॥ ९ ॥ १० ॥

मूत्रस्थानेचनिखनेत्सदातत्रैवमूत्रयेत् । आकर्षयेत्तु
तांनारींशतयोजनसंस्थिताम् ॥ सूर्य्यावर्त्तस्यमूल
न्तुपंचम्यांग्राहयेद्बुधः । ताम्बूलेनसमन्दद्यात्स्वयमा
यातितत्क्षणात् ॥ रतिकर्म्मकरौग्राह्यौभ्रमरौयत्नतो
बुधैः । भिन्नौकृत्वादहेत्तौतुचिताकाष्ठैस्तयोःपुनः ॥
वस्त्रेणबंधयेद्भस्मपृथग्वैपुट्टलीद्वयम् । तयोरेकाम
जाशृंगेदृढंबद्धापरीक्षयेत् ॥ ११ ॥ १२ ॥१३॥ १४ ॥

और मूत्रस्थानपर गाडकर सदा उसीस्थानमें मूत्रकरै, सौयोजन-पर स्थित हुईभी स्त्री आकर्षित होजातीहै, बुद्धिमान् पंचमीकेदिन सूर्यावर्त (शाकविशेषक्षुप हुड़हुड़िया) की जड़ लावै जिसको पानमें मिलाकर दे वह तत्काल पीछेरस्वयम् आजातीहै, जिस समय

भौंरा भौंरी रतिकरतेहों उससमय उनको ग्रहण करके अलग करके चिता काष्ठमें उनको जलादे और उनकी भस्म पृथक् पृथक् वस्त्रमें ग्रहणकर पोटली बनाले उनमेंसे एकको बकरीके सींगमें दृढ बांधकर परीक्षाकरै ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥

यांयांयातिचसामेषीसापृथग्गृह्यतेबुधैः । तद्भस्मशिर सिन्यस्तंक्षणादाकर्षयेत्स्त्रियः । अपरंरक्षयेद्वस्त्रेनोचे न्नायातिकामिनी । ॐ कृष्णवर्णायस्वाहा । इमंमंत्रं पूर्वमेकायुतंजपेत्ततउक्तयोगमभिमंत्र्यसिद्धिः॥१६॥

इति श्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेआकर्षणंनामद्वितीयोपदेशः ।

जिस जिसको वह स्पर्श करै उसकी पृथक् रक्षाकरै उस भस्मको शिरपर डालनेसे तत्काल स्त्री आकर्षित होतीहै और दूसरीको वस्त्रमें रक्षाकरै नहीं तो स्त्री कदाचित् नहीं आवेगी "ॐकृष्णवर्णाय स्वाहा" इसमंत्रको १०००० जपनेसे उक्तयोगकी सिद्धि होतीहै १६ ३६ से ५० तक यंत्र देखो ।

इति श्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेआकर्षणं नामद्वितीयोपदेशः ।

अथजयः ।

हकारंस्वरसंयुक्तंउकारेणसुपूजितम् ॥
ओंकारेणचसंपूज्यअग्रेफट्विनियोजयेत् ॥ १ ॥

हकार स्वर संयुक्त उकारसे पूजित और ॐकार युक्तकर अन्तमें फट् लगावै ॥ १ ॥

ॐ हुंफट् ।
जेयाग्रेशतजापेनजितोभवतिनान्यथा ॥
जेयनामहृदिन्यस्यचक्षुषातान्निमील्यच ॥ २ ॥

ॐहुंफट् जेय अर्थात् जिसके जीतनेकी इच्छा हो उस पुरुषके

आगे सौ वार जपनेसे जीता जाताहै इसमें सन्देह नहीं जो कोई हो नामको हृदयमें रखकर नेत्रसे उसको निरीक्षण करके ॥ २ ॥

स्पृष्ट्वाचमंत्रजापेनतत्क्षणाज्जितवानसौ ॥
गोजिह्वाशिखिमूलीवामुखेशिरसिसंस्थिता ॥ ३ ॥

और स्पर्शकर मंत्र जपनेसे यह तत्काल जीतलिया जाताहै गाजुवाँ चीता पुष्करमूल शिरपर रखनेसे ॥ ३ ॥

कुरुतेसर्ववादेषुजयंपुष्येसमुद्धृता ॥
मार्गशीर्षस्यपूर्णायांशिखीमूलंसमुद्धरेत् ॥ ४ ॥

और पुष्यनक्षत्रमें उखाड़कर लानेसे सब वादमें जय करतेहैं, मार्गशीर्षकी पूर्णमासीको शिखाकी मूल उखाड़कर लावे ॥ ४ ॥

बाहौशिरसिवाधार्य्यांविवादेविजयोभवेत् ॥
गिरिकर्णीशमींमुंजांश्वेतवर्णांसमाहरेत् ॥ ५ ॥

भुजामें और शिरपर धारण करनेसे सब विवादमें जय प्राप्त करताहै, इसमें सन्देह नहीं, गिरिकर्णी (कोयल) शमी (झंड) श्वेत चौंटली इनको लेकर ॥ ५ ॥

चन्दनेनान्वितंसर्वंतिलकेनजयीभवेत् ॥
कनकार्कवटोवह्निर्विद्रुमःपंचमस्तथा ॥ ६ ॥

चन्दनसे युक्तकर तिलक लगानेसे युद्धमें जयी होताहै ॥ धतूरा आक वड चीता मूंगा ॥ ६ ॥

तिलकंकुरुतेयस्तुपश्येत्तंपञ्चधारिपुः ॥
कृष्णसर्पकपालेतुवसामृत्तिकयान्विते ॥ ७ ॥

इनका जो तिलक लगाता है उसको शत्रु पांच प्रकारसे देखताहै, अपनेसे पचगुना जान्ताहै कालेसांपकी खोपड़ीमें युद्धकी मृत्तिका युक्तकर ॥ ७ ॥

सितगुंजांवपेत्तत्रतस्यामूलंसमाहरेत् ॥
कृततिलकंतदादृष्ट्वापश्येत्स्वंसम्भृतंरिपुः ॥ ८ ॥

श्वेत चौंटली बोवे, उसकी जड़ लेकर तिलक करनेसे शत्रुको सब प्रकारसे रक्षित दिखाई देता है ॥ ८ ॥

श्वगणैर्भक्ष्यमाणंचपतितंचततोभुवि ॥
औषधोसिंहिकानामतयाघृष्टोमहारसः ॥ ९ ॥

श्वगणोंके भक्षण करनेसे जो पृथ्वीपर गिरी सिंहिका नाम औषधीका महारस घिसे कहीं "स्वगणैः" स्वगतैः पाठहै ॥ ९ ॥

सिंहीकपर्दिकामध्येक्षेप्यस्तन्मूलसंयुतः ॥
पिधायवदनन्तस्यालिक्थकेनसमन्वितः ॥ १० ॥

उस सिंहिका (कटेरी) को कौड़ीके बीचमें रखले कटेरीकी जड़के सहित उसका मुख मोमसे बन्द करै ॥ १० ॥

तस्यांवक्त्रस्थितायांतुसिंहवज्ज्ञायतेनरः ॥
रणेराजकुलेद्यूतेविवादेचापराजितः ॥ ११ ॥

उसके मुखमें स्थितहोनेसे यह मनुष्य सिंहके समान होजाताहै युद्धमें राजकुलमें जुएँ अथवा वादमें कहींभी पराजित नहीं होताहै ११

मदोन्मत्तोगजस्तस्यदर्शनेनपराङ्मुखः ॥
व्याघ्रीरसेनसंघृष्टःपारदोमूलसंयुतः ॥
पूर्ववत्साधयेद्व्याघ्रींफलंचैवतथाविधम् ॥ १२ ॥

उसे देखकर मदोन्मत्त हाथीभी पराङ्मुख होजाता है व्याघ्री (कटेरी) के फलमें मूल सहित पारा घिसनेसे पूर्ववत् यह कटेरी जयकी प्राप्ति करती है इसमें सन्देह नहीं ॥ १२ ॥

करेसुदर्शनामूलंबद्ध्वाराजकुलेजयी ॥
जयामूलंराजकुलेमुखसंस्थंजयप्रदम् ॥ १३ ॥

सुदर्शनाकी जड़ हाथमें बांधनेसे राजकुलमें मुकदमेंमें जय प्राप्त होताहै और जया (जयन्ती) की जड़ मुखमें रखनेसे राज कुलमें जय प्राप्त होती है ॥ १३ ॥

आर्द्रायाम्वटवन्दाकंहस्तेबद्धाऽपराजितः ॥
तद्दक्षेचूतवन्दाकंगृहीत्वाधारयेत्करे ॥ १४ ॥

आर्द्रा नक्षत्रमें वटके वन्देको हाथमें बांधनेसे जयी होताहै इसी प्रकार आर्द्रामें आमका वन्दा हाथमें धारण करनेसे ॥ १४ ॥

संग्रामेजयमाप्नोतिजयांस्मृत्वाजयीभवेत् ॥
कोकायानयनंवामंगुडलोहेनवेष्टयेत् ॥ १५ ॥

जहां जाय जय प्राप्त होताहै तथा जयन्ती को स्मरण करनेसे (रणमें) जय प्राप्त होतीहै । कोकाका बायांनेत्र गुड और लोहेमें लपेटकर ॥ १५ ॥

मुखेप्रक्षिप्यचनरःसर्ववादेजयीभवेत् ॥
कृत्तिकाचविशाखाचभौमवारेणसंयुता ॥ १६ ॥

वह मुखपर लेपकरनेसे मनुष्य सम्पूर्ण वादोंमें जय प्राप्त करता है जब कृत्तिका और विशाखा नक्षत्रसे युक्त भौम वार हो तौ ॥ १६ ॥

तद्दिनेघटितंशस्त्रंसंग्रामेजयदायकम् ॥
अपामार्गरसेनैवयानिशस्त्राणिलिप्यते ॥ १७ ॥

तिस दिनमें बनाहुआ शस्त्र संग्राममें जय दायक होता है चिरचिटेके रसमें जितने शस्त्र लिप्त किये जायँ ॥ १७ ॥

जायन्तेतानिसंग्रामेवज्रसाराणिनिश्चितम् ॥
पूर्वोक्तमंत्रराजेनसर्वाण्येतानिमंत्रयेत् ॥ १८ ॥

वे संग्राममें वज्रसारकी समान होजाते हैं इसमें सन्देह नहीं पूर्वोक्त मन्त्रराज द्वारा सम्पूर्ण अस्त्रोंको अभिमंत्रित करै ॥ १८ ॥

सर्वेषामुक्तयोगानांसिद्धिर्भवतितेध्रुवम् ॥
हस्तार्कलांगलीमूलंमूलमंत्राभिमंत्रितम् ॥ १९ ॥
तच्चूर्णोद्वर्त्तनान्मल्लोमल्लान्मोहयतेबहून् ॥ २० ॥
मन्त्रःॐ नमोमहाबलपराक्रमशस्त्रविद्याविशारद अमुकस्यभुजबलंबंधयबंधयदृष्टिंस्तम्भयस्तंभयअङ्गानि धूनय२पातय२महीतलेहूं ॥ इतिविजयप्रकरणम् ॥

तो निश्चय सम्पूर्ण योगोंकी सिद्धि होती है, हस्त नक्षत्रमें लांगली (कलिहारी) की जड़को मूल मन्त्रसे अभिमंत्रित करके उसके चूर्णको छोटा पहलवान शरीरमें मलकर दूसरे पहलवानको पछाड़ सक्ताहै मंत्र यह है " ओंनमो महाबल पराक्रम शस्त्र विद्या विशारद अमुकस्य भुजबलं बंधय बंधय दृष्टि स्तंभय स्तंभय अङ्गानि धूनय २ पातय २ महीतलेहूं " ५३से ६५ तक यंत्र लिखे॥१९॥२०॥

इति विजय प्रकरणम् ॥

अथ सौभाग्यम् ॥

पुष्योद्धृतंसितार्कस्यमूलंवामेतरेभुजे ॥
बध्वासौभाग्यमाप्नोतिस्वामिनोदुर्भगापिसा ॥ २१ ॥

अथ सौभाग्य प्रकरणम्॥ श्वेत आककी जड पुष्य नक्षत्रमें उखाड़कर दहिनी भुजामें बांधनेसे दुर्भगास्त्रीभी स्वामीसे सौभाग्यको प्राप्त होती है ॥ २१ ॥

रक्तचित्रकमूलन्तुसोमग्रस्तेसमुद्धृतम् ॥
क्षौद्रैःपिष्ट्वावटीःकुर्य्यात्तिलकैस्सुभगांगना ॥ २२ ॥

चन्द्र ग्रहणमें रक्तचीतेकी जड़ उखाड़कर शहदसे पीसकर तिलक लगानेसे सौभाग्य होताहै । ६६ । ६७ । ६८ । ७१ । ७२ अंकके यंत्र लिखे ॥ २२ ॥ इति सौभाग्यम् ॥

अथेश्वरादीनांक्रोधोपशमनम् ।
ॐ शांतिप्रशान्तेसर्वक्रुद्धोपशमानिस्वाहा । अनेनमंत्रेणत्रिसप्तधाजप्तेनमुखमार्जनात्क्रोधोपशमनंभवति । प्रसादपरोभवतिइतीश्वरादीनांक्रोधोपशमनम्॥
अथगजनिवारणम् ।गृहीत्वाशुभनक्षत्रेचूर्णयेत्तांछुछुन्दरीम् ॥तल्लेपेनगजोयातिदूरेणखलुसंमुखम् ॥२३॥

ईश्वर आदिकोंका क्रोध शान्तकरना ॥ ओं शान्ते प्रशान्ते सर्व क्रुद्धोपशमनिस्वाहा इस मंत्रसे २१ वार जपकर मुखधोवे तो क्रोध शान्त होता है । और प्रसाद करनेवाला होता है इति ६९ । ७० । ७५ यंत्र देखो ॥

शुभ नक्षत्रमें ग्रहणकर छुछूंदरको भली प्रकार चूर्ण करै इसके लेप करनेसे देखतेही हाथी भाग जाता है ॥ २३ ॥

बिल्वपुष्पस्यचूर्णन्तुछुछुन्दर्याश्चतत्समम् ॥
तल्लिप्तांगंनरंदृष्ट्वादूरेगच्छतिकुंजरः ॥ २४ ॥

बेलके फूलका चूर्ण छुछुंदरके साथ शरीरके ऊपर लेप करनेसे हाथी दूरसे भागजाता है ॥ २४ ॥

मूलंमर्कटवल्याश्चबाहौबद्धंचमूर्द्धनि ।
दुष्टदंतिहरंदूरंचित्रंसंयातिजायते ॥ २५ ॥

कौंचकी जड़ बाहु और शिरपर बांधनेसे दुष्ट हाथी दूरसे भाग जाताहै चित्रसा होजाताहै ॥ २५ ॥

श्वेतापराजितामूलंहस्तस्थंवारयेद्गजम् ॥
मूलेंत्रिशूल्यावक्त्रस्थंगजवश्यकरंध्रुवम् ॥ २६ ॥
इति गजनिवारणम् ।

श्वेत विष्णुक्रान्ताकी जड़ हाथमें रखनेसे हाथी निवार ण होताहै त्रिशूली (बेल) की जड़ मुखमें रखनेसे हाथी वशमें होजाताहै ॥ २६ ॥

इति गजनिवारणम् ॥

अथ व्याघ्रनिवारणम् ।

मुखस्थंबृहतीमूलंहस्तस्थंव्याघ्रभीतिजित् ॥
ह्लींह्लींश्रींद्रौंद्रौंहिएति अथवा क्रीं ह्रीं ओं ह्लीं ह्लीं ॥
इत्यष्टाक्षरमंत्रेणलोष्टंपठित्वाक्षिपेत् ॥
तदामुखंनचालयातिगंतुमशक्तः ॥
मूलंकृष्णचतुर्दश्यांग्राहयेल्लांगलीभवम् ॥
हस्तस्थंव्याघ्रसिंहादिभयहृत्परिकीर्तितम् ॥ २७॥

इतिव्याघ्रनिवारणम् ॥

इतिश्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेविजयादिव्याघ्रनिवारणं नामतृतीयोपदेशः ॥ ३ ॥

अथ व्याघ्रनिवारणम् ॥ कटेहरीकी जड़को हाथमें वा मुखमें रखनेसे व्याघ्रका भय दूर होजाताहै ह्रीं ह्रीं श्रीं द्रौं द्रौं हि एति इस मंत्रसे आठवार मिट्टीको पढकर व्याघ्रके ऊपर फेंके तब न वह मुख चलासकैगा न चलसकैगा कृष्णपक्षकी चौदसको कलिहारीकी जड़ ग्रहण करै वह हाथमें रखनेसेही सिंहव्याघ्रादिका भय दूर होजाताहै ॥२७ ॥

इति व्याघ्रनिवारणम् ।

इति श्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्ने पण्डितज्वालाप्रसादमिश्रकृत भाषाटीकायां विजयादिव्याघ्रनिवारणंनाम तृतीयोपदेशः ॥ २ ॥

अथ शत्रूणाम्मुखस्तम्भनम् ।

मेघनादस्यमूलन्तुमुखस्थंतारवेष्टितम् ॥
परवादीभवेन्मूकोऽथवायातिदिगन्तरम् ॥ १ ॥

नागरमोथा की जड़का चांदीमें लपेटकर मुखमें रखनेसे वादी मूक होजायगा या दिशाओंके अन्तको चलाजायगा ॥ १ ॥

श्वेतगुंजोत्थितंमूलंमुखस्थंपुष्टतुंडजित् ॥
ॐह्रींरक्षचामुण्डेतुरुतुरुअमुकंमेवशमानयस्वाहा ॥२॥

श्वेत चौंटलीकी जड़ मुखमें रखनेसे शत्रुको जीतताहै मंत्र यह है ॐह्रीं रक्षचामुण्डे तुरु अमुकं वशमानय स्वाहा ॥ २ ॥

अयंचामुण्डामंत्रउक्तयोगयोस्सिद्धिकरः ॥
पुष्यार्कैमधुवन्दाकंगृहीत्वाप्रक्षिपेद्बुधः ॥
सभामध्येचसर्वेषांमुखस्तम्भःप्रजायते ॥ ३ ॥

यह चामुण्डाका मंत्र पढनेसे उक्त योगकी सिद्धि होतीहै पुष्य-नक्षत्रमें मुलेठीका वन्दाग्रहणकर सभाके बीचमें फेंकदेनेसे सबका मुख स्तम्भित होजाताहै ॥ ३ ॥

मूलंबृहत्यामधुकंपिष्ट्वानस्यंसमाचरेत् ॥
निद्रास्तम्भनमेतद्धिमूलदेवेनभाषितम् ॥ ४ ॥
इतिनिद्रास्तंभनम् ॥

कटेरीकी जड और मुलेठी इनको पीसकर नासलेनेसे निद्रा दूर होजातीहै यह मूलदेवने कहाहै ७५ से ८२ तकयंत्रलिखे ॥ ४ ॥

इति निद्रास्तम्भनम् ॥

"भरण्यांक्षीरिकाष्ठस्यकीलंपञ्चाङ्गुलंक्षिपेत् ॥
नौकामध्येतदानौकास्तंभनंजायतेध्रुवम् ॥ १ ॥

भरणी नक्षत्रमें क्षीरी काष्ठकी पांच अंगुलकीकील नौकामें डालनेसे नौकाकी गतिस्तंभित होतीहै ॥ १ ॥"

अथ शस्त्रस्तम्भनम् ।

अंकुलीचजटापाठाविष्णुकांताचपाटली ॥
श्वेतापराजितापुंसांसहदेवीकाकजंघिका ॥ ५ ॥
पुष्यर्क्षेणसमुद्धृत्यवक्रेशिरसिसंस्थिता ॥
एकैकंवारयत्येवशस्त्रसंघट्टनेनृणाम् ॥ ६ ॥

अंकुली वाअंकुशी रुद्रजटा पाठा विष्णुक्रान्ता पाटल श्वेतजयन्ती सहदेई काकजंघा यह पुष्य नक्षत्रमें उखाड़कर मुखमें तथा शिरमें रखनेसे युध्यमें एक एक मनुष्यको निवारण कर सकताहै ५।६

बध्वातुव्याघ्रभूपालचौरशत्रुभयंजयेत् ॥
जातीमूलंमुखेक्षिप्तंशत्रुस्तम्भनमुत्तमम् ॥ ७ ॥

चमेलीकी जड़को बांधनेसे व्याघ्र राजा चोर और शत्रुका भय दूर होकर जय होतीहै कहीं "बह्वयम्बु" पाठहै जल अग्निकाभी भय दूर करतीहै और चमेलीकी जड़को मुखमें रखनेसे शत्रुका स्तंभन होताहै ॥ ७ ॥

सूर्य्यस्यग्रहणेचेन्दोर्मूलंचोत्तरगोहरेत् ॥
पुंखायाःपाटलायावामुखस्थंकांडशस्त्रहृत् ॥ ८ ॥

सूर्यके ग्रहणमें अथवा चन्द्र के ग्रहणमें उत्तरकी ओर जाकर शुद्धतासे शरफोका अथवा लाल लोधकी जड़को ग्रहणकरै तिसको मुखमें रखनेसे सम्पूर्ण शस्त्रसमूहको स्तंभन करसकताहै ॥ ८ ॥

कपित्थस्यचवन्दाकंकृत्तिकायांसमुद्धरेत् ॥
वक्त्रसंस्थंतदेवस्यात्खड्गस्तम्भकरम्परम् ॥ ९ ॥

कृत्तिका नक्षत्रमें कैथके वंदा को ग्रहण करके मुखमें रखनेसे खड्गका स्तंभन होताहै ॥ ९ ॥

करेसुदर्शनामूलंबद्धाशस्त्रस्तम्भनम्भवेत् ॥
केतकीमस्तकेनेत्रेतालमूलंमुखेस्थितम् ॥ १० ॥

हाथमें सुदर्शनाकी जड़ बांधनेसे शस्त्रोंका स्तंभन होजाताहै केतकी मस्तक नेत्रमें तालमूल मुखमें ॥ १० ॥

खर्ज्जूरंचरणेहस्तेखड्गस्तम्भःप्रजायते ॥
एतानित्रीणिमूलानिचूर्णितानिघृतैःपिबेत् ॥ ११ ॥
त्र्यहंरात्रौततस्सर्वैर्यावज्जीवंनबाध्यते ॥
सर्वेषामुक्तयोगानांकुम्भकर्णःप्रसीदति ॥ १२ ॥

खर्जूरको रणमें हाथमें रखनेसे खड्गस्तंभित होजाताहै और इन तीनोंका मूल चूर्णकर घीके साथ पिये तो रात दिन जीवन पर्य्यन्त स्तम्भन होताहै इन युक्त योगोंसे कुम्भकरण प्रसन्न होजायतौ ॥ ११ ॥ १२ ॥

आयान्तंसैन्यकंशस्त्रसमूहंविनिवारयेत् ॥
ॐअहो ! कुम्भकर्णमहाराक्षसकैकसीगर्भसंभूतपरसै न्यंस्तम्भयमहाभगवान्रुद्रःप्राज्ञापयतिस्वाहा । सर्व योगानामष्टोत्तरंशतंजपेत्सिद्धिः। वक्रीचक्रीतथावज्री त्रिशूलीमुशलीतथा । देहस्थासमरेपुंसांसर्वायुध निवारिणी ॥ १३ ॥ गृहीतंशुभनक्षत्रेह्यपामार्ग स्यमूलकम् ॥ लेपमात्रेणवीराणांसर्वशस्त्रनिवारणम् १४

आतीहुई शस्त्रसेनाको निवारण करसकताहै मंत्र यहहैॐअहो कुम्भ- कर्ण महाराक्षसके कैकसी (निकषा) गर्भसंभूत परसैन्यंस्तम्भय महाभगवान् रुद्रःप्राज्ञापयतिस्वाहा सबयोगोंमें यह मंत्र एकसौआठ

वार जपनेसे सिद्धि होतीहै वक्री चक्री वज्री त्रिशूली मुशली यह नाम देहमें स्थित समरमें पुरुषके सम्पूर्णायुध निवारण करनेवाले हैं १३

चिरचिटेकी जड़ अच्छे नक्षत्रमें ग्रहण करनेसे इसके लेपमात्रसे चौरोंके सब शस्त्र निवारण होतेहैं ॥ १३ ॥ १४ ॥

खर्ज्जूरीमुखमध्यस्थाकट्यांबद्धाचकेतकीम् ॥
भुजदण्डस्थितश्चार्कस्सर्वशस्त्रनिवारणः ॥ १५ ॥

खर्जूरी मुखमें स्थित करनेसे कमरके मध्यमें केतकी, भुजदण्डमें स्थित आक यह सब शस्त्रोंका निवारण करनेवाला है ॥ १५ ॥

पुष्यर्क्षेश्वेतगुंजायामूलमुद्धृत्यधारयेत् ॥
हस्तेकाण्डंभयंनास्तिसङ्ग्रामेचकदाचन ॥ १६ ॥

पुष्य नक्षत्रमें श्वेत चौंटलीकी जड़ हाथमें धारणकरै तो कदाचित् शस्त्रका भय नहीं ॥ १६ ॥

त्रिलोहवेष्टितंकृत्वारसंवज्राभ्रसंयुतम् ॥
वक्रस्थञ्चकरस्थञ्चसर्वायुधनिवारणम् ॥ १७ ॥

सोना चांदी तांबेके सहित रस वज्राभ्र (पारा अभ्रक) वेष्टित करके मुखमें स्थित वा हाथमें स्थित सम्पूर्ण आयुधोंको निवारण करनेवाला है ॥ १७ ॥

ब्रह्मदण्डीचकौमारीईश्वरीवैष्णवीतथा ॥
वाराहीवज्रिणीचान्द्रीमहालक्ष्मीस्तथैवच ॥ १८ ॥

ब्रह्मदण्डी कौमारी ईश्वरी वैष्णवी वाराही वज्रिणी चान्द्री महालक्ष्मी ॥ १८ ॥

एताश्चौषधयोदिव्यास्तथैतामातरःस्मृताः ॥
स्मृत्वाचैवकरेबध्वासर्वशस्त्रनिवारणी ॥ १९ ॥

इतिशस्त्रस्तम्भनम् ॥

यह दिव्यऔषधी माताओंको स्मरण कर हाथमें बांधनेसे सब शस्त्रोंको निवारणकरनेवाली है ॥ १९ ॥

इति अस्त्रस्तम्भनम् ॥

अथाग्निस्तम्भनम् ॥

ॐशंकरहरहरअग्निस्तंभयस्तंभयअनेनाग्नौफूत्कारं दत्वाअग्निस्तंभयति ॥ जप्त्वाजटीन्नरोदेवींतारांमहिषमर्दिनीम्॥खादिरांगारमध्येतुप्रविष्टोसौनदह्यते।२०॥

ॐ शंकर हरहर अग्निस्तम्भय स्तम्भय (अनेनअग्नौफूत्कारं दत्वा अग्निस्तम्भयति)इसमंत्रसे फूंक मारनेसे अग्नि थमजाती है जटी तारा महिषमर्दिनी मंत्रसे १०००० जप करके फिर खैरके अंगारोंमें घुस जानेसे भी मनुष्य नहीं जलता है ८४ का यंत्र लिखे ॥ २० ॥

ॐमत्कटितच्छयघनेशेकटीयमनीयश्रीअलिप्यप्रायम्बुदीयेवशनरकार्य्यमंत्रीक्रींफट् ॥ ॐक्रींमहिषवाहिनीजम्भयजंभय मोहय२ भेदय२ अग्निस्तंभय२ ठः २ ॥ एतन्मंत्रद्वयंपूर्वमेवायुतंजपेत्तेनासिद्धिः ॥ वा । मत्तकटीटच्छयघने सेकटीयमूलीयसी आलिप्या प्रायमुदीयतेशनकवीज्जमन्दीह्रींफट् ॐह्रींमहिषवाहिनीस्तंभयमोहयभेदयअग्निस्तंभय 'ठ ठ'वा पाठः।

ॐमत्कटि तच्छय घनेशे कटीय मनीय श्री अलिप्य प्रायम्बुदीपे वश नरकार्य्य मंत्री क्रींफट् ॥ ॐक्रीं महिषवाहिनी जम्भय भेदय भेदय अग्निस्तम्भय २ ठः एकमंत्र दो करके प्रथम १०००० ॥

कुमारीशूरणंपिष्ट्वालिप्तहस्तोनरोभवेत् ॥
दीप्तांगारैस्ततोलोहैर्मन्त्रयुक्तैर्नदह्यते ॥ २१ ॥

जप करनेसे सिद्ध होजातीहै ॥ जो मनुष्य घीकुवार और जमीकंदको हाथमें लपेटले वह दीप्त अंगार और जलते हुए लोहेको

हाथमें उठासक्ताहै ॥ कहीं 'कुमारी रसकं' पाठ है अर्थ यह कि घीकुआर ॥ २१ ॥

करेसुदर्शनामूलंबध्वाग्निस्तंभनंभवेत् ॥
अत्रमंत्रलेखनंपश्चात् ॥

पीछे लिखा मंत्रभी पढै हाथमें सुदर्शनाकी जड़ बांधनेसे अग्नि-स्तंभित होतीहै पूर्वमें लिखा मंत्र जानना ॥

अथ जलस्तंभनम् ।

पद्मकंनामयद्द्रव्यंसूक्ष्मचूर्णन्तुकारयेत् ॥
वापीकूपतडागेषु निःक्षिपेद्बंधयेज्जलम् ॥ २२ ॥

अथ जलस्तम्भनम्॥जो पद्मक (पदमाख) नाम द्रव्यहै उसको चूर्ण-करले उसको बावड़ी कूप तडागमें डालनेसे जल थमजाताहै ॥२२॥

ॐनमोभगवतेरुद्रायजलंस्तंभयस्तंभयठःठःठः ॥
क्षणार्द्धेनघटंभिद्याज्जलंतत्रैवतिष्ठति ॥ २३ ॥

मंत्र ॐनमो भगवते रुद्राय जलं स्तंभय स्तंभय ठः ठःठः।यह मंत्र पढकर क्षणार्धमें घटभेदित होनेसेभी जल उसमें स्थित रहताहै ॥२३॥

देवदालीयमूलंतुमण्डूकरसयोजितम् ॥
लेपयेद्धस्तपादौचजलस्तम्भनमुत्तमम् ॥ २४ ॥

घघरबेलकी जड़ मेंडकके रसमें युक्तकर हाथपैरमें लपेटनेसे जलका स्तंभन होजाताहै८५ का यंत्र देखो८७ का यंत्रलिखै ॥२४॥

श्लेष्मांतकस्यपिष्टेनकर्त्तव्यंपादुकाद्वयम् ॥
गोधाचर्ममयंबद्धंकृत्वारूढोभवेज्जले ॥ २५ ॥

दोनों खडाऊंपर लसोंढेको पीस लपेटकर गोयके चर्मका बन्धनकर जलमें चलसकताहै ॥ २५ ॥

श्लेष्मांतकफलंचूर्णंमर्दयित्वालिपेद्घटम् ॥
घनमंगुलमात्रंतुशोषयेत्पूरयेज्जलैः ॥ २६ ॥

लसोंढेके फलको चूर्णकर घडेपर लेपकरै जोकि एक अंगुल मात्र मोटाहो उससे जल पूर्ण और शोषित होजाताहै ॥ २६ ॥

शिरीषमूलमादायरविवारेतुपूर्वजम् ॥
उदकेनसहाघृष्टंललाटेतिलकेकृते ॥ २७ ॥

इतवारकेदिन शिरसकी जड़ लाकर जलके संग पीसकर माथेपर तिलक करनेसे देखनेवाला स्तंभित होजाताहै ॥ २७ ॥

अथदिव्यस्तम्भनम् ।

तप्तदिव्येतथासर्वकृतदोषोविमुच्यते ॥
उत्तराभिमुखंग्राह्यंमेघनादस्यमूलकम् ॥ २८ ॥

अथ दिव्यस्तंभन ॥ तप्त दिव्यमें सब दोष छूट जातेहैं उत्तरकी ओर मुखकर ढाककी जड़ ग्रहण करै अर्थात् तत्ती वस्तु गरम नहीं लगती ॥ २८ ॥

भक्षयेद्धारयेद्वस्त्रैर्दिव्यस्तंभकरम्परम् ॥
श्वेतगुंजोत्थितंमूलमृक्षेउत्तरभाद्रके ॥ २९ ॥

उसे भक्षण कर वस्त्रद्वारा धारण करै तौ दिव्यपदार्थ स्तंभित होजातेहैं ८६ का यंत्र लिखे उत्तराभाद्रपद नक्षत्रमें श्वेत चौंटलीकी जड़ ॥ २९ ॥

उत्तराभिमुखंग्राह्यंदिव्यस्तंभकरंमुखे ॥
भृंगीमूलंरोचनांचापिष्ट्वापाणौप्रलेपयेत् ॥ ३० ॥

उत्तरकी ओर मुखकर ग्रहण करै और मुखमें धारण करनेसे दिव्यस्तंभन होताहै भांगरेकी जड़ गोरोचनके साथ पीस हाथमें लपेटे ॥ ३० ॥

ललाटेतिलकंकृत्वातप्तदिव्यजयीभवेत् ॥
मरीचंमागधीचैलाचर्वितागिलितासती ॥ ३१ ॥

मस्तकमें तिलक करनेसे तप्त दिव्यपदार्थका जीतनेवाला होताहै कालीमिर्च पीपल इलायची यह चाबने या निगलनेसे ॥ ३१ ॥

रवितंडुलजैर्दिव्यैःकृतदोषोविमुच्यते ॥
आज्यंशर्करयापीत्वाचर्वित्वानागरम्वचाम् ॥ ३२ ॥

आक और तन्दुलसे सब प्रकारके दोषोंसे छूटजाताहै घी और बूरा मिलाकर सोंठ और वच मिलाकर मुखमें रखनेसे ॥ ३२ ॥

तप्तलोहंलिहेत्पश्चात्कृतदोषोविमुच्यते ॥
मंडूकरससंपिष्टैर्लज्जामूलैर्वनक्तकैः ॥ ३३ ॥

तत्ते लोहेको चाटनेसेभी उसका दोष नहीं लगता सोना पाठाके रसमें लज्जावन्तीकी जड़ पीसनेसे ॥ ३३ ॥

लिप्तपाणिर्नरःसत्येतप्तदिव्येविशुद्ध्यति ॥
ॐअग्नीदहंतीकोधरैमैंधरोजातीनाभावाछुछिनिददो
दिव्यपतितस्तंभेईश्वरोमहेशः ॥ एतेस्तंभनश्रीमहा
देवकीआज्ञाअमुंमंत्रमयुतंजपेद्दिव्येसिद्धिर्भवति ।
ॐलोहाप्रज्वलेकोइलाकेभानुहौचण्डकेदारकापडीलो
हापडौतुषार ॥ अयन्तुलोहदिव्यस्तंभनमंत्रः ॥

उसे हाथमें लगानेसे मनुष्य दिव्यपदार्थके तापसे शुद्ध होताहै अर्थात् शरीर जलता नहीं ८३ का यंत्र लिखै ॥

मंत्र ॐ अग्नीदहंतीकोधरैमैंधरोजातीनाभावाछुछिनिददो दिव्यपतितस्तम्भेईश्वरोमहेशः एतेन स्तम्भनम् श्रीमहादेवकी आज्ञासे इसमंत्रको १०००० जपनेसे सिद्धि होतीहै ॥ॐ लोहा प्रज्वलेकोइला केभानुहौचण्डकेदारकापडीलोहापडौतुषार ॥ यह लोहदिव्यके स्तम्भनका मंत्रहै ॥

अथ गोमहिष्यादिस्तम्भनम् ।

उष्ट्रस्यास्थिचतुर्दिक्षुनिखनेद्भूतलेध्रुवम् ॥
गोवाजिमेषीमहिषीःस्तंभयेत्करिणीमपि ॥ ३४ ॥
इतिगोमहिष्यादिस्तंभनम् ॥

अथ गोमहिषी आदिका स्तम्भन ॥ ऊंटकी हड्डी चारों ओर भूतलमें गाडनेसे गौ भैंस भेड घोड़ा हाथी तकका स्तम्भन होताहै ३४

इति गोमहिषी आदिका स्तम्भन ॥

कालीकरालीअमुकंस्तंभयस्वाहा ॥
अनेनमंत्रेणसाध्यनामहृदिधृत्वास्पृष्ट्वावादर्शनाज्जप
तस्तंभितोभवतिक्षिप्रम् ॥३५॥ इतिमनुष्यस्तम्भनम्॥

काली कराली अमुकं स्तंभय स्वाहा इसमंत्रसे साध्यका नाम हृदयमें धारण कर छूकरवा देखकर जपै तौ स्तंभन होताहै ८८ से ९३ तकयंत्र देखकर लिखो ॥ ३५ ॥

इति मनुष्य स्तंभन ॥

अथ मनःस्तम्भनम् ।

चर्मकारस्यकुण्डानिरजकस्यतथैवच ॥
कुण्डान्मलंसमुद्धृत्यचांडाल्याऋतुवाससम्॥ ३६ ॥
बन्धयेत्पोटलींप्राज्ञोयस्याऽग्रेतांविनिः क्षिपेत् ।
तस्योत्थानेभवेत्स्तम्भः सिद्धियोग उदाहृतः ॥

अथ मनस्तंभनम्॥चमार और धोबीकी नांदका मैललेकर चाण्डालीका ऋतुका वस्त्र लेकर इसकी पोटली बांधकर जिसके आगे फेंकदे वह उठनेमें स्तम्भित होजायगा यह सिद्धयोगहै ॥ ३६ ॥

श्वेतगुंजाफलंवाप्यंनृकपालेपिमृत्सह ॥
निशिकृष्णचतुर्दश्यांत्रिदिनंतत्रजागरेत् ॥ ३७ ॥

श्वेत चौंटलीको मनुष्यकी खोपड़ीमें मट्टी डालकर बोवै कृष्ण-पक्षकी चौदसको यह कार्यकर तीनरात तक जागै ॥ ३७ ॥

नित्यंसिंचेज्जलेनैवमंत्रपूजांचकारयेत् ॥

तस्याःशाखालताग्राह्याशुभऋक्षेस्वमन्त्रतः ॥ ३८॥

क्षिपेद्यस्यासनेतांतं स्तम्भयेत्तत्क्षणाद्ध्रुवम् ॥ ३९ ॥

और तीनदिन बराबर उसपर जल छिड़के मंत्रपूर्वक पूजाकरै और शुभ नक्षत्रमें उसकी शाखाको ग्रहणकरै जिसके आसनपर फेंके वह उसीसमय स्तंभित होजाताहै ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

ॐरुद्रेभ्योनमः । ॐवज्ररूपायवज्रकिरणायशिवेर क्षभवेसमामृतंकुरु २ स्वाहाअयम्पूजामंत्रः ।

इत्यासनस्तम्भनम् ।

भृंगराजोह्यपामार्गसिद्धार्थसहदेविकाम् । तुल्यन्तुल्यं वचाश्वेताद्रव्यमेषांसमाहरेत् ॥ लोहपात्रेविनिःक्षिप्य द्विदिनान्तंसमुद्धरेत् ॥ ४० ॥

ॐरुद्रेभ्योनमः ॐवज्ररूपाय वज्रकिरणाय शिवेरक्ष भवे समामृतंकुरु २ स्वाहा । यह पूजाका मंत्रहै ॥ इति आसन स्तंभन ॥
भांगरा चिरचिटा सरसो सहदेई इनकीबराबर वच श्वेत कटेरी यह सब लोहपात्रमें डालकर इनका रस निकालै ॥ ४० ॥

तिलकैःसर्वभूतानांबुद्धिस्तम्भकरोभवेत् ॥ ४१ ॥

इसके तिलक करनेसे सबभूतोंकी बुद्धि स्तंभित होजातीहै॥४१॥

ॐ नमोभगवतेविश्वामित्रायनमः ॥ सर्वमुखीभ्यांवि श्वामित्रायविश्वामित्रआज्ञापयतिशक्त्याआगच्छ २ स्वाहा उक्तयोगस्यायंमन्त्रः । अंगुलीलात्रिधाआशय आगलस्वाहा । अनेनमंत्रेणनदींप्रविश्यअष्टोत्तरश

तांजलीस्तर्पयेत्।शत्रूणांबुद्धिस्तम्भोभवति । कपूर णचितांगारेनामलिखित्वातदुपरिमृत्तिकांदद्यात्तत्र शत्रोर्मुखबंधोभवति ॥ इतिशत्रुबुद्धिस्तम्भनम् ॥

मंत्र ॐनमो भगवते विश्वामित्रायनमः ॥ सर्वमुखीभ्यां विश्वामित्राय विश्वामित्रआज्ञापयति शक्त्या आगच्छ २ स्वाहा ॥ (उक्तयोगस्यायंमन्त्रः यह उपरोक्तयोगका मंत्रहै) ॥ अंगुलीलात्रिधा आशय आगल स्वाहा । इसमंत्रसे नदीमें प्रवेशकर १०८ अंजलिसै तर्पण करै तौ शत्रुओंकी बुद्धि स्तंभित होजातीहै कपूरसे चिताके अंगारेपर शत्रुका नाम लिखकर उसके ऊपर मिट्टी डालनेसे शत्रुका मुख बँधजाताहै इति शत्रुबुद्धिस्तंभनम् ॥

अथचौराणांगतिस्तम्भनम् ।

ॐनमोब्रह्मद्वेषिणिशिवेरक्षरक्षठःठः । अनेनमंत्रेणसप्त पाषाणखण्डानिश्मशानाद्गृहीत्वात्रीणिकट्यांबध्वाऽ पराणिमुष्टिभ्यांधारयेच्चौराणांगतिस्तम्भोभवति । इतिचौराणांगतिस्तभनम् । [ब्रह्मवेशिनिवापाठः]

अथ चोरगतिस्तंभनम् ॥ ॐनमो ब्रह्मद्वेषिणिशिवे रक्षरक्ष ठः ठः इस मंत्रसे सातकंकर श्मशानस्थानसे लेकर तीनकमरमें बांधै शेषमुट्ठीमें धारणकरै तौ चोरोंकी गति स्तंभित होतीहै ॥ कहीं पाशोंका धारण करना कहा है ॥ इति चोराणांगति स्तंभनम् ॥

अथगर्भस्तंभनम् ।

ग्राह्यंकृष्णचतुर्दश्यांधत्तूरस्यतुमूलकम् ॥ कट्यांब द्धारमेत्कान्तांनगर्भंधारयेत्क्वचित् ॥ मुक्तेनलभतेग र्भम्पुरानागार्ज्जुनोदितम् ॥ तन्मूलचूर्णंयोनिस्थंनग र्भंसंभवेत्क्वचित् ॥ ४२ ॥ सिद्धार्थमूलंशिरसिबध्वा

कान्तंरमेत्तुया ॥ नगर्भंधारयेत्सास्त्रीमुक्तेनलभतेपु
नः ॥४३॥ अनेनगर्भोनभवतीति॥इतिगर्भस्तम्भनम् ॥

अथ गर्भस्तंभनम ॥ कृष्णपक्षकी चौदसके दिन धतूरेकी जड़ ग्रहणकर कमरमें बांधकर स्त्री पतिसे रमणकरै तौ कभी गर्भकी स्थिति नहीं होती है, इसके खोलनेसे गर्भकी स्थिति होतीहै ऐसा पहले नागार्जुनने कहाहै।अथवा धतूरेकी जड़का चूर्णकर योनिमें धारण करनेसे कभी गर्भकी स्थिति नहीं होती है ॥ ४२ ॥ सरसों की जड़ शिरपर बांधकर जो अपने कान्तसे रमण करतीहै वह स्त्री कभी गर्भधारण नहीं करती उसके खोल रखनेसे फिर गर्भकी स्थिति होती है ९४ का यंत्र देखो । मार्जार (बिलाव)का मल अनामिकासे ग्रहणकर रक्तसे भोजपत्र पर लिख भूमिमें गाडे गर्भ जम जाय ॥ ४३ ॥ इति गर्भस्तम्भनम् ॥

अथशुक्रस्तम्भनम् ।

इन्द्रवारुणिकामूलंपुष्येनग्नस्समुद्धरेत् ॥
कटुत्रयैर्गवांक्षीरैःसम्पिष्ट्वागोलकीकृतम् ॥ ४४ ॥

अथ वीर्य्यस्तम्भनम् ॥ नग्नहोकर पुष्यनक्षत्रमें इन्द्रायणकी जड़ उखाड़कर उसे सोंठ मिरच पीपलके साथ पीस गौके दूधमें गोली बांधै ॥ ४४ ॥

छायाशुष्कंस्थितेचास्येवीर्य्यस्तंभकरंनृणाम् ॥
नीलीमूलंश्मशानस्थंकट्यांबध्वातुवीर्य्यधृक्॥४५॥

और उसको छायामें सुखाले एक गोली मुखमें रखनेसे वीर्य-स्तम्भन होताहै । श्मशानमें उत्पन्न हुई नीलकी जड़ कमरमें बांध कर रमै तो वीर्य स्तंभित होता है ॥ ४५ ॥

कृष्णोन्मत्तवचामूलंमधुपिष्टं प्रलेपयेत् ॥
लिंगंतदारमेत्कान्तांस्वभावाद्द्विगुणांनरः ॥ ४६ ॥

कालें धतूरे और वचकी जड़ शहतमें पीसकर मदनध्वज पर लेपकर स्त्रीके साथ रमण करनेसे दुगुना पराक्रम दिखाता है॥४६॥

भृंगीविषंपारदंचप्रत्येकंतुद्विगुंजकम् ॥
वराटाक्षंक्षिपेद्विन्दुःस्थिरःस्याच्छिरसाधृतम् ॥
रक्तापामार्गमूलन्तुसोमवारेनिमन्त्रयेत् ॥ ४७ ॥

अभ्रक विष पारा यह वस्तु शोधी हुई ले और प्रमाणमें दो दो चोंटली भरले इनके प्रयोगसे शुक्र स्तंभन होता है लाल अपामार्ग (चिरचिटे) की जड़को सोमवारके दिन निमंत्रण देकर ॥ ४७ ॥

भौमेप्रातस्समुद्धृत्यकट्यांबध्वातुवीर्य्यधृक् ॥
दुन्दुभीनामयःसर्प्पःकृष्णवर्णसमाहरेत् ॥ ४८ ॥

मंगलके दिन प्रातःकाल उखाड़कर लावै कमरमें बांधनेसे वीर्य स्तंभित होताहै काले वर्णके दुन्दुभी नाम सर्पको लावै ॥ ४८ ॥

तस्यास्थिधारयेत्कट्यांनरोवीर्य्यंनमुञ्चति ॥
विमुंचतिविमुक्तेनासिद्धियोगउदाहृतः ॥ ४९ ॥

उसकी हड्डी कमरमें धारण करनेसे मनुष्यका वीर्य स्तंभित होत है और उसको खोल रखनेसे वीर्य मुक्त होताहै ॥ ४९ ॥

नखास्थीनिसमादायमार्जारस्यासितस्यच ॥
कृकलासस्यपुच्छाग्रमुद्रिकाप्रेततन्तुभिः ॥ ५० ॥

श्वेत मार्जारके नख और अस्थि लेकर कृकलास (गिरगट की पूंछके अग्रभागकी बनी अँगूठीको मृतक स्थानके सूतसे लपेट कर ॥ ५० ॥

वेष्टयाकनिष्ठिकाधार्य्यानरोवीर्य्यंनमुंचति ॥ ५१ ॥

कनउँगलीमें धारण करके मनुष्य वीर्यको नहीं त्यागनकर सकताहै ॥ ५१ ॥

पुष्योद्धृतंश्वेतपिकाक्षबीजंकटीतटेलोहितसूत्रबद्धम् ॥
बीजच्युतिंधारयतिप्रसंगेख्यातःसदायंकिलयोगराजः५२

पुष्य नक्षत्रमें उखाड़ा हुवा श्वेतपिकाक्षकाबीज लाल सूतमें कमरमें बांधनेसे बीजकी स्खलितता नहीं होती यह योगराजने कथन किया है ॥ ५२ ॥

श्वेतान्यपुष्टाख्यतरोःफलानिक्षीरेणपिष्ट्वावटपादपस्य ॥
करंजबीजोदरमध्यगानिस्तम्भंतिवीर्यंवदनेधृतानि ॥
आदित्यवारोद्धृतसप्तपर्णवृक्षस्यबीजंविनिधायवक्रे ॥
जयेदकाण्डंसुरतावतारेपुमान्पुरन्ध्रीःस्मरतीव्रवेगाः ५३

श्वेतकोयल वृक्षके फल लेकर उन्हें वडके दूधके साथ पीसे उसमें करंज बीज का मध्यांश डालकर मुखमें धरनेसे वीर्य स्तंभित होताहै रविवारके दिन सप्तपर्ण वृक्षके बीज धारण करके उसके बीज मुखमें रखनेसे सुरतके समय पुरुष स्त्रीका जय करताहै ।५३ ।

नागकेशरकर्षंतुगोघृतेपातयेद्बुधः ॥
भुक्त्वारमेच्चरमणींतदाबिन्दुस्थिरोभवेत् ॥ ५४ ॥

नाग केशर एक कर्ष गौके घीमें डाले उसे भोजन कर जो स्त्रीसे रमण करै तौ वीर्य स्थिर होताहै ॥ ५४ ॥

श्वेतेषुपुंखाचरणंगृहीत्वापुष्यार्कयोगेपुरुषस्यकट्याम् ॥
कुमारिकाकर्तितसूत्रकेनबद्धंजयत्याशुमनोजबीजम् ५५

श्वेत शरफोंकेकी जड़को पुष्य नक्षत्रयुक्त रविवारमें ग्रहण करके क्वारी कन्याके काते सूतसे पुरुषकी कमरमें बांधनेसे कामको जय करताहै ॥ ५५ ॥

बीजमीश्वरलिंगस्यसूतंवृश्चिककण्टकम् ॥
क्षिपेत्पूगफलंचास्मिन्त्रिलोहैस्तंचवेष्टयेत् ॥५६ ॥

धतूरेके बीज पारा मैनफल यह सुपारीके साथ मिलाकर तीन लोहसे उसको वेष्टित करै ॥ ५६ ॥

जिह्वोपरिस्थितेतस्मिन्नरोवीर्यंनमुंचति ॥
सहदेवीबीजमूलंसंमिश्र्यंपद्मकेसरैः ॥ ५७ ॥

इसको जिह्वापर रखनेसे मनुष्य वीर्यको नहीं छोडता है और सहदेवीके बीज और जड़ पद्मकेसर ॥ ५७ ॥

मध्वाज्यसहिताल्लेपान्नरोवीर्यंनमुंचति ॥
नीलोत्पलसितांभोजकेसरंमधुशर्करम् ॥ ५८ ॥
अमीभिर्नाभिलेपेनाचिरंरमतिकामुकः ॥ ५९ ॥

इसमें घी और शहद मिलाकर लेप करै तौ मनुष्यका वीर्य स्खलित नहीं होताहै नील कमल श्वेत कमलकी केसरमें शहद शर्करा मिलाय इसका नाभिपर लेप करनेसे बहुत देरतक कामी पुरुष रमण करसकताहै ॥ ५८ ॥५९ ॥

आदायकृष्णेतरकाकजंघामूलंसितांभोरुहकेसरंच ॥
क्षौद्रेणपिष्ट्वापरिलिप्यनाभिंस्तम्भंप्रपद्येत्पुरुषस्यबीजम्

श्वेत काकजंघाकी जड़ श्वेत कमलकीकेसर यह लेकर शहदके साथ पीस नाभि पर लेप करनेसे पुरुषका वीर्य स्तंभित होताहै॥६०॥

छाग्येडकादुग्धपिष्टंलज्जामूलंप्रलेपयेत् ॥
हृदयेपादयोर्वीर्यंद्रवतेनकदाचन ॥ ६१ ॥

बकरी और भेडीके दूधमें लज्जावन्तीकी जड पीसकर हृदय और चरणोंमें लेप करनेसे पुरुषका वीर्य पतित नहीं होताहै ॥ ६१ ॥

मूलंवाश्वेतपुंखायाःसक्षौद्रंनाभिलेपनात् ॥
मधुनापद्मबीजस्यतद्वल्लेपेनवीर्य्यधृक् ॥ ६२ ॥

अथवा श्वेत शरफोंकेकी जड़में शहद मिलाकर नाभिमें लेप करै तौ वीर्य स्तंभित होताहै अथवा शहदमें कमलका बीज मिलाकर लेप करनेसे वीर्य स्तंभित होताहै ॥ ६२ ॥

इन्द्रवारुणिकामूलमुन्मत्ताजस्यमूत्रतः ॥
भावयेत्सप्तवारंतंलिंगलेपेनवीर्यधृक् ॥ ६३ ॥

इन्द्रायणकी जड़को उन्मत्तबकरेके मूत्रमें सात वार भावना देकर लिंगपर लेपकरनेसे वीर्य स्तम्भित होताहै ॥ ६३ ॥

उन्मत्ताजस्यमूत्रेणपेषयेद्वानरीशिफाम् ॥
लिप्त्वालिंगंनरोवीर्य्यंचिरकालंनमुञ्चति ॥ ६४ ॥

अथवा उन्मत्त बकरेके मूत्रसे जटामांसीको पीसकर ध्वजापर लेप करनेसे मनुष्यका वीर्य चिरकाल तक स्खलित नहीं होताहै ॥ ६४ ॥

कर्पूरंटंकणंसूतंतुल्यंमुनिरसंमधु ॥
मर्दयित्वालिपेल्लिंगंस्थित्वायामंतथैवच ॥ ६५ ॥

कपूर सुहागा पारा यह सब बराबरले अगस्त्यके रस और शहदमें इनको मिलाकर लिंगपर लेपकर एक पहरतक स्थित रहै ॥ ६५ ॥

ततःप्रक्षालयेल्लिंगंरमेद्रामांयथोचितम् ॥
वीर्य्यस्तम्भकरंपुंसांसम्यग्नागार्जुनोदितम् ॥ ६६ ॥

फिर अपने ध्वजको धोकर कान्ताके साथ रमण करै तो पुरुषका वीर्य स्तंभित होताहै यह नागार्जुनने कहाहै ॥ ६६ ॥

कौसुंभतैलेनविलिप्यपादौयदृच्छयादीव्यतिवृद्धवीर्य्यः ।
पुनर्नवाचूर्णविलेपनात्खलुजहातिबीजंनकदाचिदेतत् ॥

कुसुम्भका तेल पैरोंमें मलनेसे स्वेच्छासे ही वीर्यकी वृद्धि होतीहै

और पुनर्नवाके चूर्णके विलेपन करनेसे कदाचित्भी वीर्य स्खलित नहीं होताहै ॥ ६७ ॥

कर्प्पूरसंपाकमहेशबीजैःस्वार्द्धतुबीजंपुरुषस्यनाभौ ॥
विलिप्यकांताजघनेचकान्तेनलभ्यतेशुक्रमधःकदापि ६८॥

कपूर संपाक और पारा यह नरवीर्यके साथ पुरुषकी नाभिमें लेप करनेसे वा स्त्रीकी जंघामें लेप करनेसे कभी वीर्य स्खलित नहीं होताहै ॥ कहीं "चार्द्धेन्दुबीजं" पाठहै ॥ ६८ ॥

भूलतासिक्थकंचैवकुसुंभस्यचतैलकम् ॥
वीर्यधृक्पादलेपेनचटकांडस्यलेपनात् ॥ ६९ ॥

भूलता और मोम और कुसुम्भका तेल पैरमें लपेटनेसे वीर्य स्तंभित होताहै, अथवा चटिकाके अंडेका पैरमें लेप करनेसे वीर्य स्तंभित होताहै ॥ ६९ ॥

नवनीतेनयुक्ताभ्यांशय्यांपद्भ्यांचनस्पृशेत् ॥
श्लेष्मांतस्यकुरंटस्यबीजंकरंजकस्यच ॥
भेडीक्षीरेणतंपिष्ट्वाकर्षंभुक्त्वातुवीर्य्यधृक् ॥ ७० ॥

पैरोंमें मक्खन मलकर चरणोंसे सेजको स्पर्श न करै लहसोडा कुरंट (पीलीकटसरैया) और करंजके बीज भेडीके दूधमें पीसकर एक कर्ष मात्र भक्षण करनेसे वीर्यस्तंभित होताहै ॥ ७० ॥

सुदर्शनाभवंमूलंतांबूलैस्सहपेषयेत् ॥
अल्पंत्याज्यंप्रयत्नेनशुक्रस्तंभनमुत्तमम् ॥ ७१ ॥

सुदर्शनाकी जड़ ताम्बूलके साथ पीसकर घृतकेसाथ यत्नसे सेवनकरनेसे वीर्यस्तंभित होताहै ॥ ७१ ॥

श्वेतार्कतूलकैर्वर्त्तीर्दीपःसूकरमेदसा ॥
यावज्ज्वलतिदीपोयंतावद्वीर्य्यंनमुंचति ॥ ७२ ॥

श्वेत आकके तूल (रुई) की बत्ता करके मूकरकी चरबीसे दीपक बालनेसे जबतक दीपक बलता रहगा तबतक वीयपात नहीं होगा ॥ ७२ ॥

मूलंवराहक्रांतायाअजाक्षीरेणपेषयेत् ॥
लिंगलेपेनचानेनवीर्य्यस्तंभकरंभवेत् ॥ ७३ ॥

बाराही कन्दकी जड़ बकरीके दूधसे पीसकर ध्वजपर लेप करनेसे वीर्यस्तंभित होता है ॥ ७३ ॥

पुष्योद्धृतंश्वेतहयमारमूलंकटीतटे ॥
बद्धंबिन्दुस्थिरकरंमुक्तेतुच्यवतेपुनः ॥ ७४ ॥

पुष्यनक्षत्रमें श्वेत हयमार अर्थात् कनेरकी जड़ला कमरमें बांधनेसे वीर्यपात नहीं होताहै ॥ ७४ ॥

वक्रीरसंतूर्द्धगेनदात्रेणग्राहयेद्रवौ ॥
संपिष्यवटिकांकृत्वासंशोष्यचविनिःक्षिपेत्॥७५॥

पर्पटीको लेकर उसका रस रविवारके दिन ग्रहणकर इसको भलीप्रकार पीस इसकी गोली बनाय सुखाकर रख छोडे॥७५॥

आत्ममूत्रेणतल्लिप्यंलिंगमूलंतुवीर्य्यधृक् ॥
पूतीकरंजवीजंचश्वेतवंधूकमंडयोः ॥ ७६ ॥

अपने मूत्रसे उसको घिसकर मदनध्वजके मूलस्थानमें लेपकरनेसे वीर्यस्तंभित होताहै पूतीकरंजके बीज श्वेतवंधूक और मंड ॥ ७६ ॥

मूलंपिष्ट्वातुलिंगाग्रेलेपयेच्चन्दनैस्सह ॥
तथाकरतलेदद्याद्रामेबिन्दुस्थिरोभवेत् ॥ ७७ ॥

सोनापाठा इनकी जड़ चन्दनकेसाथ मदनध्वजपर लेप करनेसे तथा हथेलीमें लेप करनेसे वीर्यस्तंभित होता है ॥ ७७ ॥

लज्जालुमूलंभटिकांपिष्ट्वाताम्रस्यभाजने ॥
कृत्वांजनंचतेनांज्यादर्द्धरात्रंस्थिरोभवेत् ॥ ७८ ॥

लज्जावन्तीकी जड़ और भटिकाको पीसकर ताम्रपात्रमें घिसे रात्रिमें अंजन करै तौ वीर्य स्थिर होताहै ॥ ७८ ॥

कृष्णधूर्त्तंमहाकालंशनिवारेनिमंत्रयेत् ॥
रविवारेसमानीयचादत्तारमणीकृतैः ॥ ७९ ॥

काले धतूरे तथा महाकाललताको शनिवारके दिन निमंत्रण दे और रविवारके दिन लाकर और कन्यासे सूतकतवाकर ॥ ७९ ॥

सूत्रैर्गुणत्रयैर्बद्धंकरेवामेप्रयत्नतः ॥
उपविश्यासनेखण्डत्रयैर्यामत्रयंततः ॥ ८० ॥

तिगुने तिस सूत्रके तीन खंडकर वाम हाथमें यत्नसे बांधकर आसनपर तीन पहरतक बैठे ॥ ८० ॥

विन्दु स्थिरत्वमाप्नोतिभुक्तेस्खलतितत्क्षणात् ॥
हेमाह्वलोचनंतुल्यंकृष्णधत्तूरबीजकम् ॥ ८१ ॥
वटक्षीरेणसंमर्द्यकुबेराक्षस्यबीजकैः ॥
क्षिप्त्वातद्धारयेद्वक्त्रेवीर्य्यस्तंभकरंभवेत् ॥ ८२ ॥

इतिशुक्रस्तंभनम् ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेस्तंभनंनामचतुर्थोपदेशः ॥४॥

तौ बराबर वीर्य स्थिर होताहै इसके खोलनेसे मुक्त होताहै (चोक) नाग केशर वंशलोचन और कालेधतूरेके बीज ॥ ८१ ॥

बड़के दूधके सहित करञ्जके बीज यह सब एकत्र कर मुखमें धारण करनेसे वीर्य स्तंभित होताहै ॥ ८२ ॥ इति शुक्रस्तम्भनम् ।

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पंडितज्वालाप्रसादमिश्र
कृतभाषाटीकायांचतुर्थोपदेशः ॥ ४ ॥

अथ मोहनम् ।

कन्यावरेयुवतिसंगमनेनराणामालोकनेनरपतेःक्रय विक्रयादौ ॥ प्रज्ञाविधौसकलकर्मणिकौतुकेवा धूपः सदैवकृतिभिर्विनियोजनीयः ॥ १ ॥

कन्याके विषयमें स्त्री प्रसंगमें राजाके देखनेमें प्रज्ञाविधि सम्पूर्ण कर्म और कौतुक इन्होंमें विद्वानोंको धूपका प्रयोग सदाकरना चाहिये १

शृंगीवचानलदसर्जरसंसमानंकृत्वात्रुटिंमलयजंचषडेव मिश्रम् ॥ याधूपयेन्निजगृहंवसनंशरीरंतस्यास्तुदा सइवमोहमुपैतिलोकः ॥ २ ॥

काकडासींगी वच उशीर राल (त्रुटि) छोटी इलायची यह समानभाग लेकर और मलयगिरि चन्दनको मिलाकर जो स्त्री अपनेघर वस्त्र और शरीरमें धूप दे तो लोक मोहको प्राप्त हो उसके दासकीसमान होजाता है ॥ २ ॥

भृंगराजःकेशराजोलज्जाचसहदेविका ॥
एभिस्तुतिलकंकृत्वात्रैलोक्यंमोहयेन्नरः ॥ ३ ॥

भांगरा दूसरा भाँगरा लज्जावती सहदेई इनका तिलक लगाकर मनुष्य त्रिलोकीको मोहित कर सकता है ॥ ३ ॥

त्रिदलंकुसुमंयस्यधत्तूरस्यकृतांजलिः ॥
भृंगराजेनसाज्येनातिलकंमोहयेन्नरः ॥ ४ ॥

त्रिदल हंसपदीके धतूरेके फूल लज्जावन्ती और भृंगराज इन सबोंको घृत मिलाकर तिलक करनेसे मनुष्य त्रिलोकीको मोह सकता है ॥ ४ ॥

तालकंकुनटींचैवभृंगपक्षंसमंसमम् ॥
कृष्णोन्मत्तस्यकुसुमंवटिकांकारयेद्बुधः ॥ ५ ॥

हरताल मनशिल और भौंरेके पंख यह समान भाग लेकर तथा धतूरेके फूल लेकर गोली बनावे ॥ ५ ॥

तेनैवतिलकंकृत्वात्रैलोक्यंमोहयेन्नरः ॥
आदौसप्तस्वराग्राह्याअन्तेहुंकारसंयुताः ॥
ॐकारंशिरसिकृत्वाहूंअन्तेफडितिन्यसेत् ॥ ६ ॥
मंत्रः ॥ ॐ अंआंइंईंउंऊंऋंहूंफट् ॥

अनेनैवतुमंत्रेणकृत्वाताम्बूलभावनम् ॥ साध्यस्यमु
खेनिःक्षिप्तेमोहमायातितत्क्षणात् ॥ ७ ॥

उसी से तिलक करके मनुष्य त्रिलोकीको मोहित करसकता है प्रथम सात स्वर उच्चारण कर अन्तमें हूंकार मिलावै ॐकार प्रथम लगाकर अन्तपदमें फट् लगावै अर्थात् यह मंत्र है (ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं हूं फट्) इस मंत्रसे ताम्बूलको भावना देकर साध्यके मुखमें खवावे तो वह मोहको प्राप्त होता है देर नहीं लगती ॥ ६ ॥ ७ ॥

ॐ भ्रींक्षांभ्रींमोहयमोहय ॥
ॐ नमोभगवतीपादपंकजपरागेभ्यः ॥
ॐ अस्यमंत्रस्यवारत्रयंजपान्मोहमाप्नुवंतिजनाः ॥
शुभामूलंतथाबीजंरक्तचन्दनसंभवम् ॥
त्रुटिबीजंसमंपिष्ट्वाताम्बूलादौप्रयोजयेत् ॥
भोक्तुंदेयंस्वहस्तेनमोहमाप्नोतिचेश्वरः ॥ ८ ॥

ओं भ्रीं क्षां भ्रीं मोहय मोहय । ओं नमो भगवतीपादपंकज परागेभ्यः । इस मंत्रको तीन वार जपने से मनुष्य मोहको प्राप्त होताहै ॥ प्रियंगु की जड़ तथा बीज लालचन्दन इलायची के बीज इनको समान पीसकर ताम्बूलमें दे और अपने हाथसे खानेको दे

ता ईश्वर भी मोहको प्राप्त होजाताहै गोरोचन और अनामिकाके रक्तसे जिसका नाम लिख घृतमें स्थापन करै वह मोहित होताहै ॥ ८ ॥

इति ईश्वरमोहनम् ॥

अथ दुष्टशत्रुमोहनम् ।

वृश्चिकोद्भवचूर्णेनधूपोमोहयतेनृणाम् ॥
कपिरोमाहिंगुदार्वीखरचम्र्माणिचूर्णयेत् ॥ ९ ॥
तच्चूर्णमंत्रसंजप्तंनामकर्मविदर्भितम् ॥
त्रिसहस्रंपुनस्तेनस्निग्धयोरन्तरात्मनोः ॥ १० ॥
धूपैरतीवविद्विष्टौस्निग्धावपिभविष्यतः ॥
तालपत्रेलिखेन्मंत्रंनामकर्मविदर्भितम् ॥ ११ ॥
कृतप्राणप्रतिष्ठान्तंप्रजप्तंत्रिसहस्रकम् ॥
विषालिप्तंद्विधाकृत्वानिखनेत्सिन्धुतीरयोः ॥
स्निग्धयोराशुविद्वेषःस्यादुमेशानयोरपि ॥ १२ ॥

अथदुष्टशत्रुमोहनम् ॥ मैनफल के चूर्णकी धूप शत्रु मनुष्यको मोहित कर देती है वानरके रोम हिंगु दारुहलदी गर्दभचर्म यह सब चूर्ण करै और उस शत्रुके नामसे ३००० तीन सहस्र मंत्र जपै यह धूप स्निग्ध होकर महा विद्वेष करती है, तालपत्र पर मंत्र लिख शत्रुका नाम कर्म लिखै उसकी प्राणप्रतिष्ठा कर ३००० मंत्र जपै उसे विष लिप्तकर दो खण्डकर समुद्रके किनारे गाडदे तौ शिवाशिवका भी विद्वेष हो जाय और तौ क्या हैं ॥९।१०।११।१२॥

गरलंधूर्त्तपंचांगम्महिषीशोणितंकणा ॥ निशायांकुरुतेमोहंधूपोगुग्गुलुसंयुतः ॥ १३ ॥

विष धूतरेका पञ्चांग भैंसका रुधिर श्वेत जीरा गुग्गुल संयुक्त

इनकी धूप देनेसे मनुष्यको मोहित करती है तथा शिलाको भी मोहित करती है ॥ "दुश्चिक्योद्भव" भी पाठ है ॥ १३ ॥

हलिनीविषधत्तूरंशिखिविष्ठाभिरन्वितम् ॥
तयाधूपःसमंभागंमोहयत्येवनिश्चितम् ॥ १४ ॥

कलिहारी विष धतूरा मोरकीवीट यह समान भागले धूप देनेसे उसी क्षण मनुष्यको मोहित करती है॥ "हलिसी" पाठ भी है॥ १४॥

छुछुंदरीसर्पमुंडंवृश्चिकस्यतुकंटकम् ॥
हरितालंसमंधूपोमोहयेत्सकलान्नरान् ॥ १५ ॥

छुछुंदर सांपका मुंड वीछू का कांटा और हरिताल यह सब समान भाग ले इनकी धूप देनेसे मनुष्योंको मोहित करती है॥ १५॥

अधःपुष्पीशिखांचैवश्वेतंचागिरिकर्णिका ॥
गोरोचनसमायोगेतिलकंशत्रुमोहनम् ॥ १६ ॥

गोभी कलिहारी श्वेत कितहीवृक्ष और गोरोचन इनका तिलक करनेसे शत्रुको मोह सकताहै ॥ कहीं "अविपीत" पाठहै ॥ १६ ॥

तालकोन्मत्तबीजानिपानेशत्रोश्चदापयेत् ॥
तत्क्षणान्मोहमाप्नोतिचोन्मत्तोजायतेनरः ॥ १७ ॥

हरताल धतूरे के बीज पानमें शत्रुको देनेसे शत्रु उसी क्षणमें मोहको प्राप्त हो जाता है और उन्मत्त हो जाता है ॥ १७ ॥

समाक्षिकैःसिताम्भोजैस्सुस्थःपानाद्भवेन्नरः ॥ १८ ॥
इति शत्रुमोहनम् ॥

इति मोहनाधिकारः ।

फिर शहद मिला श्वेत कमलका पान करनेसे मनुष्य स्वस्थ होताहै ॥ १८ ॥ इति शत्रुमोहनम् ॥

इति मोहनाधिकारः ॥

---

१ शिलायां वा पाठः ।

अथरंजनम् ।

तत्रदेहरंजनम् ॥ अत्रांगरागःपुरुषेणकार्यः
स्त्रियाश्चसंभोगसुखायगात्रे ॥ तस्मादहंगंध
विधानमादौविलासिनः सर्वमुदीरयामि ॥ १९ ॥

उसमें प्रथम देह रंजन कहते हैं । प्रायः स्त्रियोंके सुखके निमित्त पुरुषोंको तथा पतियोंके निमित्त स्त्रियोंको अपना देहरंजन करना चाहिये इस कारण विलासी जनोंके निमित्त गंधादिकार्य कथन करता हूं ॥ १९ ॥

हरीतकीलोध्रमरिष्टपत्रंसप्तच्छदंदाडिमवल्कलंच ॥
एषोङ्गनायाःकथितःकवीन्द्रैःशरीरदौर्गन्ध्यहरःप्रलेपः२०

हरड़, लोध और नीमके पत्ते सतौना दाडिमका छिलका इन सबका लेप करनेसे शरीरकी दुर्गंध दूर होती है यह प्रयोग विद्वानोंका कहा है ॥ २० ॥

हरीतकीश्रीफलमुस्तचिंचाफलत्रिकंपूतिकरंजबीजम् ॥
कक्षादिदौर्गंध्यमपिप्रभूतंविनाशयत्याशुनिदाघकाले२१

हरड़ नारियलकी जड़, मोथा चिंचाफल त्रिफला पूतिकरंजुएके बीज इनका लेप बगलमें करनेसे गरमीके दिनोंमें महादुर्गन्धको दूर करता है ॥ २१ ॥

हरीतकीचन्दनमुस्तनागैरुशीरलोध्रामयरात्रितुल्यैः ॥
स्त्रीपुंसयोर्घर्मजगात्रगन्धंविनाशयत्याशुविलेपनेन ॥२२

हरड़,लालचन्दन,नागरमोथा,नागकेशर,खश,लोध,हलदी यह बराबर लेकर स्त्रीपुरुषोंके शरीर परमलनेसे पसीनेकी दुर्गन्ध दूर होजातीहै२२

कदम्बपत्रंलोध्रंचअर्जुनस्यतुपुष्पकम् ॥
पिष्ट्वागात्रोद्वर्त्तनाच्चदुर्गंधचयनाशनम् ॥ २३ ॥

कदम्बके पत्ते लोध अर्जुनके फूल पीसकर शरीरमें मलनेसे शरीरकी दुर्गन्ध नष्ट होती है ॥ २३ ॥

सचन्दनोशीरकरंजपत्रैःकोलाक्षमज्जागुरुनागयुक्तैः ॥
लिप्त्वाशरीरंप्रमदातुतेनचिरप्रसूतंविनिहन्तिगन्धम्॥२४॥

चन्दन उशीर करंजके पत्ते कोल बहेड़ेकी मींगी अगुरु नागकेशर यह सब पीसकर शरीरपर मलनेसे बहुत कालकी दुर्गन्धको दूर करतेहैं कहीं "बालपत्र" भी पाठहै अर्थ नेत्रवालाहै ॥ २४ ॥

सदाडिमत्वङ्मधुलोध्रपद्मैः पिष्टैस्समानैःपिचुमर्द पत्रैः ॥ विलिप्यगात्रंतरुणीनिदाघेदुर्गंधघर्मांबुचयं निहन्ति ॥ २५ ॥

दाडिमीका वक्कल और मधु लोध्र पद्म इनको समान भाग लेकर और नीमके पत्तोंको शरीरमें मलनेसे स्त्रीके पसीनेकी दुर्गन्ध दूर होतीहै ॥ २५ ॥

सकेशरोशीरशिरीषलोध्रैश्चूर्णीकृतैरंगविलेपनेन ॥
ग्रीष्मेनराणांनकदापिदेहेघर्म्मच्युतिः स्यादितिभोजराजः ॥ २६ ॥

केशर उशीर शिरस लोध इनका चूर्ण कर शरीर पर लेप करनेसे गरमीमें शरीरसे बहुत पसीना नहीं निकलताहै ऐसा भोजराजने कहाहै ॥ २६ ॥

तिलसर्षपरजनीद्वयदूर्वागोरोचनाकुष्टैः ॥ अजमूत्रतक्रपिष्टैरुद्वर्तितमंगमनुपमंभवति ॥ २७ ॥

तिल सरसौं दोनों हलदी दूर्वा गोरोचन कूठ बकरेके मूत्रके और मट्ठेके साथ शरीरपर लेप करनेसे मनोहरता होतीहै ॥ २७ ॥

हरीतकीतोयदतुल्यभागैर्वनेरुहस्यापिचतुर्थभागः ॥
तदर्धभागःकथितोनखस्ययस्यादपगंधोमदनप्रकाशः २८

हरड़ और मोथा यह तुल्य भाग लेकर बनरुहका चौथाई भाग ले और इनसे आधा भाग तालमखाना यह मिलाकर लेप करनेसे कामस्थानकी दुर्गन्ध दूर होती है ॥ २८ ॥

एलाशटीपत्रकचन्दनानितोयाभयाशिग्रुघनाम-
यानि ॥ ससौरभोयंसुरराजयोग्यःख्यातःसगंधोनर
मोहनाख्यः ॥ २९ ॥

इलायची कचूर पत्रज चन्दन मोथा हरड़ सैंजना कपूर यह मोहन नामक योग सब प्रकार दुर्गंधिका दूर करनेवाला है ॥ २९ ॥

धत्तूरकश्मीरघनांबुलोहनिशाकरोशीरसमानिपिष्ट्वा॥
लेपःप्रियोयंसुरमानवानामुदीरितःपूर्वकवीन्द्रधीरैः ३०

धतूरा केशर मोथा नेत्रवाला लोह कपूर उशीर यह सब समान पीसकर इनका लेप करनेसे सबोंकी प्रियता होती है यह मनुष्य और देवताओंको प्रिय है पूर्व विद्वानोंने कहा है ॥ ३० ॥

उशीरकृष्णागुरुचन्द्रनानिपत्रांबुतुल्यानिसमानिपिष्ट्वा ॥
एतानिगात्रेषुविलासिनीनांश्रीखण्डतुल्यंप्रकरोतिगंधम् ३१

इतिदेहरंजनम् ॥

उशीर काला अगर चन्दन तेजपात नेत्रवाला यह सब समान पीसकर अंगोंमें लेप करनेसे विलासवती स्त्रियोंके अंगोंमें चंदन कैसी सुगन्ध होजातीहै ॥ ३१ ॥ इति देहरंजनम् ।

अथमुखरंजनम् ॥

रसालजम्बूफलगर्भसारः सकर्कटोमाक्षिकसंयुतश्च
स्थितोमुखान्तेपुरुषस्यरात्रौकरोतिपुंसांमुखवासमि
ष्टम् ॥ ३२ ॥

आम और जामुन दोनोंकी गुठली लेकर काकड़ासींगी शहद मिलाकर यह रात्रिके समय पुरुष मुखमें रक्खै तौ बडी दुर्गन्ध नष्ट होकर सुगन्धि होती है ॥ ३२ ॥

गुडत्वगेलानखजातिशिह्लैःस्वर्णान्वितैःक्षुद्रवटीविधेया ॥ ताम्बूलगर्भादिवसेचरात्रौकरोतिपुंसांमुखवासमिष्टम् ॥ ३३ ॥

गुड दालचीनी इलायची नख (गन्धद्रव्य) जायफल नागकेशर इन्होंमें सुवर्ण वरक़ मिलाकर इनकी क्षुद्रवटी करके रात्रिमें ताम्बूलके साथ खानेसे पुरुषोंके मुखमें सुगन्ध होती है ॥ ३३ ॥

चूर्णंमुराकेशरकुष्टकानांप्रातर्दिनान्तेपरिलेढियास्त्री॥ अप्यर्द्धमासेनमुखस्यगंधःकर्पूरतुल्यो भवतिप्रकामम् ॥ ३४ ॥

जो स्त्री प्रातःकालमें जटामांसी केशर कूठ तीनोंको पीस इनका चूर्ण चाटती है तौ पन्द्रह दिनमें उसके मुखकी गन्ध कर्पूरकी तुल्य हो जाती है ॥ ३४ ॥

यःकुष्टचूर्णंमधुनाघृतेनपिकाक्षबीजान्वितमत्तिनित्यम् ॥ मासैकमात्रेणमुखंतदीयंगंधायतेकेतकगंधतुल्यम्॥३५॥

जो कोई कूठका चूर्ण मधु और घृतके साथ तालमखाने नित्य सेवन करता है उसका मुख एकमहीनेमें केतकीके गंधकी तुल्य होजाता है ॥ ३५ ॥

गोजलैःक्वथितापथ्यामिशिकुष्टकणान्विता ॥ वदनस्यदुरामोदंनिहन्तिपरिशीलिता ॥ ३६ ॥

गोमूत्रमें हरड़ पकाकर उसमें सौंफ कूठ पीपल डालकर इसका सेवन करनेसे मुखकी दुर्गन्ध दूर होती है ॥ ३६ ॥

तिलंजातिफलंपूगंभक्षयित्वापिबेदनु ॥
शीततोयंपलार्द्धन्तुआस्यदुर्गन्धनाशनम् ॥ ३७ ॥

तिल जायफल सुपारी भक्षण करनेसे इसके पीछे ठंडा जल आधा पल पीनेसे मुखकी दुर्गन्ध नष्ट होती है ॥ ३७ ॥

घृतकांजिकगंडूषंपरितोभक्षयेच्छटीम् ॥
तथाकृतेभवेदास्येदुरामोदविनाशनम् ॥ ३८ ॥

घी कांजी यह दोनोका गंडूष (कुल्ला) करै इनके आदिअन्तमध्यमें कचूरका भक्षण करै तौ मुखकी दुर्गन्ध नष्ट होती है ॥ ३८ ॥

गोमूत्रैःक्काथयेत्कुष्टंबालकंसहरीतकिम् ॥
सर्वंपिष्ट्वावटींकुर्यान्मुखदुर्गंधनाशनम् ॥ ३९ ॥

गोमूत्रमें कूठ सुगन्धवाला और हरड़ डालकर काथ बनावै पीछे सब पीसकर गोलीबना मुखमें रखनेसे मुखकी दुर्गन्ध का नाश होता है ॥ ३९ ॥

कटुतिक्तकषायेणदंतकाष्ठेनानित्यशः ॥
दुर्गंधंहन्तिनोचित्रंक्षौद्रैर्वाकुष्टचूर्णकम् ॥ ४० ॥

कड़वे और तीखे काढे करके अथवा नित्य दतोन करनेसे अथवा शहदके साथ कूठका चूर्ण सेवन करनेसे मुखकी दुर्गन्ध नष्ट होती है ॥ ४० ॥

सिंधूत्थसिद्धार्थकसारिवानांत्वचायुतानां
परिलेपनेन ॥ स्त्रीपुंसयोर्यौवनयोर्हठेन
विनाशमायातिमुखस्थगन्धः ॥ ४१ ॥

सैंधा सरसों सारिवन दालचीनी चूर्णकर इनका लेप करनेसे स्त्री पुरुषोंके युवावस्थामें उठा हुआ मुखका दुर्गंध दूर होजाताहै॥४१॥

पिष्ट्वामसूरंघनसावरेणमुहुर्मुहुस्तेनविलिप्यवक्रम् ॥
नश्यंतिगंडाःपिटकाःप्ररूढामासार्द्धमात्रेणविलासि
नीनाम् ॥ ४२ ॥

मसूरको कपूर सरवन के साथ पीसकर वारंवार उसको स्त्रियोंके मुखपर लेप करनेसे गंड पिटक (मुहांसे) यह पन्द्रह दिनमेंही नष्ट होजातेहैं ॥ ४२ ॥

यःकंटकाञ्शाल्मलिपादपस्य क्षीरेणपिष्ट्वाष्टदिनं
विलिप्य गण्डप्रदेहाःपिटकात्र्यहेणप्रयांतिनाशंपुरुष
स्यतन्व्याः ॥ ४३ ॥

जो सेमलके वृक्षके काँटे आठ दिन दूधमें पीसकर स्त्री वा पुरुषके मुख पर लेप करै तौ उस स्त्री पुरुषके मुखकी झांई मुहांसे आदि तीन दिनमें नष्ट हो जाते हैं ॥ ४३ ॥

धान्यंवचासावरतुल्यभागंपिष्ट्वालिपेत्तेनमुखंनितांतम् ॥
मुखोद्भवायौवनजानराणांनश्यन्तिनूनंपिटकाःक्रमेण४४

धनियां वच सरवन यह बराबर भाग लेकर इन्हें पीस निरन्तर मुखपर लेप करनेसे निश्चयही मनुष्योंके जवानीके मुहांसे पिटिक दूर होजाते हैं "शैलजलोध्रतुल्य" भी पाठहै अर्थ मनसिल और लोध है ॥ ४४ ॥

सिद्धार्थबीजद्वितयंतिलंचक्षारेणपिष्ट्वापरिलिप्यवक्रम् ॥
सप्ताहमात्रेणमुखस्थनीलीं निहंतिकृष्णामितिरंति
देवः ॥ ४५ ॥

सरसों और तिल इनको जवाखारके साथ पीसकर मुखपर लेप करनेसे सात दिनमें मुखकी नीलिका फुनसी मुहांसे आदि नष्ट होते हैं यह रन्तिदेवने कहा है ॥ ४५ ॥

निशाद्वयंगैरिकशोणयष्टिरंभाम्बुमाहेन्द्रयवोत्तमानि ॥
निघ्नंतिनीलिंत्रयवारमात्राच्चन्द्रेणतुल्यंवदनम्भवेच्च॥ ४६

दोनों हलदी गेरू सोनापाठा कदली नेत्रबाला इन्द्रजौ यह तीनवार मुखपर लगानेसे मुखकी फुंसी दूर होतीहैं और मुखचन्द्रमा के तुल्य होजाता है ॥ ४६ ॥

मरिचंरोचनायुक्तंसंपेष्यमुखमालिपेत् ॥
तरुण्याःपिटकाःसर्वानश्यंतिमुखसंभवाः ॥ ४७ ॥

काली मिरच और गोरोचन पीसकर मुखपर लपेटनेसे स्त्रीके मुखके जवानीके मुहांसे आदि दूर होजाते हैं ॥ ४७ ॥

व्यंगेषुचार्जुनत्वग्वामंजिष्ठावासमाक्षिका ॥
एतालिप्तारुयहंयावद्भवेत्पद्मोपमंमुखम् ॥ ४८ ॥

अर्जुनकी छाल और मँजीठका चूर्ण इनको शहदमें मिलाय तीन दिन मुखपर लेप करनेसे मुख कमल सदृश निर्मल होजाताहै॥४८॥

मातुलिंगजटासर्पिःशिलागोशकृतोरसः ॥
मुखकांतिकरोलेपःपिटकातिलकालजित् ॥ ४९ ॥

बिजौरेकी जड़ घी मनसिल गौके गोबरका रस इनके लेप करनेसे मुखपर कान्ति होती है पिटिका तिल आदि दूर होते हैं॥४९॥

रक्तचन्दनमंजिष्ठाकुष्टलोध्रप्रियंगवः ॥
वटांकुरमसूराश्चव्यंगघ्नामुखकान्तिदाः ॥ ५० ॥

रक्तचंदन, मँजीठ, कूठ, लोध, प्रियंगु, वटकेअंकुर, मसूर इनका लेष मसूरिका व्यंगादिको दूर कर मुखपर गन्ध और कान्ति करने वालाहै ॥ ५० ॥

मंजिष्ठामधुकंलाक्षामातुलिंगसपिष्टकम् ॥
कर्षप्रमाणैरेतैस्तुतैलस्यकुडवंपचेत् ॥ ५१ ॥
अजापयस्तद्द्विगुणंशनैर्मृद्वग्निनापचेत् ॥ ५२ ॥

मँजीठ, मुलैठी लाख, बिजौरेकी जड़को पीस यह एक एक कर्षप्रमाण लेकर एक कुडव तेलमें पकावै उससे दूना बकरीका दूध लेकर मृदुअग्निमें इन सबको पकावै ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

लीनकापिडिकाव्यंगाअभ्यंगादेवनाशयेत् ॥
मुखप्रसन्नेपिहितंनीलकर्कशवर्जितम् ॥ ५३ ॥

लीनका, छोटी फुन्सी, व्यंग, (मुहांसे आदि) सब इसके मलनेसे दूर होते हैं मुख निर्मल होजाता है कंटकादि नहीं रहतेहैं खुदरापन जाता रहताहै ॥ ५३ ॥

सप्तरात्रप्रयोगेणभवेत्कांचनसंनिभम् ॥
अत्रद्विरुक्तत्वात्षष्ठीमधुकर्षद्वयंतथा ॥ ५४ ॥

सातरातके प्रयोगसे मुख सुवर्णकी तुल्य होजाता है मधुको दोबार कहनेसे शहद दो कर्ष लेना चाहिये ॥ ५४ ॥

मनश्शिलातथालोध्रंद्विनिशासर्षपाःसमाः ॥
वारिपिष्टोहितोलेपोवदनेश्यामिकांहरेत् ॥ ५५ ॥

मनशिल, लोध, दोनों हलदी, सरसों यह बराबर लेकर जलसे पीस लेप करनेसे मुखकी श्यामता छूट जाती है ॥ ५५ ॥

महिषीक्षीरसंयुक्तंरजनीरक्तचन्दनम् ॥
कृतेलेपेनिहंत्याशुश्यामिकांवदनाश्रिताम् ॥ ५६ ॥

भैंसके क्षीरसे युक्त दोनों हलदी, लालचन्दन मिलाकर मुखपर लेप करनेसे मुखकी झांई दूर होती है तथा स्याहीभी जाती रहती है ॥ ५६ ॥

उभेहरिद्रेमंजिष्ठाघृतंगौराश्चसर्षपाः ॥
पेष्यंगैरिकसंयुक्तमजाक्षीरेणपाचितम् ॥ ५७ ॥

दोनों हलदी, मंजीठ, गौका घी, सफ़ेद सरसों, गेरूके साथ इन को पीसकर बकरीके दूधके साथ पकावै ॥ ५७ ॥

एतेनैवभवेद्वक्रमुदयादित्यवर्चसम् ॥
वचालोध्रमुशीरंचसर्पिस्सर्जरसःपयः ॥ ५८ ॥

इससे मुखपर सूर्यके समान कांति होती है, वच, लोध, उशीर, घृत, राल, दूध ॥ ५८ ॥

पीतानिवटपत्राणिरजनींसहपेषयेत् ॥
लेपोयंमुखपादाभ्यांपद्मवत्कुरुतेभृशम् ॥ ५९ ॥

पीले वटके पत्ते, हलदी के साथ पीसकर मुखपर लेप करनेसे कमल के समान मुख प्रकाशित होताहै ॥ ५९ ॥

मसूरान्मधुनासार्द्धंपिष्ट्वातैर्मर्दयेन्मुखम् ॥
सप्तरात्रप्रयोगेणपुंडरीकदलप्रभम् ॥ ६० ॥

मसूर शहदके साथ पीसकर मुखपर मलनेसे सातरात्रिके प्रयोगमें कमलके समान मुख होजाता है ॥ ६० ॥

इतिमुखरंजनम् ॥

अथकेशरंजनम् ।

स्रग्गंधधूपांबरभूषणानांनशोभतेशुक्लशिरोरुहाणाम् ॥
यस्मादतोमूर्द्धजरागसेवांकुर्य्याद्यथैवांजनभूषणानाम् ६१

माला, गंध, धूप, वस्त्र, भूषण यह श्वेत बालवाले पुरुषोंको शोभित नहीं होतेहैं इस कारण बालोंकी सेवा अवश्य करै जिससे वह अंजन और भौंरेकी समान होजाते हैं ॥ ६१ ॥

आम्राण्डेनोत्थितं तैलं कांतपाषाणचूर्णितम् ॥
काकतुंडीफलंकृष्णंचूर्णयित्वाप्रयत्नतः ॥ ६२ ॥

आमकी गुठलीका तेल और कान्तपाषाणका चूर्ण, काकादनीका फल, लोहचूर्ण यह सब यत्नपूर्वक चूर्ण करके वा अंकोलकातेल ॥ ६२ ॥

धान्यराशौविनिःक्षिप्यमासार्द्धंशिरसिक्षिपेत् ॥
नस्यंदिनत्रयन्तेनकेशरंजनकंभवेत् ॥ ६३ ॥

धान्यराशिमें दाबकर एक महीनेके उपरान्त निकाल शिरमें डाले तीन दिन लेप करनेसे केश काले होजाते हैं ॥ ६३ ॥

वर्षार्द्धंतिष्ठतेकृष्णभ्रमरांजनसन्निभम् ॥
त्रिफलालोहचूर्णंतुनीलीभृंगीसमूलकम् ॥ ६४ ॥

और छः महीनेतक वे बाल काले भौंरेकी समान होजाते हैं. त्रिफला, लोहचूर्ण, नील के पत्ते भांगरा मूल ॥ ६४ ॥

एतच्चूर्णमिडामूत्रेदिनमेकंविभावयेत् ॥
तेनैवमर्द्दयेच्छीर्षंरंजतेभ्रमरोपमम् ॥ ६५ ॥

इन सबका चूर्ण बकरीके मूत्रमें एक दिन भावना देकर फिर शिरपर मलनेसे भौंरेकी समान बाल होजाते हैं ॥ ६५ ॥

गुंजाबीजस्यचूर्णन्तुकुष्टैलादेवदारुकम् ॥
तुल्यांशम्भावयेच्चूर्णंदिनैकंभृंगजद्रवैः ॥ ६६ ॥

चौंटलीके बीजोंका चूर्ण, कूठ, एला, देवदारु यह बराबर लेकर इनके चूर्णकी एक दिन भांगरेके रसमें भावनादे इसके मलनेसे बाल भौंरेकी समान कृष्णवर्ण होते हैं ॥ ६६ ॥

चूर्णाच्चतुर्गुणेतैलेपाचयेन्मृदुवह्निना ॥
तेनाभ्यंगाद्घनाकेशारंजनंभ्रमरोपमम् ॥ ६७ ॥

चूर्णसे चौगुने तेलमें कोमल अग्निसे पकावे उसके लगानेसे बाल भौंरेकी समान होजातेहैं ॥ ६७ ॥

हस्तिदंतस्यदग्धस्यसमांशेनरसंसमम् ॥
अजाक्षीरेणतंपिष्ट्वालेपनात्केशरंजनम् ॥ ६८ ॥

हाथीका दांत जलाकर और इसके समान रस ले बकरीके दूधमें उसे पीसकर लेप करनेसे बाल काले होते हैं ॥ ६८ ॥

त्रिफलालोहचूर्णन्तुइक्षुभृंगरसस्तथा ॥
कृष्णमृत्तिकयासार्द्धंभाण्डेमासेनिरोधयेत् ॥ ६९ ॥

त्रिफला, लोहचूर्ण,ईखका रस, भांगरेका रस इनसे आधी काली मिट्टी एक बर्तनमें एक महीने तक बंद कर रक्खै ॥ ६९ ॥

तल्लेपाद्रंजयेत्केशाश्चतुम्मासंस्थिरोभवेत् ॥
लोहकिट्टंजयापुष्पंपिष्ट्वाधात्रीफलंसमम् ॥ ७० ॥

उसके लेप करनेसे काले बाल होकर चार महीनेतक स्थिर रहते हैं; लोहकिट्ट, जवा (गुडहर) के फूल, आमले यह समान भाग ले इनको पीस ॥ ७० ॥

त्रिदिनंलेपयेच्छीर्षंद्विमासंकेशरंजनम् ॥
भृंगराजरसप्रस्थंतैलंकृष्णतिलात्समम् ॥ ७१ ॥

तीन दिन लेप करनेसे दो महीनेतक बाल काले रहते हैं भांगरेका रस एक सेर और इसीकी बराबर काले तिल ले ॥ ७१ ॥

मर्द्दयेत्प्रहरैकन्तुतैलाप्तंनीलिकारसम् ॥
तल्लेपास्त्रिदिनंकुर्य्यात्केशरंजनकंभवेत् ॥ ७२ ॥

एक प्रहरतक इसमें तैलयुक्त नीलीका रस लिप्त करै इसके तीन दिन लगानेसे बाल काले हो जाते हैं ॥ ७२ ॥

चूर्णसर्जयवक्षारंसिद्धार्थचारनालकैः ॥
नागपुष्पंदिनेमध्येतल्लेपात्केशरंजनम् ॥ ७३ ॥

सज्जीखार, जवाखार, सरसों और कांजी नागकेशर इनको पीसकर केशोंमें लगानेसे बाल काले होजाते हैं ॥ ७३ ॥

काकमाचीयबीजानिसमंकृष्णतिलांस्ततः ॥
तत्तैलंग्राहयेद्यंत्रेतद्भ्यस्येत्केशरंजनम् ॥ ७४ ॥

काकमाचीके बीज इसके बराबर काले तिल ले यन्त्रमें इनका तेल निकालकर बालोंमें लगानेसे बाल काले होजाते हैं ॥ ७४ ॥

गोघृतंभृंगजद्रावंमयूरशिखयासह ॥
अग्निनामृदुनापाच्यंतंन्यस्येत्केशरंजनम् ॥ ७५ ॥

गौका घी, भांगरेका रस, मोरशिखाके साथ मृदु अग्निसे पकाले इसके लगानेसे बाल काले होजाते हैं, यह प्रयोग उत्तम है ॥ ७५ ॥

काकमाचीयबीजानिसमंकृष्णातिलांस्ततः ॥
जयापुष्परसंक्षौद्रंकर्षैकंन्यस्यमाचरेत् ॥ ७६ ॥

काकमाचीके बीजोंके समान काले तिल ले उसमें गुडहरके फूलों का रस शहद एक कर्ष डाले ॥ ७६ ॥

सप्ताहंरंजयेत्केशान्सर्वंन्यस्येत्वयंविधिः ॥
त्रिफलालोहचूर्णन्तुवारिणापेषयेत्समम् ॥ ७७ ॥

यह एकत्र करके सात दिनतक लगावै तौ बालोंको काला रखताहै सब न्यस्यकी यही विधिहै त्रिफला और लोहचूर्ण यह समानले जलसे पीसे ॥ ७७ ॥

द्वयोस्तुल्येनतैलेनपचेन्मृद्वग्निनाक्षणम् ॥
तैलतुल्यंभृंगरसंयावत्तैलंचपाचयेत् ॥ ७८ ॥

और इन दोनोंके समान तेल लेकर मृदु अग्निसे पकावै और तेलकी बराबर भांगरेका रसभी इसमें डाले जब रस जलजाय तेलमात्र रहजाय ॥ ७८ ॥

स्निग्धंभांडगतंभूमौस्थितंमासात्समुद्धरेत् ॥
सप्ताहंलेपयेद्दृष्ट्वाकदल्यश्चदलैश्शिरः ॥ ७९ ॥

तब उसे चिकने बर्तनमें भरकर पृथ्वीमें गाडदे एक महीनेसे निकालकर केलेके पत्तेपर, लगाय शिरमें सात दिनतक लगावै ॥ ७९ ॥

निर्वातेक्षीरभोजीस्यात्क्षालयेत्रिफलाजलैः ॥
नित्यमेवंहिकर्त्तव्यंसप्ताहंरंजनंभवेत् ॥ ८० ॥

निर्वातस्थानमें क्षीरका भोजन पान करै और त्रिफलेके जलसे धोडाले सात दिन ऐसा करनेसे सर्वथा बाल काले हो जाते हैं ॥ ८० ॥

यावज्जीवंनसन्देहःकेशाःस्युर्भ्रमरोपमाः ॥
महाकालस्यबीजानिवाकुचीबीजतत्समम्॥८१॥

और निःसन्देह जन्मपर्यन्त केश श्याम रहतेहैं अथवा महाकालके बीज उसके समान बाकुची, सोमराजीके बीज उसीके समानले ॥ ८१ ॥

चूर्णन्द्रव्यैश्चनिर्गुंडयांभावयेत्तुचतुर्दिनम् ॥
जपापुष्पद्रवैरेतंततःपातालयंत्रके ॥ ८२ ॥

इनको चूर्णकर चार दिनतक गुडहरके रसकी भावनादे और पातालयंत्रसे इसका ॥ ८२ ॥

तैलंग्राह्यंतुतल्लेपेपत्रैरेरण्डजैश्शिरः ॥
वेष्टयेत्क्षीरभोजीस्याद्वातातपाविवर्जितः ॥ ८३ ॥

तेल निकालकर उसके लेप करनेसे अर्थात् एरण्डके पत्तोंमें लगाकर शिरपर लेप करनेसे और क्षीर (दूध) पान करनेसे और वात धूपका सेवन न करनेसे ॥ ८३ ॥

एवंसप्तदिनंलेप्यंतण्डुलान्धारयेन्मुखे ॥
कृष्णवर्णाःप्रजायन्तेतथाभवतिप्रत्यहम् ॥ ८४ ॥

मुखमें तण्डुल धरके इस प्रकार सात दिनतक बालोंपर लेप करनेसे कृष्णवर्ण होजातेहैं ॥ ८४ ॥

महोग्रंकर्दमेक्षिप्त्वाषण्मासात्तुसमुद्धरेत् ॥
तद्भुतंजायतेकृष्णंकर्षैकंशिरसिक्षिपेत् ॥ ८५ ॥

तथा बायबिडंगको कीचड़में डालकर छःमहीनेतक पड़ा रहने दे उसका एक कर्ष चूर्ण कर शिरमें डालनेसे बाल काले होजातेहैं॥८५

केशाःकृष्णाःप्रजायन्तेभ्रमरीकुलसंनिभाः ॥
कपालीरंजनंख्यातंयावज्जीवंनसंशयः ॥ ८६ ॥

जोकि काले भौंरेकी समान होजाते हैं और जीवनपर्यन्त वैसेही रहजातेहैं इसमें सन्देह नहीं ॥ ८६ ॥

सनीलिकांसैंधवपिप्पलीभिर्घृतानुयुक्तैरुपलिप्यकेशम् ॥
क्रमेणशंखोपममाशुकृष्णंशिरोरुहंमेचकतामुपैति ८७॥

नीलकी जड़, सैंधा, पीपली, घृत इनसे बालोंको लेपन करनेसे क्रमसे श्वेत बालभी काले वर्णके होजातेहैं ॥ ८७ ॥

फलान्वितंचूततरोःप्रसूनंपिंडारकंपांडुरनीलिकेवा ॥
प्रस्थप्रमाणंचतिलस्यतैलंपचेदमीभिर्विदितोपदेशः ८८

फूलसंहित आमके फल, पिंडार, धवईके फूल, नील यह सब लेकर और एक सेर तिलोंका तेल लेकर इसमें यह सब पकावै॥८८॥

तस्मिंश्चमध्येयदिहंसपक्षःक्षिप्तोभवेन्मेचकवर्णयुक्तः ॥
पाकस्तदैवास्यनरैर्विधेयःख्यातंपृथिव्यामपिनीलतैलम्

उसके मध्यमें राजहंसके बाल डालकर देखे जो वह डालतेही कृष्णवर्णके होजायँ तो उसका पाक यथार्थ जाने और यह पृथ्वीमें नीलतैल नामसे विख्यातहै ॥ ८९ ॥

एतन्निलिप्तंपलितंनराणांशंखावदातंसकलंत्रिरात्रम् ॥
पुष्पंनश्रेयांसिसमानयुक्तंचिरम्भवेद्दृष्टइतिप्रयोगः॥९०॥

इसको बालोंपर लगानेसे श्वेतबाल भौंरेकी समान काले होजातेहैं यह प्रयोग अच्छी प्रकार देखा हुआ है और सिद्धहै ॥ ९० ॥

शतावरीकृष्णातिलेनयुक्तागोरोचनाकाकमुखाभिधाच ॥
अमीभिरालिप्यपुनःसुकेशान्करोतिशुक्लानपिकृष्णवर्णान् ॥

शतावरी, काले तिल, गोरोचन, काकमुखा इनको पीस बालोंपर लेप करनेसे शुक्ल बाल काले होजाते हैं ॥ ९१ ॥

मर्दंतिकायारसकल्कसिद्धंतिलोद्भवंतैलमिदंनराणाम् ॥
अकालजातंपलितंसरौक्ष्यंकेशस्यकारुष्यमलंनिहन्ति ॥

नवमल्लिकाका रस निकालकर तिलका तेल डाल कल्क लगानेसे मनुष्योंके अकालमें श्वेत हुए बाल श्याम होजातेहैं बालोंके सब प्रकारके रोग और मल दूर करतेहैं ॥ ९२ ॥

इति केशरंजनम् ।

अथसौगंधिकरणम् ॥

मुस्थंचसर्षपंचैवह्युशीरंचतथैवच ॥
हरीतक्याश्चक्काथेनआमलक्यास्समंततः ॥ ९३ ॥
केशमूलंसमालेप्यमेघतुल्योभवेत्कचः ॥ ९४ ॥

मोथा, सरसों, उशीर, हरड़, आमला, इनका क्काथ करके केशोकी-जड़में लेपन करनेसे बाल मेघके समान काले होजाते हैं ॥ ९३ ॥ ९४

सूक्ष्मैलजीमूतनखैःसचूतैःस्वर्णाभसीपत्रकसंयुतैश्च ॥
सौरभ्यकांतीकिलमूर्द्धजानांस्नात्वानरोविन्दतिसर्वदैव ॥ ९५

छोटी इलायची, मोथा, नख, (सुगन्धद्रव्य) आम, नागकेशर, शेफालिका, तेजपात, ढाक इनका चूर्ण करके इनको बालोंमें लगा कर स्नान करनेसे बालोंमें सुगन्ध हो जाती है ॥ ९५ ॥

स्वर्णाम्बुदोशीरनखीयुतानांपथ्यान्वितानांचविलेपनेच ॥
स्नात्वानरःसौरभमर्द्धमासंवैकल्पमाप्नोतिशिरोरुहस्य ॥ ९६ ॥

नागकेशर, मोथा, उशीर, नखी, (सुगन्धद्रव्य) हरड़ इनका लेपनकर स्नान करनेसे मनुष्योंके शिरमें पन्द्रह दिनतक सुगन्धि आती है ॥ ९६ ॥

पथ्यावसानामलकीफलानामजस्तुजीमूतरसामयानाम् ॥
मासीयुतानाम्परिलेपनेनस्नात्वानरस्सौरभकान्तिमेति॥९७॥
इतिकेशरंजनेस्नानीयसुगंधिद्रव्यम् ॥

हरड़ीकी बकली, आमला, मेंढासींगी, मोथेका रस, कूठ जटा-मांसीके सहित लेप करनेसे स्नान करे तो सुगन्धि हो जातीहै॥९७॥

इतिकेशरंजने स्नानीयसुगन्धिद्रव्यम् ॥

अथ केशयूकादिनिवारणम् ॥

विडंगगंधोत्पलकल्कयोगाद्गोमूत्रसिद्धंकटुतैलमेतत् ॥
अभ्यंगयोगेनाशिरोरुहाणांयूकादिलिक्षाप्रचयंनिहन्ति॥९८॥

केशोंकी लीखादिका निवारण करना॥बायबिडंग, गंधक, कमल, इनको पीस गोमूत्रसे सिद्धकर कड़वे तेलमें पाककर बालोंमें मल-नेसे सम्पूर्ण लीखैं मरजातीहैं ॥ ९८ ॥

गोमूत्रसारिवामूलंलेपाद्यूकानिवारणम् ॥
पारदंमर्द्दयेन्निष्कंकृष्णधत्तूरजैर्द्रवैः ॥ ९९ ॥

गोमूत्र, सरवनकी जड़ इनका लेप लीखोंको निवारण करताहै काले धतूरेके रसमें एक निष्क (१०८ रत्ती)पारेको खरल करें॥९९॥

नागवल्लीद्रवैर्वापिवस्त्रखंडंविलेपयेत् ॥
तद्वस्त्रंवेष्टयेन्मौलौधार्यायामत्रयंतथा ॥ १०० ॥

और पानके रसमें मिलाकर वस्त्रपर लपेटकर वह वस्त्र शिरपर धारण करनेसे तीन पहर शिरपर रखनेसे ॥ १०० ॥

यूकाःपतंतिनिश्शेषंमस्तकान्नात्रसंशयः ॥
द्विनिशानवनीतेनलेपान्मौलेःप्रकंडुनुत् ॥ १०१ ॥

सब शिरसे लीखें गिर जाती हैं इसमें सन्देह नहीं. दोनों हलदी मक्खनके साथ मिलाकर मलनेसे शिरकी खुजली नष्ट होजातीहै।१०१।

नीलोत्पलंतिलंयष्टिसर्षपानागकेशरम् ॥
धात्रीफलंसमंपिष्ट्वालेपोयूकाविनाशकः ॥ १०२ ॥

नीलकमल, तिल, मुलेठी, सरसों, नागकेशर, आमलेके साथ पीसकर लेप करनेसे यह लेप लीखका नाश करनेवाला है ॥१०२॥

निशागन्धकगोमूत्रंविडंगंकटुतैलकम् ॥
पारदेनसमंमर्द्यंलेपोयूकाविनाशकः ॥ १०३ ॥

हलदी, गंधक, गोमूत्र, बायबिडंग, कड़वातेल, पारेकेसाथ मिला कर लेप करनेसे लीखोंको दूर करताहै ॥ १०३ ॥

लाक्षाभल्लातकंमुस्ताकूटगुग्गुलसर्षपाः ॥
विडंगेनसमंलेपाद्धूमोयूकानिवारकः ॥ १०४ ॥

लाख, भिलावा, नागरमोथा, कूट, गूगल, सरसों, बायबिडंग इनके साथ लेप करनेसे लीखें निवारण होजातीहैं ॥ १०४ ॥

बिल्वमूलंसगोमूत्रंलेपाद्यूकाविनाशनम् ॥ १०५ ॥
इतिकेशरंजनेयूकादिनिवारणम् ।

बेलकी जड़, गोमूत्र इनका लेप लीखोंका निवारण करने वालाहै ॥ १०५ ॥

इति केशरंजनमें यूकआदिनिवारण ।

अथ केशस्यइन्द्रलुप्तादिनिवारणम् ।

गुंजाफलैःक्षौद्रयुतैर्विलिप्यशिरःप्रदेशेसकलेन्द्रलुप्तम् ॥
अनेनयोगेनसदैवकेशारोहन्तिकृष्णाःकुटिलाविशालाः ॥१॥

बालोंका इन्द्रलुप्त रोग निवारण करना॥शिरके बाल गिरने लगें इसको इन्द्रलुप्त कहतेहैं, चौंटली और शहद पीसकर शिरपर लगा-

नेसे सब प्रकारका इन्द्रलुप्तरोग दूर होजाताहै, इस योगसे बाल जमकर बडे और कुटिल होजातेहैं ॥ १ ॥

मातंगदंतस्यमसीविधायश्वेतांजनंतुल्यतयासुपिष्टम् ॥
लिप्येदनेनैवमहेन्द्रलुप्तंकेशाःप्ररोहंत्यपिहस्तमध्ये ॥२॥

हाथीके दांतको जलाय उसकी राख कर इसकी बराबर रसौत ले बकरीके दूधमें पीस इसका लेप करनेसे हाथोंकी हथेलीमें भी बाल जमसक्ते हैं और तो जगहकी क्या कहैं ॥ २ ॥

कुंकुमम्मरिचैस्सार्द्धंपिष्ट्वातैलेनलेपयेत् ॥
इन्द्रलुप्तंनिहंत्याशुर्किबीजंबीरजद्रवैः ॥ ३ ॥

कुंकुम और कालीमिर्च इनको तेलके साथ पीसकर लेप करनेसे इन्द्रलुप्तरोग शीघ्र नष्ट होजाताहै तथा जंबीरीके बीजोंका रस गुण करताहै ॥ ३ ॥

सुदग्धंहस्तिदन्तन्तुछागदुग्धंरसांजनम् ॥
पिष्ट्वालेपात्प्रजायन्तेकेशाः करतलेष्वपि ॥ ४ ॥

दग्ध हुवा हाथीका दांत बकरीका दूध, रसोत इनको पीसकर हाथमें लेप करनेसे भी बाल जम आतेहैं ॥ ४ ॥

जातीपुष्पंदलंमूलंकृष्णगोमूत्रपेषितम् ॥
लेपोयंसप्तरात्रेणदृढकेशकरःपरः ॥ ५ ॥

चमेलीके फूल, दल, मूल, काली गौके मूत्रमें पीसकर यह लेप करनेसे सातरात्रिमें दृढ बाल कर देताहै ॥ ५ ॥

शृंगाटत्रिफलाभृंगीनीलोत्पलमयोरजः ॥
सूक्ष्मंचूर्णसमंकृत्वापचेत्तैलेचतुर्गुणे ॥ ६ ॥

सिंघाड़ा, त्रिफला, भांगरा, नीलकमल, लोहचूर्ण इन सबका चूर्ण कर इससे चौगुना तेल डालकर पकाले कहीं "भृंगाटं" पाठहै–तिसका अर्थ भांगरा है ॥ ६ ॥

तल्लेपेनदृढाःकेशाःकुटिलास्सरलाअपि ॥
कीटभक्षितकेशंतुस्थानंस्वर्णेनघर्षयेत् ॥ ७ ॥

इसका लेप करनेसे बाल कुटिल और सरल होजातेहैं और यदि बालोंको कीड़ा खागया हो तो सुवर्णको वहां घिसे ॥ ७ ॥

यावत्सुतप्ततांयातितावल्लेपमिमंकुरु ॥
भल्लातकंचबृहतीगुंजामूलफलंतथा ॥ ८ ॥

जबतक वह तप्तताको प्राप्त न होजाय तबतक बराबर लेप करतारहै, भिलावा, कटेरी, चौंटलीकी जड़ और फल ॥ ८ ॥

मधुनासहलेपेनवायुक्षीरोटकप्रणुत् ॥
भल्लातकंकृष्णतिलंकंटकारीफलंसमम् ॥ ९ ॥

यह शहदके साथ पीसकर लेप करे तौ इन्द्रलुप्त दूर करता है भिलावा, कालेतिल, कटेरीके फल यह समान भागले ॥ ९ ॥

पिष्टंतंडुलतोयेनलेपोयन्तंविनाशयेत् ॥
जपापुष्पैश्चतंहन्यात्कृष्णागोमूत्रलेपनात् ॥ १० ॥

चावलके जलसे पीसकर लेप करनेसे इन्द्रलुप्त रोग दूर करता है और काली गौके मूत्रमें जवाके फूल पीसकर लेपन करै ॥१०॥

तिलप्रसूनंसहगोक्षुरेणसलावणंगव्यघृतेनापिष्टम् ॥
सप्ताहमात्रेणशिरःप्रलेपाद्भवन्तिदीर्घाःप्रचुराश्चकेशाः ॥

अथवा तिलके फूल, गोखरू, लवण, गौके घी से पीसकर सात दिन लेप करनेसे बाल दीर्घ और बहुत होजाते हैं ॥ ११ ॥

शाल्मलीतालमूल्योश्चमूलंपद्मसमुद्भवम् ॥
छागदुग्धेसमंपिष्टंलेपयेन्मुंडितंशिरः ॥
त्रिदिनंभक्षयेत्तच्चकेशवर्द्धनमुत्तमम् ॥ १२ ॥

इतिकेशरंजनेइंद्रलुप्तादिनिवारणम् ।

सैमल, तालमूली, कमल मूल यह बराबर लेकर बकरीके दूधके साथ पीसनेसे यह लेप शिरमुंडित वालोंको हितकारी है और तीन दिन लेप करनेसे उत्तम केशवृद्धि होजाती है ॥ १२ ॥

इतिकेशरंजनमेंइन्द्रलुप्तआदिनिवारण ।

अथ केशशुक्लीकरणम् ।

वज्रीक्षीरेणसप्ताहंतच्छेषंभावयेत्तिलम् ॥
तत्तैललिप्ताःकेशाश्चशुक्लास्स्युर्नात्रसंशयः ॥१३॥

अथ बाल श्वेतकरनेकी विधि । थूहरके दूधमें कालेतिलोंको सात दिन भावनादे फिर उस तेलको बालोंपर लेप करनेसे निःसन्देह बाल श्वेत होजाते हैं ॥ १३ ॥

रोगामलकचूर्णन्तुवज्रीक्षीरेणसप्तधा ॥
भावयेत्तस्यलेपेनशुक्लतांयांतिमूर्द्धजाः ॥ १४ ॥

कूठ और आमलेका चूर्णको थूहरके दूधसे सात वार भावित करनेसे इसका लेप बालोंको श्वेत करता है ॥ १४ ॥

अजाक्षीरेणसप्ताहंभावयेदभयाफलम् ॥
तच्चूर्णसहतैलेनलेपाच्छुक्लाभवन्तिहि ॥ १५ ॥

इति केशशुक्लीकरणम् ।

इतिश्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेमोहनकेशादिरंजनेपंचमोपदेशः ५

हरड़को सात दिन बकरीके दूधमें भावनादे उसका चूर्णकर तेलमें मिलाय बालोंमें लगावै तो श्वेत हों ॥ १५ ॥

इति केशशुक्लकरण ।

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पंडितज्वालाप्रसादमिश्रकृत-भाषाटीकायां केशादिरंजने पंचमोपदेशः ॥ ५ ॥

अथ वाजीकरणम् ॥

बलेननारीपरितोषमेतिनहीनवीर्यस्यकदापिसौख्यम् ॥
अतोबलार्थंरतिलम्पटस्यवाजीविधानंप्रथमंविदध्ये ॥१॥

अथवाजीकरण । बलसे स्त्री संतुष्ट होती है, परन्तु हीनवीर्य पुरुषसे कभी स्त्री सन्तुष्ट नहीं होती है इसकारण उन लम्पट पुरुषोंके बलके निमित्त वाजी (पुष्ट) प्रकरण लिखाजाताहै ॥ १ ॥

अश्विन्यांवटवृन्दाकंक्षीरैःपीत्वामहाबलः ॥
पुष्योद्धृतंपिबेन्मूलंश्वेतार्कस्यप्रयत्नतः ॥ २ ॥
सप्तरात्रंतुगोक्षीरैर्वृद्धोपितरुणायते ॥

अश्विनीनक्षत्र में वडका वंदा दूध के साथ पीसकर पीनेसे बलकी वृद्धि होती है पुष्यनक्षत्रमें उखाड़ी हुई श्वेत आककी जड़ सात दिनतक गौके दूधके साथ यत्नसे पिये तो वृद्धभी तरुण होजाता है ॥ २ ॥

चूर्णविदार्यास्वरसेनतस्याःविभावितंभास्कररश्मिजालैः ॥
मध्वाज्यसंमिश्रितमेवलीढ्वादशास्त्रियोगच्छतिनिर्विशंकः ।३।

विदारीकंदका चूर्णकर उसीके स्वरसमें भावनादे धूपमें सुखाने से शहद और घृत मिलाय न्यून और अधिक सेवन कर दशस्त्रियोंको तृप्त करसकता है ॥ ३ ॥

भूयोविभाव्यामलकस्यचूर्णंरसेनतस्यैवसिताज्यमिश्रम्।
सक्षौद्रमालेढिनिशामुखेयोनूनंसवृद्धस्तरुणत्वमेति॥४॥

आमलेके रसमें आमलोंको भावना देकर उसमें मिश्री और घृत मिलावे इसे शहदके साथ रात्रिमें पान करनेसे वृद्ध पुरुषभी तरुण हो जाता है ॥ ४ ॥

कर्षप्रमाणंमधुकस्यचूर्णंक्षौद्राज्यसंमिश्रितमेवलीढ्वा ॥
क्षीरानुपानाद्रमतेतुतावद्यावन्नराणामुदरस्थमेतत् ॥५॥

मुलैठीका चूर्ण एक कर्ष लेकर इसमें घृत और शहद मिलाकर चाटनेसे और पीछे दूध पीनेसे मनुष्यमें अधिक सामर्थ्य होजाती है अर्थात् यह जब तक न पचै तब तक रमण करता है ॥ ५ ॥

सितपिकतरुबीजंतण्डुलाःयष्टिकानांसघृतमधुसमेतं
प्रत्यहंयोवलेढि ॥ जठरकुहरमध्येयातिपाकंनयावद्र
मयतिकृशदेहोप्यंगनानांसमूहम् ॥ ६ ॥

कौंचके बीज, सांठीके चावल, मुलैठी, न्यूनाधिक घृत और शहद मिलाकर चाटनेसे जबतक यह न पचै तबतक कृश मनुष्यभी स्त्रीयोंके साथ रमण कर सकता है ॥ ६ ॥

वृद्धशाल्मलिमूलस्यरसंशर्करयापिबेत् ॥
एतत्प्रयोगात्सप्ताहाज्जायतेरेतसोम्बुधिः ॥ ७ ॥

वृद्ध सेमलकी जड़का रस शर्कराके सहित पान करे तो इस प्रयोगसे सात दिनमें मनुष्य वीर्यवान् होजाताहै ॥ ७ ॥

लघुशाल्मलिमूलेनतालमूलीसचूर्णितम् ॥
सर्पिषापयसापीत्वारतौचटकवद्भवेत् ॥ ८ ॥

लघु सैंमलकी जड़ और तालमूलीका चूर्ण घृतके साथ पान करनेसे रतिमें चटककी तुल्य होजाता है ॥ ८ ॥

घृतेनमासंमसृतानिभूयोसुभावयित्वारविशोषितानि ॥
क्षीरेणसंसाध्यचभक्षयित्वासयातिनारीशतमुग्ररेताः ॥९॥

और फिर घृतके साथ एक महीना इसीको प्लावित करके सुखाय दूधसे संभावित कर भक्षण करे तो रतिमें चटकतुल्य होजाता है सौस्त्रियोंसे रमण कर सकता है ॥ ९ ॥

योवर्त्तकीलावकर्पिजलानांमांसन्तथावेश्मविहंगमस्य ॥
हव्येनसिद्धंसहसैंधवेनमहाबलःस्यादुपयुज्यमानः॥१०॥

जो वत्तक लवा कबूतर (जंगली) चिड़ियापक्षीका मांस हव्यमें घृत डालकर सैंधेके साथ भक्षण करता है उसका बल अधिक बढजाता है ॥ १० ॥

विदारीकन्दकल्कन्तुघृतेनपयसानरः ॥
उदुम्बरसमंखादेद्वृद्धोपितरुणायते ॥ ११ ॥

विदारीकंदके कल्कको घीमिले दूधके साथ एक तोला पान करनेसे वृद्ध पुरुष भी तरुण होजाता है ॥ ११ ॥

पिप्पलीनांरसोपेतौवस्तांडौक्षीरसर्पिषा ॥
साधितौभक्षयेद्यस्तुसगच्छेत्प्रमदाशतम् ॥ १२ ॥

बकरेके दोनों अंडकोशोंको प्रथम जलमें उबालकर फिर दूधसे निकाले हुए घीमें भूनकर अनुपानके अनुसार उसमें सैंधानिमक और पीपलका चूर्ण मिलाय भक्षण करे तो अनेक स्त्रियोंसे रमण कर सकता है ॥ १२ ॥

बस्तांडसिद्धेपयसिभावितानसकृत्तिलान् ॥
यःखादेत्सनरोगच्छेत्स्त्रीणांशतमपूर्ववत् ॥ १३ ॥

बकरेके अंडकोशको दूधमें औटाकर उस दूधकी तिलोंमें वारंवार भावनादे इनको छायामें सुखाय सेवन करे तो सौ स्त्रियोंसे रमण कर सकता है ॥ १३ ॥

गोक्षुरकःक्षुरकश्शतमूलीवानरिनागबलातिबलाच ॥
चूर्णमिदंपयसानिशिपेयंयस्यगृहेप्रमदाशतमास्ति। १४॥

गोखरू, तालमखाने, शतावर कौंचके बीज, नागबला, खिरेंटी इनका चूर्ण दूधके साथ रात्रिमें पान करनेसे सौ स्त्रियोंको तृप्त कर सकता है ॥ १४ ॥

अश्वत्थफलमूलत्वक्छुंगासिद्धंपयोनरः ॥
सपीत्वाशर्कराक्षौद्रंकालिंगइवहृष्यते ॥ १५ ॥

पीपलके फल, जड़, छाल और कली इनको अनुमानके अनुसार दूधमें डाल औटावे शीतल होनेपर मिश्री शहद मिलाय तथा बूराडालकर पीवे तो कुलिंग (चिड़े) के समान प्रसन्न होता है ॥ १५ ॥

घृतंशतावरीगर्भंक्षीरेचतुर्गुणेपचेत् ॥
शर्करापिप्पलीक्षौद्रयुक्तंतद्वृष्यमुच्यते ॥ १६ ॥

घृतमें शतावरीका स्वरस मिलाय चौगुने दूधके साथ पकाय उसमें मिश्री, शहद, पीपल शतावर का कल्क डालकर खाय तो पुष्टता होती है ॥ १६ ॥

शतावरीरजःप्रस्थंप्रस्थंगोक्षुरकस्यच ॥
वाराह्याविंशतिपलंगुडूच्याःपंचविंशतिः ॥ १७ ॥
भल्लातकानांद्वात्रिंशच्चित्रकानान्दशैवतु ॥
तिलानांनिस्तुषाणांतुप्रस्थंदद्यात्सुचूर्णितम् ॥१८॥
त्रिफलस्यपलान्यष्टौशर्करायाश्चसप्ततिः ॥
माक्षिकंशर्कराद्धेंनमाक्षिकार्द्धेनवैघृतम् ॥ १९ ॥

शतावरका चूर्ण एक सेर, दक्षिणी गोखरूका चूर्ण एकसेर, वाराहीकंदका चूर्ण एकसेर, सतागिलोय एकसेर, नौ छटांक शुद्ध किये भिलावे २ सेर, चीतेकी छाल ढाई पाव, धोएतिल एक सेर, सोंठ, मिरच, पीपलका चूर्ण आध सेर, मिश्री साढेचार सेर इससे आधा शहद और एक सेर दो छटांक घी ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥

शतावरीसमन्देयंविदारीकन्दजंरजः ॥
एतदेकीकृतंचूर्णंस्निग्धभांडेनिधापयेत् ॥ २० ॥

शतावरीके समान विदारीकंदका चूर्ण यह सब बारीक कर मिलाय चिकने बर्तनमें रख छोड़े ॥ २० ॥

पलार्द्धमुपभुंजीतयथेष्टंचास्यभोजनम् ॥
मासैकमुपयोगेनजरांहंतिरुजामपि ॥ २१ ॥

प्रतिदिन दो तोले सेवन करनेसे यथेष्ट भोजन करे तो एक महीनेमें जरा और हीनवीर्यता नष्ट होती है ॥ २१ ॥

वलीपलितखालित्यहेमपांड्वाद्यपीनसान् ॥
हन्त्यष्टादशकुष्ठानितथाष्टावुदराणिच ॥ २२ ॥

वली, शिरके बालोंका श्वेत होना, गंजापन, प्रमेह, पीनस, अठारह कोढ, आठ प्रकारके उदर रोग ॥ २२ ॥

भगंदरंमूत्रकृच्छ्रंगृध्रसींसहलीमकम् ॥
क्षयंचैवमहाव्याधिंपंचकासान्सुदारुणान् ॥ २३ ॥

भगन्दर, मूत्रकृच्छ्र, गृध्रसी, हलीमक रोग, क्षय, महाव्याधि पांच प्रकारकी दारुण खांसी ॥ २३ ॥

अशीतिवातजान्रोगांश्चत्वारिंशच्चपैत्तिकान् ॥
विंशतिंसूक्ष्मरोगांश्चसंसृष्टान्सान्निपतिकान् ॥ २४ ॥

अस्सी वातरोग, चालीस पित्तके रोग, वीस सूक्ष्मरोग, सन्निपातके रोग ॥ २४ ॥

सर्वानर्शोगदान्हन्याद्वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ॥ २५ ॥

बवासीर यह सब ऐसे दूर होजाते हैं जैसे इन्द्रके वज्रसे वृक्ष नष्ट होजातेहैं ॥ २५ ॥

सकांचनाभोमृगराजविक्रमस्तुरंगमंचाप्यनुयातिवेगतः ॥
स्त्रीणांशतंगच्छतिसातिरेकंप्रहृष्टपुष्टंचयथाविहंगम् ॥ २६ ॥

तथा सुवर्णके समान शरीर होकर सिंहके समान पराक्रमी, घोड़ेके समान कामवेग प्राप्त होताहै और यह सौ स्त्रियोंके संग गमन कर सकता है तथा विहंगके समान हृष्ट पुष्ट होताहै ॥ २६ ॥

पुत्रान्संजनयेद्धीमान्नरसिंहनिभांस्तथा ॥
नारसिंहमिदंचूर्णंसर्वरोगहरंनृणाम् ॥ २७ ॥

इतिनृसिंहचूर्णम् ।

यह चूर्ण मनुष्यको नृसिंहके समान कान्तिमान् करता है यह नृसिंहचूर्ण मनुष्योंके सबरोग दूर करता है ॥ २७ ॥

इति नृसिंहचूर्ण ।

त्रैलोक्यविजयापत्रंसबीजंघृतभर्जितम् ॥
त्रिकटुस्त्रिफलाकुष्ठंभृंगीसैंधवधान्यकम् ॥ २८ ॥

अथवा त्रिलोक विजया (भंग) के पत्ते और बीज घृतसे भूनकर उसमें त्रिकटु (सोंठ मिरच पीपल) हरड़, बहेड़ा, आमला, कूट भांगरा, धनियां, वच ॥ २८ ॥

चव्यंतालीशपत्रंचकट्फलंनागकेशरम् ॥
अजमोदायवानीचयष्टीमधुकमेवच ॥ २९ ॥

चव्य, तालीसकी छाल, कट्फल नागकेशर, अजमोद, अजवायन, मुलैठी ॥ २९ ॥

मेथीजीरकयुग्मंचगृहीत्वासमभागतः ॥
यावन्त्येतानिचूर्णानितावदेवतदौषधम् ॥ ३० ॥

मेथी, कालाजीरा, श्वेतजीरा यह सब समान भाग लेकर यह सम्पूर्ण औषधी ॥ ३० ॥

समेशिलातलेपिष्ट्वाचूर्णयेदतिचिक्कणम् ॥
तावदेवसितादेयायावद्यातिबंधनम् ॥ ३१ ॥

समान शिलापर पीसकर महीन चूर्णकरै इतनी इसमें मिश्रीकी चासनी करै जिस्से वह बँध जाय ॥ ३१ ॥

घृतेनमधुनामिश्रंमोदकंपरिकल्पयेत् ॥
घृतभर्जिततिलचूर्णंमोदकोपरिविन्यसेत् ॥
त्रिसुगंधिसमायुक्तंकर्पूरेणाधिवासितम् ॥ ३२ ॥

तथा इसमें घी और शहद मिलाकर लड्डु बाँधे मोदकके ऊपर घीमें भुने हुये तिलोंका चूर्ण डालै तथा पत्रज, तज, इलायची, कपूरसे अधिवासित करै ॥ ३२ ॥

स्थापयेद्घृतभांडेतुश्रीमन्मदनमोदकम् ॥
भक्षयेत्प्रातरुत्थायवातश्लेष्मभयापहम् ॥ ३३ ॥

घृतके बर्त्तनमें स्थापन करके रखछोडे यह मदनमोदक प्रातःकालमें उठकर खानेसे श्लेष्माका भय दूर होता है ॥ ३३ ॥

प्रवृद्धमग्निंकुरुतेमन्दमग्निंप्रदीपयेत् ॥
कृशानामतिरूक्षाणांस्नेहनंस्थौल्यकारणम् ॥ ३४॥

बढीहुई अग्निको सम और मन्दाग्निको बढाताहै, कृश, अत्यन्त रूखे परुषोंको स्थूल और स्नेहन करता है ॥ ३४ ॥

कासघ्नंसर्वशूलघ्नंमामवातविनाशनम् ॥
सर्वरोगहरंह्येतत्संग्रहंग्रहणीहरम् ॥ ३५ ॥

कास, शूल, आमवातका नाशक है सम्पूर्ण रोग तथा संग्रहणी रोगको यह हरण करता है ॥ ३५ ॥

एतस्यसतताभ्यासाद्वृद्धोपितरुणायते ॥
ब्रह्मणश्चमुखाच्छ्रुत्वावासुदेवेजगत्पतौ ॥ ३६ ॥

निरन्तर इसके सेवन करनेसे वृद्धभी तरुण होता है, ब्रह्माके मुखसे श्रवणकर वासुदेव जगत्पतिसे ॥ ३६ ॥

एषकामस्यवृद्धचर्थंनारदेनप्रकाशितः ॥
येनलक्षैर्वरस्त्रीणांरमेत्सयदुनन्दनः ॥ ३७ ॥
इति श्रीमन्मदनमोदकः ॥

यह कामकी वृद्धिके अर्थ नारदजीने कथन किया है, जिसके कारण यदुनन्दन सैंकडों स्त्रियोंसे रमण करतेथे ॥ ३७ ॥

इति मदनमोदक ॥

मृतसूताभ्रकंस्वर्णवाजिगंधावचारसैः ॥
मुशलीकंदलीकन्दद्रवैश्चमर्दयेद्दिनम् ॥ ३८ ॥

शुद्धपारा, शुद्धसुवर्ण, असगंध, वचके रसमें खरलकर इसमें मुशली, कदलीकन्दका चूर्ण डालकर एक दिन खरल करे ॥ ३८ ॥

लाक्षालघुपुटैःपच्यान्मर्दयेत्पूर्ववद्द्रवैः ॥
पुटन्देयंपुनर्मर्द्यमेवमष्टपुटैःपचेत् ॥ ३९ ॥

लाखकी लघुपुट देकर इसको फिर खरल करता रहै और लाक्षा जलके आठ पुट देकर इसको पकावे ॥ ३९ ॥

शाल्मलीजातनिर्यासैश्चतुर्मासान्तुभक्षयेत् ॥
गोदुग्धंमर्कटीबीजैः पलार्द्धम्पाचयेदनु ॥ ४० ॥

सेमलके उत्पन्न हुए गोंदसे और चारमहीने भक्षणकरे गौका दूध कौंचके बीज आधे पल डालकर पकावे ॥ ४० ॥

रसःकामकलाख्योयंरमतेस्त्रीसहस्रकैः ॥
सर्वांगोद्वर्त्तनंकुर्य्यात्स्वरसैःशाल्मलीरसैः ॥ ४१ ॥
इतिकामकलारसः ।

यह कामकलानामक रस है, इसके सेवनसे मनुष्य सहस्र स्त्रियोंसे रमण कर सकताहै, सर्वांगमें सेमलके स्वरसको मले पुरुषके काम बल बढजाता है ॥ ४१ ॥

इति कामकलारस ।

शुद्धसूतसमंगंधंत्र्यहंकल्हारजैर्द्रवैः ॥
मर्दितंवालुकायंत्रेयामंसंपुटगंपचेत् ॥ ४२ ॥

शुद्ध पारा उसकी बराबर शोधी गंधक तीन दिन श्वेतकमल साथ खरल करके वालुकायंत्रमें एक पहर संपुट कर आंचदे ॥४२॥

रक्तागस्त्यद्रवैर्भाव्यंदिनमेकमिवद्धुतम् ॥
यथेष्टंभक्षयेच्चान्नंकामयेत्कामिनीशतम् ॥ ४३ ॥

और फिर निकालकर एकदिन लाल अगस्त्यके रसकी भावना दे, इसको सेवनकर यथेष्ट अन्न भक्षणकर सौ स्त्रियोंसे रमण कर सकताहै ॥ ४३ ॥

पलद्वयंद्वयंशुद्धंपारदंगंधकंतथा ॥
मृतहेम्नस्तुकर्षैकंपलैकंचमृताभ्रकम् ॥ ४४ ॥

दो पल शुद्ध पारा, दोपल शुद्ध गंधक, शुद्ध सोना एक कर्ष, शुद्ध अभ्रक एक पल ॥ ४४ ॥

मृतताम्रंचतुर्निष्कंसर्वंपंचामृतैर्दिनम् ॥
रुद्रैगजपुटैःपाच्यादिनैकान्तेसमुद्धरेत् ॥ ४५ ॥

फूंका हुआ तांबा चार निष्क (६४ मासे) इन सबको पंचामृतसे खरल करके ग्यारह दिन पीछे गजपुटमें रखकर फूंकदे, एक दिन की आंच देकर फिर इसको फूंकदे इसको निकालकर पीसे ॥ ४५ ॥

पिष्ट्वापंचामृतैःकुर्य्याद्वटिकांबदराकृतिम् ॥
अनंगसुन्दरींखादेद्रमेद्रामाशतत्रयम् ॥ ४६ ॥

बेरकी बराबर इसकी गोली बनावै, यह अनंगसुंदरी नामक बटी सेवन करनेसे सौ स्त्रियोंसे रमण करसकता है ॥ ४६ ॥

शाल्मलीमूलचूर्णन्तुभृंगराजस्यमूलकम् ॥
पलैकंसितयाचान्नंभक्षयेत्कामयेच्छतम् ॥ ४७ ॥
इत्यनंगसुंदरीवटिका।

सेमल की जड़काचूर्ण भांगरेकी जड़ इनका चूर्णकर इसमें एक पल मिश्री डालकर खाय तो सौ स्त्रियोंसे गमन करसकताहै॥४७॥

इति अनंगसुन्दरीवटिका।

सूतपादंताम्रचूर्णखल्वेपिष्टंप्रकारयेत् ॥
निःक्षिप्यकदलीकन्देपुनर्लेप्यंचगोमयैः ॥ ४८ ॥

पारा चौथाई भाग और तांबा इनको ले चूर्ण कर केलेकी जड़में खरल करै, फिर इसका गोलाकर गोबरसे लपेट सुखाले ॥ ४८ ॥

शुष्कंगजपुटैःपच्यात्तथाकन्देपुनःक्षिपेत् ॥
एवंसप्तपुटैःपच्यात्कंदैःकन्दंपृथक्पृथक् ॥ ४९ ॥
दत्वातत्रघृतंचूर्णवस्त्रेबद्धातुपाचयेत् ॥
दोलायंत्रेचसंयुक्तंछागीदुग्धेपुनःपचेत् ॥ ५० ॥

सुखाकर गजपुटसे फूंकदे, फिर निकाल केलेकी कंदमें भावना देकर फूंकदे, इसप्रकार सात वार पृथक् पृथक् भावनादे और घृत मिलाय फिर वस्त्रकी कपरोटी लगा सुखाय फिर कपरोटी चढावे, फिर दोलायंत्रमें सिद्धकर बकरीके दूधसे पाक करै ॥ ४९ ॥ ५० ॥

गुडूच्याथशतावर्यावानर्यागोक्षुरैस्तथा ॥
गजपिप्पलिकालाजाकदल्याकोकिलाक्षकैः ॥५१॥
सितयापाचयेदेवद्विगुणंलघुवह्निना ॥
उद्धृत्यचूर्णयेत्स्वच्छंभक्षेद्गुंजाचतुष्टयम् ॥ ५२ ॥
सितायुक्तंसदासेव्यंमहाकामेश्वरोरसः ॥
कामिनीनांसहस्रैकंक्षोभयेन्निमिषान्तरे ॥ ५३ ॥

गुडूची, शतावरी, कौंचके बीज, गोखरू, गजपीपल, लाजा, (खील) केलाकंद, तालमखाना इन सबको बराबर ले बारीक करके इनसे दूनी मिश्रीकी चासनी कर लघु आंचसे पकावे, उपरोक्त सब औषधी उसमें डालदे और ऊपरके रसभी इसमें डालदे इस चूर्णको चार चौंटली प्रमाण भक्षण करै, मिश्रीके साथ यह महाकामेश्वर रस सदा सेवन करे तो एक क्षणमें सहस्र स्त्रियोंको क्षुभित कर सकताहै ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

गोक्षुरंवानरंबीजंगुडूचीगजपिप्पली ॥
कोकिलाक्षस्यबीजानिफलंगुणशतावरी ॥ ५४ ॥

गोखरू, कौंचके बीज, गुडूची, गजपीपल, तालमखानेके फल शतावरी ॥ ५४ ॥

कर्कशाबीजमज्जाचसर्वंतुल्यंविचूर्णयेत् ॥
चूर्णतुल्यासितायोज्यामधुनापिंडितंलिहेत् ॥
पलार्द्धमनुपानंस्यात्किंचित्पेयंगवांपयः ॥ ५५ ॥

इति महाकामेश्वररसः ।

कर्कशाके बीज और मींगी यह सब बराबर लेकर चूर्ण करै और चूर्णके तुल्य बराबर मिश्री डालकर शहदके साथ इसकी बटी बनाकर सेवन करे आधे पलका, इसका अनुपान यह है कि इस पर कुछ गौका दूध पीना चाहिये ॥ ५५ ॥

इति महाकामेश्वररस ।

शुद्धसूतसमंगंधंरक्तोत्पलदलद्रवैः ॥
याममेकंपुनर्गंधंपूर्वादर्द्धंविनिःक्षिपेत् ॥ ५६ ॥
तद्द्रवैर्मर्दयेच्चांगंपूर्वगंधंचमर्दनम् ॥
पूर्वद्रावैर्दिनैकंतुकाचकुप्यानिरुध्यच ॥ ५७ ॥

शोधा पारा, शोधी गंधक, लाल कमलके दलके रसमें एक पहर

तक खरल करै और इस रसको सुखाकर वारंवार खरल करै और जब पारा और गंधक सब प्रकारसे एकरूप होजाय तब इसकोले कांचकी शीशीमें भरकर ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

दिनैकंवालुकायंत्रेपक्कमुद्धृत्यभक्षयेत् ॥
पंचगुंजासितासार्द्धंरसोयम्मदनोदयः ॥ ५८ ॥

एक दिनतक वालुकायंत्रमें चढादे, फिर उतार इसे प्रयोग करै यह मदनोदय रस पांच चौंटली प्रमाण मिश्रीके सहित खाना उचित है ॥ ५८ ॥

कोकिलाक्षस्यबीजंचसमूलीशर्करासमम् ॥
गवांक्षीरेणतत्पेयंपलार्द्धमनुपानकम् ॥ ५९ ॥
वानरीकोकिलाक्षस्यबीजंश्यामतिलंसमम् ॥
मूलंगोक्षुरमासाभ्यांशुष्कचूर्णंप्रकल्पयेत् ॥ ६० ॥

इति मदनोदयरसः ।

तालमखानेके बीज और मुसली, शर्करा यह समान भागले, आधे पल गौके दूधके साथ इसको पान करै तो पुष्टि होती है, यह मदनोदय रसहै कोंचके बीज, तालमखानेके बीज और काले तिल यह समान भागले और गोखरू उरद इनको पीसकर चूर्ण करले ॥ ५९ ॥ ६० ॥

इति मदनोदयरस ।

चूर्णन्तुल्यंमृतंचाभ्रंसर्वतुल्यासिताभवेत् ॥
कर्षमेकंगवांक्षीरैःपेयंकामांगनायकम् ॥ ६१ ॥

इस चूर्णमें अनुमानसे शोधा अभ्रक डालै इन सबकी तुल्य मिश्री डालै एक कर्ष (सोलहमासे) गौके दूधसे पान करे तो स्त्रियोंको अतिप्रिय होता है ॥ ६१ ॥

तैलेनपक्कचटकंखादेद्भोजनपूर्वतः ॥
भोजनांतेपिबेत्क्षीरंरामाःकामयतेशतम् ॥ ६२ ॥
इति कामांगनायकः ।

चटकापक्षीके मांस को तेलमें पकाय भोजनसे पहले खाय और भोजनके अन्तमें दूध पीवे तो सौ स्त्रियोंसे रमण कर सकता है यह कामांगनायकहै ॥ ६२ ॥

इति कामांगनायक ।

अश्वगंधावह्निमूलंशाल्मलीचशतावरी ॥
विदारीमुशलीकन्दंकोकिलाक्षस्यबीजकम् ॥ ६३॥

असगंध, चीतेकी जड़, सेमल, शतावरी, विदारीकंद, मशली कंद, तालमखाने ॥ ६३ ॥

वानरीबीजंतत्तुल्यंसुष्टुचूर्णतुकारयेत् ॥
चूर्णतुल्यंमृतंचाभ्रंसर्वतुल्यासिताभवेत् ॥ ६४ ॥

और कौंचके बीज इनका चूर्ण करै और चूर्णके अनुसार शुद्ध अभ्रक डाले सबकी बराबर मिश्री होवे ॥ ६४ ॥

गवांक्षीरैःपिबेत्कर्षंरमयेत्कामिनीशतम् ॥
अश्वकर्कटमांसन्तुभक्षयेच्चापिबेत्पयः ॥ ६५ ॥

इन सबको एक कर्ष गौके दूधके साथ लेनेसे सौ स्त्रियोंसे रमण करसकता है अश्व और केकडेका मांस भक्षणकर ऊपरसे दूध पीवे ॥

योगःकामामृतःख्यातोबलवीर्य्यायुर्वर्द्धकः ॥
धात्रीफलस्यचूर्णांतुभावयेत्तत्फलद्रवैः ॥ ६६ ॥

यह कामामृत नामक योग अत्यन्त बल वीर्यका बढाने वाला है आंवलेका चूर्ण कर उसमें उसीके फलोंके रसकी भावना देकर सुखावै

एकविंशतिवारन्तु शोष्यंपेष्यंपुनः पुनः ॥
चूर्णपादंमृतंलोहंमध्वाज्यशर्करान्वितम् ॥ ६७ ॥

ऐसे इक्कीस बार भावना देकर सुखावै इस चूर्णसे चौथाई लोहभस्म डालै इसमें शहद घृत मिश्री डाले ॥ ६७ ॥

पलैकंभक्षयेन्नित्यंसिताक्षीरंपिबेदनु ॥
कामयेत्स्त्रीशतंनित्यंधात्रीलोहप्रभावतः ॥ ६८ ॥

इति धात्रीलोहम् ।

इसको प्रतिदिन एक पल खाय मिश्री सहित ऊपर दूध पीवे इस धात्रीलोहके प्रभावसे सौ स्त्रियोंकी नित्य इच्छा करसकता है६८॥

इति धात्रीलोह ।

वानरीबीजचूर्णतुनिस्तुषंमाषचूर्णितम् ॥
नारिकेलोदकैर्भाव्यंयामान्तंपेषयेत्समम् ॥ ६९ ॥

कौंचके बीजोंका चूर्ण छिलके रहित उडदोंका चूर्ण लेकर नारियलके रसकी भावना देकर एक प्रहरके उपरान्त उसको पीसले६९॥

पिष्टस्यविंशद्विंशेनमृतमभ्रंनियोजयेत् ॥
तद्वत्तैर्वटिकाकार्य्यामध्वाज्याभ्यांतुभक्षयेत् ॥७०॥

अच्छे प्रकार उसको पीसकर शुद्ध अभ्रक उसमें डालै इसप्रकार उनकी वटिका करके शहद और घृतके साथ भक्षण करै ॥ ७० ॥

पीत्वाक्षीरंसितायुक्तंरम्यारामारमेच्छतम् ॥
सताम्बूलंशतामूलंमनुपानंनिरन्तरम् ॥ ७१ ॥

इसके ऊपर मिश्री डालकर दूध पीवै तौ अनेक स्त्रियोंके साथ रमण कर सकता है इसके ऊपर निरन्तर शता मूलयुक्त ताम्बूल भक्षण करै ॥ ७१ ॥

ऊर्णनाभिभवंबीजंमधुनासहपेषयेत् ॥
तेननाभिप्रलेपेनबंधःसद्योविमुंचति ॥ ७२ ॥

मकडीके बीजको शहदके साथ नाभिपर लेप करनेसे स्त्रीसे बद्ध हुआ पुरुष शीघ्र मुक्त होता है अर्थात् मैथुनमें समर्थ होताहै॥७२॥

अन्तरिक्षेनसंग्राह्यंयत्नाद्वागुटिकामलम् ॥
तेनलिंगप्रलेपेनरमेद्रामाशतंनरः ॥ ७३ ॥

अन्तरिक्षसे गुटिका मलले इसका ध्वजापर लेप करे तो मनुष्य सौ स्त्रियोंसे रमण करसकता है ॥ ७३ ॥

सम्यङ्मारितमभ्रकंकटफलंकुष्टाश्वगंधामृता
मेथीमोचरसंविदारमुशलीगोक्षूरमिक्षूरकम् ॥
रंभाकंदशतावरीह्यजमुदामाषास्तिलाधान्यकं
यष्टीनागबलाकचूरमदनंजातीफलंसैन्धवम्॥७४॥

अच्छी प्रकार शोधा अभ्रक शोधा हुआ कट्फल कूठ अजमोद गिलोय मेथी मोचरस विदारीकंद मुशली गोखरू कोकिलाक्ष के बीज कंदलीकंद शतावरी अतिबला उड़द तिल धनियाँ असगंध खरैंटी मुलहटी और नागबला कचूर मैनफल जायफल सेंधा॥७४॥

मार्गीकर्कटशृंगभृंगकटुकंजीरद्वयंचित्रकं
चातुर्जातपुनर्नवागजकणाब्राह्मीनिशावासकम् ॥
बीजंमर्कटिशाल्मलंफलत्रिकंचूर्णसमंकल्पयेत् ॥
चूर्णसंविजयासिताद्विगुणितामध्वाज्ययोःपिंडितम्७५

कस्तूरी काकड़ासिंगी भांगरा त्रिकटु दोनोंजीरे तज पत्रज इलायची दालचीनी नागकेशर पुनर्नवा गजपीपल ब्राह्मी हलदी अडूसा कौंचके बीज सेमल त्रिफला इनको बराबर लेकर चूर्ण करै, उस चूर्णके समान भंग, दूनी मिश्री ले इसमें घृत और मधु डालकर इसकी वटिका बनाले ॥ ७५ ॥

कर्षार्द्धम्वटिकाविलेह्यमथवासेव्यंसदासर्वदा
पेयंक्षीरसितानुवीर्य्यकरणेस्तम्भेप्ययंकामिनीम् ॥
वामावश्यकरंपरंचसुखदंप्रौढांगनाद्रावकं
क्षीणेपुष्टिकरंगदक्षयकरंहन्त्याशुसर्वामयम् ॥ ७६ ॥

इसकी आधे कर्षकी वटिका बनावै उसको चाटे अथवा वैसेही सेवन करै इसके ऊपर मिश्री डालकर दूध पीवे तो यह स्त्रीको स्तम्भित कर सकता है यह स्त्रीको वशमें करनेवाला सुखदायक प्रौढ स्त्रियोंको प्रेरणाकरने वालाहै क्षीणवीर्यमें पुष्टिका करनेवाला रोगक्षय कर शीघ्र सब रोगोंका नाशक है ॥ ७६ ॥

कासश्वासमहातिसारशमनंमन्दाग्निसंदीपनं
अर्शःसंग्रहणीप्रमेहनिचयंश्लेष्मातिरक्तप्रणुत् ॥
नित्यानन्दकरंविशेषकवितावाचांविलासोत्तमं
धत्तेसर्वगुणंहठात्स्ववदशाध्यानप्रधानंपुनः ॥ ७७ ॥

कास श्वास महाअतिसारका शमनकरनेवाला मन्दाग्निका प्रदीप्त करनेवाला बवासीर संग्रहणी सबप्रकारके प्रमेह कफके रोग रक्त रोगको दूरकरता है नित्य आनन्द करनेवाला विशेष कर विशेष बुद्धि आदिकेगुण देताहै सम्पूर्णगुण इसके प्रभावसे प्राप्तहोजातेहैं७७

अभ्यासेननिहंतिमृत्युपलितंकामेश्वरोवत्सरात्
सर्वेषांहितकारकोनिगदितःश्रीनित्यनाथेनसः ॥
वृद्धानांमदनोदयोदयकरःप्रौढांगनासंगमे
सिद्धोयंसमदृष्टप्रत्ययकरोराज्ञासदासेव्यताम् ॥ ७८ ॥

इति कामेश्वररसः ।

और इसके अभ्याससे मृत्यु जीती जाती है बालोंका अकालमें पकना दूर होता है यह सबका हितकारक कामेश्वररस नित्यनाथने

कहा है, वृद्धोंको कामउदय करनेवाला प्रौढ अंगनाके संग में सुख देनेवाला यह सिद्धराजोंकों सदा विश्वासकर सेवन करना चाहिये ॥ ७८ ॥

इतिकामेश्वररस ।

यत्किंचिन्मधुरस्निग्धंजीवनंबृंहणंगुरुः ॥
हर्षणंमनसश्चैवतत्सर्ववृष्यमुच्यते ॥ ७९ ॥

जो कुछ वस्तु मधुर चिकनीहै वह जीवनकारक और भारीहै मन को हर्षण करनेवाली जो वस्तुमात्र है वह सब बृष्य कहाती है॥७९॥

नरोवीर्य्यकरान्योगान्सम्यक्शुद्धोनिरामयः ॥
आसप्ततेःप्रकुर्वीतवर्षादूर्द्धंचषोडशात् ॥ ८० ॥

वीर्यकारी पदार्थोंको शुद्ध रोगरहित होकर सेवन करना चाहिये सोलह वर्षसे ऊपर ७० वर्षतक इनयोगोंको सेवन करे ॥ ८० ॥

नचवैषोडशाद्वर्षात्सप्तत्याःपरतोनच ॥
आयुःकामोनरःस्त्रीभिःसंयोगंकर्त्तुमर्हति ॥
कल्पःसोदग्धवयसोवाजीकरणसेवितः ॥ ८१ ॥

सोलहसे न्यून और सत्तर वर्षसे अधिक योगोंको सेवन न करे आयुकी कामना करनेवाला मनुष्य स्त्रियोंसे इस प्रकार संयोग करे वाजीकरणकल्पसे शरीर पुष्ट होजाता है और इसके होनेसे उत्साह और इष्ट सिद्ध होता है ॥ ८१ ॥

आयुष्मंतोमन्दजरावपुर्वीर्य्यबलान्विताः ॥
स्थिरोपचितमांसाश्चभवंतिस्त्रीषुसंयुताः ॥
त्रिभिस्त्रिभिरहोभिश्चसेवेतप्रमदांनरः ॥ ८२ ॥

आयुवाले मन्दजनभी वीर्यबलसे युक्त हो जाते हैं स्थिर आरोग्य बल से युक्त हो मन्दभी स्त्रीसंयुक्त होते हैं,संपूर्ण ऋतुवोंमें तीन दिनमें स्त्रीको सेवन करै अर्थात् तीसरे दिन स्त्रीका संगम करना उचित है और ८२

सर्वर्त्तुषुचग्रीष्मेषुपक्षात्पक्षाद्व्रजेद्बुधः ॥
योगंकृत्वासुसेव्यंसुशृतमपिपयःशीतलंचाम्बुपीत्वा
गच्छेन्नारींस्वरूपांस्मरशरवशगांकामुकःकामलीलः ॥
रत्याहृष्टप्रहृष्टोव्यपगतसुरतःसंधयेन्नित्यनित्यं
कान्तासंगाद्युवापिह्यसकृदपिनरोधातुवैषम्यमेति ॥८३॥
ग्लानिकम्पोरुदौर्बल्यंधात्विंद्रियबलक्षयः ॥
क्षयवृद्धुचपदंशाद्यारोगाश्चातिवदुर्जयाः ॥८४॥

सबसे अधिक बलकी आवश्यकता होतो ग्रीष्ममें न्यून प्रसंगकरै अर्थात् एक पक्षमें गमन करै जो बलवर्द्धक औषधियोंको सेवन नहीं करता वह दुर्बल यह योग न सेवन करे शीतल जलपान करके वा औटाया दूध पीकर कामीजन रूपवती स्त्रीसे गमन करै, यत्नपूर्वक रातके समय प्रेम और धीरतासे सेवन करै ग्रीष्मकालकी यह विधिहै अति प्रसंगवर्जित करना और जो इससे अन्यथा स्त्रियोंको सेवन करते हैं उनके ग्लानि कम्प दुर्बलता धातु इन्द्रियोंका बल क्षय होता है. तथा क्षय अंडवृद्धि उपदंशादि दुर्जय रोग होते हैं८३॥८४

अकालमरणंचैवभजतः स्त्रियमन्यथा ॥
शोषकासज्वरार्शासिश्वासकार्श्यातिपांडुता ॥८५॥

इसकारण अकालमें स्त्रीके भजनेसे अकालमें मरणभी होताहै शोषरोग, श्वास, कास, ज्वर आदि पाण्डुरोग ॥ ८५ ॥

अतिव्यवायाज्जायन्तेरोगाश्चक्षयकादयः ॥
असेवनान्मोहमदोग्रन्थिरग्नेश्चमार्दवम् ॥ ८६ ॥

अति रति करनेसेक्षयादि रोग होजाते हैं विना सेवनके मोह, मद, ग्रंथी आदि तथा अग्निकी मंदता होती है ॥ ८६ ॥

त्यजेच्चिंताद्यशुचितांलोकाध्यक्षंचमैथुनम् ॥
जरयाचिंतयाशुक्रंव्याधिभिः कर्मकर्षणात् ॥८७॥
क्षयंगच्छत्यनशनात्स्त्रीणांचैवातिसेवनात् ॥
क्षयाद्भयादविश्वासाच्छोकस्त्रीदोषदर्शनात् ॥८८॥

मनुष्य चिन्ता मैथुनका ध्यान त्यागदे जराकी चिन्तासे वीर्य क्षीण होता है और व्याधियोंसे और अतिकर्मसे ॥ ८७ ॥ भोजन न करनेसे और स्त्रीके अति सेवन करनेसे क्षय, भय और अविश्वास तथा शोक, स्त्रीदोष देखनेसे क्षीणता होती है ॥ ८८ ॥

नारीणामवसन्नत्वादभिघातादसेवनात् ॥
रूपयौवनमौदार्यलक्षणैर्याविभूषिता ॥
यावश्याशिक्षितायाचसास्त्रीवृष्यतमामता ॥ ८९ ॥

तथा नारीके समान सुखदायक मानकर अभिघातसे असेवनसे क्षय होता है । जो यौवनसम्पन्न और लक्षणोंसे विभूषित है, जो स्त्री वशीभूत शिक्षित है, वह अपने वशमें होनेसे वाजीकरणके योग्य है ॥ ८९ ॥

स्त्रीषुक्षयंमृगयतांवृद्धानांचरितंशताम् ॥
क्षीणजामल्पशुक्राणांस्त्रीषुक्षीणाश्चयेनराः ॥ ९० ॥

स्त्रीजनोंमें जिसका अल्पवीर्य होगया है, क्षीण अल्पवीर्य तथा जो मनुष्य स्त्रीमें क्षीण है ॥ ९० ॥

विलासिनामर्थवतांयौवनोबलशालिनाम् ॥
बहुपत्नीवतांनृणांयोगावाजिकराहिताः ॥ ९१ ॥

इतिश्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेवीर्य्यविवर्द्धननामषष्ठोपदेशः ६

विलासी अर्थवाले यौवनवाले पुरुष बहुत स्त्रीजनोंके पतिवाले पुरुषोंके वाजीकरणयोग हितकारक हैं ॥ ९१ ॥

इतिश्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेवीर्यवर्द्धननामषष्ठोपदेशः ॥ ६ ॥

अथ गाढीकरणम्, तत्र भक्ष्यनिषेधः ॥

अत्यन्तमूलकटुतिक्तकषायमम्लं
क्षारंचशाकखदिरंलवणाधिकंच ॥
कामीसदैवरतिमान्वनिताभिलाषी
नोभक्षयेदितिसमस्तजनप्रसिद्धः ॥ १ ॥

अथ वीर्यगाढीकरण, तहांभक्ष्यनिषेध । अत्यन्त मूल, कड़वी, कसैली अम्ल, खारी, शाक, खैर अत्यन्त नमकीन वस्तु इतनी वस्तुओंको जो स्त्रीसे रतिकी अभिलाषा करनेवाला पुरुष हो वह सेवन न करै ॥ १ ॥

प्रौढांगनायानवसूतिकायाःश्लथंवरांगंनसुखाययूनाम् ॥
तस्मान्नरैर्भेषजतोविधेयागाढीक्रियामन्मथमन्दिरस्य॥२॥

प्रौढ स्त्री, नवीन प्रसूता स्त्री, इनका वरांग शिथिल होजानेके कारण युवा पुरुषोंको सुखदायक नहीं होता इस कारण मदनमंदिरका संकोच करना चाहिये ॥ २ ॥

निशाद्वयंपंकजकेशरञ्चनिष्पीडयेद्देवद्रुमतुल्यभागम् ॥
अनेनलिप्तंमदनातपत्रंप्रयातिसंकोचमलंयुवत्याः॥३॥

दोनों हलदी, कमल, केशर, देवदारु इनको तुल्य भागलेकर काममंदिरमें लेप करनेसे संकोच होकर निर्मलता होती है ॥ ३ ॥

सधातकीपुष्पफलत्रिकेणजम्बूत्वचासाररसंघृतेन ॥
लिप्त्वावराङ्गंमधुकेनतुल्यंवृद्धापिकन्येवभवेत्पुरंध्री॥४॥

धायके फूल, हरड़, बहेड़ा, आमला, जामुनकी त्वचा, लोहसार, घृत और मुलहटी इसका लेप करनेसे वृद्धा स्त्रीभी कन्याके समान होती है ॥ ४ ॥

पिकाक्षबीजेनमनोजगेहंविलिप्ययोषानियमंश्चरंति ॥
हठेनगाढंलभतेतदंगंदृष्टंनरैरेषहठेनयोगः ॥ ५ ॥

शिलारस और रुद्राक्षके बीजोंसे काममन्दिरपर लेप करनेसे साक्षात् नियम करनेसे अवश्य मदनमंदिर संकुचित हो जाताहै यह योग श्रेष्ठ है ॥ ५ ॥

मृणालपद्मंपयसासुपिष्यदृढासमांगीगुटिकाविधेया ॥
यस्यावरांगेनिहिताक्षणेनकन्यात्वमेत्याहसमूलदेवः॥६॥

कमलको जड़सहित जलसे पीसनेसे और उसकी गुटिका बनाकर जिसके काममन्दिरमें क्षणमात्रको रखदे वह कन्यावत् हो जाती है ऐसा मूलदेवने कहाहै ॥ ६ ॥

इक्ष्वाकुबीजंस्नुहिसारवेणपिष्ट्वावरांगंपरिलिप्यतेन ॥
नवप्रसूतापिहठेननारीकन्याभवेत्संयमतोनचित्रम् ॥ ७॥

कड़वी तुम्बीके बीज सेहुंड सारिवाके साथ पीसकर योनिपर लेप करनेसे वह स्त्रीका कामभवन कन्याके समान होजाताहै ॥७॥

इन्दीवरव्याघ्रिवचोषणानांतुरंगमारासनयामिनीनाम् ॥
लेपेननार्यास्स्मरसंस्थरंध्रंसंकोचयत्याशुहठेनयोगः ८॥

नीलकमल, कटेरी, वच, कालीमिरच, कनेर, असन, हलदी यह लेप करनेसे तत्काल स्त्रीका काममन्दिर संकुचित होजाताहै ॥ ८ ॥

याशक्रगोपंस्वयमेवपिष्ट्वाविलिंपातिस्त्रीचवरांगदेशम् ॥
आहत्यतस्याःकठिनंचगाढंभवेन्नचात्रास्तिविचारचर्या९

वीरबहूटीको पीसकर जो स्त्री रतिमंदिरपर लेप करती है उसका मदन मंदिर मनोहर और संकुचित होजाताहै, इसमें आश्चर्य नहीं ॥ ९ ॥

मदनकथनसारैःक्षौद्रतुल्यैर्वरांगंशिथिलितमपियस्याः
पूरितंभूयएव ॥ भवतिकठिनमुच्चैःकर्कशंकामिनीना

मितिनिगदतियोगंरंतिदेवोनरेन्द्रः ॥ अश्वगन्धैर्लि
पेद्योनिंगाढीकरणमुत्तमम् ॥ १० ॥

इति गाढीकरणम् ।

मैनफल, कथनसार यह बराबर शहद डालकर जो काममंदिर-में लेप करै तो वह स्थान कर्कश और कठोर होजाताहै यह योग रंतिदेव नरेन्द्रने कहाहै वा असगंधका योनिपर लेप करै तो गाढी होती है ॥ १० ॥

इति गाढीकरण ।

अथ स्त्रीद्रावणम् ।

यद्यप्यष्टगुणाधिकोनिगदितःकामोंगनानांसदा
नोयातिद्रवतांतथापिझटितिस्त्रीकामिनांसंगमे ॥
तस्माद्भेषजसंप्रयोगविधिनासंक्षेपतोद्रावणम्
किंचित्पल्लवयामिनीरजदृशांप्रीत्यापरंकामिनाम् ॥ ११ ॥

अथस्त्रीद्रावण । यद्यपि स्त्रियोंको कामदेव आठ गुणा कहाहै तथापि संगमें द्रवीभूत नहीं होतीहैं इस कारण संक्षेपसे द्रवीभूत होनेको औषधी कहतेहैं, जिसके होनेसे कामिनियोंको परमप्रीति प्राप्त होतीहै ॥ ११ ॥

सिंदूरचिंचाफलमाक्षिकानितुल्यानियस्यामदनातपत्रे ॥
प्रलिप्यतासांपुरुषप्रसंगात्प्रागेववीर्य्यच्युतिमातनोति १२

सिंदूर, इमलीका फल, शहद यह बराबर लेकर कामध्वजपर लेप कर स्त्रीसे रति करै तो शीघ्रही स्त्री द्रवीभूत होजातीहै ॥ १२ ॥

व्योषंरजःक्षौद्रसमन्वितंवाक्षिप्तंयदिस्यात्स्मरयंत्रगेहे ॥
द्रुताभवेत्सासहसैवनारीदृष्टस्सदायंकिलयोगराजः ॥ १३ ॥

त्रिकुटेका चूर्ण शहदके साथ रतिस्थानमें डालनेसे पुरुषके प्रसंगमें स्त्री बहुत शीघ्र द्रवीभूत हो जाती है यह योगराज देखा गयाहै ॥ १३ ॥

सुपक्कचिंचाफलघोषमूलीगुडंतथामाक्षिकतुल्यभागम् ॥
अमोभिरालिप्यपुनःसुलिंगंबीजंकरोत्याशुनितंबिनीनाम् १४

पक्के इमलीकेफल, मूली, गुड़, शहद यह सब वस्तु कामध्वजपर लेप कर रतिकरनेसे स्त्री शीघ्र द्रवीभूत होतीहै ॥ १४ ॥

सटीकणांक्षौद्रमहेशबीजैःकर्पूरतुल्यैरुपलिप्यलिंगम् ॥
शतंनरोयःसविलासिनीनांरेतःप्रपातंकुरुतेहठेन ॥ १५ ॥

कचूर, पीपल, शहद,पारा,कपूर यह काम ध्वजपर लेपन कर जो पुरुष रति करताहै तो अवश्य स्त्री द्रवीभूत होजाती है ॥ १५ ॥

पारावतपुरीषंचमधुनासैंधवैर्युतम् ॥
लिंगस्यलेपनात्तेनस्त्रीणांद्रावणमुत्तमम् ॥ १६ ॥

कबूतरकी बीट, शहद, सेंधा यह कामध्वजपर लेपकर रति करनेसे स्त्री द्रवीभूत होजाती है ॥ १६ ॥

गोक्षुवार्ताक्यपामार्गरसेनलिंगलेपनात् ॥
तत्क्षणाद्रवतेनारी पद्मपत्रेयथापयः ॥ १७ ॥

गोखरू बैंगन अपामार्ग के रसका कामध्वजपर लेप करनेसे उसी क्षण स्त्री ऐसे द्रवीभूत होजाती है जैसे कमलपत्रपर जल ॥ १७ ॥

पिप्पलीचन्दनंचैवबृहतीपक्कतिंतिडी ॥
एतैर्लिंगप्रलेपेनद्रवेन्नारीनसंशयः ॥ १८ ॥

पीपली, लालचंदन, कटेहरी, पक्की इमली इनका कामध्वजपर लेप करनेसे स्त्री द्रवीभूत होजाती है इसमें संदेह नहीं ॥ १८ ॥

अगस्तिपत्रद्रवसंयुतेनमध्वाज्यसंमिश्रितटंकणेन ॥
लिप्त्वाध्वजंयोरमतेंगनानांसशुक्रमाकर्षतिशीघ्रमेव १९॥

अगस्तके पत्तोंके रसके सहित उसमें मधु घृत और सुहागा मिलाकर जो स्त्रियोंसे रमण करते हैं उनसे बहुत शीघ्र स्त्री द्रवीभूत होती हैं ॥ १९ ॥

सलोध्रधत्तूरकपिप्पलीनांक्षुद्रोषणक्षौद्रविमिश्रितानाम् ॥
लेपेनलिंगस्यकरोतिरेतश्च्युतिंविपक्षप्रमदाजनस्य ।२०।

लोध धतूरा पीपली कटेहरी पीपलामूल इनमें शहद मिला लेप कर जो रति करताहै उससे स्त्री बहुत शीघ्र द्रवीभूतहोजातीहैं २०

तुरगसलिलमध्येभावितंक्षेत्रमाषं
मरिचमधुकतुल्यांपिप्पलींपेषयित्वा ॥
परिरमतिविलिप्यस्वीयलिंगंनरोयः
प्रभवतिवनितानांकामकल्लोलमानः ॥ २१ ॥

असगंधके जलके मध्यमें क्षेत्रमाष (उड़द) मिरच मुलैठीकी समान पीपलको पीसकर इसको कामपताकापर लेप कर स्त्रीसे विहार करनेसे स्त्री बहुत शीघ्र द्रवीभूत होती है ॥ २१ ॥

बिल्वपुष्पंसुकर्पूरंमुंडीपुष्पंचपेषितम् ॥
लिंगलेपेनरामाणांद्रावोभवतिसंगमे ॥ २२ ॥

बेलकाफूल कपूर यह मुंडीके पुष्पको साथ पीसकर कामध्वज पर लेप करनेसे शीघ्र स्त्री द्रवीभूत होती है ॥ २२ ॥

बृहतीफलमूलानिपिप्पल्योमरिचानिच ॥
मधुरोचनयासार्द्धंलिंगलेपेद्रवंतिताः ॥ २३ ॥

कटेहरीके फल और जड़ पीपल काली मिर्च शहद गोरोचन यह मिलाय कामध्वजपर लेपकर रमण करनेसे स्त्री द्रवीभूतहोतीहै २३

क्षौद्रगंधकलेपेनशिलायुक्तेनतत्फलम् ॥
उपहारपशोरक्तंगृह्णीयादन्तरिक्षतः ॥ २४ ॥

तथा शहद गंधक मनशिलके लेपसेभी कार्य सिद्ध होताहै भेटके पशुका रक्त अन्तरिक्षसे ग्रहणकरै ॥ २४ ॥

तच्छुष्कंचूर्णितंस्थाप्यंपुष्पेरक्ताश्वमारजे ॥
तत्पुष्पंधारयेद्वस्त्रेतर्ज्जन्यंगुष्ठयोगतः ॥ २५ ॥

उसको सुखाय चूर्ण कर लाल कनेरके फूलमें धारण करै तर्जनी (अँगूठेके निकटकी अँगुली) और अँगूठे से उसको धारण करै ॥ २५ ॥

आवर्त्यसंमुखेस्त्रीणांदृष्टमात्रेद्रवंतिताः ॥
जम्बीरफलमध्येतुमूलंवृश्चिककंटकम् ॥ २६ ॥

स्त्रीके सन्मुख होतेही वह अवश्य द्रवीभूत होजातीहैं, जम्भीरी नींबूके बीचमें श्वेतपुनर्नवाकी जड़ रखकर ॥ २६ ॥

क्षिप्त्वाबध्वास्त्रियैदद्याद्घ्राणमात्रेद्रवन्तिताः ॥
आहरेद्वामजंघांतुटिट्टिभस्यतुदाक्षिणैः ॥ २७ ॥

बांधकर स्त्रीको दे तो सूंघनेमात्रसे द्रवित होती है टिट्टिभकी बांईजंघा लाकर उसको शुद्ध करके फिर ॥ २७ ॥

तन्मध्येप्रक्षिपेद्भूर्ज्जपत्रमोंकारलेपितम् ॥
रक्ताश्वमारपुष्पेणमुखंतस्यनिरोधयेत् ॥ २८ ॥

उसके बीचमें ओंकार लिख भोजपत्र डाल चारोंओर लेपन कर रक्खै और लाल कनेरके फूलसे इसका मुख बंद करदे ॥ २८ ॥

कर्णोपरिस्थितंतेनदृष्ट्वास्त्रीद्रवतिध्रुवम् ॥
जलेनलांगलीमूलंपिष्ट्वाहस्तेप्रलेपयेत् ॥ २९ ॥

उसे कानपर रक्खे देखतेही स्त्री द्रवीभूत होजातीहै कलिहारी की जड़को जलसे पीसकर हाथमें लेप करनेसे ॥ २९ ॥

हस्तेनस्त्रीकरस्पर्शैद्रवत्यग्नौघृतंयथा ॥ ३० ॥

हाथसे छूतेही इस प्रकार स्त्री द्रवीभूत होजाती है जैसे अग्निसे घृत ॥ ३० ॥

मरिचकनकबीजैःपिप्पलीलोध्रयुक्तैर्विमलमधुविमिश्रैर्मानवोलिप्तलिंगः ॥स्मरतिरतिविलासेकष्टसाध्यांचनारींसमुचितरतिरागांसंविदध्याद्वश्यम् ॥ ३१ ॥

कालीमिरच, धतूरेके बीज पीपल लोध यह सब पीस शहदमें मिलाकर कामध्वजपर लेप करनेसे रतियुद्धमें कठिन स्त्रीभी अवश्य पराजित होजाती है ॥ ३१ ॥

सर्वेषांद्रवयोगानांमंत्रराजंशिवोदितम् ॥
जपेदष्टोत्तरशतंतत्रयोगस्यासिद्धये ॥ ३२ ॥

इन सब द्रवीभूत होनेके योगोंका एक मंत्र शिवजीने कहाहै जिससे यह योग सिद्ध होते हैं इस योगकी सिद्धिके निमित्त एक सौ आठ मंत्र जपना चाहिये ॥ ३२ ॥

ॐनमोभगवतेरुद्रायउड्डामरेश्वरायद्रावय २
स्त्रीणांमदंपातय २ स्वाहा । ठः ठः ।

इति द्रावणम् ।

ॐनमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय द्रावय २ स्त्रीणां मदं पातय २ स्वाहा ठः ठः । कहीं पातय की जगह द्रावय पाठ है ॥

इतिद्रावण ।

अथकामध्वजस्थूलीकरणम् । (दृढीकरणम्)

सकुष्ठमातंगबलाबलानांवचाश्वगंधागजपिप्पलीनाम् ॥
तुरंगशत्रोर्नवनीतयोगाल्लेपेर्नालिंगंमुसलत्वमेति ॥ ३३ ॥

अथ कामध्वज स्थूलीकरण। कूट पीपल दोनों खरेंटी वच असगंधा गजपीपल कनेर इनका मक्खनके साथ लेप करनेसे ध्वजा मूसलके समान कठोर होती है ॥ ३३ ॥

दिनेदिनेयदाह्येवंसुधीःकुर्य्यात्प्रयत्नतः ॥
तदास्थूलंभवेल्लिंगंनिश्चितंनात्रसंशयः ॥ ३४ ॥

जो बुद्धिमान् दिन दिन यत्न पूर्वक यह प्रयोग करता है तब उसकी ध्वजा स्थूल होजाती है इसमें सन्देह नहीं ॥ ३४ ॥

सलोध्रकाश्मीरतुरङ्गगंधामातंगगंधापरिपाचितेन॥तैले
नवृद्धिंखलुयातिलिङ्गंवरांगनालोकमनोहरन्तत्॥३५ ॥

लोध केशर असगंध पीपल शालपर्णी तेलमें इनको पकाकर लेप करनेसे ध्वजाकी वृद्धि होतीहै जो स्त्रीजनोंको मनोहरहै ॥३५॥

भल्लातकास्थिजलशूकमथाब्जपत्र-
मंतर्विदाह्यमतिमान्सहसैंधवेन ॥
एतद्विरूढबृहतीफलतोयपिष्ट-
मालेपनम्माहिषवद्विमलीकृतेङ्गे
स्थूलंमहत्तरतुरंगमतुल्यमाशु
शेफःकरोत्यभिमतंनहिसंशयोस्ति ॥ ३६ ॥
सूतकंमरिचंकुष्ठंनागरंकंटकारिका ॥
अश्वगंधातिलंक्षौद्रंसैन्धवंश्वेतसर्षपाः ॥ ३७ ॥

भिलावोंकी मींगी शेवाल कमलपत्र इन तीनोंको जलाकर सेंधानिमक मिलाय और बडी कटेहरीके साथ जलसे पीस करके आलेपन करै तो महिष की सदृशध्वजा होती है और तुरंगके समान ध्वजा हो जाती है और दृढ होतीहै इसमें सन्देह नहीं पारा कालीमिर्च कूठ सोंठ कटेहरी असगंध तिल शहद सेंधा श्वेतसरसों ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

अपामार्गोयवामाषाःपिप्पलीपेषयेज्जलैः ॥
लेपोयंकुरुतेवृद्धिंलिंगस्यदृढतांध्रुवम् ॥ ३८ ॥

चिरचिटा जौ उड़द पीपल इनको जलके साथ पीसकर लेप करनेसे ध्वजाकी वृद्धि और दृढता होती है ॥ ३८ ॥

मासमात्रंसदालिप्त्वामर्दयेच्चदिवानिशम् ॥
वराहवसयालिंगंमधुनासहलेपयेत् ॥
स्थूलंदृढंचदीर्घंचमासाल्लिङ्गंप्रजायते ॥ ३९ ॥
अश्वगंधावचाकुष्टंवृहतीचशतावरी ॥
तिलतैलेनसंपक्कंतल्लेपःस्थूललिंगकृत् ॥ ४० ॥
अश्वगंधावरीकुष्टंमांसीसिंहीफलान्वितम् ॥
चतुर्गुणेनदुग्धेनातिलतैलंविपाचयेत् ॥ ४१ ॥

एक महीने इसका लेप और मालिश करनेसे तथा सूकरकी चरबी शहद से लेपन करनेसे एक महीनेमें ध्वजा स्थूल और दृढ हो जाती है असगंध वच कूठ कटेरी शतावरी यह तिलके तेलसे पकाकर लेप करनेसे लिंग स्थूल होताहै असगंध शतावरी कूठ जटामांसी कटेरीके फल चौगुने दूध और तिलके तेलसे पकावै ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥

स्तनलिंगकर्णपाणिवर्द्धनंभक्षणादितः ॥
टंकणंचमहाराष्ट्रीजम्बूसूकरतैलकम् ॥ ४२ ॥

दृढता होती है और यही स्तन, ध्वज, कान, पाणि आदिकी वृद्धिकाभी करने वाला है तथा सुहागा जल पीपल जामन सूकरका तेल ॥ ४२ ॥

मधुनासहलेपेनलिंगंस्यान्मुसलोपमम् ॥
माहिषीनवनीतंचमुशलीचूर्णमिश्रितम् ॥ ४३ ॥

यह शहदके साथ लेपन करनेसे ध्वजा मूसलके समान होजाती है भैंसका मक्खन मूशलीका चूर्ण मिलाकर ॥ ४३ ॥

धान्यराशिस्थितंभाण्डेसप्ताहाच्चसमुद्धरेत् ॥
तेनप्रलेपयेल्लिंगंमासैकाद्वर्द्धतेध्रुवम् ॥ ४४ ॥

बर्तनमें डाल धान्यमें रखदे फिर सात दिनमें उघारकर उसको लिंगपर लेप करनेसे एकमहीनेमें अवश्य ध्वजाकी वृद्धि होती है४४

मुशलीशीतलाभक्ष्यालिंगवृद्धिकरीमता ॥
मारणोत्थंकृमिंचैवकंटकारीफलंजलैः ॥ ४५ ॥

मुशली आरामशीतला खानेसे लिंगकी वृद्धि करनेवाली है धतूरा लाख कृमिकटेहरीके फल जलसे पीसकर ॥ ४५ ॥

पिष्ट्वालिंगंप्रलेपेनस्थूलंभवतिनिश्चितम् ॥
तद्वच्चमुशलीसाज्यालेपाल्लिंगस्यदाढर्यंकृत् ॥४६॥

लेप करनेसे कामध्वजा अवश्य स्थूल होजाती है इसी प्रकार मुशली घृतका लेप ध्वजाको दृढ करता है ॥ ४६ ॥

पिप्पलीलवणक्षीरसितालेपोपिदीर्घकृत् ॥
मांसीवाक्षफलंकुष्ठमश्वगंधाशतावरी ॥ ४७ ॥
तैलेपक्त्वाप्रलेपेनलिंगस्थौल्यकरंध्रुवम् ॥
रोहितामत्स्यापित्तन्तुजलौकालांगलीसदा ॥ ४८ ॥
अनेनमर्दयेल्लिंगंवर्द्धतेमुसलोपमम् ॥
सूतकोह्यश्वगंधाचरजनीगजपिप्पली ॥ ४९ ॥

पीपल सेंधालवण दूध मिश्रीके लेप करनेसे ध्वजा दृढ होती है अथवा जटामांसी[1] बहेडा कूठ असगंध शतावरी तेलमें पकाकर

---

१ वमनीरथं वा पाठः ।

लेप करनेसे ध्वजा स्थूल होजाती है इसमें सन्देह नहीं रोह मछलीका पित्ता जोंक और कलिहारीका ध्वजाकी जड़में मर्दन करनेसे ध्वजा मूसलकी समान वृद्धि को प्राप्त होती है पारा असगंध हलदी गजपीपल ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

सितायुक्तंजलैःपिष्ट्वामासैकंलेपयेत्तदा ॥
अद्भुतम्वर्द्धयेल्लिंगंयोगिकर्णस्तनानिच ॥ ५० ॥

मिश्री यह सब वस्तु जलके साथ पीसकर एक महीने पर्यन्त लेप करनेसे ध्वजा अद्भुत प्रकार से बढती है तथा योगीके कान और स्तन बढते हैं ॥ ५० ॥

योमर्कटीमूलमजाजलेनव्यालुप्तकेशःशयनेनिशायाम् ॥
पिष्ट्वाध्वजंलिम्पतितस्यकामंभवेद्‌योदंडमिवक्षणेन ॥ ५१॥

जो कौंचकी जड़को अजा औषधीके साथ पीसकर शयनके समय रात्रिमें लेप करता है उसका मदनध्वज लोहदण्डके समान हो जाता है अथवा अजाजल बकरीका मूत्र ॥ ५१ ॥

हयारिपत्नीनवनीतमध्येवचाबलाभागरसामयैश्च ॥
लेपेनलिंगंसहसैवपुंसांलोहोपमंस्यादितिदृष्टमेतत् ॥ ५२ ॥

जो मनुष्य भैंसके मक्खनमें बच खरेंटी और पारा मिलाय लेपन करे तो तत्काल यह लेप करनेसे मदनध्वज लोहदण्डके समान होजाती है यह देखाहुआ योग है ॥ ५२ ॥

कृष्णापराजितामूलंग्राह्यंखादिरकीलकैः ॥
कृष्णसूत्रैःकटिबद्धाऊर्द्ध्वंलिंगंकरोतिच ॥ ५३ ॥

कृष्ण विष्णुकान्ताकी जड़ खादिरकी कीलकसे ग्रहणकर काले तागेसे कमरमें बांधे तो रतिध्वजको दृढ करती है ॥ ५३ ॥

देवदालीरसंधात्रीक्षीरपानात्स्थिरोध्वजः ॥
इत्येवंसर्वयोगानांमंत्रराजःशिवोदितः ॥ ५४ ॥

अनेनमंत्रितंकृत्वामासैकंलेपयेत्ततः ॥
ॐनमोभगवतेउड्डामहेश्वरायसव२प्रसव२कुरु२
स्वाहाठःठःदृढीकरणंतुविनामंत्रेणकार्य्यम् ॥
इतिलिंगस्थूलीकरणम् (दृढीकरणम्) ।

वन्दालीकारस आमला और दूधपानसे ध्वजा स्थिर होती है इस प्रकार इन सबयोगोंमें शिवजीका कहाहुआ मंत्रराज है इस मंत्रसे अभिमंत्रितकर एक मासपर्यन्त लेपनकरै ॥ ५४ ॥

ओंनमो भगवते उड्डामहेश्वराय सब सब प्रसव प्रसव कुरु कुरु स्वाहा ठः ठः दृढीकरना विना मंत्रकेही करे ॥

इति लिंगस्थूलीकरण । (दृढीकरण)

अथस्तनवर्द्धनं स्तनोत्थापनंच ।

मातङ्गकृष्णाप्यथवाजगंधावचायुतापर्युषिताम्बुमिश्रा ॥
हयारिपत्नीनवनीतयोगात्कुर्वन्तिपीनंकुचकुम्भयुग्मम्५५॥
तैलम्वचादाडिमकल्कसिद्धंसिद्धार्थजंलेपनतोनितान्तम् ॥
नारीकुचौचारुतरौचपीनौकुर्य्यादसौयोगवरःप्रदिष्टः ॥५६॥

अथ स्तनवर्धन उत्थापनकरना । गज पीपल असगंध बचा इन सबको मिलाकर भैंसके मक्खनके साथ कुचोंमें लगानेसे शीघ्र दोनोंस्तनोंको कुम्भके समान दृढकरते हैं वच दाडिम इनको सरसों के तेलमें पकाय इनका लेप करनेसे स्त्रीकेस्तन अत्यन्त सुन्दर पुष्ट होतेहैं यह प्रयोग बहुत श्रेष्ठ कहा है ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

श्रीपर्णिकायारसकन्तुसिद्धंतिलोद्भवं तैलवरंप्रदिष्टम् ॥
लेपेनवक्षोजयुगेचशीघ्रंवृद्धिंप्रयातःपतितेरमण्याः॥५७॥

श्रीपर्णी (कम्भारी) के रसमें सिद्धकर तेल बनाले इसको दोनों उरोजपर लगानेसे गिरेहुए भी स्त्रीके कुच उठि आतेहैं ॥ ५७ ॥

प्रथमकुसुमकालेनस्ययोगेनपीतं
सनियममथवास्यात्तंदुलांभोयुवत्याः ॥
कुचयुगलसपीनंक्कापिनोयातिपातं
कथितइतिपुरैवंचक्रदत्तेनयोगः ॥ ५८ ॥

प्रथम रजो दर्शन के समय नियम पूर्वक युवती चावलोंका जल नस्य और पान करै तौ नियम पूर्वक सेवन करनेसे जो किसीप्रकारसे भी कुच पुष्ट न हों तो इस्से होजातेहैं यह योग चक्रदत्तने कहाहै ॥ ५८ ॥

शालितंदुलोदकंकर्षमात्रंवामदक्षिणनासाभ्यांनस्यंदेयम् ॥
मुंडीचूर्णंदशपलंतोयैश्चतुर्गुणैःपचेत् ॥
अर्द्धशेषंहरेत्क्काथंक्काथार्द्धंतिलतैलकम् ॥ ५९ ॥

शालितडुंलका जल एक कर्ष बांईं दाहिनी नासिकाके छिद्रसे नास लेनेसे और दशपल मुण्डी वा सौंठ का चूर्ण लेकर उसे चौगुने जलमें पकावे जब आधा रहजाय तब इसमें तिलका तेल डालदे ५९

तैलशेषंपचेत्तेननस्यंपानंचकारयेत् ॥
पतितंयौवनंस्त्रीणांमासादुत्तिष्ठतध्रुवम् ॥ ६० ॥

जब क्काथमात्र जलजाय तेलमात्र रहजाय तब उसको नस्य और पानके काममें लावे, इससे गिरे हुए स्त्रीके कुच फिर उठि आतेहैं ६०

ईयामानिशाबलालाजालवणंक्काथयेत्समम् ॥
तोयेचतुर्गुणेपाच्यंपादशेषंसमाहरेत् ॥ ६१ ॥

प्रियंगु हलदी खिरैंटी खील सैंधा इनका क्काथ करके चौगुने पानीमें पकावे जब चौथाई रहजाय ॥ ६१ ॥

तिलतैलंक्काथपादंतैलार्द्धंमाहिषीघृतम् ॥
स्नेहशेषंपचेत्तैलंनस्येनमासमात्रतः ॥ ६२ ॥

---

१ शुण्ठी वा पाठः ।

तिलका तेल उसमें डालकर क्वाथ करै तेलसे आधा भैंसका घी ले और जब रस जल जाय तेलमात्र रहजाय तब एक मासेभर नस्य लेय ॥ ६२ ॥

बालास्त्रीवृद्धनारीणांयौवनंकुरुतेद्भुतम् ॥ ६३ ॥

तो बाला स्त्री और वृद्ध स्त्रियोंके यौवन अद्भुत होजातेहैं ॥ ६३ ॥

एरण्डतैलंशकुलस्यतैलंतथामबिल्वस्यरसंगृहीत्वा ॥
संमर्दयेदूर्ध्वगहस्तकेनतदास्तनंस्यात्पातितंनचैव ॥ ६४ ॥

एरण्डकातेल शीलमत्स्यका तेल और बेलकारस ग्रहणकरके यह तेल कुचोपर मर्दन करने से नवीन होजातेहैं ॥ ६४ ॥

श्रीपर्णीरसकर्कोभ्यांतैलंसिद्धातिलोद्भवम् ॥
तत्तैलंतिलकेनापिस्तनस्योपरिदापयेत् ॥ ६५ ॥

श्रीपर्णी (गंभारी) का रस कर्कट वृक्ष और तिलका तेल लेकर पकावै और उसे स्तनपर लगावै ॥ ६५ ॥

काठिन्यंवृद्धतांयातःपतितौचोत्थितौचतौ ॥
वृद्धायाःकन्यकायावबलायाःपयोधरौ ॥ ६६ ॥

तौ स्तन कठिन और वृद्धिको प्राप्त होतेहैं और पतित हुए उठि आते हैं, जिस वृद्ध वा कन्याके पयोधर पतित होजांय वह ॥ ६६ ॥

श्वेतोब्दस्यकुसुमंकृष्णधेनुपयासिनित्यम् ॥
पिष्टास्तनयुगेदेयंभवेत्पीनपयोधरा ॥ ६७ ॥

श्वेत मोथे के फूल काली गौके दूधमें पीसकर दोनों स्तनोंपर लेप करनेसे पुष्ट होजाते हैं ॥ ६७ ॥

वचाश्वगन्धासंयुक्ताचाश्वारिपत्रकंतथा ॥
गजपिप्पलिकायुक्तंसंद्योभिन्नजलेनच ॥
पेषयित्वाविधानेनलेपयेत्स्तनमण्डले ॥ ६८ ॥

वच असगन्ध असगंधके पत्ते गजपीपलके सहित जलसे पीसकर स्तनमण्डलमें लेप करनेसे ॥ ६८ ॥

नयतेतुकदाचिद्वैताम्रतालफलंतथा ॥
गंभारिपत्ररसश्चैवतत्समंतिलतैलकम् ॥ ६९ ॥
समानंजलभागंचदत्त्वापाकंसमाचरेत् ॥
तैलशेषंपरिज्ञायवस्त्रेणशोधयेत्कुचौ ॥ ७० ॥
दिवाप्रलेपनादेवलोहत्वंजायतेचिरात् ॥ ७१ ॥

इति स्तनवर्द्धनं स्तनोत्थापनञ्च ।

स्तन आम्रफलके समान उन्नत हो जाते हैं गंभारीके पत्रका रस तिलकातेल इनकी बराबर जल देकर पाक करै जब तेलमात्र शेष रहजाय तब स्तनपर लेप करनेसे स्तन लोहकी समान कठोर हो जाते हैं ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥

इति स्तनवर्द्धन स्तन उत्थापन ।

अथ योनिसंस्कारः ।

प्रक्षालयेन्निम्बकषायतोयैर्निशाज्यकृष्णागुरुगुग्गुलूनाम् ॥
धूपेनयोनिंनिशिधूपयित्वानारीप्रमोदंविदधातिभर्तुः॥७२ ॥

अथ योनिसंस्कार । नीमके काढेसे योनिको धोना चाहिये अथवा नीम हलदी घृत कालाअगुरु गूगल इनकी धूप योनिमें देनेसे स्त्री प्रमोदको प्राप्त होतीहै ॥ ७२ ॥

प्रक्षाल्यनिम्बस्यजलेनभूयस्तस्यैववल्केनविलेपयेच्च ॥
त्यजेयुरत्याश्चिरकालभूतंगंधम्वरांगस्यनसंशयोत्र७३॥

इति योनिसंस्कारः ।

फिर नीमके जलसे प्रक्षालन करके और नीमके छालका लेप करनेसे चिरकाल योनिकी दुर्गन्ध नष्टहोतीहै इसमें सन्देह नहीं७३।

इति योनिसंस्कारः ।

अथ लोमशातनविधिः ।

पलाशभस्मान्विततालचूर्णैरम्भांबुमिश्रैरुपलिप्यभूयः॥
कन्दर्पगेहंमृगलोचनानांरोमाणिरोहंतिकदापिनैव॥७४॥

अथ लोमशातनविधिः । ढाककी भस्म हरतालकी भस्म यह दोनों जलसे पीस लेप करनेसे स्त्रियोंके मदनमंदिरके रोम कदाचित् भी नहीं जमतेहैं ॥ ७४ ॥

एकःप्रदेयोहरितालभागःपंचप्रदेयाजलजस्यभागाः॥
सवस्तरोर्भस्मनएवपंचप्रोक्ताश्चभागाःकदलीजलार्द्राः।७५॥

हरिताल एकभाग शंखकी भस्म पांचभाग सबतरु (पिलखन) कीभस्म पांच भाग यह केलेके जलमें सानकर पात्रमें सात दिन लेप करनेसे मदन स्थानमें कभी रोम नहीं जमते हैं कहीं "ब्रह्म तरु" पाठ है वहां पिलखनकी भस्म लेनी ॥ ७५ ॥

संसिद्धपात्रेषुसप्ताहमित्थंकृत्वास्मरागारविलेपनंच ॥
रोमाणिसर्वाणिविलासिनीनांपुनर्नरोहंतिकदाचिदेव ॥७६॥
रम्भाजलैस्सप्तदिनंविभाव्यभस्मानिकम्बोर्मसृणानिपश्चात्।
नलेनयुक्तानिविलेपनेनरोमाणिनिर्मूलयतिक्षणेन ॥ ७७ ॥

केलेके जलमें सात दिनतक शंखकी भस्मसे भावना दे और नल तृणसे युक्त लेप करनेसे फिर रोम कभी नहीं जमते और क्षणमात्रमें निर्मूल होजाते हैं ॥ ७६ ॥ ७७ ॥

तालकंशंखचूर्णन्तुमंजिष्ठाभस्मकिंशुकम् ॥
समभागप्रलेपेनरोमखंडनमुत्तमम् ॥ ७८ ॥

हरताल शंखचूर्ण मजीठ केसूकी भस्म इनको समान भाग लेकर जलसे लेप करनेसे रोम दूर होजाते हैं ॥ ७८ ॥

तालकंशंखचूर्णंतुपिष्ट्वाचक्षारतोयकैः ॥
तेनलिप्त्वाकचाघर्मेस्थितेगच्छन्तितत्क्षणात् ॥७९॥

हरताल शंखकाचूर्ण पीसकर खारी जलके साथ लेपकर धूपमें स्थित होनेसे बाल उखड़ जाते हैं ॥ ७९ ॥

पूगवृक्षस्यपत्रोत्थद्रवैःपिष्ट्वातुगंधकम् ॥
तेनलिप्त्वास्थितेघर्मेरोमखण्डनमुत्तमम् ॥ ८० ॥

सुपारीके पेड़के पत्तोंके रसमें गंधक पीसकर लेपकर धूपमें स्थित होनेसे रोम उड़ जाते हैं ॥ ८० ॥

नराणांखण्डकेशानांछुच्छुन्दर्य्याश्चतैलतः ॥
ननिर्यान्तिपुनर्लेपात्रिसप्ताहेकृतेसति ॥ ८१ ॥

जिनके खण्डकेश होगये हों छछूंदर के तेलका लेप करनेसे तीन सप्ताहतक लगानेसे बाल नहीं जमते हैं ॥ ८१ ॥

कुसुंभतैलतप्तानांसप्तवारंतथागुणम् ॥
सद्योजातस्यमहिषीवत्सस्यमलमाहरेत् ॥ ८२ ॥

तथा तपाकर कुसुम्भके तेलको तप्तकरके लगानेसेभी यही गुणहै तत्कालमें उत्पन्न हुए भैंसके बच्चेका गोबर लावे ॥ ८२ ॥

तल्लिप्त्वावेष्टयेद्रात्रौकेशान्वातारिपत्रतः ॥
प्रातस्तप्तोदकैःक्षाल्याःपतंत्यामूलतोत्थिताः॥८३॥

रात्रिमें इसको बालोंपर एरण्डके पत्तोंमें लगाय लेप करै फिर गरम पानीसे धोनेसे बाल जड़से गिरजातेहैं ॥ ८३ ॥

पिपीलिकानांकृष्णानांस्थूलानांभूगृहंहरेत् ॥
छायाशुष्कंच तच्चूर्णंपंचाहंलेपयेत्सदा ॥ ८४ ॥

बड़ीकाली चैंटीके रहनेके स्थानकी मट्टी लाय छायामें सुखावै उसका चूर्ण करले फिर पांचदिन लेप करै ॥ ८४ ॥

पूर्ववत्खण्डकेशानां न पुनारोहणंभवेत् ॥
शंखतालंयवंगुञ्जांकांजिकैःपेषयेत्सदा ॥ ८५ ॥

तो पूर्व में खण्डहुए बाल फिर नहीं जमते हैं शंखकी भस्म हरताल इन्द्रजौ गुंजा यह कांजी के साथ सदापीसै ॥ ८५ ॥

लेपात्पतंतिरोमाणिपक्कपत्रमिवद्रुमात् ॥
लेपनाद्धन्तिकेशांश्चकटुतैलैर्मनशिला ॥ ८६ ॥
इतिलोमशातनम् ।

उसके लेपसे रोम ऐसे गिरजातेहैं जैसे वृक्ष से पक्के पत्र तथा बालोंपर कड़वातेल और मनशिलाका लेप करनेसे बाल गिरजाते हैं ॥ ८६ ॥

इति लोमशातन ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने गाढीकरणादिलोमशातननंनाम सप्तमोपदेशः ॥ ७ ॥

अथषंढीकरणं--

तच्छमनंच ।

नरोमूत्रयतेयत्रकृष्णंतत्रतुवृश्चिकम् ॥
निखन्याज्जायतेषंढउद्धृतेतुपुनःसुखी ॥ १ ॥

अथ षंढी(नपुंसक) करण और तिसका प्रतिहार । जहां मनुष्य मूत्र करता है वहां काला विच्छू गाड़देनेसे नपुंसक होजाता है फिर उखाड़नेसे सुखी होता है ॥ १ ॥

अजामूत्रेणसंभाव्यंनिशिषड्बिन्दुचूर्णितम् ॥
खानपानप्रयोगेणषंढत्वंजायतेनृणाम् ॥ २ ॥

बकरीके मूत्रमें भावना देकर रात्रिमें षड्बिन्दुका चूर्ण कर खान पानमें प्रयोग करनेसे मनुष्यको नपुंसकता होतीहै ॥ २ ॥

तिलगोक्षुरयोश्चूर्णंछागदुग्धेनपाचितम् ॥
शीतलंमधुनायुक्तंपिबेत्षंढत्वशांतये ॥ ३ ॥

तिल गोखरूका चूर्ण बकरीके दूधमें पकाय शीतलकर शहदके साथ पिये तो षंढपन शान्त होजाता है ॥ ३ ॥

जलौकादग्धचूर्णन्तुनवनीतेनभक्षितम् ॥
यावज्जीवंनसन्देहःषंढत्वंप्राप्नुयान्नरः ॥ ४ ॥

जलौका और कतृणका चूर्ण मक्खनके साथ भक्षण करनेसे मनुष्य जीवनपर्यन्त षंढ होजाता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ४ ॥

धत्तूरपुष्पभक्ष्येणपुनः संपद्यतेसुखम् ॥ ५ ॥

फिर धतूरेके फूलोंके भक्षण करनेसे सुखी होता है ॥ ५ ॥

योगोविषाणम्पतितंचघृष्ट्वालिपेद्रतौस्वस्यमनोभवास्त्रे ॥
एकांतकंतत्कुरुतेन्यपत्न्यानोत्तिष्ठतेतामपहायपत्नीम् ६॥

गिरेहुए गौके सींगको घिसकर रतिकरनेके समय कामास्त्र (शिश्न) पर लेप करनेसे फिर वह स्त्री उसे छोड़कर कभी दूसरेसे रति नहीं करती है ॥ ६ ॥

अत्युन्नतंचापरगोविषाणंघृष्ट्वापुनस्तेनविलिप्यलिंगम् ॥
प्रयातिभूयःप्रकृतंतदंगंदृष्टोनरैरेषसदाप्रयोगः ॥ ७ ॥

फिर दूसरे उससे बड़े सींगको घिसकर काम अस्त्रपर लेप करनेसे फिर अपनी प्रकृतिको प्राप्त होता है. यह प्रयोग देखा हुआ है ॥ ७ ॥

निशाविचूर्णघनसारचूर्णसमीकृतम्वस्तपयोवियुक्तम् ॥
भक्तंनिपीतंकुरुतेनिकामंनरस्यषंढत्वमितिप्रसिद्धम् ॥८॥

हलदीका चूर्ण कपूरका चूर्ण यह सब समान भाग लेकर दूध से पान करनेसे मनुष्य को षंढ अर्थात् हीजड़ाकर देता है, इसमें सन्देह नहीं ॥ ८ ॥

तिलस्यदंडाविटपस्यचूर्णंप्रसाधिरंभापयसोर्द्धमासम् ॥
सयावकंशर्करयान्वितंचपीत्वाहरेत्षंढकतामवाप्य ॥ ९ ॥

तिलमें नागबलाका चूर्ण करके केलेके रसमें भावित करे लक्षा रसके सहित यह आधे महीनेतक शरकराके साथ पीनेसे षंढपन दूर होजाता है ॥ ९ ॥

इति षंढीकरणंतत्साम्यश्च ॥

अथ दुष्टस्त्रीकृतध्वजपातोत्थानम् ।

भूमिचम्पकमूलंचसगुवाकंसमंतथा ॥
तद्भक्षणाद्भवेत्सद्योलिङ्गोत्थानंनसंशयः ॥ १० ॥
रक्तशाल्मलिमूलन्तुशिवंदुर्गांविनायकम् ॥
सम्पूज्यविविधैर्द्रव्यैर्निमंत्र्यनिशिसंयुतम् ॥ ११ ॥
प्रातस्त्वचंहरेत्सम्यक्शुष्कंकुर्य्याच्चचूर्णकम् ॥
घृतेनपेषितंकृत्वासैन्धवेनसदारुचिः ॥ १२ ॥
प्रातर्भुक्त्वाचकिंचित्तुभोक्तव्यंप्रहरावधि ॥
पतितस्यभवेल्लिङ्गस्योत्थानंनात्रसंशयः ॥
अयोमयंभवेल्लिङ्गंकोद्रवान्नंविवर्जयेत् ॥ १३ ॥

भुइचम्पेकी जड़ और सुपारी इनको बराबर लेकर भक्षण कर-नेसै ध्वजा शीघ्र उत्थित होतीहै । लालसेमलकी मूल, शिवदुर्गा गणेशको विधिपूर्वक पूजन और रात्रिमें निमंत्रण कर प्रभातकालको रक्तशेमलकी छाल लाकर उसे सुखाय चूर्ण करै उसको पीसकर उसमें घी और सेंधा मिलाकर कुछ प्रभात समय खाकर फिर

पहरभरके पीछे खाय, तौ पतित हुई ध्वजा उठैगी लोहकी समान हो जायगी, इस प्रयोगमें कोदों अन्न न खाय, दुष्ट स्त्रीका प्रयोग दूर होगा ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

अथयोनिबंधनंमोक्षणंच ।

पूर्वोत्थंलांगलीमूलंवामपादस्यपांशुकम् ॥
एकत्रकारयेद्धीमान्द्वयेनशुक्तिसंपुटे ॥ १४ ॥

पूर्वमें उगी हुई लांगली की जड़को और वामचरण की धूरिको एकत्र कर बुद्धिमान् इन दोनोंसे दो सीपीको लेपित करै ॥ १४ ॥

लेपयेद्भगबंधःस्यात्तक्रैःप्रक्षाल्यमुच्यते ॥
श्मशानचैलमादायवामपादस्यपांशुकम् ॥ १५ ॥

इसके लेप करनेसे योनि बंधन होती है फिर मट्ठेसे प्रक्षालन करनेसे छूटतीहै. श्मशानमेंसे वस्त्र लावै उसमें वामचरणके नीचे की धूरि मिलाकर ॥ १५ ॥

संध्यायांबंधयेत्तेनपोटलीभगबंधनी ॥
ॐअमुकीभगंबध्नामिविस्फुरयरंध्रशोणितम् ॥१६॥
मयाकृतंभगबंधनास्तिलोकेचिकित्सकाः ॥
पतिर्वापतिमंत्रोवायेचान्येभगमर्द्दकः ॥
सर्वैवैविमुखंयांतिवर्जयेत्कामुकैस्तथा ॥ १७ ॥

संध्याके समय पोटली बांधनेसे योनिका बन्धन होताहै "अमुकी भगंबध्नामि विस्फुरय२रन्ध्रशोणितम् ॥मयाकृतंभगबन्धनंनास्तिलोके चिकित्सकः" इत्यादि ऊपर लिखा मंत्र पढ़े कि ॥ १६ ॥ मैंने अमुक स्त्रीकी योनिबंधन कीहै इससे रन्ध्र शोणित स्फुरना रहित होगा इस मेरे किये बंधनका लोकमें कोई चिकित्सा करने वाला नहीं है, पार्वतीपतिके मंत्र वा और भगमर्दक चिकित्सा

आदि ये सम्पूर्ण विमुख होजांयगे, इसकारण कामुक इसमें मौन हैं ॥ १७ ॥

ॐचिठिचिठिखचिटिखचिटिठःठःप्रयोगद्वयस्यायंमंत्रः॥वचैलाचंदनंक्षीरैःप्रक्षाल्यामर्दयेद्भगम् ॥
यंत्रमंत्रादितंत्रेणयत्किंचिच्छत्रुणाकृतम् ॥ १८ ॥

"ॐ चिंठिचिठि खचिटि २ ठःठः" यह दोनों प्रयोगोंका मंत्र है॥ वच इलायची चन्दन इनको पीस दुधमें मिलाय योनिको मर्दन करै तो यंत्र मंत्र तंत्र जो कुछ शत्रुने किया है ॥ १८ ॥

तत्तस्यैवभवेद्येनसिद्धिमंत्रस्सउच्यते ॥
सप्तभिर्मंत्रितंतोयंशुद्धम्पूतंपिबेत्तुयः ॥
तस्यशत्रुकृतोदोषश्शत्रुवेश्मभविष्यति ॥ १९ ॥

वह सब इस सिद्ध प्रयोगको मंत्र सहित करनेसे दूर होता है, सात वार मंत्रको अभिमंत्रित कर जो जल पिये उसके शत्रुका किया दोष शत्रुकेही मंदिरमें होगा ॥ १९ ॥

ॐवज्रमुष्टिवज्रकीवाडीवज्रबांधौदशद्वार ॥
वज्रपाणीपिबेच्चांगेडाकिनीडापिनीरक्षोवसर्वांगेमंत्रजयोशत्रुभयौडाकिनीवावोंजानुवायौकालिकालिशामनतंब्रह्माकीधीशुसाशुडाकिनीमिलिकरिवरेयोमोरोजीडुभातेकरेतीपत्नेपानीकरेशुआकरेयानेकरेसूतेकरेपरिहासेकरेनयनकटाक्षिकरेआपोनहाथेपरहाथेजियतिसंचारेकिलनीपोतनीअनिन्तुषवरीकरेएतेविज्ञानअहिननगेयोमोहिकरेत्साराकुठितित्स्केमसरूपद्रे ॥

ॐ चिंटि २ खचिटि ठःठः पाठः ।

ॐमोसिद्धिगुरूरपायस्वीलिंगंमहादेवकीआज्ञा ॥
एलाफलंवासवगोपचूर्णंगुप्तंक्षिपेद्योषिदुपस्थमार्गे ॥
तस्यैवलिंगस्यवरप्रवेशंस्यात्तत्रनान्यस्यकदाचिदेव २०

"ॐवज्र मुष्टि वज्रकि वाड़ी वज्रबांधौंदश द्वार वज्र पाणी पिवेत् चांगे डाकिनी डापिनी रक्षोव सर्वांगे मंत्रजयो शत्रु भयो डापिनी वावों जानुवायो कालिका लिश मनते ब्रह्माके धीशु साशु डाकिनी मिलि करिवरे योमो रोजी डुभातेकरेता पत्नेपानी करे गुजकरे यानेकरे सूतेकरे परिहासेकरे नयन कटाक्षिकरे आपोन हाथेपर हाथे जयति संचारे किलनी पोतनी अनितु षवरी करे एते विज्ञान अहिननगे योमोहि करे त्साराकुठि तित्सेके मसरूपद्रे ॐ मोसिद्धि गुरूरपाय" स्वीलिगंमहादेवकीआज्ञा ॥

पूर्वी इलायची इन्द्रगोप वीरबहूटीका चूर्ण जो स्त्रीके मदनमंदिरमें गुप्त डालदे तो उससे वह डालनेवाला पुरुष ही रति कर सकता है अन्य नहीं ॥ २० ॥

गव्येनदध्नामथितंविधायप्रक्षालयेत्तेनतदंगमुच्चैः ॥
भवेद्धरांगंप्रकृतंयुवत्याइत्याहकर्त्ताहरमेखलायाः ॥२१॥

फिर गौके दहीको मथकर उससे कामसदन प्रक्षालन करनेसे फिर पूर्ववत् होजाताहै यह वचन हरमेखलाके कर्तानि कहाहै ॥२१॥

आकाशदेशेपतितंगृहीत्वायोषिन्नखंदन्तमलंसुपिष्ट्वा ॥
लिप्त्वाध्वजंतेनरमेत्ततोयांतस्याविनाशःपुरुषांतरेण॥२२॥

आकाश देशमें गिरेहुए स्त्रीके नख दांतके मैलको ग्रहण कर फिर पीसकर कामध्वजापर लेप करै तो उसको पुरुषान्तरकी इच्छा नहीं होती ॥ २२ ॥

निर्घातलोहस्यजलेनभूयःप्रक्षालनंकामगृहस्यकुर्य्यात् ॥
पुनःसमासादयतिप्रहृष्टंनारीतदंगंखलुपूर्वरूपम् ॥ २३ ॥

---

१ निर्वान्तलोहस्येति वा पाठः ।

फिर बिना निर्घात लोहके जलसे कामस्थानका प्रक्षालन करे तो पतिसंभोगमें स्त्री पूर्ववत् प्राप्त होतीहै इसमें सन्देह नहीं ॥ २३ ॥

मुहुर्मुहुर्यामथितेननारीप्रक्षालयेत्सप्तदिनानियत्नात् ॥
तस्यास्तदंगंपुनरेवभूयात्पूर्वानुरूपांनहिसंशयोस्ति॥२४॥

इति भगबंधनं तस्यमोक्षणंच ॥

और बारंबार जो स्त्री मथन किये इन प्रयोगों से गुप्त स्थान सात दिनतक प्रक्षालन करै तो उसका गुह्यस्थान पूर्ववत् होजाताहै इसमें सन्देह नहीं ॥ २४ ॥

इति योनिबंधन और तिसका मोक्षणं ॥

गृहकोदारकनिवारणम् ।

वधूटनीयमूलन्तुतस्याहस्तेनबंधनात् ॥
गृहकोदारकंनस्याद्यावद्धस्तेतुबंधनम् ॥ २५ ॥

वधूटनी (गौरीसर) की जड़ हाथमें बांधनेसे गृहको दारक नहीं रहतेहैं ॥ २५ ॥

अथ नष्टपुष्पायाःपुष्पकरणम् ॥

ज्योतिष्मतीकोमलपत्रमग्नौभ्रष्टंयपायाःकुसुमंचपिष्टम् ॥
गृहाम्बुनापीतामिदंयुवत्याःकरोतिपुष्पंस्मरमंदिरस्य॥२६॥

ज्योतिष्मती (मालकांगनी) कमलपत्र अग्निमें भूने और जपा कुसुमसे पीसकर जो स्त्री पान करती है उसका नष्टरज फिर प्रवर्तित होता है ॥ २६ ॥

लांगलीकन्दचूर्णवामूलंवाऽपामार्गजम् ॥
इन्द्रवारुणिकामूलंयोनिस्थंपुष्पबंधनुत् ॥ २७ ॥

कलिहारी औषधीके कन्दका चूर्ण वा चिरचिटेकी जड़ वा इन्द्रायणकी जड़ योनिमें रखनेसे रजका बंधन छूटजाता है ॥ २७ ॥

पारावतपुरीषंचमधुनासंपिबेत्तुयः ॥
रजस्वलाभवेन्नारीमूलदेवेनभाषितम् ॥ २८ ॥

कबूतर की बीट जो शहदमें मिलाकर पीवे वह स्त्री अवश्य रज स्वला होती है ऐसा मूलदेवने कहाहै ॥ २८ ॥

तिलमूलकषायन्तुब्रह्मदंडीयमूलकम् ॥
यष्टीत्रिकटुकंचूर्णंक्वाथयुक्तंचपाययेत् ॥ २९ ॥

तिलके मूलका काढ़ा वा ब्रह्मदंडीकी जड़ मुलैठी त्रिकुटा इनका चूर्ण वा क्वाथ करके जो पानकरै ॥ २९ ॥

पुष्परोधेरक्तगुल्मेस्त्रीणांसद्यःप्रशस्यते ॥
तिलक्वाथेगुडंत्र्यूषंतिलभागयुतंपिबेत् ॥
क्वाथंरक्तभवेगुल्मेनष्टपुष्पेचयोजयेत् ॥ ३० ॥

तौ रक्तका रोध योनिकी ग्रंथि यह शीघ्र नष्ट होजाती है. तिलके क्वाथमें गुड़ सोंठ मिरच पीपल तिलके भागके साथ पीवे तो अर्थात् क्वाथ बनाय पिये तौ गुल्म नष्टपुष्प सब दूर होजाते हैं॥ ३०॥

दूर्वादलंतन्दुलतुल्यभागंनिष्पिष्यपिष्टंपरिपाचितञ्च ॥
तद्भक्षयित्वावनिताप्रनष्टंपुष्पंलभेतस्वबलानुरूपम् ॥ ३१ ॥

इतिनष्टपुष्पायाःपुष्पकरणम् ।

अथवा दूर्वादल और चावल बराबर पीसकर भूनै उसे खानेसे स्त्री रजोवती होती है ॥ ३१ ॥

इति रजस्वलाकरणम् ॥

अथगर्भस्त्रावणम् ॥

तत्रानभिनवगर्भस्त्रावणम् ।

कृतेजारोक्षिपेद्योनौतिलतैलाक्तसैंधवम् ॥
द्रवतेतत्क्षणादेवशुक्रपुष्पंस्त्रवत्यपि ॥ ३२ ॥

जो विधवाके जारसे तत्कालका गर्भ हो तौ तिलके तेलमें सैंधेको गीलाकर योनिमें धरे तौ उसी समय शुक्रपुष्पका मेल पृथक् हो स्राव होजाता है ॥ ३२ ॥

अथगर्भपातनम् ।

काण्डमेरण्डपत्रस्ययोनावष्टांगुलंक्षिपेत् ॥
चतुर्मास्योभवेद्गर्भःस्रवतेतत्क्षणादपि ॥ ३३ ॥

अरंडके पत्तोंका मूठा योनिमें अष्ट अंगुल पर्यन्त रखनेसे चार महीनेका गर्भ उसी समय पतित होजाताहै ॥ ३३ ॥

देवदालीयचूर्णंतुकर्षैकंतोयपेषितम् ॥
पिबेद्गर्भवतीनारीगर्भस्रवातितत्क्षणात् ॥ ३४ ॥

देवदालीका चूर्ण एक कर्ष (सोलहमासे) गर्भवती स्त्री पीवे तो उसी समय गर्भ पतित होजाताहै ॥ ३४ ॥

धत्तूरमूलिकापुष्येगृहीत्वाकटिसंस्थिता ॥
गर्भंनिवारयत्येवरण्डावेश्यादियोषिताम् ॥ ३५ ॥
राजिकांतिलतैलञ्चपिष्ट्वानारीऋतौपिबेत् ॥
त्रिदिनंतेनगर्भस्यसंभवोनैवजायते ॥ ३६ ॥
बबूलस्यतुपुष्पाणिगोदुग्धेनापिबेहतौ ॥
यानारीगर्भसंभूतिःपुनस्तस्यानजायते ॥ ३७ ॥
पिबेत्प्रसूतिसमयेकांजिग्युक्तंजयाभवं ॥
पुष्पंनाबिभर्त्तिसाप्रसूतिधृतेपितस्यानगर्भःस्यात्॥३८॥
गृहीतंरेवतीऋक्षेपिप्पलस्यचवंदकम् ॥
गोदुग्धेसोपिभोक्तारंमहागर्भंनिवारयेत् ॥ ३९ ॥

पुष्य नक्षत्रमें लाई धतूरेकी जड़ कमरमें बांधनेसे रंडा वेश्यादि का गर्भ दूर करतीहै । राई तिलका तेल पीसकर जो स्त्री ऋतु

समयमें पान करै तौ तीन दिन ऐसा करनेसे फिर गर्भ नहीं रहता बबूलेके फूल गौके दुग्धसे ऋतु कालमें पीनेसे गर्भ नहीं रहता प्रसूति समय में कांजीके सहित नील दूर्वा पीनेसे गर्भ नहीं रहता रेवती नक्षत्रमें पीपलकावंदा लाकर गो दूधके साथ पीनेसे महा गर्भ निवारण होता है ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

निर्गुण्डीद्रवसंपिष्टंचित्रमूलंमधुतप्लुम् ॥
कर्षंभुक्त्वापतत्याशुगर्भोरंडाकुलोद्भवम् ॥ ४० ॥

निर्गुण्डी (सिन्धुवार) के रसमें चीतेकी जड़ पीस शहद मिलाय एक कर्ष मात्र खाय तो उसी समय रंडीका गर्भ गिर जाताहै॥४०॥

इति गर्भस्रावणम् ॥

अथ रक्तनिवारणम् ।

धात्रींचपथ्यांचरसांजनंचकृत्वाविचूर्णंसजलंनिपीतम् ॥
अत्यंतरक्तोत्थितमुग्रवेगंनिवारयेत्सेतुमिवाम्बुपूरम् ॥ ४१॥

आमले हर रसौत इनका चूर्ण करे जलके साथ पीनेसे अत्यन्त रक्त जिसका जाताहो वह निवारण होजाताहै ॥ ४१ ॥

शेलुस्त्वचामिश्रिततंदुलेनविधायपिष्टंविनियोजनीयम् ॥
कन्दर्पगेहेमृगलोचनायारक्तंनिहंत्याशुहठेनयोगः ॥ ४२ ॥

शेलु (ल्हसौड़ा) वृक्षकी त्वचा और सांठीके चावल मिलाकर मृगलोचनीके योनिमें रखनेसे रक्तका वेग निवारण होताहै ॥ ४२॥

मूलंतुशरपुंखायाःपेषयेत्तन्दुलोदकैः ॥
पाययेत्कर्षमात्रंतदसिरक्तप्रशांतये ॥ ४३ ॥

सरफोंकेकी जड़ चावल के जलके साथ पीसकर कर्षमात्र पीनेसे अधिक रक्त शान्त होजाताहै ॥ ४३ ॥

कुशस्यमूलंकदलीदलंवाबलासिफावाबदरीफलंवा ॥
गुडूचिकांतण्डुलवारिपीतास्त्रीणामनेकंरुधिरंजयेच्च ॥४४॥

कुशकी जड़ केलेका पत्ता खरैंटी जटामांसी गुडूची बदरीफल यह चावलके जलके साथ पीनेसे रुधिरका अधिक निकलना बन्द होताहै ॥ ४४ ॥

कुरंटकस्यमूलानिमधुकःश्वेतचन्दनम् ॥
युक्त्यापिष्ट्वाक्षमात्राणिपाययेत्तंदुलाम्बुना ॥ ४५ ॥

कुरंट (कुदज) की जड़ मुलैठी श्वेतचन्दन इनको बारीक पीस चावलके जलके साथ अक्षमात्र पीवे ॥ ४५ ॥

सकृत्पीत्वामाषयूषंप्रदरात्परिमुच्यते ॥
घृतमृष्टंमाषयूषभोजनंश्वेतचन्दनम् ॥ ४६ ॥

एक वारही उर्दोंका क्वाथकर उसका रस पीने से प्रदरसे छूट जाती है घीमें भुना हुआ यह उर्दोंका यूष और श्वेतचन्दन लेना चाहिये ४६

चन्दनंक्षीरसंयुक्तंसघृतंपाययेद्भिषक् ॥
शर्करामधुसंयुक्तमसृक्स्रवविनाशनम् ॥ ४७ ॥

क्षीरके सहित लालचन्दन और घृतपान करनेसे अथवा शर्करा और मधुपान करनेसे रुधिर पित्तविकार शान्त होजातेहैं इसमें जहां चन्दनहै वहां लालचन्दन लेना ॥ ४७ ॥

दार्वीरसांजनवृषाब्दकिराతబिल्वभल्लातकैरथ
कृतोमधुनाकषायः ॥ पीतोजयत्यतिबलंप्रद
रंसशूलंपीतंशितारुणविलोहितनीलकृष्णम्॥४८॥

देवदारु रसौत चिरायता बेल भिलावा अडूसा नागरमोथा इनका क्वाथ कर घृत मधु डालकर पीवे तो कठिन प्रदर शूल पीत

१ कर्षः ।

श्वेत अरुण लाल नील कृष्ण सब प्रकारके उपद्रवकी शान्ति होजाती है ॥ ४८ ॥

अशोकस्यत्वचासिद्धंक्षीरंरक्तहरंपिबेत् ॥
पेटारिकायाःपत्रंचमाषचूर्णेनसंयुतम् ॥ ४९ ॥

अशोककी छाल बच इनसे सिद्ध किया दूध पीनेसे रक्तनाश हो जाताहै पेटारिकाके पत्ते उर्दोंके चूर्णके सहित ॥ ४९ ॥

रम्भादलैर्वेष्टयित्वादाहयेच्चप्रयत्नतः ॥
तस्यभक्षणमात्रेणह्यतिरक्तनिवारणम् ॥ ५० ॥

केलेके दलसे वेष्टनकरके यत्नपूर्वक जलावै इसके भक्षणमात्रसे अतिरक्तकी निवृत्ति होतीहै ॥ ५० ॥

तन्मूलन्तन्दुलैःपिष्ट्वापिष्टकम्भर्ज्जयेद्बुधः ॥
तस्यभक्षणमात्रेणरक्तादिविकृतिंहरेत् ॥ ५१ ॥

और इसीकी जड़ चावलके साथ पीसकर इस पिट्ठीको भूनकर खायतो खातेही रक्तादि विकृति दूर होजातीहै ॥ ५१ ॥

तस्यवल्कलचूर्णन्तुभृष्टतंदुलचूर्णकम् ॥
भक्षणादेवतद्रक्तंस्त्रीणांशमयतिध्रुवम् ॥ ५२ ॥

और इसीके छालका चूर्ण तथा भुने चावलोंका चूर्ण भक्षणकरनेसे अवश्यही स्त्रियोंका अति रुधिर निकलना बन्द होजाताहै५२॥

शतावर्यास्तुमूलस्यनिजद्रावंसमाहरेत् ॥
चत्वारिंशत्पलान्येवंवस्त्रपूतंप्रयत्नतः ॥ ५३ ॥

शतावरीकी जड़का द्रव स्वच्छ लावै और चालीसपल उसकी छालको पीसे वस्त्रसे छानकर ॥ ५३ ॥

द्रवतुल्यंगवांक्षीरंक्षीरस्याद्द्विगुणंघृतम् ॥
जीवंतिकोलमन्दाराअतसीक्षीरकाकुली ॥ ५४ ॥

---

१ जीवन्ती शेलुमज्जाच धातकी क्षीरकाकुली वा पाठः ।

मुद्गपर्णीमाषपर्णींमहामेदाशतावरी ॥
द्राक्षापारशुकोयष्टिजीरकंप्रतिकार्षिकम् ॥ ५५ ॥

इस द्रवके तुल्य गौकाक्षीर ले दूधसे दूना घृतले और जीवन्ती कोलमन्दार अलसी क्षीरकाकोली मुद्गपर्णी माषपर्णी महामेदा शतावरी दाख मुनक्का मुलेठी जीरा ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

पलार्द्धंमधुकंपुष्पंसर्वमेकत्रपाचयेत् ॥
घृतशेषंसमुत्तार्य्यंशीतेजातेचनिक्षिपेत् ॥ ५६ ॥

एक २ कर्षके आधपल महुएके फूल इन सबको एकत्र करे जब घृतमात्र शेष रहजाय तब उतार ले ठंडा होनेपर पात्रमें रखछोड़े ॥ ५६ ॥

पलाष्टकंकणाचूर्णंक्षौद्रंवापिप्पलाकष्टकम् ॥
सितादशपलंयोज्यमिदंशतावरीघृतम् ॥ ५७ ॥

पीपल का चूर्ण आठपल अथवा शहद आठपल मिश्री दश पल इस में डालदे यह शतावरी घृत है ॥ ५७ ॥

लेह्यंकर्षंशमेदाशुदुःसाध्यमतिरक्तजम् ॥
दोषंक्षयंचमंदाग्निंहृद्रोगंग्रहणीग्रहम् ॥
कामलांवातरोगांश्चअश्मरींचशिरोग्रहम् ॥ ५८ ॥

इति रक्तनिवारणम् ।

एक कर्ष इसका सेवन करै तौ रक्तदोष दूर होता है क्षतक्षय मन्दाग्नि हृद्रोग ग्रहणीरोग दूर होताहै तथा कामला वातरोग अश्मरी शिरग्रह रोग दूर होताहै ॥ ५८ ॥

इतिरक्तनिवारण ।

अथ वंध्यानांगर्भधारणम् ।

जन्मवंध्याकाकवंध्यामृतवत्साश्चकाचित्स्त्रियः ॥
तासांपुत्रोदयार्थायशंभुनासूचितंपुरा ॥ ५९ ॥

वंध्या कई प्रकार की होती हैं अर्थात् जन्मवंध्या काकवंध्या मृतवंध्या जिसके बालक नहीं जीते हैं उनके पुत्र होने के निमित्त शिवजीने विधान किया है ॥ ५९ ॥

तत्रप्रथमंजन्मवंध्याचिकित्सा

समूलपत्रांसर्पाक्षींरविवारेसमुद्धरेत् ॥

एकवर्णगवांक्षीरेकन्याहस्तेनपेषयेत् ॥ ६० ॥

पहले जन्मवंध्या की चिकित्सा कहते हैं जड़पत्ते सहित सुगन्ध रास्ना को रविवारके दिन उखाड़कर लावे उसको एकरंगवाली गौके दूधमें कन्याके हाथसे पिसवावे ॥ ६० ॥

ऋतुकालेपिबेद्वंध्यापलार्द्धंतद्दिनेदिने ॥

क्षीरशाल्यन्नमुद्गंचलघ्वाहारंप्रदापयेत् ॥ ६१ ॥

ऋतुकालमें वंध्या प्रतिदिन दो दो पल इसको पान करै दूध शालिधान्य मूंग आदि लघु आहार करै ॥ ६१ ॥

एवंसप्तदिनंकुर्य्याद्वंध्याभवतिगर्भिणी ॥

उद्वेगंभयशोकंचदिवानिद्रांविवर्ज्जयेत् ॥ ६२ ॥

इस प्रकार सात दिन करनेसे वंध्या स्त्री भी गर्भिणी होजाती है औषध सेवनके समय उद्वेग भय शोक और दिनमें सोना त्याग दे ॥ ६२ ॥

नकर्मकारयेत्किंचिद्वर्ज्जयेच्छीतमातपम् ॥

नतयापरमांसेवांकारयेत्पूर्ववत्क्रियाम् ॥ ६३ ॥

कोई काम न करै शीत घामादिको नसहै और न कोई सेवा करावै पूर्ववत् फिर दूसरे महीने क्रियाको करै ॥ ६३ ॥

पतिसंगाद्गर्भलाभोनात्रकार्याविचारणा ॥

एकमेवतुरुद्राक्षंसर्पाक्षीकर्षमात्रकम् ॥ ६४ ॥

फिर पतिके संगसे वह गर्भको प्राप्त होती है इसमें सन्देह नहीं एक रुद्राक्ष और एक कर्ष सुगन्धरास्ना ॥ ६४ ॥

पूर्ववच्चगवांक्षीरैर्ऋतुकालेप्रदापयेत् ॥
महागणेशमंत्रेणरक्षांतस्यानुबंधयेत् ॥ ६५ ॥

यह पूर्ववत् पिसाय ऋतुकालमें गौके दूधसे पीसकर दे और महागणेशके मंत्रसे रक्षा करै ॥ ६५ ॥

एवंसप्तदिनंकुर्य्याद्वंध्याभवतिपुत्रिणी ॥
ॐदद्न्महागणपतेरक्षामृतंमत्सुतंदेहि ॥ ६६ ॥
पत्रमेकंपलाशस्यगर्भिणीपयसान्वितम् ॥
पीत्वाचलभतेपुत्रंरूपवंतंनसंशयः ॥ ६७ ॥

इस प्रकार सात दिन करनेसे वंध्या पुत्रणी होतीहै महागणपति रक्षा देते हैं एक कोमल ढाकके पत्रको गर्भिणीके दूधके साथ पीनेसे रूपवान् पुत्रको प्राप्त करती है इसमें सन्देह नहीं ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

पथ्यमुक्तंयथापूर्वतद्वत्सप्तदिनावधि ॥
देवदालीयमूलंतुग्राहयेत्पुष्यभास्करे ॥ ६८ ॥

और जैसे पूर्वमें कहा है इसप्रकार सात दिन पर्यन्त करै जब पुष्यनक्षत्रमें सूर्य आवे तो देवदालीकी मूल ग्रहण करे बडी तोरई ॥६८॥

निष्कत्रयंगवांक्षीरैःपूर्ववत्क्रमयोगतः ॥
वंध्याचलभतेपुत्रंदेयंपथ्यंयथापुरा ॥ ६९ ॥

उसे गौके दूधसे तीन मासे पिये पूर्ववत् क्रियाके योगसे करे तो पूर्ववत् पुत्रको प्राप्त होती है पूर्ववत् पथ्य दे ॥ ६९ ॥

शीततोयेनसंपिष्टंशरपुंखीयमूलकम् ॥
कर्षंपीत्वालभेद्गर्भंपूर्ववत्क्रमयोगतः ॥ ७० ॥

शरफोकेकी जड़ शीतल जलसे पीसे पूर्वक्रमसे एक कर्ष लेतो पुत्र होताहै ॥ ७० ॥

मुस्ताप्रियंगुसौवीरंलाक्षाक्षौद्रंसमंपिबेत् ॥
कर्षंतंदुलतोयेनवंध्याभवतिपुत्रिणी ॥ ७१ ॥

मोथा प्रियंगु सौवीर लाख शहद यह सब समान लेकर चावल के जलसे एक कर्ष पीवेतौ वंध्या पुत्रवती होती है ॥ ७१ ॥

पथ्यमुक्तंयथापूर्वन्तद्वत्सप्तदिनंपिबेत् ॥
समूलांसहदेवींचसंग्राह्यंपुष्यभास्करे ॥ ७२ ॥

और सात दिन पथ्यसे रहै जब सूर्य पुष्यनक्षत्रमें हो तो जड़ सहित सहदेईको ग्रहण करै ॥ ७२ ॥

छायाशुष्कंचतच्चूर्णमेकवर्णगवांपयः ॥
पूर्ववत्पिबतेनारीवंध्याभवतिगुर्विणी ॥ ७३ ॥

छायामें सुखाय उसको ग्रहण करै चूर्ण कर गौके दूधसे स्त्री ग्रहण करै तो गर्भिणी होती है ॥ ७३ ॥

मूलंशिफावाकिललक्ष्मणायाऋतौनिपीयात्रिदिनंपयोभिः ॥
क्षीरान्नचर्यानियमेनभुंक्तेपुत्रंप्रसूतेवनितानचित्रम् ॥ ७४ ॥

लक्ष्मणा (श्वेतकटेरी) की जड़ और जटामांसी के पत्ते ऋतुकालमें दूधसे तीन दिन स्त्री पान करै और दिनमें भी क्षीरादि लघु आहार करै तो उसके पुत्र होताहै इसमें आश्चर्य नहीं ॥ ७४ ॥

सपिप्पलीकेशरशृंगवेरंक्षुद्रोषणंगव्यघृतेनपीतम् ॥
वंध्यापिपुत्रंलभतेहठेनयोगस्तुसोयंमुनिभिःप्रदिष्टः ॥ ७५ ॥

पीपल नाग केशर अद्रख छोटी गोल मिर्च यह गौके घीसे पान करनेसे वंध्याभी पुत्रको प्राप्त होती है यह योग मुनियोंका कहा हुआ है ॥ ७५ ॥

तुरंगगंधाघृतवारिसिद्धमाज्यंपयस्नानदिनेचपीत्वा ॥
प्राप्नोतिगर्भंनियमंचरंतिवंध्याचनूनंपुरुषप्रसंगात् ॥ ७६ ॥

असगंध औटाय घृतसे सिद्धकर घृत और दूधके साथ स्नान कर दिनमें पानकरै तो अवश्य नियमसे रहनेसे वंध्या स्त्री पुत्र वती होतीहै यह शयनकालमें पीवे ॥ ७६ ॥

पुष्यार्कयोगोद्धृतलक्ष्मणायामूलंतथावज्रतरोश्चपिष्ट्वा ॥
अप्येकवर्णापयसानिपीतंस्त्रियःस्मृतंपुत्रकरंमुनीन्द्रैः ॥७७॥

पुष्य और सूर्यके योगमें लक्ष्मणाकी जड़ उखाड़कर लावै यह अथवा सेहुंडवा थूहरकी जड़ पीसकर एक रंग की गौके दूधके साथ पीनेसे अवश्य पुत्र होताहै ॥ ७७ ॥

कन्दमूलंघृतैःपिष्ट्वाऋतौसागर्भिणीभवेत् ॥
पुष्योद्धृतंलक्ष्मणमेवचूर्णंपुंसानिपिष्टंसघृतंनिपीतम् ॥
क्षीरोदनंप्राश्यपतिप्रसंगाद्गर्भम्विदध्यात्तरुणीनचित्रम् ।७८।

जो ऋतुमें वाराहीकन्दकी जड़को पीस घीके साथ खाय तौ वह गर्भिणी होतीहै अथवा पुष्य नक्षत्रमें उखाड़ी लक्ष्मणाका चूर्ण कर उसे घीके साथ पानकर पीछे दूधपान करै तौ तरुणी अवश्य गर्भवती होतीहै इसमें संदेह नहीं ॥ ७८ ॥

कृष्णापराजितामूलंबस्तक्षीरेणसंपिबेत् ॥
ऋतुस्नातात्रिधायातुवंध्यागर्भधराभवेत् ॥ ७९ ॥

श्यामाविष्णुक्रांताकी जड़ दूधसे पीसकर ऋतुसे स्नानकर तीन दिन पिये तो वंध्याभी गर्भ धारण करती है ॥ ७९ ॥

नागकेशरकंचूर्णंनूतनंगव्यदुग्धतः ॥
पिबेत्सप्तादिनंदुग्धंघृतैर्भोजनमाचरेत् ॥ ८० ॥

नागकेशरका चूर्ण ताजे गायके दूधके साथ सात दिन पर्यन्त पीवे और अधिक घृतयुक्त भोजन करै तो ॥ ८० ॥

तद्दतौलभतेगर्भंसानारीपतिसंगता ॥
पत्रजीवकपत्रैकंपिबेत्क्षीरैर्ऋतौचया ॥ ८१ ॥

वह स्त्री पतिका संग करके अवश्य पुत्रको प्राप्त होती है जो स्त्री ऋतुमें जियेपोतेका एक पत्र दूधके साथ पान करतीहै ॥ ८१ ॥

पतिसंगाच्चसानारीसत्यंपुत्रवतीभवेत् ॥
तस्यमूलंचैकवर्णाक्षीरैःपीत्वाचपुत्रिणी ॥ ८२ ॥

वह स्त्री पतिके संगमें अवश्य पुत्रवती होती है अथवा इसकी जड़ दूधके साथ बहुत महीन पीसकर पीनेसे पुत्रवती होती है ॥ ८२ ॥

काकोल्यौलक्ष्मणामूलंषष्टिकस्यचतंदुलम् ॥
नार्येकवर्णापयसापीत्वागर्भवतीऋतौ ॥ ८३ ॥

क्षीरकाकोली और काकोली श्वेतकटेरीका जड़ सांठीके चावल ऋतुकालमें बहुत महीन दूधके साथ पीनेसे गर्भवती होतीहै ॥८३॥

अश्विन्यांबोधिवृक्षस्यवन्दाकंग्राहयेद्बुधः ॥
गोक्षीरैःपानमात्रेणवंध्यापुत्रवतीभवेत् ॥ ८४ ॥

अश्विनीनक्षत्रमें कदंबके वृक्षका वन्दा ग्रहणकर गौके दूधसे उसके पानमात्र करनेसे स्त्री गर्भवती होती है ॥ ८४ ॥

तिलरसगुडचैकंगोपुरीषाग्नियोगा
त्तरुणवृषभमूत्रंप्रस्थयुक्तंविपक्कम् ॥ ८५ ॥
ऋतुदिवसविमध्येसप्तवारैश्चपीतं
जनयतिसुतमेतंनिश्चितंपुष्पितेव ॥ ८६ ॥

तिल रस गुड़ तरुण बैलका मूत्र १ सेर इसे गौके गोबरके उपलोंकी अग्निमें पकावे इसको ऋतुके दिनोंमें सातवार पीवे तो अवश्य पुत्र होता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ८५ ॥ ८६ ॥

कदम्बपत्रंश्वेतंचबृहतीमूलमेवच ॥
एतानिसमभागानिह्यजाक्षीरेणपेषयेत् ॥ ८७ ॥

कदम्बपत्र श्वेतचंदन कटेरीकी जड़ इनको बराबर ले बकरीके दूध से पीसे ॥ ८७ ॥

त्रिरात्रम्पंचरात्रम्वापिबेदेतन्महौषधम् ॥
ऋतौनिपीयमानेतुगर्भोभवतिनिश्चितम् ॥ ८८ ॥

तीन रात वा पांच रात ऋतुके अन्तमें इस महौषधिको रातमें पीनेसे अवश्य गर्भवती होती है ॥ ८८ ॥

गोक्षुरस्यतुबीजंचपिबेन्निर्गुंडिकारसैः ॥
त्रिरात्रंसप्तरात्रम्वावंध्याभवतिपुत्रिणी ॥ ८९ ॥

निर्गुण्डीके रसयुक्त गोखरूके बीज पीवे तीन वा सात रात पीनेसे वंध्या पुत्रवती होती है ॥ ८९ ॥

कर्कोटबीजचूर्णंतुएकवर्णगवांपयः ॥
ऋतौनिपीयमानेतुगर्भोभवतिनिश्चितम् ॥ ९० ॥

कर्कोटकके बीजोंका चूर्ण बारीक कर एक रंगकी गौके दूधसे रात्रिमें पीवे तो अवश्य गर्भवती होती है ॥ ९० ॥

गोक्षुरस्यतुबीजंचपिबेन्निर्गुंडिकारसैः ॥
त्रिरात्रंसप्तरात्रम्वावंध्याभवतिपुत्रिणी ॥ ९१ ॥

गोखरूके बीज निर्गुण्डी के रस के साथ पान करने से तीन वा सात दिन इसके सेवन से वंध्या पुत्रवती होती है १०१ से १०५ तक यंत्र लिखै ॥ ९१ ॥

भगाख्येचैवनक्षत्रेवटवृक्षस्यमूलकम् ॥
हस्तेबध्वालभेत्पुत्रंसुन्दरंकुलवर्द्धनम् ॥ ९२ ॥
अश्वत्थस्यतुवन्दाकंपूर्वेद्युःसुनिमंत्रितम् ॥
ऋतुस्नातेतुपीतंस्यादपिवन्ध्यालभेत्सुतम् ॥ ९३ ॥
एकवर्णसवत्सायागोःक्षीरेणसुपेषितम् ॥
भावितंवटवन्दाकंपीतंवन्ध्यासुतंलभेत् ॥ ९४ ॥
पूर्वंपुत्रवतीयासाक्काचिद्वंध्याभवेद्यदि ॥
काकवंध्यातुसाज्ञेयाचिकित्सास्यास्तुकथ्यते॥९५॥

भग देवतावाले नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी में वट की जड़ हाथमें बांधनेसे वंध्या पुत्र पाती है । पीपलके वन्देको पहले दिन निमंत्रण करै फिर लाकर ऋतुमें पीनेसे वन्ध्या पुत्रवती होती है । एक वर्ण बछड़ेवाली गौके दूध में बड़के वन्देको भावनादे फिर पीवै तौ वंध्याके पुत्र हो, जो पहले पुत्रवती होकर यदि फिर वन्ध्या हो जाय उसको काकवंध्या कहते हैं उसकी चिकित्सा इस प्रकार है ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥

विष्णुक्रांतांसमूलांतुपिष्ट्वादुग्धैस्तुमाहिषैः ॥
महिषीनवनीतेनऋतुकालेतुभक्षयेत् ॥ ९६ ॥

विष्णुक्रान्ता जड़ सहित भैंसके दूधमें पीसकर और भैंसके मक्खनके साथ ऋतुकालमें भक्षण करै ॥ ९६ ॥

एवंसप्तदिनंकुर्य्यात्पथ्यमुक्तंचपूर्ववत् ॥
गर्भंसालभतेनारीकाकवंध्यासुशोभनम् ॥ ९७ ॥

इस प्रकार सात दिन करै और पथ्यसे रहै तो वह काकवंध्या अवश्य गर्भवती होतीहै ॥ ९७ ॥

अश्वगंधीयमूलन्तुग्राहयेत्पुष्यभास्करे ॥
पेषयेन्माहिषीक्षीरैःपलार्द्धम्भक्षयेत्सदा ॥
सप्ताहाल्लभतेगर्भंकाकवंध्याचिरायुषम् ॥ ९८ ॥

पुष्य नक्षत्रमें सूर्यहो तो असगंधकी जड़को ग्रहणकरके भैंसके दूधसे पीसकर आधेपल भक्षण करै तो सात दिनमें काकवंध्या गर्भवती हो चिरायुष्क पुत्रको उत्पन्न करतीहै ॥ ९८ ॥

अथ मृतवत्साचिकित्सा ।

गर्भंसंजातमात्रेणपक्षान्मासाच्चवत्सरात् ॥
म्रियतेद्वित्रिवर्षाद्वायस्याःसामृतवत्सिका ॥ ९९ ॥

जिसके बालक उत्पन्न होतेही पक्ष महीने वर्ष दोवर्ष वा तीन वर्षमें मरजातेहैं वह मृतवत्सा कहलातीहै ॥ ९९ ॥

तत्रयोगःप्रकर्त्तव्योयथाशंकरभाषितम् ॥
मार्गशीर्षेऽथवाज्येष्ठेपूर्णायांलेपितेगृहे ॥ १०० ॥

उसमें शंकरका कहा योग करना चाहिये मार्गशीर्ष अथवा ज्येष्ठकी पूर्णिमाको अपना घर लीपकर ॥ १०० ॥

नूतनंकलशंपूर्णंगंधतोयेनकारयेत् ॥
शाखाफलसमायुक्तंनवरत्नसमन्वितम् ॥ १०१ ॥

नये कलशमें जल भरकर उसमें सुगंधित द्रव्य डालै आम्रशाखा और नवरत्न उसमें डालै ॥ १०१ ॥

सुवर्णसूत्रिकायुक्तंषट्कोणमंडलेस्थितम् ॥
तन्मध्येपूजयेद्देवीमेकांतींनामविश्रुताम् ॥ १०२ ॥

सुवर्णसूत्रिका सहित छः कोन मण्डलकी रचना करे उसके मध्यमें एकान्ती नाम देवीकी पूजाकरै ॥ १०२ ॥

गंधपुष्पाक्षतैर्धूपैर्दीपैर्नैवेद्यसंयुतैः ॥
अर्चयेद्भक्तिभावेनमद्यमांसैःसमत्स्यकैः ॥ १०३ ॥

गंधपुष्प अक्षत धूप दीप नैवेद्यसे संयुक्तकर भक्तिभावसे अर्चन करे मद्यमांस मत्स्य भी दे ॥ १०३ ॥

ब्राह्मीमाहेश्वरीचैवकौमारीवैष्णवीतथा ॥
वाराहीचतथेन्द्राणीषट्सुपत्रेषुमातरः ॥ १०४ ॥

ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराही इन्द्राणी यह छः माता हैं ॥ १०४ ॥

पूजयेन्मंत्रबीजैश्चफैंकारैर्नामविश्रुतः ॥
दधिभक्तैश्चपिंडानिसप्तसंख्यानिकारयेत् ॥ १०५ ॥

---

१ " ॐ कारेण विधिःश्रुतः " इति वा पाठः ।

इनको बीजमंत्रसे छः पत्रोंमें पूजन करके फैंकार का उच्चारण करै और सात पिण्ड दधिके निर्माण करै ॥ १०५ ॥

षट्संख्याषट्सुपत्रेषुमातृभ्यःकल्पयेत्पृथक् ॥
बिल्वाभंसप्तमंपिंडंशुचिस्थानेबहिःक्षिपेत् ॥१०६॥

छः तो छहौं माताओंको पत्रोंमें प्रदान करे और बेलकी समान सातवां पिण्ड पवित्र स्थानमें बाहर रक्खै ॥ १०६ ॥

तद्भुंक्त्वागृहमागच्छेच्चक्राग्रेयागमाचरेत् ॥
कन्यकायोगिनीवामाभोजयेत्सकुटुम्बकैः ॥ १०७॥

उसको भक्षण कर घरमें आवै और उस चक्र के आगे याग करै और कन्या योगिनी वामा स्त्रियोंको सकुटुम्ब भोजन दे (चक्राङ्गंयावदाचरेत) भी पाठ है ॥ १०७ ॥

दक्षिणांदापयेत्तासांदेवताग्रेचनान्यथा ॥
विसृज्यदेवतांचाथनद्यांतत्कलशोदकम् ॥ १०८ ॥

और देवताके आगे उनको दक्षिणा दे फिर देवता को विसर्जन कर उस कलश के जलको नदीमें डाल दे ॥ १०८ ॥

सकुलंवीक्षयेद्धीमांच्छुभेनशुभमादिशेत् ॥
विपरीतेपुनःकार्ययावत्तावत्सुसिद्धिदम् ॥ १०९ ॥

और कुटुम्ब सहित बुद्धिमान् उसको देखे शुभदिन कृत्य करै जबतक सिद्धि हो तबतक करै ॥ १०९ ॥

प्रतिवर्षमिदंकुर्य्याद्दीर्घजीवीसुतंलभेत् ॥ ११० ॥

प्रतिवर्ष ऐसा करै तो दीर्घजीवी पुत्रकी प्राप्ति होतीहै कहीं प्रत्येक महीने करना लिखा है ॥ ११० ॥

"ॐ ह्रींफैंएकांतीदेवतायै नमः"

अनेनमंत्रेणपूजाजपश्चकार्यः ।
प्राङ्मुखःकृत्तिकाऋक्षेवंध्याकर्कोटकींहरेत ॥

तत्कन्दंपेषयेत्तोयैःकर्षमात्रंसदापिबेत् ॥
ऋतुकालेतुसप्ताहंदीर्घजीवीसुतोभवेत् ॥ १११ ॥

"ओं ह्रीं फैं एकांतादेवतायै नमः" इस मंत्रसे पूजा जप करै । कृत्तिका नक्षत्रमें पूर्वदिशा को मुखकर वंध्या स्त्री कर्कोटकीको लावै उसकी जड़को जलसे पीसकर एक कर्ष सदा पीवे इस प्रकार सात दिन ऋतुकालमें करनेसे दीर्घजीवी पुत्रकी प्राप्ति होती है ॥ १११॥

याबीजपूरद्रुममूलमेकंक्षीरेणसिद्धंहविषाविमिश्रम् ॥
ऋतौतुपीत्वासुपतिम्प्रयातिदीर्घायुषंसातनयंप्रसूते॥११२॥

जो बीजपूरकी एक कर्ष जड़को दूधमें सिद्धकर हविष अन्नमें मिलाय ऋतुकालमें पान कर पतिके निकट जातीहै वह दीर्घायु पुत्रको उत्पन्न करतीहै ॥ ११२ ॥

मंजिष्ठामधुकंकुष्ठंत्रिफलाशर्करावला ॥
मेदापयस्याकालोलीमूलंचैवाश्वगंधजम् ॥
अजमोदाहरिद्रेद्वेहिंगुःकटुकरोहिणी ॥ ११३ ॥

मजीठ मुलेठी कूठ त्रिफला मिश्री खरैंटी महामेदा क्षीरकाकोली असगंधकी मूली अजमोदा दोनों हलदी हिंगु कुटकी ॥ ११३ ॥

उत्पलंकुमुदंद्राक्षाकाकोल्यौचन्दनद्वयम् ॥
एतेषांकार्षिकैर्भागैर्घृतप्रस्थंविपाचयेत् ॥ ११४ ॥

नीलकमल कुमुद काकोली दाख क्षीरकाकोली दोनों चन्दन यह सब एक एक कर्ष लेकर एकशेर घीमें पकावे ॥ ११४ ॥

शतावरीरसंक्षीरंघृतंदेयंचतुर्गुणम् ॥
सर्पिरेतन्नरःपीत्वानित्यंस्त्रीषुवृषायते ॥ ११५ ॥

शतावरीका रस दूध घी यह चौगुना डाले यहघृत पान करके मनुष्य रतिमें स्त्रीसे प्रबल होताहै ॥ ११५ ॥

पुत्राञ्जनयतेनारीमेधाविप्रियदर्शनान् ॥
याचैवास्थिरगर्भास्याद्यानारीजनयेन्मृतम्॥११६॥

और स्त्री इसके सेवनसे बुद्धिमान् पुत्रोंको उत्पन्न करतीहै जो प्रिय दर्शन होताहै तथा जिस स्त्रीका गर्भ स्थिर होगया हो वा जिसके मृतक संतान हो ॥ ११६ ॥

अल्पायुषंवाजनयेद्याचकन्यांप्रसूयते ॥
योनिदोषेरजोदोषेगर्भस्रावेचशस्यते ॥ ११७ ॥

वा जिसके अल्पायु संतान होती हो वा जिसके कन्याही होती हो वा जिसके योनि और रजमें दोषहो वा जिसके गर्भस्राव होता हो उन सबके निमित्त यह प्रयोग उत्तम है ॥ वैद्य इसमें लक्ष्मणाकी जड़ भीडालते हैं ॥ ११७ ॥

प्रजावर्द्धनमायुष्यंसर्वग्रहनिवारणम् ॥
नाम्नाफलघृतंह्येतद्रहस्यंपरिकीर्तितम् ॥ ११८ ॥
जीवद्वत्सैकवर्णायाघृतमत्रतुदीयते ॥
आरण्यगोमयेनात्रवह्नेर्ज्वालाप्रदीयते ॥ ११९ ॥
(अत्रपयस्याक्षीरयुक्ताभूमिकूष्माण्डाउत्पलंनीलम्)

इति फलघृतम्।

यह प्रजाका बढाने वाला आयुदाता सबग्रहका निवारण करने वाला फल घृतहै अश्विनीकुमारोंको कहा है जीतेबछड़ेवाली और एक वर्णवाली गौका घी इसमें लेना चाहिये इसको अरण्य उपलोंकी आंचसे बनावे घृतमात्र शेष रहनेसे उतारले इसे सेवनकरै ॥ ११८ ॥११९॥

इति फलघृत।

अथ गर्भस्रावरक्षा ।

अकस्मात्प्रथमेमासिगर्भेभवतिवेदना ॥
गोक्षीरैःपेषयेत्तुल्यंपद्मकोशीरचन्दनम् ॥ १२० ॥

अकस्मात् पहले महीनेमें गर्भमें वेदना होती है उस समय गौके दूधमें पद्माख खस लाल चन्दन ॥ १२० ॥

पलमात्रंपिबेन्नारीत्र्यहाद्गर्भःस्थिरोभवेत् ॥
अथवामधुकंदारुशाकवृक्षस्यबीजकम् ॥
संपिष्यक्षीरकाकोलींपिबेत्क्षीरैस्तुगोभवैः ॥ १२१॥

एक पलमात्र तीन दिन पान करनेसे गर्भ स्थित होजाताहै अथवा मुलैठी देवदारु शाकवृक्षके बीज और क्षीरकाकोली इनको पीस गौके दूधसे पान करै ॥ १२१ ॥

द्वितीये । नीलोत्पलंमृणालंचयष्टीकर्कटशृंगिका ॥
गोक्षीरैस्तुद्वितीयेचपीत्वाशाम्यतिवेदनाः ॥१२२॥

दूसरे महीनेमें नीलकमल की जड़ मुलैटी काकड़ासींगी इनको बराबर ले गौके दूधके साथ पिये तो दूसरे महीनेकी वेदना शान्त हो जाती है ॥ १२२ ॥

अथवाश्वत्थवल्कंचतिलंकृष्णंशतावरीम् ॥
मंजिष्ठासहितांपिष्ट्वापिबेत्क्षीरैश्चतुर्गुणैः ॥ १२३ ॥

अथवा पीपलकी छाल काले तिल शतावरी मंजीठ इनको बराबर ले पीसकर चौगुने दूधके साथ पीये ॥ १२३ ॥

तृतीये । श्रीखण्डंतगरंकुष्टंमृणालंपद्मकेशरम् ॥
पिबेच्छीतोदकैःपिष्टंतृतीयेवेदनावती ॥ १२४ ॥

तीसरे महीनेमें चन्दन तगर कूट मृणाल (कमलकी जड़) कमल केशर यह ठंढे जलके साथ पिये तो तीसरे महीनेकी वेदना शान्त होजाती है ॥ १२४ ॥

अथवाक्षीरकाकोलींबलांपिष्ट्वापयःपिबेत् ॥ १२५ ॥

अथवा क्षीरकाकोली और सुंगधवाला जलसे पिये ॥ १२५ ॥

चतुर्थे ॥ नीलोत्पलंमृणालानिगोक्षुरंचकशेरुकम् ॥
तुर्य्यमासेगवांक्षीरैःपिबेच्छाम्यतिवेदना ॥ १२६ ॥

चौथे महीनेमें नीलोत्पल कमलकी जड़ गोखरू कसेरू पीसके गौके दूधके साथ पीनेसे चौथे महीनेकी वेदना शान्त होजाती है ॥ १२६ ॥

अथवामधुकंरास्नाश्यामाब्राह्मणयष्टिका ॥
अनन्तापेषयित्वातुगव्यर्क्षीरैश्चसंपिबेत् ॥ १२७ ॥

अथवा मुलैठी रास्ना श्यामाक ब्राह्मणयष्टि अनन्तमूल इनको पीसकर गौके दूधके साथ सेवन करे तो चतुर्थमासकी वेदना शान्त होजाती है ॥ १२७ ॥

पञ्चमे । पुनर्नवाथकाकोलींतगरंनीलमुत्पलम् ॥
गोक्षुरंपंचमेमासेगर्भक्लेशहरंपिबेत् ॥ १२८ ॥

पंचममासमें पुनर्नवा काकोली तगर नीलोत्पल यह लेकर गौके दूधसे पियेतो पंचममासकी वेदना दूर होती है ॥ १२८ ॥

अथवाबृहतीयुग्मंयज्ञाङ्गंकुड्मलंवरम् ॥
गोघृतंक्षीरसंयुक्तंपिबेत्पिष्ट्वाचपंचमे ॥ १२९ ॥

अथवा दोनों कटेरी ब्राह्मणयष्टिका कमलनाल गौके घी और दूधके साथ पंचम मासमें सेवन करे " कटुकत्वचं " भी पाठहै अर्थात् कुटकीतज ॥ १२९ ॥

षष्ठे । सितांकपित्थमज्जांचशीततोयेनपेषयेत् ॥
षष्ठेमासिगवांक्षीरैःपिबेत्क्लेशनिवृत्तये ॥ १३० ॥

छठे महीनेमें मिश्री कैथका गूदा ठंढे जल के साथ पीसकर पिये वा गौके दूधके साथ पीनेसे वेदना शान्त होती है ॥ १३० ॥

अथवागोक्षुरंशिग्रुमधुकंपृष्टिपर्णिकाम् ॥
बलायुक्तंपिबेत्पिष्ट्वागोदुग्धैःषष्ठमासके ॥ १३१ ॥

अथवा गोखरू सहिंजना मुलैठी पृष्टिपर्णी खरेंटी इनको गौके दूधसे पीस छठे महीनेमें सेवन करे ॥ १३१ ॥

सप्तमे । कशेरुंपौष्करंमूलंशृंगाटंनीलमुत्पलम् ॥
पिष्ट्वाचसप्तमेमासिक्षीरैपीत्वाप्रशाम्यति ॥ १३२ ॥

कसेरू पुष्करमूल सिंघाड़ा नीलोफर पीसकर दूधके साथ पीनेसे सातवें मासकी व्यथा शान्त होजातीहै ॥ १३२ ॥

अथवामधुकंद्राक्षाशृंगाटञ्चकशेरुकम् ॥
मृणालंशर्करायुक्तंक्षीरैःपेयंतुसप्तमे ॥ १३३ ॥

अथवा मुलैठी दाख सिंघाड़ा कसेरू कमलकी जड़ मिश्रीके साथ दूधमें मिलाय पानकरे ॥ १३३ ॥

अष्टमे । यष्टीपद्माक्षकंमुस्तंकेशरंगजपिप्पलीम् ॥
नीलोत्पलंगवांक्षिरैःपिबेदष्टममासके ॥ १३४ ॥

आठवें महीनेमें मुलैठी पद्माख मोथा नागकेशर गजपीपल नीलोत्पल यह गौके दूधमें पिये ॥ १३४ ॥

अथवाबिल्वमूलन्तु कपित्थंबृहतीफलम् ॥
इक्षुपटोलयोर्मूलमेभिःक्षीरंप्रसाधयेत् ॥ १३५ ॥

अथवा बेलकी जड़ कैथ दोनों कटेरी अर्थात् छोटी बड़ी गन्नेका रस पटोलकी जड़ यह दूधमें सिद्धकरे ॥ १३५ ॥

तत्क्षीरमम्भसापीत्वागर्भेशाम्यतिवेदना ॥ १३६ ॥

यह दूध जलसे पीनेसे आठवें मास की गर्भकी पीड़ा शान्त होजाती है ॥ १३६ ॥

नवमे । विशालाबीजकंकोलं मधुनासहपेषयेत् ॥
वेदनानवमेमासिशांतिमाप्नोतिनान्यथा ॥ १३७ ॥

नौमें महीनेमें इन्द्रायनके बीज क्षीरकाकोली(शीतलचीनी)शहद के साथ पीनेसे नौमें महीने की व्यथा शान्त होजातीहै ॥ १३७ ॥

अथवामधुकंश्यामाह्यनन्ताक्षीरकाकुली ॥
एभिःसिद्धंपिबेत्क्षीरंनवमेवेदनावती ॥ १३८ ॥

अथवा मूलैठी गुडूची अनन्तमूल प्रियंगु इनसे सिद्धकर नौवें महीनेमें दूध पिये तौ वेदना शान्त होती है ॥ १३८ ॥

दशमे ॥ शर्करागोस्तनीद्राक्षासक्षौद्रंनीलमुत्पलम् ॥
पाययेद्दशमेमासिगवांक्षीरैःप्रशान्तये ॥ १३९ ॥

दशमे महीनेमें मिश्री मुनक्का शहद नीलकमल यह गौके दूधसे दशमें महीनेमें पानकरे तो वेदना शान्त होती है ॥ १३९ ॥

अथवाशुंठिसंसिद्धंगोक्षीरंदशमेपिबेत् ॥
अथवामधुकंदारुशुंठीक्षीरेणसंपिबेत् ॥ १४० ॥

अथवा सोंठसे सिद्धकर गौका दूध दशमें महीनेमें पान करे अथवा मुलैठी देवदारु सोंठ गौके दूधसे पिये ॥ १४० ॥

सामान्ये ॥धात्र्यञ्जनंसावरयष्टिकाख्यंत्र्यहंनिपीतंप्रमदाहठेन
सप्ताहमात्रंविनियोज्यनारीस्तभ्नातिगर्भंचलितंनचित्रं १४१

सामान्यतासे जो नारी लोध(वा आमला) सौवीरांजन मुलैठी सात दिन सावधान होकर पीतीहै तो उसका गर्भ स्तंभित होताहै फिर चलायमान नहीं होता.वा धनियां रसौत लोध मुलैठी पिये १४१

क्षौद्रंवृषंचन्दनसिंधुजातंमहेन्द्रमाज्यंपयसासुपिष्टम् ॥
गर्भंक्षरंतंप्रतिहंतिशीघ्रंयोगोयमुक्तःकिलमूलदेवैः १४२

शहद अडूसा चन्दन सैंधा इंद्रजौ घृत यह जलसे पीसकर देनेसे पड़ताहुआ गर्भ शीघ्र थम जाताहै यह योग मौलिदेवने कहाहै१४२

कुलालहस्तोद्भवकर्दमस्यवत्सीपयःक्षौद्रयुतस्यमात्रम् ॥
गर्भच्युतिंशूलमयोंनिवार्य्यंकरोतिगर्भंप्रकृतंहठेन ॥ १४३॥

कुम्हारके चाकपर बर्तन बनाते समय जो पतली मिट्टी हाथमें

लगताहै उसको ले बकरीके दूधमें डालकर शहदके साथ पिये तो शूलयुक्तगर्भके गिरनेको निवारण करताहै और स्थापित करताहै १४३

कशेरुशृंगाटकजीरकाणिपयोघनैरंडशतावरीभिः ॥
सिद्धंपयश्शर्करयाविमिश्रंसंस्थापयेद्गर्भमुदीत्यशूलम् १४४

कशेरू सिंघाड़ा जीरा नागरमोथा एरण्ड शतावरी इनसे सिद्ध किया जल मिश्री डालनेसे शूल निवारण करताहै और गर्भको गिरनेसे रोकताहै ॥ १४४ ॥

कंदःकौमुदकस्यमाक्षिकयुतंक्षीराज्यमिश्रंपिबे-
त्सप्ताहंसितयासुपक्कसबलाशीतीकृतंवायुना ॥
गर्भस्त्रावमरोचकंसपवनंशोफंत्रिदोषंवमिं
शूलंसर्वविधंनिहंतिनियमादेवंचयत्तत्स्मृतम् १४५॥

कुमुदका कन्द शहद घी दूध मिलाकर पिये अर्थात् इसमें मिश्री डालकर ठंढ़ाकर सात दिन पिये तो गर्भस्राव अरोचक वातरोग सूजन त्रिदोष चमचमाहट शूल यह सब नियमसे सेवन करनेसे नष्ट होजातेहैं ॥ १४५ ॥

ह्रीवेरातिविषामुस्तामरीचंसंशृतंजलम् ॥
दद्याद्गर्भेप्रचलितेप्रदरेकुक्षिवद्यपि ॥ १४६ ॥

ह्रीवेर अतीस मोथा मोचरस कुटज जौ इनका क्काथ कर गिरते हुए गर्भमें देनेसे प्रदर कोखरोगमें देनेसे शूलादि नष्ट होजाते हैं१४६

कुवलयकन्दंसातिलंपीत्वाक्षीरेणमधुसितायुक्तम् ॥
गुरुतरदोषैश्चलितंगर्भंसंस्थापयेदाशु ॥ १४७ ॥

कमलका कन्द काले तिल यह शहद मिश्रीयुक्त दूधके साथ पीने से गुरुदोषसे गिरते हुए गर्भकोभी शीघ्र स्तंभन करताहै ॥ १४७ ॥

---

१ 'मोचशक्रैः शृतंजलं' यहभी पाठ है। कदली, कुटजवृक्ष।

नीलोत्पलमृणालानिमधुकंशर्करातिलाः ॥
द्रवमानेषुगर्भेषुगर्भस्थापनमुत्तमम् ॥ १४८ ॥

नील कमलकी नाल मुलैठी मिश्री बड़ीकटेरी यह गर्भ गिरतेमें स्थापन करता है ॥ १४८ ॥

इति गर्भस्रावरक्षा ।

अथ गर्भेशुष्के ।

गोक्षीरंशर्करायुक्तंगर्भशुष्कप्रशांतये ॥
पिबेद्वामधुकंचूर्णंगंभारीफलचूर्णकम् ॥
समांशंगव्यदुग्धेनगुर्विणीतत्प्रशांतये ॥ १४९ ॥

इति गर्भशुष्कनिवारणम् ।

अथ गर्भ शुष्क शान्ति । शर्करा के सहित गौका दूध सेवन करने से शुष्कगर्भकी शान्ति होती है ॥ अथवा गंभारीके फलका चूर्ण वा मुलैठी का चूर्ण शहद के साथ पान करै अथवा गर्भिणी स्त्री जिसका गर्भ सूखता हो वह गायका दूध सेवन करै ॥ १४९ ॥

इति गर्भशुष्कनिवारण ।

अथ सूतिकानिरोधेसुखप्रसवमाह ।

श्वेतम्पुनर्नवामूलंचूर्णयोनौप्रवेशयेत् ॥
क्षणात्प्रसूयतेनारीगर्भेणातिप्रपीडिता ॥ १५० ॥

सुखसे प्रसव होनेकी विधि । श्वेत पुनर्नवा की जड़का चूर्ण स्त्रीयोनिमें प्रवेश करै तौ तत्काल प्रसव होता है और गर्भकी पीड़ा नहीं होती है ॥ १५० ॥

उत्तराभिमुखंग्राह्यंश्वेतगुंजीयमूलकम् ॥
कट्यांबध्वाविमुक्तश्चगर्भपुत्रंतुतत्क्षणात् ॥ १५१ ॥

वासकस्यतुमूलन्तुचोत्तरस्थसमुद्धरेत् ॥
कट्याम्बध्वासप्तसूत्रैःसुखंनारीप्रसूयते ॥ १५२ ॥

उत्तरकी ओर मुख कर श्वेत चोटलीकी जड़ ग्रहण करके कमरमें बांधनेसे सन्तान सुखसे प्रसव होती है अडूसेकी जड़को उत्तर मुख ग्रहणकर उसे कच्चे सात सूतसे कमरमें बांधे तो स्त्री सुखसे प्रसववती होती है यह उत्तर मुखी जड़ लेनी ॥ १५१ ॥ १५२ ॥

उत्तरेचसमालोड्यंश्वेतगुंजाफलंकियत् ॥
सुखप्रसवमाप्नोतितत्क्षणान्नात्रसंशयः ॥ १५३ ॥

अथवा उत्तरकी ओरका श्वेत चौंटलीका फल केशोंमें बांधनेसे सुखसे प्रसव करता है इसमें सन्देह नहीं ॥ १५३ ॥

योनिंवालेपयेत्तेनसासुखेनप्रसूयते ॥
सहदेव्याश्चमूलंवाकटिस्थंप्रसवेत्सुखम् ॥ १५४ ॥

अथवा योनिमें लेप करनेसे सुखसे सन्तान उत्पन्न होती है अथवा सहदेई खरैटी की जड़ कमरमें बांधनेसे स्त्रीके सुखसे बालक उत्पन्न होता है ॥ १५४ ॥

अपामार्गस्यमूलन्तुग्राहयेच्चतुरंगुलम् ॥
नारीप्रवेशयेद्योनौतत्क्षणात्साप्रसूयते ॥ १५५ ॥

चिरचिटेकी जड़ चार अंगुलकी ग्रहण कर योनिमें रखनेसे स्त्री सुखसे बालक उत्पन्न करती है ॥ १५५ ॥

तोयेनलांगलीकन्दंघृष्ट्वायोनिंप्रलेपयेत् ॥
नाभिंचलेपयेत्तेनतत्क्षणात्सूयतेध्रुवम् ॥ १५६ ॥

अथवा कलिहारीकी जड़ घिसकर नाभिमें प्रलेप करे तौ बहुत शीघ्र सन्तान होतीहै या नारियलकी जड़ जलमें पीस धरै ॥ १५६ ॥

गुंजाफलार्द्धखंडंचतोयपूगंतथार्द्धकम् ॥
पिबेद्धातोयपिष्टंचसासुखेनप्रसूयते ॥ १५७ ॥

चौंटली आधेपल खांड आधेपल सुपारी इनको जलके साथ पीसकर पीनेसे सुखसे स्त्री प्रसव करती है ॥ १५७ ॥

गुंजातरोर्मूलयुगंविधानादुत्पाट्यपुष्येचरवौनिबद्धम् ॥
कटीतलेमूर्द्धनिनीलसूत्रैःशीघ्रंप्रसूतिंकुरुतेंगनायाः॥१५८॥

चौंटलीकी जड़ और चौंटली यह विधिपूर्वक रविवारके दिन पुष्यनक्षत्रमें लावै उसे कमरके नीचे वा शिरमें नीलसूत्रसे बांधनेसे स्त्री शीघ्र प्रसव करती है ॥ १५८ ॥

आगारधूमंगृहवारिणावापीत्वाबलाशीघ्रतरंप्रसूते ॥
अलम्बुषामूलमथोनिबद्धंयोगद्वयंभूपतिरित्यवादीत् १५९॥
समातुलुंगंमधुकस्यचूर्णमध्वाज्यमिश्रंप्रमदानिपीय ॥
व्यथाविहीनंप्रसवंहठेनप्राप्नोतिनैवात्रविकल्पबुद्धिः ॥१६०॥
(अत्रमातुलुंगस्यमूलंयोज्यंनतुफलंक्काथयित्वापेयम्)

गृहका धूम जलके साथ पीनेसे स्त्री शीघ्र सन्तान करती है अथवा लज्जालूकी जड़ कमरमें बांधनेसे शीघ्र प्रसव होताहै यह राजाने कहा है. मातुलुंग (नीबू) और मुलैठीका चूर्ण शहद घीसे मिलाकर स्त्री पान करै तो व्यथाके विनाही सुखसे सन्तान होती है इसमें सन्देह नहीं ॥ मातुलिंगी की जड़ ग्रहण करनी, फल नहीं. क्काथ करके पीना चाहिये ॥ १५९ ॥ १६० ॥

दशमूलीशृतंतोयंघृतसैंधवसंयुतम् ॥
शूलातुरापिबेन्नारीसासुखेनप्रसूयते ॥ १६१ ॥

दशमूल का काढ़ा घृत और सैंधके सहित पिलानेसे शूल से व्याकुल स्त्रीको सुखसे स्त्री प्रसववती होतीहै ॥ १६१ ॥

"ॐमन्मथॐमन्मथॐमन्मथमन्मथवाहिनिलम्बोदरमुंच २ स्वाहा"॥अनेनमंत्रेणजलंसुतप्तंपातुंप्रदेयंशुचिनानरेण ॥ तोयाभिपानात्खलुगर्भवत्याप्रसूयतेशीघ्रतरंसुखेन ॥ १६२ ॥

'ॐ मन्मथॐमन्मथॐमन्मथ मन्मथ वाहिनी लम्बोदर मुंच २ स्वाहा' इस मंत्रसे पवित्र होकर गरमकर जल स्त्रीको पिलावै तो इस जलके पान करनेसे स्त्री सुखप्रसूति होती है ॥ १६२ ॥

ॐकारंचहकारंचअकारेणसुपूजितम् ॥
ॐकारेशिरसंकृत्वाअन्तेनमस्त्रिमूर्तये ॥
अं ॐ हांनमस्त्रिमूर्त्तये ॥ १६३ ॥

ॐ कार हकार अकार से युक्तकर अंकार शिरपर कर अन्तमें त्रिमूर्तयेनमः लगावे ' अं ॐ हां नमस्त्रिमूर्तये' यह मंत्र है ॥ १६३ ॥

अनेनैवतुमंत्रेणजप्तव्यंसूतिकागृहे ॥
सुखंप्रसवमाप्नोतिसापुत्रंलभतेध्रुवम् ॥ १६४ ॥

इति सुखप्रसवविधिः ।

इस मंत्रको प्रसूतिकाके घरमें जपे तो सुख से प्रसववती होती है और सुपुत्र को प्राप्त होती है ॥ १६४ ॥

इति सुखप्रसवविधि ।

अथ बालानांसूतिकायाश्चभूतग्रहनिवारणम् ।

बिल्वमूलन्देवदारुंगोश्रृंगंचप्रियंगुच ॥
मार्जारस्यमलंकुष्टंवंशत्वगाजमूत्रकैः ॥ १६५ ॥

अथ बालानां सूतिका ग्रह निवारणम् ॥ बेलकी जड़ देवदारु बबूर प्रियंगुफूल रक्तचीतेकी जड़ बिल्लीका मल कूठ बांसकी छाल यह सब वस्तु बकरेके मूतमें पीस कर ॥ १६५ ॥

पिष्ट्वाधूपोनिहन्त्याशुग्रहभूतज्वरादयः ॥
डाकिनीराक्षसाःप्रेताःपिशाचाब्रह्मराक्षसाः ॥१६६॥
एकाहिकोद्व्याहिकश्चज्वरोनश्यातितत्क्षणात् ॥

---

१ गोश्रृंगमिति वा पाठः ।

धूपदेनेसे ग्रह भूतज्वर डाकिनी राक्षस प्रेत पिशाच ब्रह्मराक्षस दूर होते हैं एकांतरा तिजारी दूर होते हैं ॥ १६६ ॥

'ॐद्रावितंतापेठंठःस्वाहा' अनेनधूपन्दद्यात् ॥
श्रीवासंसर्षपंकुष्टंवचातैलंघृतंवसा ॥
धूपोबालग्रहेदेयोबालानांग्रहशांतये ॥ १६७ ॥

'ॐ द्रावित तापे ठंठः स्वाहा' इस मंत्रसे धूपदे ॥ चन्दन सरसों कूठ वच तेल घी चरबी इनकी धूप बालकों को ग्रहशान्तिके निमित्त देना चाहिये ॥ १६७ ॥

शिरीषनिम्बयोःपत्रंगोश्रृंगस्यत्वचावचः ॥
वंशत्वक्शिखिपिच्छंचकंगुनाचसमंघृतम् ॥ १६८ ॥

शिरस नीमके पते गौके सींगकी त्वचा वच वंशकी छाल मोर-पंख मालकांगनीके समान घृत ॥ १६८ ॥

धूपोबालग्रहान्हंतिस्वयंमंत्रेणमंत्रयेत् ॥ १६९ ॥

यह सब एकत्र कर मंत्र पढ़ इनकी धूप देने से बालग्रह दूर होते हैं ॥ १६९ ॥

ॐद्रुतंमुंच २ उड्डामरेश्वरआज्ञापयतिस्वाहा ॥
धूपत्रयाणामेषमंत्रः ।
पुनर्नवानिम्बपत्रसर्षपघृतविरचितोधूपः ॥
गर्भिण्याबालानांसततंरक्षाकरःकथितः ॥ १७० ॥

"ॐ द्रुतं मुंच २ उड्डामरेश्वर आज्ञापयति स्वाहा" यह तीनों धूप देनेका मंत्र है. पुनर्नवा नीमके पत्ते सरसों और घी इनकी धूप मंत्र पढ़कर देनेसे गर्भिणी और बालकों की रक्षा होती है ॥ १७० ॥

दाडिमस्यतुवन्दाकंज्येष्ठाऋक्षेसमुद्धरेत् ॥
द्वारेबद्धंतुबालानांसर्वग्रहनिवारणम् ॥ १७१ ॥

ज्येष्ठानक्षत्रमें दाडिमका बन्दा लावै वह बालकोंके घरके द्वार बांधनेसे सब ग्रहोंका निवारण होताहै ॥ १७१ ॥

पुष्यार्केश्वेतगुंजायामूलमुद्धृत्यधारयेत् ॥
बालानांकंठदेशेचडाकिनीभयनाशनम् ॥ १७२ ॥

रविवारको पुष्यनक्षत्रमें श्वेत चौंटलीकी जड़ धारण करे अर्थात् बालकों के कंठमें बांधनेसे डाकनीका भयनाश होजाताहै ॥ १७२॥

श्वेतापराजितापत्रंजयापत्रंद्वयोरसम् ॥
नस्यंकुर्य्यात्पलायन्तेडाकिनीदानवादयः ॥१७३॥

श्वेत विष्णुक्रान्ताके पत्ते और गुड़हर (जयन्ती) के पत्ते इन दोनों के रसका हुलास देनेसे डाकनी दानवादि पलायन करजाते हैं१७३

सर्पत्वक्शिखिजारिष्टपल्लवंरजनीवचा ॥
रसोनांहिंगुगोलोमशृंगीमरिचमाक्षिकैः ॥ १७४ ॥

सांपकी कैंचली सीसम नीमके पत्ते हलदी वच ल्हसन हिंगु गौके लोम (बाल) काकड़ासिंगी कालीमिरच शहद ॥ १७४ ॥

धूपःसर्वज्वरघ्नोयंकुमाराणांज्वरापहः ॥
छुच्छुन्दरीमलंमांसंहरिद्राबिल्वपत्रकम् ॥ १७५ ॥
इन्द्रजंसर्षपंपत्रंधूपेनतत्प्रयोजितम् ॥
निहंतिरोदनंरात्रौबालस्याशुनसंशयः ॥ १७६ ॥

इसकी धूप सम्पूर्ण ज्वर तथा कुमारोंका ज्वर हरनेवाली है छछुंदरका मल मांस हलदी बेलपत्र इन्द्रजौ सरसों तेजपात इनकी धूप देनेसे रातमें बालकका रोना थम जाता है इसमें संदेह नहीं ॥ १७५ ॥ १७६ ॥

मत्स्यराजस्यपित्तेनमरिचंभावयेद्बुधः ॥
रविवारेरौद्रशुष्कमञ्जनात्सर्वभूतहृत् ॥ १७७ ॥

मत्स्यराजके पित्तमें कालीमिरचकी भावना दे रविवारके दिन इसको सुखाय धूप देनेसे ग्रह दूर होते हैं ॥ १७७ ॥

नरसिंहस्यमंत्रेणसकृदुच्चरितंहरेत् ॥
डाकिनीग्रहभूतानितमःसूर्य्योदयेयथा ॥ १७८ ॥

नृसिंहका मंत्र पढ़कर लावै इससे डाकिनी ग्रह भूतादि ऐसे भाग जाते हैं जैसे सूर्यके उदयमें अंधकार भाग जाता है ॥ १७८ ॥

ॐनरसिंहायहिरण्यकशिपुवक्षःस्थलविदारणायत्रिभुवनव्यापकायभूतप्रेतपिशाचडाकिनीकुलोन्मूलनायस्तंभोद्भवायसमस्तदोषान्हरहरविसर २ पच२हन २ कंपय २ मथ २ ह्रीं ३ फट् २ ठःठःठः एहि २ रुद्रआज्ञापयतिस्वाहा" ॥

अथ नरसिंहमंत्रः ।

"ॐह्रांह्रींह्रींहूंहूंहूंफट्स्वाहा" । अनेनसर्षपमभिमंत्रितंकृत्वारोगिणंप्रहारयेत्॥तदासर्वेग्रहाःपलायन्ते ।
बालग्रहाभिभूतानांबलियत्नेनकल्पयेत् ॥
शुचिपक्वातुसप्ताहंमत्स्यंमांसंसुराफलम् ॥ १७९ ॥

"ॐ नरसिंहाय हिरण्यकशिपुवक्षःस्थलविदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूत प्रेत पिशाच डाकिनी कुलोन्मूलनाय स्तंभोद्भवाय समस्तदोषान् हर हर विसर २ पच २ हन २ कंपय कंपय मथ मथ ह्रीं ३ फट् २ ठःठःठः एहि एहि रुद्र आज्ञापयति स्वाहा" अथ नृसिंहमंत्रः । 'ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं हूं फट् स्वाहा' इन मन्त्रोंसे सरसों पढ़कर मारे ताली बजावे तो सम्पूर्ण ग्रह भाग जाते हैं, जब बालकों को ग्रह आकर्षित करले तो यत्नसे उनकी बलिक लिपत करै सात दिन पर्यन्त पवित्रहो मत्स्य मांस सुरा फल ॥ १७९ ॥

पुष्पधूपाक्षतंगंधंदीपंचदक्षिणादिकम् ॥
चतुष्पथेक्षिपेद्रात्रौशुद्धेनूतनखर्परे ॥
शनौवाकुजवारेवाबालदोषोपशान्तये ॥ १८० ॥
"ॐसर्वभूतेभ्योबलिंगृह्ण २ स्वाहा" ॥
इति बलिदानमंत्रः ।
इति बालानांसर्वग्रहनिवारणम् ।

पुष्प धूप अक्षत गंध दीप दक्षिणा यह सब वस्तु रात्रिमें शुद्ध और नई लेकर सिकोरेमें शनिवार मंगलको चौराहे में रखिआवै और यह मंत्र पढ़दे, 'ॐ सर्वभूतेभ्यो बलिंगृह्ण २ स्वाहा' ११२।११३ का यंत्र बांधै ॥ १८० ॥

इति बलिदानमंत्र ।
इति बालानांसर्वग्रहनिवारणं ।

अथ गर्भस्थबालस्याहितुंडिकादिनिवारणम् ।

चंद्रग्रस्तेशिरवीमूलंविधानेनोद्धरेद्बुधः ॥
बद्धंगलेचजघनेबालोहितुंडिकांजयेत् ॥ १८१ ॥

गर्भवती के बालक की अहितुंडिकादि निवारण करनी । चन्द्रग्रहणमें कलिहारीकी जड़ विधिपूर्वक लावै उसको बालक के गलेमें बांधनेसे अहितुंडिका दूर होती है ॥ १८१ ॥

श्वेतार्कमूलंसंगृह्यगृहस्तम्भेचबंधयेत् ॥
पुष्यार्कवारवेर्वारेबालोहितुंडिकांजयेत् ॥ १८२ ॥

पुष्यनक्षत्र युक्त रविवार में वा रविवारके दिन श्वेतआककी जड़ लाकर बांधनेसे बालकका अहितुंडरोग दूर होता है ॥ १८२ ॥

उदुम्बरभवंमूलंशिशुकट्यांचबंधयेत् ॥
बृहत्कूष्मांडवृत्तंवातेनाहितुंडिकांजयेत् ॥ १८३ ॥
इति बालानामहितुंडिकानाशनम् ।

गूलरकी जड़ लाकर बालककी कमरमें बांधे अथवा बड़े पेठेकी डंठली बांधनेसे अहितुंडिकारोग दूर होता है ॥ १८३ ॥

इति बालानामहितुंडिकानाशनं ।

अथ स्त्रीणांपुष्परक्षा ।

पलाशराजादनयोःफलानिपुष्पाण्यथोशाल्मलिपादपस्य ॥
आज्येनमासार्द्धदिनंपिबंतिरक्षाभवेन्निश्चितमेवपुष्पे॥१८४॥

अथ स्त्रीणां पुष्परक्षा । ढाक और क्षीरिणीवृक्षके फल सेमल के फूल यह घीके साथ पन्द्रह दिन पान करनेसे निश्चयही स्त्रीके पुष्प की रक्षा होती है ॥ १८४ ॥

तुषाम्बुनापावकवृक्षमूलंनिक्काथयित्वानियमंचरंती ॥
ऋत्वन्तकालेत्रिदिनंपुरंध्रीरक्षाभवेदामरणान्तमेव १८५

तुषके जलसे चीतेकी जड़ लेकर जो नियमसे काढ़ा कर पिये और नियम से रहै और ऋतु के अन्तमें तीनदिन पान करनेसे जन्म पर्यन्त स्त्री के आर्तवकी रक्षा होती है कहीं ऋतु समयभी पीना कहाहै ॥ १८५ ॥

फलंकदम्बस्यचमाक्षिकानित्विषोदकेनत्रिदिवंसकृत्वा ॥
स्नानावसानेनियमेनपीत्वारक्षामवश्यंकुरुतेहठेन ।१८६।

कदम्बके फल सोनामाखी यह तीन दिन तुषके जलसे पीसकर स्नानके अन्तमें तीन दिनतक इसे नियमसे सेवन करनेसे ऋतुकी रक्षा होतीहै ॥ १८६ ॥

ऋहौयनंवागुडमात्तिनित्यंपलप्रमाणंवनिताद्धमासम् ॥
जीवांतिकंनिश्चितमेवतस्यांवंध्याख्यमुक्तंकविपुंगवेन १८७

अथवा जो स्त्री पन्द्रह दिन तक नित्य तीन वर्षके गुड़का चार तोला प्रमाणसे सेवन करतीहै वह वंध्या होजातीहै कविपुंगवोंने कहाहै १८७

कर्षद्वयंराक्षसवृक्षबीजंसप्ताहमात्रंसितशालिधान्यम् ॥
ऋतौनिपीतंमृगशावकाक्ष्यारक्षार्थमेतन्नियतंप्रदिष्टम्।१८८।

इति स्त्रीपुष्परक्षा ।

दोकर्ष राक्षसवृक्षके बीज तथा शालिशाकधान्य यह ऋतुके अंत में सात दिनतक पान करनेसे अवश्य पुष्पकी रक्षा होतीहै॥१८८॥

इति स्त्रीपुष्परक्षा ।

अथ दुर्भगाकरणम् ।

ज्येष्ठानक्षत्रेनिम्बवन्दाकंयस्याअंगेदीयते
सादुर्भगाभवति इतिदुर्भगाकगणम् ॥ १८९ ॥

अथ दुर्भगाकरणम् । ज्येष्ठानक्षत्र में नीमका वन्दा जिसके अंगमें डालाजाय वह दुर्भगा होती है ॥ १८९ ॥

इति दुर्भगाकरणम् ।

अथ कलहकरणम् ।

विशाखानक्षत्रेनिम्बवृक्षस्योत्तरमूलंविवस्त्रोविमुखीभूयउत्पा
द्यमुखेनयस्यचालयेक्षिपेत्तस्यगृहेप्रत्यहंकलहोभवति
शाखोटमूलंपत्रंचएकीकृत्यस्थापयेत्तथा ॥ १९० ॥

विशाखानक्षत्रमें नीमके पेड़की जड़ उत्तरकी ओर मुखकर नग्न होकर मुखसे उखाड़े जिसके यहां फेंकदे प्रतिदिन उसके यहां क्लेश होताहै सिहोरेकी जड़ और पत्ते मिलाकर रखने से क्लेश होताहै१९०

दूरेकृतेतुतद्दृक्षेभद्रंभवति । तन्नक्षत्रेशाखोटबदरीबीज
द्वयमेकीकृत्ययस्यगृहेस्थापयेत्तस्यनित्यंकलहोभवति ॥

ब्रह्मदण्डीसमूलाचकाकमाचीसमन्वितम् ॥
जातीपुष्परसैःपिष्ट्वासप्तरात्रंपुनःपुनः ॥ १९१ ॥
एषधूपःप्रदातव्यःशत्रुगोत्रस्यमध्यतः ॥
यथागोत्रंसमाघ्रातिपितापुत्रैःसमंकलिः ॥ १९२ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेषण्ढीकरणादिकलह
करणान्तंनामाष्टमोपदेशः ॥ ८ ॥

दूर करनेसे दूरहोताहै । विशाखानक्षत्रमें शाखोट और बेरकी-दो गुठली एकत्र कर जिसके घरमें डाले उससे नित्य क्लेश होताहै। जल सहित ब्रह्मदण्डी काकमाची (मकोया) यह जाईके फूलोंके रसमें सातरात्रितक वारंवार पीसे, यह धूप शत्रुके गोत्रमें देनेसे सूंघनेसे पितापुत्रमें क्लेश होता है ॥ १९१ ॥ १९२ ॥

इति कलहकरणम् ।

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पंडितज्वालाप्रसादमिश्रकृत
भाषाटीकायां षण्ढीकरणादि कलहकरणान्तं नामाष्टमोपदेशः ॥८॥

अथ सर्वारिष्टनाशार्थरक्षाविधिः ।

ईश्वरेणपुरादेव्यैयद्यत्तत्कथितंमया ॥
कादिद्धिरवसानंचअक्षरंस्वरसंयुतम् ॥ १ ॥
ईकारेणापिसंपूज्यअधोरेफत्रयान्वितम् ॥
ॐकारशिरसंकृत्वाजप्तव्यंसिद्धिमिच्छता ॥ २ ॥

अथ सम्पूर्ण अरिष्टनाशक रक्षाविधि । ईश्वरने पार्वतीके प्रति जो जो कुछ कहाहै आदि हकार अक्षर और स्वरके सहित वह हकारके सहित और नीचे रेफसे संयुक्त तथा आदिमें ओंकार लगाकर सिद्धिकी इच्छा करनेवालेको जपना चाहिये ॥ १ ॥ २ ॥

मंत्रोयम् " ह्रींह्रींह्रीं ॐ ह्रीं क्रीं ख्रीं वा
ॐ क्रीं ख्रीं क्ष्रीं ॐ ठ्रीं थ्रीं फ्रीं ह्रीं " ॥

स्वसंयमनमंत्रोयंशतार्द्धजपमात्रतः ॥
अशेषारिष्टनाशःस्यादित्याहपुरसूदनः ॥ ३ ॥

ह्रीं ह्रीं ह्रीं अथवा (ओं ह्रीं क्रीं ख्रीं) वा (ओंक्रींख्रीं क्ष्रीं यह मंत्र है ५० वार कहनेसेही यह मंत्र सिद्ध होजाता है और सम्पूर्ण अरिष्ट नाश करता है ऐसा शंकरने कहा है ॥ ३ ॥

कपरंचपरंचैवठपरंतपरन्तथा ॥
पपरंवर्णमाहृत्यईकारेणसुपूजितम् ॥
अधोरेफसमायुक्तमोंकारैःशिरसंतथा ॥ ४ ॥
मंत्रोयम् ॥ ॐ खंछंठंथंफंह्रम् । वा ॐख्रींछ्रींठ्रीं
थ्रीं फ्रीं ह्रीं शुद्धम् ॥
श्रद्धयातुमहामंत्रंयेपठंतिसदामुने ॥
सर्वथातस्यपुंसःस्यात्सर्वारिष्टविनाशनम् ॥ ५॥
हस्तेनरक्तपुष्पेणग्रथितयाचमालया ॥
अभिमन्त्र्यशतेनापिदद्यादेव्यैसदानघे ॥ ६ ॥

ककार पकार ठकार तकार पकार इनसे पर (द्वितीय) जो खादि वर्ण हैं उनको और हकारको ईकार व उसके नीचे रेफ लगानेसे प्रथम ओंकार उच्चारण करे मंत्र यह है ॐ ' ख्रीं छ्रीं ठ्रीं थ्रीं फ्रीं ह्रीं (शुद्ध) हे मुने ! इस मंत्रका माहात्म्य जो सदा उच्चारण करते हैं उनके सब अरिष्ट नाश हो जाते हैं और हाथमें लाल फूलकी माला लेकर इसको उच्चारण करते हैं. सौवार अभिमंत्रित कर देवीको चढ़ाते हैं ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

यावज्जीवंशुभंतस्यसर्वलाभोदिनेदिने ॥
नगृहेनिष्टपातःस्याल्लिखित्वास्थापनेऽपिच ॥ ७ ॥

उसको जन्मपर्यन्त शुभ होता है, अर्थात् दिन २ अर्थलाभ होता है, इसे लिखकर स्थापन करनेसे घरमें अरिष्ट नहीं होता है ॥७॥

अक्षराणामंत्यवर्णालिखित्वापंचधाऽनघे ॥
अधोरेफसमायुक्तमोंकारेशिरसंतथा ॥ ८ ॥

अक्षरोंके अन्त्य वर्णोंको पंचविधिसे करके नीचे रेफ मिलाकर ॐकार सहित उच्चारण करै ईकार युक्त कर अन्तमें फट् लगावे ॥ ८ ॥

हकारेणचसम्पूज्यमन्तेफडक्षरंस्मृतम् ॥
ईकारेणचसंपूज्यअन्तेफडक्षरान्वितम् ॥
'ॐ क्ष्रीं । ५ । फट्' । मंत्रोयम्ममरूपस्यध्यानंजापंतथैवच ॥
ममैवहृदयंतस्यसदातद्गतमानसः ॥ ९ ॥

'क्ष्रीं ५ फट्' यह मंत्रहै मेरेही रूपका ध्यान करे और जपकरे और तद्गतमन होकर मुझमेंही अपना मन लगावे ॥ ९ ॥

सदास्यात्तद्गृहेक्षेमंसहस्रार्द्धस्यजापनात् ॥
त्रैलोक्येतत्समोनास्तिनित्यंफलमवाप्नुयात् ॥१०॥

इसमंत्रका पांचसे जप करनेसे उसके घरमें सदा आरोग्यता रहतीहै, इसके समान त्रिलोकीमें कुछ नहीं, यह नित्यफल का देनेवाला है ॥ १० ॥

नित्यंसम्पद्यतेराज्ञापत्न्यापुत्रेणबांधवैः ॥
ज्ञातिभिःसज्जनैश्चापिशत्रुभिश्चविशेषतः ॥ ११ ॥

इससे राजा स्त्री पुत्र बांधवों के सहित नित्य सम्पत्तिमान् होताहै ज्ञाति सज्जन शत्रु सबकी दृष्टि में विशेष होताहै ॥ ११ ॥

जन्मांतरेसुखीप्राणीशृणुदेविमहाफलम् ॥
अन्तद्वयंसमागृह्यमधोरेफसमान्वितम् ॥ १२ ॥

जन्मान्तरमेंभी वह प्राणी सुखी होताहै, हे देवि ! इसका महाफल सुनो दो अन्तके अक्षर ग्रहण करे उसके रेफ लगावे ॥ १२ ॥

ॐकारसंयुतंकृत्वारेखाबिन्दुसमायुतम् ॥ १३ ॥

ॐकारसंयुक्त करके रेखाबिन्दुके सहित मंत्रोद्धार करै यह मंत्र है ॥ १३ ॥

ॐक्ष्रौंक्ष्रौं मंत्रोयम् ।

अनेनैवतुमंत्रेणयेजपंतिमहाजनाः ॥
तेसर्वेशांतिमायांतिसततंतस्यजापनात् ॥ १४ ॥

'क्ष्रौं क्ष्रौं' इसमंत्रको जो महाजनजप करते हैं वे निरन्तर इसके जपके फलसे शान्तिको प्राप्त हो जातेहैं ॥ १४ ॥

श्वेतार्कमूलंपुष्यार्केसमुद्धृत्यविधारयेत् ॥
बाहुभ्यांव्याधयोनस्युस्त्वरिष्टानिविशेषतः ॥१५॥

रविवारको पुष्यनक्षत्रमें श्वेत आककी जड़ लगावै उसको भुजामें बांधनेसे व्याधि और अरिष्ट नहीं होता है ॥ १५ ॥

तद्दर्शनेननश्यंतिडाकिनीदानवादयः ॥
तद्धूपेनपलायन्तेप्रेताद्यादूरतोध्रुवम् ॥ १६ ॥

और उसके दर्शनसेही डाकिनी अथवा दानव आदि नष्ट होजातेहैं और इसकी धूपसेही प्रेतादि दूरसे भाग जाते हैं ॥ १६ ॥

पूर्वाभाद्रपदाऋक्षेवन्दाकंतुशिरीषजम् ॥
संगृह्यशिरसिक्षिप्तेह्यभयंभवतिध्रुवम् ॥ १७ ॥

पूर्वाभाद्रपदनक्षत्रमें शिरसका वन्दा लावै उसको शिरपर रखनेसे निश्चयसे अभय होता है ॥ १७ ॥

विष्णुक्रांताभवंमूलंहस्तस्थंचौरभीतिजित् ॥
नरसिंहस्यमंत्रेणसकृदुच्चरितेहरेत् ॥ १८ ॥

"डाकिनीग्रहभूतानितमःसूर्य्योदयेयथा ॥
नरसिंहमंत्रःपुराबलाधिकारेलिखितः" ॥
भूतप्रेतपिशाचादिभयेस्मृत्वानरोऽभयः ॥
भैरवींतुमहापूर्वींभवेदेवनसंशयः ॥ १९ ॥

वा विष्णुक्रान्ताकी जड़ हाथमें स्थित रखनेसे चोरका भय नहीं होता है और नृसिंहके मंत्रसे सब दुःख हरजाते हैं. डाकिनी ग्रह भूत ऐसे नष्ट होजाते हैं जैसे सूर्यके सन्मुख अंधकार नहीं रहता, नृसिंहमंत्र कहते हैं वह जो पहले बलिके अधिकारमें कहा है, प्रेत पिशाचादिके भयमें उसको स्मरणकर मनुष्य अभय होजाताहै और इसमें संदेह नहीं वह महाभैरवीका भक्त उसको जानता है ॥ ११४ से १२० अंक तक यंत्रभी लिखकर बांधै ॥ १८ ॥ १९ ॥

अथ निद्राकरणम् ।

निगडेचौरिकायांचपठेद्वारत्रयंयदि ॥
सर्वेप्रहरिकायांतिनिद्रायावशमेवच ॥ २० ॥

चोर बेडीको तीनवार मंत्रसे अभिमंत्रित करै तो सब पहरा करनेवाले सो जायँगे ॥ २० ॥

ॐकालकालिकामहिषासुरनाशिनीयोगनिद्राणीअमुकार
पुरियादेवीकालिकामालायोगनिद्राणीउदयपाना ॥

काल कालिका महिषासुरनाशिनी योगनिद्राणी अमुकारपुरिया-देवी कालिकामालायोगनिद्राणी उदयपाना ॥

नदीकालमायाधरीनागनिद्राणीअमुकारपुरीदंडप
हरिभूपेलोटैकालिकारआज्ञागडागडीपीठेकालि
कारआज्ञा ॥

इति लौकिकमंत्रः ।

नदीकाल मायाधरी नागनिद्राणी या अमुकारपुरी दंडपहरि भूपै लोटे कालिकार आज्ञा गडा गडी पीठे कालिकार आज्ञा ॥

इति लौकिकमंत्र ।

अथनिगमोक्तम् ।

ॐह्रींचंडांडउग्रचंडारिंकाकालिकानिद्र्यनिद्र्य ॥ इतिमंत्रेणमहानिद्राभवति ॥ एतन्मंत्रंपठित्वातस्य गृहेवाद्यवालोपठित्वाधूलिंकृत्वाक्षिपेत् ॥ कालिका विद्याकालमोहैदेवासुरनरकेहोस्थिरलहे ॥ २१ ॥ त्रिभुवनजगतकालिकारदासीपहरि ॥ जागंतालि निद्रगेलमहिमद्रभेयशी ॥ कालिकारआज्ञानिद्राली लागेउदयदेषि॥आनिंद्रभागे॥गुवाकंखादित्वातस्या वशिष्टंविवरंकृत्वासंयोज्यतत्रप्रस्रावयेत् ॥ तस्यवा टिकायांआयातितस्यानेनमंत्रेणानिद्रांकरोति ॥काक जंघाजटानिद्रांजनयेच्छिरसिस्थिता ॥ मूलंवाका कमाच्याश्वकृष्णायास्तद्गुणंस्मृतम् ॥ २२ ॥

अथ शास्त्रमंत्र 'ओं ह्रीं चण्डा उग्र चण्डारिका वालिका-न्द्रिय २' इस मंत्र से महानिद्रा होती है यह मंत्र पढ़कर उसके घरमें विद्या निक्षेपकरै वह विद्या यह है 'कालिका विद्या काल मोहै देवासुर नरतकहो स्थिर लहै, त्रिभुवन जगत कालिकारदा सीपहरीजागंतालि निद्र गेल महि मंडले पसी कालिकार आज्ञा निद्राली लागे उदय देखि आन्निन्द्रा भागे। सुपारी खाकर उसके अवशिष्टमें विवर करके संयुक्त कर उसपर प्रस्राव-कर उस वाटिकामें रखदे जो वहां उस वाटिकाके ऊपर

जायगा उसको निद्रा होगी । घुंघची और रुद्रजटा शिरपर डालनेसे निद्रित कर देती है अथवा काकमाची (मकोय) की जड़ पीपल शिरपर डालनेका भी यही गुण है ॥ २१ ॥

मुनिखण्डकशाकंवाशय्यास्थानेखनेदथ ॥ करंजमूलंशिरसिबंधनात्कुरुतेतथा 'ॐशुद्धे २ महायोगिनी महानिद्रेस्वाहा' इसमंत्रसेमहानिद्रायणीदेवीका ३०० जप[1]करै ॥२३॥ नीलोत्पलंसमरिचंनागकेशरमूलकम् ॥ पिष्ट्वातद्रंजयेच्चक्षुर्निद्रामाप्नोत्यसंशयः ॥ २४ ॥

बकवृक्ष इक्षु विशेषका शाक शय्यास्थान में खोदकर गाड़देनेसे अथवा करंजुए की जड़ सिरपर बांधनेसे नींद आजातीहै ॥ २३ ॥ नीलोफर कालीमिर्च नागकेशर यह सब बारीक पीसकर नेत्रोंमें आंजे तौ नींद आतीहै ॥ २४ ॥

कूष्माण्डमहिषीशृङ्गंपिष्ट्वातत्समभागकम् ॥
लेपयेद्दक्षिणेपृष्ठेतस्यनिद्राक्षयोभवेत् ॥ २५ ॥
सौभांजनस्यबीजानिनीलोत्पलस्यपुष्पकम् ॥
समनागेश्वरःपिष्ट्वानिद्रांमुञ्चतिचाञ्जनात् ॥ २६ ॥
बृहतीपक्वफलकंपिष्ट्वाचमधुपृष्टिभिः ॥
यस्यनेत्रेञ्जनंदद्यान्निद्रातस्यविनश्यति ॥ २७ ॥

पेठा और महिषी शृंग इन दोनों को बराबर भाग लेकर दहिनी ओर लेप करनेसे निद्राका क्षय होताहै । सहंजनेके बीज नील कमलका पुष्प और समान नागकेशर पीस आंजनेसे निद्रा क्षय होतीहै ।

---

१ निद्राकामंत्र ३०० जपै (ओं शुद्धे २ महायोगिनी महानिद्रेस्वाहा) यह महानिद्रायणी का मंत्र है इसे पढ़कर श्मशानकी गोमूत्रसे प्लावित मृत्तिका घरमें डालनेसे निद्रा होती है यह निद्राकी विद्या संक्षेपसे कहीहै ।

कटेरीके पक्के फल मधु शहत वा मुलैठीसे पीस जिस के नेत्रमें आंजै उसकी निद्रा क्षय होतीहै ॥ २५ । २६ । २७ ॥

कनकधत्तूरमूलंमृताभ्रकेतकीपुष्परजः ॥[1]
एतानिपिष्ट्वाकपटवेषेनखादयेन्निद्राभंजनंभवति ॥२८॥

इति निद्राकरणम् ।

कृष्णधतूरेकी जड़ शोधाअभ्रक केतकीके फूलोंका रस यह सब पीसकर श्वेत कटेरीके रसमें खाय तो नींद नहीं आतीहै ॥ २८ ॥

इति निद्राभंग ।

अथ बंधनमोचनम् ।

मार्गशीर्षस्यपूर्णायांशिखीमूलंसमुद्धरेत् ॥
बंधनान्मुच्यतेतेनशिखाबद्धोनसंशयः ॥ २९ ॥

अथ बंधमोचन मार्गशीर्षमहीनेकी पूर्णिमाको शिखी (चित्रक) की जड़ी उखाड़कर लावै उसे शिखामें बांधनेसे अवश्य बंधनसे छूट जायगा इसमें संदेह नहीं ॥ २९ ॥

"ॐ नमःकनकपिंगलेरुद्रहृदयांशेरौद्रास्थिधारिणी तिष्ठतिष्ठसरसरसर्वान्मोहयर भगवतिशिखिजेतिमिरे महामायेस्वाहा ॥ अथवा ॐनमःकमलपिंगलेरुद्रहृदयाङ्गेवेतालअस्थिधारिणीतिष्ठ २ सर २ सर्वान्मोहयर भगवतिशिखिजेतिमिरेमहामायेस्वाहा"॥अष्टोत्तरशतंजप्त्वाशिखायांपूर्वौषधंबंधयेत्ततःसिद्धिः ॥
लक्षांशेनककरांतंलिखेद्बंधनमोचनम् ॥ ३० ॥[2]

मंत्र यह है 'ॐनमःकनक पिंगले रुद्रहृदयांशे रौद्रास्थिधारिणी

---

१ कृष्णधत्तूरमूलमिति वा पाठः । २ लक्षवर्णककारंचेत्यपिपाठः ।

तिष्ठ तिष्ठ सरसरसर्वान्मोहय २ भगवति शिखिजे तिमिरे महामाये स्वाहा । यह मंत्र एकसौआठवार जपकर शिखामें औषधी बांधनेसे सिद्धि होती है प्लक्षांशसे ककार पर्यन्त मंत्र लिखनेसे बंधमोचन होताहै अथवा कवर्ण एक लाख लिखनेसे बंधनमुक्त होताहै ॥ १२२॥ १२४।१२६।१२८ के यंत्र लिखे ॥ ३० ॥

अथ निगडादिभंजनम् ।

हस्तार्केसेन्दुवारस्यमूलंचोत्तरगंहरेत् ॥
स्पर्शनम्बंधविच्छेदंकुरुतेशीघ्रमारुतः ॥ ३१ ॥

निगडादिभंजनम् । हस्तनक्षत्रमें रविवारको उत्तर दिशामें जाकर सिन्धुवार (सिम्हालू) की जड़ लावे उस के स्पर्शमात्रसे निगड़भंग हो जाता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ३१ ॥

मांसीरक्तोत्पलंतुल्यंकृकलासेचभोजयेत् ॥
तन्मलैर्गुटिकास्पर्शात्तालयंत्रेभिनन्त्यलम् ॥ ३२ ॥

जटामांसी(बालछड़)लालकमल यह बराबरले कृकलास(गिरघट) को भोजन करावे उसकी वीटकी गुटिके स्पर्श करके लगानेसे ताल यंत्र टूटजाताहै ॥ ३२ ॥

सुपक्कमिष्टिकांकृष्णवज्रीग्राह्यस्तुयोगिभिः ॥
सूक्ष्मचूर्णन्तुतांकृत्वालोहकिट्टमथापिवा ॥ ३३ ॥

सुपक्कइष्टि और थूहरको रस कर लावे, ऐसा योगिराजोंने कहाहै उसका सूक्ष्म चूर्णकरके अथवा लोह कीटको लेकर ॥ ३३ ॥

सूत्रैरज्जुंदृढीकृत्यतिलंतैलेनलेपितम् ॥
तच्चूर्णंलोडितंकृत्वामहालोहंभिनत्यलम् ॥ ३४ ॥

सूत्र में की रस्सी दृढकरके तिलके तेलसे लिप्तकरे उस चूर्ण को लगावै तौ यह महा लोहेको क्षण में तोड़ देता है ॥ ३४ ॥

" ॐनमोभगवतेरुद्रायउड्डामरेश्वरायबहुरूपायनाना रूपधरायहस २ नृत्यनृत्यतुद २ नानाकौतुकेन्द्रजा लदर्शकायठः ठःस्वाहा" ।

अनेनसर्वयोगाभिमंत्र्यसिद्धिः ॥

" ॐ वाघवाहिनीसिंहेयाकालि २ कत्वात्मिकाआर्या देवींमंत्रितोरदासरणे २ नाहिथिलशतोइदवीत्रिभुवनमा तुचौसष्ठिमिनिबंधनभागिआपलाचण्डाचण्डचामुण्डी- चामुण्डविकटकालिकामादशनआगेअमुकाबंधनभाँगि याआपलाँबांध २ थायापायेनिश्वलचौसष्ठीबंधनविर कालिकामाछांडेहुंकारचौसष्ठीमबंधनकाचारंभागीभइल ल्याइखमकालिकारआज्ञा ॥ अथवाआआजादेविमैंचि तोवदासरसेवाननाहिविनासंतोम्बीदेवी ॥ त्रिभुवनरणर मायाचौसृष्टिबंधनभागीआम्पेला ॥ चंडाचण्डचामुण्डा विकट्टकालिकामादनआगेअमुकारबंधनभागिआंफेला ववाधवाघथायात्रानियन ॥ चौशठीबंधनमैलविरलाका लिकामाछडेहूंकारचौशाठिबंधनकाटारभाद्रिभरलक्षार स्वारकालिकारआज्ञा ॥ अथवा ॥ ॐ अग्निमुखीपिशा चीअमुकं हन हन पच पच शीघ्रंमेवशमानयस्वाहा "

एतन्मंत्रद्वयंपूर्वमष्टोत्तरशतंजप्त्वासप्तवारंजप्तेनानाविधिबं धनछेदोभवति ॥ इति मंत्रंपठित्वाकरांगुल्याप्रहारयेत् द्वारिदत्तेद्वारमुक्तंभवति ॥ दंहुंॐ ॥ आयआयंचिचिठि चिठिहांलांवज्रनन्दिकांकालिका ॥ अनेनमंत्रेणश्वेतसष

पंश्वेतोदुम्बरपुष्पत्रयंत्रिःपठित्वाप्रथमद्वारेक्षिपेत्सर्वद्वाराणिभञ्जन्ति ॥

इतिनिगडानांभंजनम् ।

'ओं नमोभगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय बहुरूपाय नानारूपधराय हस २ नृत्य नृत्य तुद तुद नाना कौतुकेन्द्रजाल दर्शकाय ठःठःस्वाहा ' इसमंत्रसे अभिमंत्रित करनेसे सिद्धिहोतीहैं ॥ 'ओं वाद्य वाहिनि सिद्धे पाकादि लिका लायि आआ जा देवीमें चितो वदा सरसे वान नाहिं विनाशं तोम्बिदेवी त्रिभुवन रणरमा पाचौ सृष्टि बंधन भागी आमूपेला चण्डा चण्ड चामुंडा विकंद कालिका मादन आगे अमुकार वन धन भायी आफेला व वाघ वाघ पायात्रनि पन चौसट बंधनमल विरला कालिका माछड़ हूंकार चौसठि बंधनका ठार भाद्रि भाल क्षार स्वार कालिकार आज्ञा ॥ यह दोनों मंत्र पहले एकसौआठ वार जपे फिर सातवार जपे तो अनेक प्रकार बंधनछेदन होजातेहैं । यह मंत्र पढकर हाथकी अंगुलीके प्रहारमात्रसे द्वार मुक्त होताहै 'दं हं ॐ आए आए चि चिठ चिठ हानं वज्र नान्दिका कालिका' इसमंत्रसे श्वेत सरसों श्वेत उदम्बरके फूल तीनवार पढ़कर पहले द्वारपर फेके तो सब द्वार भग्न होजातेहैं ॥ १३० का यंत्रलिखे.

इति निगडभंजन ।

बिभीतकन्तुशाखोटमूलपत्रेणसंयुतम् ॥
स्थापयेद्यद्गृहद्वारेतस्यवैकलहोभवेत् ॥ ३५ ॥

बहेड़ा सिघोरा और इसकी जड पत्तेसहित जिसके घरके द्वारमें स्थापित करै उसके यहां सदा क्लेश होताहै ॥ ३५ ॥

मार्ज्जारमूषिकद्विजदिगम्बराणांलोमभिर्धूपात् ॥
आर्द्रायांयत्रगृहेतत्रवैजायतेवैरम् ॥ ३६ ॥

मार्जार चूहा द्विज दिगम्बर इनके लोमकी धूपदेने आर्द्रानक्षत्रमें ऐसा करनेसे वैर होजाताहै ॥ ३६ ॥

अथगृहक्लेशनिवारणम् ।

तक्रपिष्टेनतालेनलेपयेत्पुत्रिकाकृतिम् ॥
तामाघ्रायगृहाद्यातिमक्षिकानात्रसंशयः ॥ ३७ ॥

हरतालको छाछकेसाथ पीसकर एक कल्पित पुतलीके शरीरमें लेपकर रक्खै उसको सूंघनेसे मक्खी नहीं आती इसमें संदेहनहीं ३७

श्वेतार्कदुग्धकुल्माषंतिलचूर्णसमन्वितम् ॥
अर्कपत्रेषुविन्यस्तंमूषकान्तकरंगृहे ॥ ३८ ॥

सफेद आकका दूध कुलमाष(कुलथी) उर्द वा काँजी तिल इनका चूर्ण कर आकके पत्तेपर रखनेसे मूषे नष्ट होजाते हैं ॥ ३८ ॥

तालकंछागविण्मूत्रंपलांडुंसहपेषयेत् ॥
आलिप्यमूषिकंतेनजीवितंचविसर्जयेत् ॥ ३९ ॥

हरताल छागकी विष्ठा और मूत्र इसको प्याजके साथ पीसे उससे मूषिकको आलेपन करके जीताहुआही छोड़दे ॥ ३९ ॥

तंदृष्ट्वाचगृहंत्यक्त्वापलायन्तेहिकौतुकम् ॥
मार्जारस्यमलंतालंपिष्ट्वामूषिकमालिपेत् ॥ ४० ॥

उसको देखकर घरसे और चूहे कौतुकपूर्वक पलायन करजातेहैं मार्जारका मल हरताल यह पीसकर मूषकपर लपेटै ॥ ४० ॥

तमाघ्रायगृहंत्यक्त्वासद्योनिर्यातिमूषिकाः ॥
गंधकंहरितालंचब्राह्मीत्रिकटुसंयुतम् ॥ ४१ ॥

उसको सूंघकर घरछोड चूहे अन्यत्र चलेजातेहैं, गंधक हरिताल ब्राह्मी त्रिकुटा ॥ ४१ ॥

छागलीमूत्रतःपिष्ट्वापूर्ववन्मूषिकंलिपेत् ॥
मघायांश्वभ्रकंक्षेत्रेस्थापयेन्मधुकोद्भवम् ॥ ४२ ॥

छागलीके मूत्रसे यह औषधी पीसकर मूषकपर लपेटे जो चूहे भाग जातेहैं मघानक्षत्रमें श्वेत आककी जड़ मुलैठीके साथ शुभ-क्षेत्रमें स्थापनकरे ॥ ४२ ॥

मक्षिकामूषकानांचजायतेतुंडबंधनम् ॥
मशकाकर्षकोदीपःसावरीगुडतैलजः ॥ ४३ ॥

तो मूषक और मधुमक्खी की तुंड बंधनमें होजातीहै, गुड तेल सावरी पढ़ाहुआ हो उसका दीपक मशक निवारण करताहै ॥४३॥

"पूर्वेब्रह्मामेबद्धःपश्चिमेविष्णुमेंबद्धउत्तरे
रुद्रोमेबद्धदक्षिणेमयोमेबद्धः पातालेवासु
कीमेबद्धःफणिसहस्रेबद्धः ॥हुंअंगुष्ठाय नमः" ॥
करसंपुटंकृत्वातालत्रयंदद्यात् ॥
मूषिकमशकनिवारणम्भवति ॥ ४४ ॥

'पूर्वे ब्रह्मा मेबद्धः पश्चिमे विष्णु मेबद्धः उत्तरे रुद्र दक्षिणे यमबद्धः पाताले वासुकी मेबद्धः फणीसहस्रे बद्धं ॥हुं अंगुष्ठायनमः' इसमंत्रसे कर संपुटकर तीन तालदे तो मच्छरोंका निवारण होता है ॥ ४४ ॥

रोहिषतृणपुष्पन्तुवर्तिमध्येनिवेशयेत् ॥
तद्दीपदर्शनादेवाक्षिप्रंनश्यन्तिमत्कुणाः ॥ ४५ ॥

बहेड़ेका तृण और फूल बत्तीके बीचमें रक्खे उसके द्वारा दीपक जलावै तौ उस दीपकके दर्शनमात्रसे तत्काल खटमल नष्ट होजातेहैं ॥ ४५ ॥

अर्कतूलमयींवर्तिंभावयेत्तावकेनच ॥
दीपंतत्कटुतैलेनानिश्शेषायांतिमत्कुणाः ॥ ४६ ॥

---

१ कहीं "सबमेके स्थानमें" यह पाठहै ।

आकके तूलकी बत्तीको कडवे तेलसे संयुक्त कर दीपकमें जलावै तो सब प्रकार खटमल नष्ट हो जाते हैं. जहां "भावयेद्यावकेनच" पाठ है वहां महावरकी भावना भी दे ॥ ४६ ॥

अर्ज्जुनस्यफलंपुष्पंलाक्षाश्रीवासगुग्गुलम् ॥
श्वेतापराजितामूलम्भल्लातकविडंगकम् ॥ ४७ ॥

अर्जुनवृक्षके फल और पुष्प लाख श्वेतचंदन गूगल श्वेत अपराजिताकी जड भिलावा वायविडंग ॥ ४७ ॥

धूपंसर्जरसोपेतंप्रदेयंगृहमध्यतः ॥
सर्पाश्चमत्कुणामूषागंधाद्यांतिदिशोदश ॥ ४८ ॥

सर्जरस (राल) धूप इनको चूर्ण कर यह धूप घरमें देनेसे इसकी गंधसे सर्प चूहे खटमल सब नष्ट होजाते हैं ॥ ४८ ॥

गुडश्रीवासभल्लातविडंगंत्रिफलायुतम् ॥
लाक्षारसोर्कपुष्पंचधूपोवृश्चिकसर्पहृत् ॥ ४९ ॥

गुड श्वेतचन्दन वा चावल भिलावा वायविडंग त्रिफला लाखकारस आकका फूल इनकी धूप देनेसे घरमें सर्प और बिच्छू नहीं रहता है ॥ ४९ ॥

मुस्तासिद्धार्थभल्लातकपिकच्छूफलंगुडम् ॥
चूर्णभानुफलोपेतंदहेत्सर्जरसैःसमम् ॥ ५० ॥

मोथा सरसों भिलावा करंजकोछके फल गुड इनका चूर्णकर आकके फलसे संयुक्तकरै और उसके साथ रालको भस्मकरै ॥५०॥

मत्कुणामशकास्सर्पामूषिकाविषकीटकाः ॥
पलायन्तेगृहंत्यत्कायथायुद्धेषुकातराः ॥ ५१ ॥

तौ खटमल मच्छर सर्प मूषक विषके कीट वे सब युद्धमें कातर हुए मनुष्यके समान घरको छोडकर भागजाते हैं ॥ ५१ ॥

सर्ज्जरसःशक्रमेदोऽर्जुनमूलमरुबकंकेतकनखबद्धः ॥
एतैर्धूपोरचितःकीटभुजगमशकमाक्षिकादिहरः ॥५२॥
राल कुडा मेदा अर्जुनकी जड मरुआ केतकी मूल नखी इनकी धूप देनेसे कीट सर्प मशक मच्छर शहदकी मखी भागजाती है जहां " कल्कमेदः " पाठ है वहां मास रोहिणी अर्थ है ॥ ५२ ॥

राजवृक्षफलंबद्धंखट्वायांमत्कुणापहम् ॥
लाक्षासर्ज्जरसोशीरंसर्षपःपत्रकंपरम् ॥ ५३ ॥
खाटमें कर्णीकार वा अमलतासका फल बांधनेसे खटमलने रह-नहीं पाते.लाख,राल,खश,सरसों यह सब (दुःख) दूर करतेहै।५३।

सोमराजस्यवृक्षस्यपल्लवाग्रेणवर्तिकाम् ॥
कृत्वादीपंप्रकुर्वीतमत्कुणश्चाविनश्यति ॥ ५४ ॥
सोमराज वृक्षके पत्तेके अग्रभाग द्वारावती बनाकर उसका दीपक जलानेसे खटमलोंका नाश होजाता है ॥ ५४ ॥

भल्लातकविडंगानिविश्वकंपुष्करंतथा ॥
जम्बुलोमशकंहंतिधूपाद्वागृहमध्यतः ॥ ५५ ॥
इति गृहक्लेशनिवारणम्।
बहेडा वायविडंग सोंठ पुष्करमूल और जम्बू इनकी धूप देनेसे मशक दूर होते हैं ॥ ५५ ॥

इति गृहक्लेशनिवारण।

अथ क्षेत्रोपद्रवनाशनम्।

अथक्षेत्रस्यशस्यानांसर्वोपद्रवनाशनम्।
वालुकाश्वेतसिद्धार्थान्प्रक्षिपेत्क्षेत्रमध्यतः ॥५६ ॥
अब खेतीके सम्पूर्ण उपद्रव नाश करने वाला विधान कहते हैं। वालुका श्वेतसरसों यह खेतके बीचमें डालदे ॥ ५६ ॥

शलभाःसर्पकीटाश्ववराहामृगमूषिकाः ॥
मशकास्तत्रनोयांतिमंत्रविद्याप्रभावतः ॥ ५७ ॥

तौ शलभ सर्प कीडे वराह मृग मूषक खरगोश ये मंत्रविद्याके प्रभावसे वहां नहीं आते हैं ॥ ५७ ॥

" ॐनमःसुरेभ्यःवलजःउपरिपरिपारिमिलिस्वाहा ॥ ॐसुरेभ्यो नमः॥ नमस्कृत्यइमांविद्यांप्रयोजयेत् ॥ विद्यांप्रयोजयामीतिविद्यामेसिद्धचतुस्वाहा । अखिलजम्बूकानांमृगाणांशशकानांअन्येषांप्राणिनांशलभादीनामन्येषांप्राणिनांतुंडबंधनंकरोमीत्यत्रप्राणेकृतघ्नस्यतेनपापेनलिप्यतेयत्रमंत्रव्यातिक्रमतिस्वाहा ॥ एतन्मंत्रद्वयेनवालुकाभिःसहश्वेतसर्षपान्सप्तवाराभिमंत्र्यक्षेत्रमध्येक्षिपेत्सर्वोपद्रवोनश्यति ॥ मूषजंबूककीटानांकुरुतेतुण्डवेधनम् ॥ विद्यामंकुशनाथस्यमंत्रंवाभैरवस्यच ॥ ॐनमोनगरनाथाययहहरहरशिलि२सर्वेषांप्राणिनांतुण्डबंधनंकुरुकुरुहुंफट्स्वाहाउज्जयनीनगरीभैरवबोलेमहादेवभंडारफूलबोलेहनुमन्तसाक्षीअस्तिअस्तु "॥ ५८ ॥

'ओं नमः सुरेभ्यः वनजः जप परि पारि२ रज परि परि मिलिस्वाहा ॐ सुरेभ्योनमः' इस प्रकार देवताओंको नमस्कारकर इस विद्याका प्रयोग करै ' विद्यांप्रयोजयामीति ' इन दो मंत्रोंसे वालूके साथ श्वेत सरसोंको सातवार अभिमंत्रित कर क्षेत्रके मध्यमें डालनेसे सब उपद्रव शान्त होजाते हैं, मूषक गीदड कीटादि जीवोंकी तुंडबंधिन होजाती है । अंकुशनाथकी विद्या या भैरवका मंत्र

पढै ॐनमो नगरनाथाय यथा यह हरहर शिलशिल सर्वेषां प्राणिनां तुण्डबंधनं कुरु २ ह्रूं फट् स्वाहा उज्जयनीनगरी भैरव बोले महादेव भंडार फूल बोले हनुमन्त साक्षी ३ अस्ति अस्तु ' ॥ ५८ ॥

अनेनमंत्रेणसप्ताभिमंत्रितंचंदनंवाटिका ॥
मध्येनिःक्षिप्यपुष्पफलंसमस्तंनिरुपद्रवंभवति ॥
देवदालींचसिद्धार्थंगुटिकांकारयेद्बुधः ॥
क्षेत्रमध्येतुनिक्षिप्यसर्वपक्षिभयंहरेत् ॥ ५९ ॥

इस मंत्रसे सात वार अभिमंत्रित कर चन्दन बगीचेके मध्यमें डालने से पुष्प फल सब निरुपद्रव होते हैं, देवदाली सरसों इन दो वस्तुओंको बुद्धिमान् गुटिका करै खेतके मध्यमें डाल देनेसे सब पक्षियोंका भय दूर होता है फुलवाडी में भी यह डालनेसे सब उपद्रव शान्त होजाते हैं ॥ ५९ ॥

पूर्वाषाढाख्यऋक्षेतुवन्दाम्बिभीतवृक्षजम् ॥
शस्यमध्येक्षिपेत्तेनशस्यवृद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ ६० ॥
इतिशस्यादीनांसर्वोपद्रवनाशनम् ।

पूर्वाषाढानक्षत्रमें बहेडेका वन्दा लेकर खेतीके मध्यमें डालनेसे शस्यकी वृद्धि होती है ॥ ६० ॥

इति शस्योंके सर्वउपद्रवनाशन ।

अथगोमहिष्यादिदुग्धवर्द्धनम् ।

ॐहुंकारिणीप्रसवॐशीतलम् " अनेनसप्तवारंतृणा
दिकमभिमंत्र्यभोक्तुंदद्यात्तदाबहुलंदुग्धंप्रसवति ॥ ६१ ॥

अथ गोमहिषी आदिके दूध बढ़ानेकी विधि। 'ॐहुं कारिणी प्रसव

ॐ शीतलम्' इस मंत्रसे तृण आदि को सातवार अभिमंत्रित कर गौ आदि के खाने को दे तौ बहुत दूध गौ भैंस आदि देवेंगी, ॥६१॥

इति गोमहिषीआदिदुग्धवर्द्धन।

श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने भाषाटीकायां अरिष्टनाशादिशस्योपद्रवनाशनं गोमहिष्यादिदुग्धवर्धनं नाम नवमोपदेशः ॥ ९ ॥

अथोच्चाटनम् ।

मंगलवारेरात्रौश्मशानागारंकृष्णवस्त्रेणकृत्वारक्तसूत्रेणसंवेष्ट्यस्यगृहेपरिक्षिपेत्सप्ताहाभ्यन्तरेतस्योच्चाटनंभवति॥पंचांगुलंचित्रकस्यकीलंग्राह्यंपुनर्वसौ ॥ सप्ताभिमंत्रितंगेहेखनेदुच्चाटनम्भवेत्॥"ॐलोहितमुखे स्वाहा"॥अस्यअष्टोत्तरसहस्रजपेनपुरश्चरणम् ॥ भरण्यामंगुलैकन्तुउलूकस्यास्थिकीलकम् ॥ सप्ताभिमंत्रितंयस्यनिखनेदुच्चाटनंभवेत् ॥ "ॐदहदह हलहल स्वाहा"॥काकोलूकस्यपक्षांस्तुहुत्वाह्यष्टोत्तरंशतम्॥ यन्नाम्नामंत्रयोगेनसमस्तोच्चाटनंभवेत् ॥ "ॐनमो भगवतेरुद्रायदंष्ट्राकरालायअमुकंसपुत्रबांधवैः सह हन २ दह २ पच२शीघ्रंउच्चाटय२हुंफट्स्वाहाठः ठः" लेपयेत्काकपित्तेनकीलमंगुलसंभवम्॥निखनेद्यस्यभवनेतस्यचोच्चाटनंभवेत्॥"ॐह्रींदंडिन् २ महादण्डिन्नमोस्तुतेठःठः"नरास्थिकीलकंद्वारेनिखन्याच्चतुरंगुलम् ॥ मंत्रयुक्तमरेर्द्वारेसत्यमुच्चाटनम्भवेत् ॥ १ ॥

अथ उच्चाटनां, मंगलके दिन रातको श्मशानसे काले वस्त्रमें अंगार लावै लालसूतमें लपेट जिसके घरमें डालै सात दिनमें उसका

उच्चाटन हो पुनर्वसुनक्षत्रमें चित्रक (अण्ड) की पांच अंगुलकी कील ग्रहण करै सात वार मंत्र पढ़कर घरमें डालदे उच्चाटन होजायगा । 'ॐलोहित मुखेस्वाहा' १००८ जप पुरश्चरणकरै॥भरणीनक्षत्रमें एक अंगुल उल्लूकी अस्थि लेकर सात वार मंत्र पढ़कर जिसके यहां गाड़दे उसका उच्चाटन होजाता है यह मंत्र पढ़े 'ॐदह दह हन २' कौए और उल्लूके एकसौ आठ पंखलेकर जिसके नामसे मंत्र पढ हवनकरै वह अवश्य उच्चाटन होगा. मंत्र यह है 'ॐनमो भगवते रुद्राय दंष्ट्राकरालाय अमुकं सपुत्रबांधवैः सह हन २ दह २ पच २ शीघ्रं उच्चाटय २ ऱ्हूं फट् स्वाहा ठःठः' कौएके पित्तसे एक अंगुल कीलको लिप्तकरै और उसे लिखकर जिसके द्वारपर डालदे उसका उच्चाटन होजाता है ॥ 'ॐ ह्रीं दंडिन् २ महादंडिन् नमोस्तुते ठःठः' मनुष्यकीअस्थि (हड्डी) की चार अंगुलकी मंत्रपढ़कर जिस शत्रुके द्वारपर गाड़दे उसका अवश्य उच्चाटन होजायगा ॥ १ ॥

"ॐनमोभगवतेरुद्रायअमुकंगृह्ण२पच२त्रासय२त्रोटय२ नाशय २ पशुपतिराज्ञापयतिठःठः" ॥ मृतकस्यपुरुषस्यनिर्माल्यंचैलमेवच ॥ प्रेतालयात् समागृह्यय स्यगेहेनिधापयेत् ॥ २ ॥

अष्टम्यांचचतुर्दश्यांतस्यैवोच्चाटनम्भवेत् ॥एषयोगो मयाख्यातोविनामंत्रेणसिद्ध्यति॥उद्धृतेनशान्तिः ॥३॥

मंत्र यह है'ॐनमो भगवते रुद्राय अमुकं गृह्ण२पच२त्रासय२त्रोटय२ नाशय२पशुपतिराज्ञापयति ठःठः'॥मृतक पुरुषका निर्माल्य और चैल-वस्त्र मरघटसे ग्रहणकरके घरमें दाबदे डालदे अष्टमी और चौदस के दिन यह कृत्य करनेसे उसका उच्चाटन होजाताहै, यह योग-विनाहीं मंत्रके सिद्ध होताहै उखाड़नेसे शांति होती है. इन अंकोंके यन्त्र लिखे १२१ । १२३ । १२४ । १२७ । १२९ । १३१ । १३२ १३३ । १३४ । १३५ । १३६ । १३७ । १३९ ॥ २ ॥ ३ ॥

श्वेतालांगलिकामूलंस्थापयेद्यस्यवेश्मनि ॥
निखनेत्तुभवेत्तस्यसद्यउच्चाटनंध्रुवम् ॥ ४ ॥

श्वेतकलहारिकी जड़को घरमें डालदे, वा गाड़दे उसके सब कुटुम्बमें शीघ्रही उच्चाटन होता है ॥ ४ ॥

सिद्धार्थंशिवनिर्माल्यंयद्गेहेनिखनेद्बुधः ॥
उच्चाटनंभवेत्तस्यह्युद्धृतेतुपुनःसुखी ॥
संगृह्यवृक्षात्काकस्यनिलयंप्रदहेच्चतम् ॥ ५ ॥

सरसों शिवका निर्माल्य जिसके घरमें गाडदे उसका उच्चाटन होजाता है उखाड़नेसे सुखी हो वृक्षपरसे कौएका घोसला लेकर उसे जलादे ॥ ५ ॥

चिताग्नौभस्मतःशत्रोर्दत्तंशिरसिसुन्दरी ॥
तमुच्चाटयतेदेविशृणुयोगमनुत्तमम् ॥
भवेत्तस्यउद्धृतेचपुनस्सुखी ॥ ६ ॥

उस चिताकी भस्म शत्रुके शिरपर डालनेसे अवश्य उच्चाटन होजाताहै, हे देवी ! यह उत्तम योग है फिर उसके वहांसे अलग करनेसे सुखी होताहै ॥ ६ ॥

ख्यातमौदुम्बरंकीलंमंत्रितंचतुरंगुलं ॥
तंयस्यनिखनेद्गेहेखनेदुच्चाटनंभवेत् ॥ ७ ॥

मन्त्रस्तु ॐ शिनी २ स्वाहा । उदुंबरकी चार अंगुल कील इस मंत्रको पढ़कर जिस के घरमें गाडदे उसका उच्चाटन होताहै ॥७॥

अथ उच्चाटनप्रकारान्तरमाह ।

उच्चाटनविधिंवक्ष्येयथोक्तंश्रीमतोत्तरे ॥
निम्बपत्रेलिखेन्नाममाहिषाश्वपुरीषकैः ॥
काकपक्षलेखन्याचलेखनीयमनन्तरम् ॥ ८ ॥

मंत्रस्तु-

ॐकाकतुण्डधवलामुखिदेवि अमुकमुच्चाटय
अमुकमुच्चाटय हुं फट्स्वाहा ।

एतंमन्त्रंमहादेवी लिखित्वा पूर्ववस्तुभिः
निम्बवृक्षस्थितंसर्वंकाकालयंखनेदथ ॥ ९ ॥
श्मशानवह्निमानीयधत्तूरकाष्ठदीपितम् ॥
वह्निंकृत्वामहातैलैरथवाकटुवस्तुभिः ॥ १० ॥
पूर्वोक्तमनुनातस्यहोमयेद्विधिपूर्वकम् ॥
सम्पूज्यधवलामुखींपंचोपचारयोगतः ॥ ११ ॥
तस्माद्भस्मप्रक्षिपेच्चशत्रोश्चमन्दिरोपरि ॥
उच्चाटनंभवेत्तस्यसपुत्रपशुबान्धवैः ॥ १२ ॥
धूम्रवर्णांमहादेवींत्रिनेत्रांशशिशेखराम् ॥
जटाजूटसमायुक्तांव्याघ्रचर्मपरिच्छदाम् ॥ १३ ॥
कृशाङ्गीमस्थिमालाञ्चकर्तृकाञ्चतथाम्बुजाम् ॥
कोटराक्षींभीमदंष्ट्रांपातालसदृशोदरीम् ॥ १४ ॥
स्वान्तेध्यात्वापूजयेद्वैयोगध्यानपरोजनः ॥
एषयोगविधिःख्यातोवीरतन्त्रेमहेश्वरि ॥ १५ ॥

अब दूसरी उच्चाटन विधिको कहते हैं । भैंसे और घोडेकी लीदसे कौएके पंखकी कलमसे नीमके पत्तेपर शत्रुका नाम लिखै और यह मंत्र पढकर पूर्व वस्तुओंसे लिखकर नीमके पेडपर स्थित-कौएका घोसला लाकर धतूरेकी लकडियोंमें उसको श्मशानकी अग्निसे भस्मकरै महातेल अथवा कटु वस्तुओंसें ऊपर लिखे मंत्र-से विधिपूर्वक होम करै, धवलामुखी देवीका पंचोपचार योगसे

पूजन करै, उसमेंसे भस्म लेकर शत्रुके मन्दिर पर डाले तो पुत्र पशु बांधव सहित उसका उच्चाटन होगा, देवीका ध्यान यह है कि धूम्रवर्णा महादेवी तीन नेत्र मस्तकपर चन्द्रमा, जटाजूटसे युक्त, व्याघ्रचर्म धारण किये, कृशशरीर, अस्थिमाला पहरे कतरनी कमल-लिये, खखोडलकी समान नेत्रवाली भयंकर डाढैं पातलवत् गंभीर उदर है ऐसा ध्यानकर पूजै, हे महेश्वरि यह योगवीर तंत्रमें लिखा है ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

इत्युच्चाटनम् ।

अथविद्वेषणम् ।

एकहस्तेकाकपक्षमुलूकस्यतथापरे ॥
मंत्रयित्वामिलित्वाग्रंकृष्णसूत्रेणबंधयेत् ॥ १६ ॥
अञ्जलिश्चजलेचैवतर्पयेद्धस्तपक्षकैः ॥
एवंसप्तदिनंकुर्यादष्टोत्तरशतंजपेत् ॥
विद्वेषोजायतेतत्रमहाकौतुकमद्भुतम् ॥ १७ ॥
मार्जारमूषिकाविष्ठासाध्यपुत्तलिकाकृता ॥
नीलवस्त्रेणसंवेष्टयमंत्रयित्वाशतेनच ॥
विद्वेषोजायतेतत्रभ्रातरौतातपुत्रकौ ॥ १८ ॥
मन्त्रस्तु ॥ "ॐनमोमहाभैरवायश्मशानवासि
न्यैअमुकामुकयोर्विद्वेषंकुरुकुरुस्फूंफट्" ॥
एकहस्तेकाकपक्षमुलूकस्यतथापरे ॥
दर्भेणधारयेद्यत्नात्त्रिसप्ताहंजलाञ्जलिम् ॥ १९ ॥

अथ विद्वेषण । एक हाथमें काकपक्ष दूसरेमें उल्लूका पंखले मंत्रसे इनको मिलाय काले सूत्रसे बांधे और जलसे पक्षको सातदिन तर्पण कर १०८ वारजपै विद्वेषण होगा--मिलाव और मूषकी विष्ठासे साध्य

की पुतली बनावै नीले वस्त्रसे लपेट सौवार मंत्र पढै तो भ्राता पिता पुत्रमें विद्वेषहो 'ॐनमो महाभैरवाय श्मशानवासिन्यै अमुकामुकयोर्विद्वेषं कुरु २ क्रूंफट्' २ एकहाथमें काक दूसरेमें उल्लूका पंखले कुशके साथ तीनसप्ताहतक जलकी अंजली धारणकरे॥१६॥१७॥१८।१९॥

रक्ताश्वमारपुष्पैकंमंत्रयुक्तंजलांजलिम् ॥
नित्यंनित्यंप्रदातव्यमष्टोत्तरसहस्रकम् ॥
परस्परंभवेद्द्वेषःसिद्धयोगउदाहृतः ॥ २० ॥

लालकनेरका फूल एक लेकर मंत्र पढकर हाथमें जलकी अंजली धारण करै और एक सहस्र आठ यह नित्य अंजलीदे तौ परस्पर द्वेष होजाताहै, यह सिद्धयोग कहा है ॥ २० ॥

"ॐनमःकटीटनीप्रमोटनीकीगौरीगौरीअमुकस्यामुकेनसहकाकोलूकादिवत्कुरुकुरुस्वाहा" ॥

'ओंनमः कटीटनी प्रमोटनीकी गौरी अमुकस्यामुकेन सह काकोलूकादिवत्कुरुकुरु स्वाहा' । यह जलांजलिका मंत्र है ॥ १३६ ॥ १३७ । १३८ । १३९ का यंत्र लिखै ॥

अथव्याधिकरणम् ।

"ॐअमुकं हन २ स्वाहा" ॥ अनेनमंत्रेण ॥
कटुतैलाक्तंत्रिकटुं जुहुयात्तदाशत्रुर्बधिरोभवति ॥
भल्लातकरसैर्गुंजाकुर्य्यादतिसुचूर्णिताम् ॥
क्षिपेद्गात्रेभवेत्कुष्ठीसिताक्षीरंपिबेत्सुखी ॥ २१ ॥

अथ व्याधिकरण ॥ 'ॐअमुकं हन हन स्वाहा, इस मंत्रसे कडुवेतलके साथ त्रिकुटेका हवन करनेसे शत्रु बहरा, होजाता है भिलावेका रस और गुंजा इनका बहुत चूर्ण करके जिसके शरीरपर फेंके वह कुष्ठी होताहै, फिर मिश्री और दूध पीनेसे सुखी होताहै ॥ २१ ॥

वानरीफलरोमाणिविषंभल्लातचूर्णकम् ॥
गुंजायुतंक्षिपेद्गात्रेस्याल्लूतावेदनान्विता ॥ २२ ॥

कौंचकी फलीके रोम विष भिलावेका चूर्ण उसमें चौंटली मिला कर जिसके शरीर पर डालदे उसके महापीडा युक्त मकरीके फैलनेकी समान वेदना होताहै ॥ २२ ॥

उशीरश्चन्दनंचैवप्रियंगुरक्तचन्दनम् ॥
तगरं पेषयेत्तोयैर्लेपाल्लूतादिनाशनम् ॥ २३ ॥

खस चंदन और प्रियंगु; लालचन्दन और तगर यह जलसे पीसकर लगावै तौ लुताकी वेदना शान्त होजाय ॥ २३ ॥

अथज्वरानयनम् ॥ "ॐचामुण्डे हन हन दह २
पच पच मथ २ चल्ह २ अमुकं गृह्ण २
स्वाहा" ॥ अनेनकटुतैलेनाक्तनिम्बपत्राणि
यस्यनाम्नाहूयन्तेतस्यशीघ्रंज्वरोभवति ॥
चित्रकपुष्पसहस्रंहुनेच्चातुर्थिकज्वरोभवति ॥
लवणमष्टाधिकसहस्रंहुनेद्दाहज्वरोभवति ॥ २४ ॥

अथ ज्वरानयन 'चामुंडे हन २ दह दह पच पच मथ२ चल्ह २ अमुकं गृह्ण गृह्ण स्वाहा' यह मंत्र पढ़कर कडुवेतेल के साथ नीमके पत्तोंसे जिसका नाम लेकर हवन कियाजाय उसको तत्काल ज्वर होता है; चीतेके फूल एक सहस्र शत्रुका नाम लेकर हवन करनेसे चातुर्थक ज्वर होताहै; एक सहस्र आठवार लवण हवन करनेसे दाहज्वर होता है; ॥ २४ ॥

इति ज्वरानयन ।

अथाक्षिरोगजननम् ।

करवीरंपुष्पमष्टसहस्रमुक्तमंत्रंहुनेत्अक्षिरोगंभवति ।
स्नुक्पयोलेपनेनैवपानेनश्वेतकुष्ठजित् ॥[1]
ताम्बूलेइन्द्रगोपश्चदत्वासौश्वेतकुष्ठकृत् ॥
पीत्वायत्नेयथापूर्वम्भक्षेद्वासोमराजिकाम् ॥ २५ ॥
"ॐनमोभगवतेरुद्रायउड्डामरेश्वरायअमुकंरोगेणगृ
ह्ण २ पच २ ताडय २ छेदय २ हूंफट्स्वाहा ठःठः"
उक्तयोगानामयंमंत्रः ॥
ऋक्षेमृगशिरेक्षिपेतिन्त्विकाष्ठस्यकीलकम् ॥
पंचांगुलंरिपोर्गेहेवह्निमांद्यंप्रजायते ॥ २६ ॥

नेत्ररोग उत्पन्न करना।आठ सहस्र कनेरके फूल उक्तमंत्रसे शत्रुका नामले हवन करनेसे नेत्ररोग होता है । थूहरके दूधके लेप वा पानसे श्वेत कुष्ठ दूर होता है अथवा ताम्बूलमें वीरबहूटी खाय तौ कुष्ठहो, फिर सोमराजीके पीनेसे श्वेतकुष्ठ दूर होता है मंत्र यहहै ' ॐनमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय अमुकं रोगेण गृह्ण २ पच २ ताड़य २ छेदय २ हूं फट् ठःठःउपरोक्त योगका यह मंत्र, है, मृगशिर नक्षत्रमें पांच अंगुल तेंदूवृक्षके काठकी कील शत्रुके घरमें डालनेसे अग्नि मन्द होती है ॥ २५ ॥ २६ ॥

सामुद्रंलवणंवह्निःकेवलंवासमुद्रजम् ॥
बन्धकयाउदरंन्यस्तंसर्वमंतःपुटेपचेत् ॥ २७ ॥

समुद्रलवण चीता अथवा केवल सेंधानोन बन्धकीमें रखकर सब अन्तरपुटसे जलादे ॥ २७ ॥

करवीरार्द्रकाष्ठेनतमादायसुचूर्णयेत् ॥
खानेपानेपयेद्यस्यतस्यचक्षुःप्रणश्यति ॥ २८ ॥

---

१ "सूकरस्य पयस्तैललेपेन"वा पाठः । अर्थात् सूकरीका दूध और तेल यह एकत्रकर शरीरमें लगाने और पीनेसे श्वेत कुष्ठजाताहै ।

कनेरके गीलेकाष्ठद्वारा उसको लेकर चूर्णकरे जिसके खान पानमें डालदे उसके नेत्र नाश होजाते हैं ॥ २८ ॥

उलूकमस्तकंग्राह्यंलवणेनप्रपूरयेत् ॥
सप्ताहंमृत्पात्रस्थमक्षकाष्ठेनचालयेत् ॥ २९ ॥

उल्लूकामस्तक लेकर लवणसे पूर्ण करे सातदिनतक मट्टीके पात्रमें रखकर बहेड़ेकी मालासे जपकरे ॥ २९ ॥

दृष्टिंस्तंभयितुंतस्यमरिचाक्षफलंवचा ॥
"ॐचामुण्डे हन२दह दह पच२अमुकं गृह्ण गृह्ण स्वाहा"॥
अनेनमंत्रेणनिम्बपत्रकटुतैलसाध्यनामगृहीत्वाजुहुयात्स ज्वरेणगृह्यते ॥ अनेनलवणाहुतीरष्टसहस्रंजुहुयात्सशूले-नगृह्यते ॥ ३० ॥

दृष्टिके स्तंभ करनेको कालीमिर्च बहेड़ेका फल और वचहै, 'ॐचामुंडे हन हन दह२पच२अमुकं गृह्ण २स्वाहा' इस मंत्रसे नीमके पत्ते लेकर कड़ुवे तेलद्वारा साध्यका नाम लेकर हवन करनेसे ज्वरसे ग्रसितहोता है, इसी मंत्रसे लवणकी आहुति अष्टोत्तर सहस्र हवन करनेसे शूलसे ज्वरसे ग्रसितहोता है ॥ ३० ॥

तेनैववेत्रपत्रमष्टसहस्रंजुहुयात्सचतुर्थज्वरेणगृह्यते ॥
रक्तपुष्पचित्रकरसेनयस्यनामाभिलिख्यभूर्जे ॥
अर्कलतिकायांस्थापयेत्सदाहज्वरेणगृह्यते ॥
"ॐनमःश्रीनृसिंहायदेवायदनुगारयैनमःकृष्णाय" ३१

और बेत्रपत्र आठसहस्र हवन करनेसे चातुर्थिकज्वरसे ग्रसित होताहै; लालफूल और चीतेके रससे जिसका नाम लिख भोज-पत्रको आककी बेलपर स्थापनकर दे उसे दाहज्वर होगा ' ॐनमः श्रीनृसिंहाय देवायदनुगारयैनमः कृष्णाय ॥ १४० । १४१ । १४२ १४५ । का यंत्र लिखे ॥ ३१ ॥

अथशत्रुभ्रामणम् ।

अश्वत्थकीलमश्विन्यांयस्यगेहेदशांगुलम् ॥
स्थापयेद्दीर्घयात्रास्यात्तस्यापिनहिसंशयः ॥ ३२ ॥

अथ शत्रु भ्रामण ॥ जिसके घरमें अश्विनी मे पीपलकी कील दश अंगुलकी स्थापन करदे उसकी दीर्घ यात्राहो और द्रावित भी होगा इसमें संदेह नहीं ॥ ३२ ॥

शृगालस्यास्थिकीलकंस्थाप्यंस्याच्चतुरंगुलम् ॥
रिपोर्गेहेसोमऋक्षेदीर्घयात्राचतस्यवै ॥ ३३ ॥

गीदडकी अस्थि चार अगुंलकीस्थापन करै अर्थात् सोमदेवताके नक्षत्र मृगशिरमें शत्रु के घरमें स्थापन करनेसे दीर्घयात्रा होजायगी इसमें संदेह नहीं १४३ । १४४ का यंत्र लिखे ॥ ३३ ॥

अथउन्मत्तीकरणम् ।

तालकंधूर्तबीजञ्चघनचूर्णन्तुभक्षयेत् ॥
दत्वोन्मत्तोभवेच्छत्रुःसिताक्षीरैःपुनःसुखी ॥ ३४ ॥

अथ उन्मत्तीकरण ॥ हरताल धतूरेके बीज मोथेका चूर्ण देतेही शत्रु उन्मत्त होजाताहै फिर मिश्री और दूध पीनेसे सुखी होता है ॥ ३४ ॥

तालकंलशुनंमूर्ध्निक्षिप्तंयस्यापिशाचकृत् ॥
सुरामांससिताक्षीरभक्षणाच्चसुखावहम् ॥ ३५ ॥

हरताल और लहसन जिसके ऊपर डालाजाय वह पिशाच तुल्य होजाताहै । सुरा मांस सिता (मिश्री) दूध पान करनेसे उसी समय सुखी होताहै ॥ ३५ ॥

मध्वाज्याभ्यांस्वर्णमाक्षींपिष्ट्वातत्कृतकज्जलम् ॥
दत्तंयस्यांजनंनेत्रे उन्मत्तोसौप्रजायते ॥ ३६ ॥

मधु घृत सोनामक्खी इनको पीसकर इसका काजर कर अंजन करनेको जिसकोदे वह उन्मत्त होजाता है ॥ ३६ ॥

गोघृतंसैंधवंतुल्यंवराहस्यतुपित्तकम् ॥
अजाक्षीरेणसंयोज्यंपानेनोन्मत्तनाशनम् ॥ ३७ ॥

गौका घी सेंधा यह बराबर ले बाराहका पित्त बकरीके दूधके साथ सेवन करनेसे उन्मत्तपन नाश होजाताहै ॥ ३७ ॥

मयूरपारावतकुक्कुटानांग्राह्यंपुरीषंकनकंचतालम् ॥
तन्मूर्ध्निदत्तंकुरुतेपिशाचवन्निवर्त्ततेमुंडितमस्तकेन ॥३८॥

मोर कुक्कट (मुरगा) कबूतरकी बीट ग्रहणकर धतूरे हरतालके शिरपर डालनेसे वह प्राणी पिशाचवत् होजाता है फिर शिर मुडानेसे सुखी होता है ॥ ३८ ॥

गुडंकरंजबीजंचघनचूर्णसमंसमम् ॥
फलस्यांतेप्रदातव्यमुन्मत्तोभक्षणाद्भवेत् ॥ ३९ ॥

गुड़ करंजुएके बीज मोथेका चूर्ण यह समानभाग लेकर फलमें देतो भक्षण करतेही उन्मत्त होजाता है ॥ ३९ ॥

शर्कराशतपुष्पाज्यक्षीरपानेसुखावहम् ॥ ४० ॥

शक्कर सोंफ घृत दूध इनका पान करनेसे सुखी होताहै ॥ ४० ॥

"ॐनमः उन्मत्तकारिणिविद्येठःठः" ॥
उक्तयोगानामयमेवमंत्रः ॥ ४१ ॥

इत्युन्मत्तीकरणम् ।

'ॐनमःउन्मत्तकारिणि विद्ये ठःठः' पूर्वोक्त योगोंका यही मंत्र है १४७ का यंत्र लिखे ॥ ४१ ॥

इति उन्मत्तीकरण ।

अथ मारणम् ।

नरास्थिकीलकंपुष्येगृह्णीयाच्चतुरंगुलम् ॥
निखनेद्यस्यगेहेतुभवेत्तस्यकुलक्षयः ॥ ४२ ॥

पुष्यनक्षत्रमें मनुष्यकी अस्थिकीलक चार अंगुलकी ग्रहणकर जिसके घरमें गाडदे उसका कुलक्षय होजाताहै ॥ ४२ ॥

"ॐ हूं ह्रीं फट्स्वाहा" ॥

अश्वास्थिकीलमश्विन्यांनिखनेच्चतुरंगुलम् ॥
शत्रुगेहेनिहंत्याशुकुटुम्बम्वैरिणांकुलम् ॥ ४३ ॥

हुंहुंफट्स्वाहासप्ताभिमंत्रितंशत्रुगेहेनिखनेत्कुलक्षयंयाति

'ॐ हूं ह्रीं फट्स्वाहा, १००० जपसे सिद्धि होती है घोड़ेकी अस्थिकील चार अंगुलकी अश्विनीनक्षत्रमें ग्रहणकर शत्रुके घरमें गाडनेसे वैरीके कुटुम्ब और कुलका नाश होजाता है हुंहुं फट् स्वाहा इससे सातवार मंत्र पढकर गाडै कुलक्षयहो ॥ ४३ ॥

ॐ डं डां डिं डीं डुं डूं डें डैं डों डौं डं डः अमुकं गृह्ण २ हुंहुं ठः २ अनेननरास्थिकीलकंसहस्राभिमंत्रितंचितामध्येनिखनेत्सज्वरेणनश्यति ॥

इस मंत्रसे मनुष्य की हड्डीकीकील सहस्रवार अभिमंत्रितकर चितामें गाडनेसे ज्वरसे नष्ट होताहै ॥

वा जिसका नाम लेकर जिसके घर वा श्मशानमें गाडे उसका नाश हो ॥

ॐ णं णां णिं णीं णुं णूं णें णैं णों णौं णं णः ठः ठः अनेननरास्थिषडंगुलकीलकंसहस्राभिमंत्रितं यस्यनाम्नागृहे श्मशाने वा निखनेत्तस्यसर्वनाशोभवति ॥

इस मंत्रसे छः अंगुलनरास्थिकीलले हजारवार पढकर जिसके नामसे घर वा श्मशानमें गाडै उसका नाश हो ॥

"ॐसुरेश्वराय स्वाहा" ॥

सर्पास्थ्यंगुलमेकन्तुचाश्लेषायांरिपोर्गृहे ॥
निखनेत्सप्तधाजप्तंमारयेद्रिपुसंततिम् ॥ ४४ ॥

'ॐ सुरेश्वरायस्वाहा' आश्लेषानक्षत्रमें सांपकी हड्डी एकअंगुलकी लेकर शत्रुके घरमें गाड़नेसे शत्रुके सन्तानका नाश हो जाताहै सातवार मंत्र जपकर खननकरै ॥ ४४ ॥

"ॐसींशोषणेस्वाहा" ॥

निम्बषड्बिन्दुकौंच्राह्यौविषंत्वग्वानरीफले ॥
एतच्चूर्णंप्रदातव्यंशत्रुशय्यासनादिषु ॥ ४५ ॥

'ॐ सीं शोषणे स्वाहा' नीम षड्विन्दु विष कौंचके फल और छाल इनका चूर्ण शत्रुकी शय्या आसनादिमें प्रदान करेतो ॥ ४५ ॥

जायन्तेस्फोटकास्तीव्रादशाहान्मरणंभवेत् ॥
स्नानभूमूत्रभूमृत्स्नासर्पवक्त्रेविनिःक्षिपेत् ॥ ४६ ॥

तीव्र स्फोटक होजाते हैं; जिससे दशही दिनमें मरण होजाताहै, जिसके स्नानस्थान मूत्रस्थान की मट्टी सर्पके मुखमें डालदे ॥४६॥

वेष्टयेत्कृष्णसूत्रेणमार्गमध्येह्यधोमुखम् ॥
निखनेन्म्रियतेशत्रुस्समुत्थानेसुखीभवेत् ॥ ४७ ॥

काले सूत्रसे वेष्टित करके मार्गके मध्यमें नीचेको मुखकर डाले तो शत्रु मरने लगताहै और उखाडनेसे सुखी होताहै ॥ ४७ ॥

वामदंतंकुलीरस्यह्यधोभागस्यचाहरेत् ॥
शराग्रेफलकंकुर्य्याद्धनुश्चचित्रकेन्धनैः ॥ ४८ ॥

केंकड़ेके नीचेके भागका बायां दांत लावे, उसको बाणके आगे फलमें लगावे और सावधानीसे रक्षाकरे चित्रकका धनुष बनावै ४८

गवाशिरागुणंकृत्वाशत्रुंकुर्य्याच्चमृन्मयम् ॥
तद्वज्जातेनबाणेनम्रियतेतत्क्षणाद्रिपुः ॥ ४९ ॥

धेनुकी शिराका डोरा डाले मट्टीकी शत्रुकी मूर्ति बनावै उसपर इस बाणका प्रहार करै तो उस बाणसे प्रहार करतेही उसी समय शत्रु मरजाताहै ॥ ४९ ॥

आर्द्रायांनिम्बवन्दाकंशत्रोःशयनमन्दिरे ॥
निखनेन्म्रियतेशत्रुरुद्धृतेचपुनःसुखी ॥ ५० ॥
तथाशिरीषवन्दाकंपूर्वोक्तेनोडुनाहरेत् ॥
शत्रोर्गेहेस्थापयित्वारिपोर्नाशोभविष्यति॥ ५१ ॥

आर्द्रानक्षत्रमें नीमका वन्दा लाकर शत्रुके शयनस्थानमें गाडनेसे शत्रु मरजाताहै, उखाडनेसे सुखी होताहै इसी प्रकार शिरसका वन्दालाकर शत्रुके घरमें स्थापन करनेसे शत्रुका नाश होजाताहै ॥ ५० ॥ ५१ ॥

कृष्णवृषभरक्तेनगंगामृत्तिकयासह ॥
तिलकंभालदेशेचकृत्वासंभावयेत्तुयम् ॥ ५२ ॥
विद्धःस्यात्तत्क्षणादेवप्रोञ्छितेचशुभंभवेत् ॥
कृष्णछागाश्वपादस्यखुरस्थंरोमकंहरेत् ॥ ५३ ॥
कृष्णकुक्कुटकाकस्यग्राह्यंपक्षचतुष्टयम् ॥
सर्वंदग्ध्वातुभाण्डान्तस्तद्भस्मजलसंयुतम् ॥ ५४ ॥
ललाटेतिलकंकृत्वावामहस्तकनिष्ठया ॥
यंशिरोनम्यतेतस्यवेधोभवतिनिश्चितम् ॥ ५५ ॥

काले वृषभके रक्त और गंगाकी मृत्तिकाकातिलक माथेपर कर जिसको संभावित करै वह विद्ध होता है फिर तिलक दूर करनेसे शुभ होता है काले बकरे और घोडेके पैरोंके खुरके बाल और काले

मुरगे तथा कोएके चार पंख लेकर इन्है जलाय इसकी भस्म बरतनमें धरे पानीमे मिलाय वाम हाथकी कन अंगुलीसे माथेपर तिलक कर जिससे झुकै अवश्य उसका वेध होगा ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

ऊर्णनाभिश्चषड्बिन्दुःसमांसंकृष्णवृश्चिकम् ॥
यस्यांगेतत्क्षिपेच्चूर्णसप्ताहात्स्फोटकंम्भवेत्॥५६॥

ऊर्णनाभ षड्बिन्दुकीट और उसकी बराबर काले वृश्चिकका चूर्ण कर जिसके शरीरमें डाले सातदिनमें फोड़े होजाते हैं ॥ ५६ ॥

मयूरपुच्छंनीलाब्जंपिष्ट्वालेपैःसुखावहम् ॥
रिपुविष्ठांवृश्चिकंचखनित्वाभुविनिःक्षिपेत् ॥ ५७ ॥
आच्छाद्यप्रावरेणाथतत्पृष्ठमृत्तिकांक्षिपेत् ॥
म्रियतेमलरोधेनउद्धृतेचपुनःसुखी ॥ ५८ ॥
"ॐह्रींक्षःअमुकंक्षम्"।अनेनमंत्रेणराजिकालवणेनशिव॥
निर्माल्यानिकटुतैलेनसहस्रहोमात् शत्रोर्वधः ॥ ५९ ॥

फिर वह मोरपिच्छ नीलकमलका लेप करनेसे सुखीहोताहै ॥ वृश्चिक और शत्रुकीविष्ठा पृथ्वीमें खोदकर डालदे शत्रुका मल रुक जायगा वह मृत्युको प्राप्त होगा उखाडनेसे सुखीहोगा 'ॐ ह्रीं क्षः असुकं क्षम्' इसमंत्रसे राई नोन शिवनिर्माल्य कटु तेलके साथ सहस्र आहुती देनेसे शत्रुका वध होताहै १४६।१४८।१५० का यंत्र लिखै॥ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

इति मारण।

अथ अश्वनाशनम् ।

कृष्णजीरकचूर्णेनअंजिताश्वोनपश्यति ॥
तक्रेणक्षालयेच्चक्षुःसुस्थोभवतिघोटकः ॥ ६० ॥

काले जीरेका चूर्ण आंखमें डालनेसे घोडा अंधा होजाताहै, फिर मट्ठेसे आखें धोनेसे स्वस्थ होजाताहै ॥ ६१ ॥

घ्राणेछुछुन्दरीचूर्णंदत्तेपततिघोटकः ॥
सुस्थश्चन्दनपानेननस्यंप्राप्यनसंशयः ॥ ६१ ॥

मारी छछुंदरको सुखाय चूर्ण सुंघातेही घोडा गिरजाता है फिर चंदनकी नस्य देनेसे वा पान करनेको देनेसे स्वस्थ होजाता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ६१ ॥

अश्वास्थिकीलमश्विन्यांकुर्य्यात्सप्तांगुलंपुनः ॥
निखनेदश्वशालायांमारयत्येवघोटकान् ॥ ६२ ॥
भरण्यामुक्तमंत्रेणचितिकाष्ठस्यकीलकम् ॥
अष्टाङ्गुलन्तुनिखनेदश्वशालाविनश्यति ॥ ६३ ॥
" ॐनमोभगवतेरुद्रायॐअश्वान्हन २ स्वाहा
ॐपचपचस्वाहा " ॥

इत्यश्वनाशनम् ।

अश्विनीनक्षत्रमें घोडेकी अस्थिकी कील सात अंगुलकी बनावै वह अश्वशाला में गाडने से घोड़ा मर जाते हैं यही भरणीका फल है । चितिकाष्ठ की अष्टांगुल कीलक अश्वशालामें गाडनेसे घुडसाल नष्ट होतीहै मंत्र यह है ' ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ अश्वान् हन २ स्वाहा ॐ पच पच स्वाहा ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

इति अश्वनाशन ।

अथशस्यनाशनम् ।

पुनर्वसौचितिकाष्ठकीलकंत्र्यङ्गुलंक्षिपेत् ॥
शताभिमंत्रितंक्षेत्रेशस्यंतत्रविनश्यति ॥ ६४ ॥

पुनर्वसुनक्षत्रमें चितिके काष्ठकी कील तीन अंगुलके प्रमाणकी सौवार अभिमंत्रित कर खेतमें डालनेसे खेती नष्ट होजातीहै ॥ ६४ ॥

"ॐलोहितमुखेस्वाहा" ॥

आर्द्रायांनिःक्षिपेत्कीलंभल्लूकस्यास्थिसंभवम् ॥
क्षेत्रमध्येतदाशत्रोश्शस्यंसर्वंविनश्यति ॥ ६५ ॥

'ॐ लोहितमुखेस्वाहा' यह मंत्र है आर्द्रानक्षत्रमें भल्लुकी अस्थिकी कील शत्रुकी खेतीमें डालदे तौ सब खेती नष्ट होजातीहै

विशाखायांकालिकाष्ठकीलमष्टांगुलंक्षिपेत् ॥
कदलीवाटिकामध्येनाशयेत्कदलीफलम् ॥ ६६ ॥

विशाखानक्षत्रमें बेरीके काष्ठकी आठ अंगुल कील कदलीकी वाटिकामें डालनेसे केलेकी फली नष्ट होजातीहै ॥ ६६ ॥

इति शस्यनाशन ।

अथरजकस्यवस्त्रनाशनम् ।

पूर्वाफाल्गुनिनक्षत्रेजातिकाष्ठस्यकीलकम् ॥
अष्टांगुलप्रमाणंतुनिखनेद्रजकगृहे ॥
शताभिमंत्रितंतेनतस्यवस्त्राणिनाशयेत् ॥ ६७ ॥

"ॐकुम्भंस्वाहा" ॥

इति रजकस्यवस्त्रनाशनम् ।

धोबीके वस्त्र नष्ट करना । पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रमें जातीफलकाठकी कील आठ अंगुल प्रमाणकी सौ वार अभिमंत्रितकर धोबीके घरमें गाडनेसे रजकके वस्त्र नष्ट होजातेहैं 'ॐकुंभंस्वाहा' यह मंत्र साधे।६७।

इतिरजकवस्त्रनाशन ।

अथ धीवरस्यमत्स्यनाशनम् ।

संग्राह्यंपूर्वफाल्गुन्याम्बदरीकाष्ठकीलकम् ॥
अष्टाङ्गुलंचनिखनेन्नाशयेद्धीवरेगृहे ॥ ६८ ॥
"ॐजलेस्वाहा ॥ ॐमत्स्यिकास्वाहा" ॥
मंत्रद्वयस्यतुल्यंफलम् ॥
सप्तांगुलम्मघाऋक्षेभल्लातकाष्ठकीलकम् ॥
गृहीत्वादासगेहेतुदेयंमत्स्यान्विनाशयेत् ॥ ६९ ॥

पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रमें बेरीकी लकड़ी आठ अंगुलकी कील ग्रहणकर धीवरके घरमें गाडनेसे मच्छियोंका नाश होजाता है 'ॐज्वल २ स्वाहा अथवा जलेस्वाहा ॐमत्सिकास्वाहा' । अथवा मघानक्षत्रमें सात अंगुलका भिलावेका काष्ठ धीवरके घरमें गाडनेसे मच्छियों-का नाश होजाता है ॥ ६८ ॥ ६९ ॥

कृत्तिकायामर्ककाष्ठंकीलकंत्र्यंगुलंक्षिपेत् ॥
शत्रोर्वापीह्रदादौचमत्स्यस्तत्रविनश्यति ॥ ७० ॥

कृत्तिकानक्षत्रमें आककी लकड़ी तीन अंगुलकी लेकर शत्रु धीवरके बावडी वा ह्रदादिमें डालनेसे उसमेंकी मछली नष्ट हो जाती हैं ॥ ७० ॥

इति कैवर्त्तमत्स्यनाशन ।

अथ कुम्भकारस्यभाण्डनाशनम् ।

हस्तेवैचांगुलंकीलंकरवीरस्यकाष्ठजम् ॥
निखनेत्कुम्भकारस्यशालायांभाण्डनाशकृत् ॥ ७१ ॥

कुम्भकारके रतनोंका नाश करना । हस्तनक्षत्रमें तीन अंगुल कनेरकी लकड़ी लेकर कुंभारके घरमें गाड़नेसे उसके बरतन टूट जाते हैं ॥ ७१ ॥

पंचांगुलंनिम्बकीलंतद्दक्षेपूर्ववत्फलम् ॥
गोक्षुरंमेषशृंगंचबीजंवाकोकिलाक्षकम् ॥ ७२ ॥
शूकरस्यमलंवाथमूलम्वाश्वेतगुंजकम् ॥
पाकस्थानेतुभांडानांक्षिप्तंस्फोटयतेध्रुवम् ॥ ७३ ॥
तालंकरंजबीजंचटंकणेनसमन्वितम् ॥
कृत्वाभांडास्स्फुटंत्येवमुक्तानांमंत्रउच्यते ॥ ७४ ॥

अथवा पूर्वोक्त नक्षत्रमें पांच अंगुल नीमकी कील गाड़नेसे पूर्व वत् फल होताहै, गोखरू मेढासींगी तालमखाने शूकरका मल अथवा श्वेत चौंटलीकी जड़ डालनेसे अवश्य बरतन फूटजातेहैं, हरताल और करंजके बीज सुहागा यह सब वस्तु डालनेसे अवेके बरतन टूट जातेहैं ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

"ॐमदमदस्वाहा ॥ ॐगुरुहरस्वाहा" ॥
अथवा "ॐदमन्यदमन्यस्वाहा" मंत्रत्रयस्यतुल्यंफलम्

'ॐमद् मद स्वाहा ॐ गुरु हर स्वाहा' इन दोनों मंत्रोका बराबर फल है ॥

इति कुंभकारभाण्डनाशन ।

अथ तैलिकस्यतैलनाशनम् ।

मधुकस्यतुकीलन्तुचित्रायांचतुरंगुलम् ॥
निखनेत्तैलशालायांतैलंतत्रविनश्यति ॥ ७५ ॥

तेलीका तेल नाश करना । चित्रानक्षत्रमें चार अंगुल मुलैठीकी कील तेल शालाके स्थानमें डालनेसे तेल नष्ट हो जाता है ॥७५ ॥

"ॐदहदहस्वाहा " सहस्रजपः ॥
भल्लातकाष्ठंचित्रायांनिखनेत्तैलिकेगृहे ॥
अष्टांगुलंतदातत्रग्राहकोनहिगच्छति ॥ ७६ ॥

'ॐ दह दह स्वाहा' । इस मंत्रका सहस्र जप करै भिलावेकी लकड़ी चित्रानक्षत्रमें आठ अंगुलकी तेलीके घर गाड़दे तौ उसके यहां कोई ग्राहक नहीं जाता ॥ ७६ ॥

अथ गोपानांगवांक्षीरनाशनम् ।

निक्षिपेदनुराधायांजम्बूकाष्ठस्यकीलकम् ॥
अष्टांगुलंगोपगेहेगोदुग्धंचविनश्यति ॥ ७७ ॥

ग्वालियोंकी गऊका दूध नाश करना । अनुराधा नक्षत्रमें जामुन की कील आठ अंगुलकी घोसीके घरमें डालनेसे उसका दूध नष्ट हो जाता है ॥ ७७ ॥

अथ वारिजस्यपर्णनाशनम् ।

नवांगुलंपूगकाष्ठकीलकंनिक्षिपेद्गृहे ॥
तांबूलिकस्यक्षेत्रेवाऋक्षेशतभिषाह्वये ॥
तदातस्यचताम्बूलंनाशमायातिनिश्चितम् ॥ ७८ ॥

तँबोलीके पत्ते नाश करने । नौ अंगुल की सुपारीके काठकी कील शतभिषानक्षत्रमें तँबोलीके घरमें डालनेसे अवश्य ताम्बूलोंका नाश हो जाता है ॥ ७८ ॥

अथशाकनाशनम् ।

गन्धकंचूर्णकंतत्रक्षिपेज्जलयुतेनवै ॥
नश्यन्तिसर्वशाकानिशेषान्यल्पबलानिच ॥ ७९ ॥

गंधकका चूर्ण जलके साथ डालनेसे खेतमेंसे सर्व शाक नष्ट हो जाते हैं क्रमसे निस्तेज हो शाक सूख जायगा ॥ ७९ ॥

तन्तुवायस्यसूत्रनाशनम् ।

अश्विन्यांजांबिरंकाष्ठंतन्तुवायगृहेक्षिपेत् ॥
द्वादशांगुलमानन्तुसूत्रन्तत्रविनश्यति ॥ ८० ॥

अथ तंतुवायस्य सूत्रनाशनम् ॥ अश्विनीनक्षत्रमें बारह अंगुल जम्बीरीकी कील जुलाहेके घरमें डालनेसे उसके तागे नष्ट होजातेहैं.

अथ शौंडिकस्यमदिरानाशनम् ।

कृत्तिकायामर्ककाष्ठंषोडशांगुलकंक्षिपेत् ॥
शौंडिकस्यचगेहेचमदिरातत्रनश्यति ॥ ८१ ॥

कृत्तिका नक्षत्रमें आककी लकड़ी सोलह अंगुल कलालके घरमें डालनेसे उसकी मदिरा नष्ट होजाती है ॥ ८१ ॥

अथ कर्मकारस्यलोहनाशनम् ।

रोहिण्यांबदरीकाष्ठंकीलमेकादशांगुलम् ॥
कर्मकारगृहेक्षिप्तंलोहंतप्तंभवेन्नहि ॥ ८२ ॥

लुहारका लोहनाशन । रोहिणीनक्षत्रमें बेरीके काष्ठकी ग्यारह अंगुलकी कील लुहारके दुकानमें गाड़नेसे लोहा तप्त नहीं होताहै॥

इतिकर्मकार लोहनाशनम् ।

अत्र[१]पारीशसंभ्रमकायवेधछेदकज्ञानविज्ञाननाफूटै ॥
अमुकारकायंहूंकलिकाचंडीतुइमोरमाशिलपाथरपडे
अमुकारगाममारेससमारैपुत्रीमारौंतारकउलटावेधेवि
रूपाक्षंरिवानीउलटावेधेपित्रपानीजेमोरापिडेकरेघाउल
टावेधेताकताकतुजीखाफोटफोटदण्डीविरूपाक्षेरआ

---

१ दूसरी लिपिमें इस प्रकारहै ॥ अब पारीस संभ्रम कायवेध छेदका ज्ञान विज्ञान फुटै अमुकारगाय हूंकाचण्डीतो इमोरमाशिल पाथरपरै अमुकार गासे मारैससमारै मुमारै रौडांब उलटावेधे विरूपाक्ष विराली उलटावेधे पिण्डो-मानीपै । मोरे पिडेकरे घाउलटावेधे डांकतुलखाः फोड़ २ दंडी विरूपाक्षरे आज्ञा वारत्रय पढिआ प्रातकाल तीन गंडूष पानी पियै ॥

ज्ञावारत्रयंपठित्वाप्रतिप्रातः ॥ त्रिगंडूषजलंपेयंयदि
केनापिविद्धंस्यात् ॥ शरीरन्तदैवतेनकार्य्यमिति॥८३॥

इति श्रीकामरत्नेनित्यनाथविरचितेउच्चाटनादिकर्म्मकारलो
हनाशनंनामदशमोपदेशः ॥ १० ॥

मंत्र–अमु पानीरा शम्भुकाय वेष छेदक ज्ञान विज्ञाननाफूटै अमुकारकायं हूं कलिका चंडीतु इमोरमा शिल पाथरपड़े अमुकार गामै नारै ससमैर पुत्री मारौं तारक उलगैं वेधे विरूपाक्ष रिवानी उलटावेधे पित्र पानी जो मोर पिंड़े करै घा उलटा वेध ताक ताकतुजी खा फोट फोट दण्डी विरूपाक्षेर आज्ञा यह तीन वार पति प्रातःकाल पढ़ै और तीन घूंट जलपिये जो किसीसे बिद्ध हो तो शशीरका वेध छूट जाता है ॥ ८३ ॥

इति श्रीकामरत्ने नित्यनाथविरचिते पंडितज्वालाप्रसादमिश्रकृतभाषा
टीकायां उच्चाटनादिकर्मकारलोहनाशनं नाम दशमोपदेशः ॥१०॥

अथ नानाकौतुकम्।

शिखिनस्तुशिखाचूर्णभोजयेद्दिनसप्तकम् ॥
तद्विष्ठालिप्तहस्तस्यद्रव्यंशक्नोतितत्क्षणात् ॥ १ ॥

मोरको मोरकी शिखा (कलिहारी) का चूर्ण सात दिनतक भोजन करावै उसकी विष्ठासे हाथ लेपटनेसे तत्काल द्रव्य लुप्तरूप हो जाताहै ॥ १ ॥

सप्ताहंतिलतैलेनभावयेदातपेखरे ॥
अंकोलिबीजचूर्णन्तुयोज्यंपेष्यंपुनःपुनः ॥ २ ॥

सात दिनतक तिलके तेलसे ढेराके बीजोंकी चूर्णको भावना देकर धूपमें सुखावै और वारंवार सुखाय पीसे ॥ २ ॥

तत्तैलंग्राहयेद्यत्नात्तैलकारस्ययन्त्रतः ॥
अथवाकांस्यपात्रेद्धतेनकल्केनलेपयेत् ॥ ३ ॥

उसके तेलको कोल्हूमें पिलवाले अथवा कांसीके दो पात्र उसके कल्कसे लेप करै ॥ ३ ॥

उत्थाप्यस्थापयेद्धर्मेसंमुखन्तुपरस्परम् ॥
तयोरधःकांस्यपात्रेपतितंतैलमाहरेत् ॥ ४ ॥

फिर इसको उठाकर धूप में रक्खे और सामने रक्खे उसके नीचे कांसेका बर्तन रखदे, उसमें जो तेल गिरे उसे ग्रहण करले ॥ ४ ॥

इदमेवाङ्गुलीतैलंसिद्धंसर्वत्रयोजयेत् ॥
लिप्तमंगुलितैलेनमंडितंतत्क्षणाद्दिशेत् ॥ ५ ॥

यह अंगुली तेल सिद्ध और सब कार्ययोगोंमें प्रयोग करै उँगली में तेल लगाकर फेरनेसे उसी समय मंडन होताहै ॥ ५ ॥

सफलोजायतेवृक्षस्तत्क्षणान्नात्रसंशयः ॥
पद्मिनीबीजचूर्णन्तुभाव्यमंगुलितैलतः ॥ ६ ॥

वृक्षपर लगानेसे उसी समय वृक्ष सफल होजाता है इसमें संदेह नहीं. एक अंगुली तेलमें कमलगट्टे की भावना देनेसे ॥ ६ ॥

न्यस्तंजलेमहाश्चर्यस्तत्क्षणात्पद्मसंभवः ॥
यानिकानिचबीजानिजलजस्थलजानिच ॥ ७ ॥

जलमें रखनेसे उसी समय कमलकी उत्पत्ति होजातीहै, जितने जलस्थलके वृक्षोंके बीज हैं ॥ ७ ॥

अङ्गुलीतैललिप्तानितानितान्युद्भवन्तिच ॥
यत्किञ्चित्काण्डमूलोत्थंपत्रपुष्पफलादिकम् ॥ ८ ॥

एक अँगुलीमात्र तेल लगानेसे उसी समय जमजातेहैं, जो कुछ काण्डमूलसे उठे हुए पत्र पुष्प फल आदिक हैं ॥ ८ ॥

अङ्गुलीतैललिप्तन्तुतुल्यरूपंभवेद्ध्रुवम् ॥ ९ ॥

अँगुलीसे तेलमात्र लगादेनेसे मुंडितरूप तुल्यरूप निश्चय हो जाताहै ॥ ९ ॥

गुंजाफलांबुपिष्टंचलेपयेत्पादुकाद्वयम् ॥
विनाक्लेशंनरोगच्छेत्क्रोशमेकंनसंशयः ॥ १० ॥

जलमें चौंटली पीसकर उसका लेप खड़ाउओंपर करनेसे पैर धोकर उसके ऊपर मनुष्य चढ़कर एक कोश जा सकता है इसमें संदेह नहीं ॥ १० ॥

लघुदारुमयंपीठंगुंजापिष्टेनलेपयेत् ॥
शुष्कमन्तर्जलैःसार्द्धमुपविष्टंनमज्जति ॥ ११ ॥

छोटी काठकी चौकीको चौटली पीसकर लेपित करे और सुखाकर जलमें चौकीपर बैठनेसे चौकी उससे पृथक् नहीं होती है ॥ ११ ॥

गुञ्जाबीजंत्वचोन्मुक्तंचूर्णंभाव्यंनृमूत्रकैः ॥
सप्तवारंततःकाष्ठंलिप्तमङ्गुलसम्भवम् ॥ १२ ॥

चौंटलीके बीजोंकी छाल अलगकर मनुष्य के मूत्रमें चूर्ण कर सातबार काष्ठीपर लेप करनेसे अंगुलवत् होजाय ॥ १२ ॥

तैलमादायतल्लिप्तंपूर्ववत्पादुकागतिः ॥
वर्तिस्सर्ज्जरसैःपूर्णातैललिप्ताजलेस्थिता ॥ १३ ॥

तेल लेकर पूर्ववत् दोनों खड़ाउओंको लिप्त करै तो पूर्ववत् विना खूंटीके खड़ाऊँपर जासकता है और रालकी बत्तीकरके तेलसे लिप्तकरके जलमें स्थित रखनेसे ॥ १३ ॥

ज्वालितादीपवर्तिस्तुज्वलत्येवनसंशयः ॥
कटुतुंब्युत्थतैलेनपारावतचटोद्भवम् ॥ १४ ॥

वह बत्ती बराबर जली रहैगी इसमें संदेह नहीं, कडवीतुम्बीके तेलसे कबूतर और चटककी वीट ॥ १४ ॥

मलंचशिखिमूलंचपेषितंगर्धभास्थिजम् ॥
ललाटेतिलकंतेनकृत्वासंदृश्यतेपुनः ॥ १५ ॥

मूलशिखाकी जड़ गदर्भकी हड्डीके साथ पीसकर माथेपर तिलक लगानेसे ॥ १५ ॥

दशास्योनात्रसन्देहोयथालंकेश्वरोनृपः ॥
शिग्रुबीजोत्थितंतैलंपारावतपुरीषकम् ॥ १६ ॥

इसमें सन्देह नहीं वह पुरुष दश शिरके रावणके समान दीखता है। तथा सहँजनेके बीजोंका तेल और कबूतरकी बीट ॥ १६ ॥

वराहस्यवसायुक्तंशिखिमूलसमंसमम् ॥
ललाटेतिलकंतेनयःकरोतिसवैजनः ॥ १७ ॥

वाराहकी चरबी शिखिमूल यह सब समान भाग लेकर जो मनुष्य माथेपर तिलक करै ॥ १७ ॥

दृश्यतेपंचवक्रोसौयथासाक्षान्महेश्वरः ॥
रात्रौकृष्णचतुर्दश्यांमयूरास्येविनिःक्षिपेत् ॥ १८ ॥
भृंगीबीजंमदःकृष्णांकृष्णभूमौनिवापयेत् ॥
तज्जातभांर्गींसंगृह्यतयाकुर्यात्तुरज्जुकम् ॥
तद्रज्जुबद्धःपुरुषोमयूरोदृश्यतेजनैः ॥ १९ ॥

वह पांच मुखवाला साक्षात् महेश्वरके समान दीखता है, कृष्ण चतुर्दशीकी रात्रिमें मोरके मुखमें अतिविषाके बीज सोमराजी भारंगी डालकर कालीमिट्टी में बोवै जब वह उत्पन्न होजाय तब उसकी रस्सी बटकर जिस मनुष्यको उससे बांधे वह मनुष्योंको मोर दीखता है ॥ १८ ॥ १९ ॥

तद्योगेकृष्णमार्जारवक्रेवैरंडबीजकम् ॥
तज्जातैरंडबीजानामेकवक्रेणधारयेत् ॥ २० ॥

इस योगमें कृष्ण बिलावके मुखमें अंडके बीज बोवै उससे उत्पन्न हुए अंडके बीजोंको एकी करके मुखमें धारणकरै ॥ २० ॥

तंप्रपश्यंतिमार्जारंमनुष्यानात्रसंशयः ॥
शृगालश्वानमेषांश्चयदिनेवापयेत्पृथक् ॥ २१ ॥
मयूरास्येयथाभांर्गीयातिसिद्धिश्चताहशी ॥
रक्तगुंजाफलंवाप्यंस्त्रीकपालेऽथसेचयेत् ॥ २२ ॥

मनुष्य उसको बिलावकी सूरतका देखतेहैं । इसमें संदेह नहीं. गीदड कुत्ता मेढा इनके मुखमें पृथक् २ यही डालनेसे मोरके मुखमें जैसे भृंगी सिद्ध होती है वैसी सिद्धि होती है. लाल चौंटलीके फल को धोकर स्त्रीके कपालमें बोकर उसको सींचनकरै ॥ २१ ॥ २२ ॥

जातंफलंक्षिपेद्वक्त्रेस्त्रीरूपोदृश्यतेपुमान् ॥
नरादिसर्वजंतूनांग्राह्यंसद्योहतंशिरः ॥ २३ ॥

उससे जो फल उत्पन्न हो उसे मुखमें रखनेसे स्त्रीरूप दीखता है मनुष्यादि सम्पूर्ण जन्तुओंका तत्काल हतहुआ शिर ग्रहण कर ॥ २३ ॥

तच्चकृष्णचतुर्दश्यांसर्वबीजान्वितंवपेत् ॥
भृंगीधत्तूरबीजानिगुंजानीवैकसंयुतम् ॥ २४ ॥

कृष्णपक्षकी चोदसको उसमें सबप्रकारके बीज बोवे भाँगरा धतूरा एरण्ड चौंटली यह सब एकत्रकर ॥ २४ ॥

निखनेत्कृष्णभूम्यांतुबलिपूजासमन्वितम् ॥
सेचयेत्फलपर्यन्तंयावद्बीजानिचाहरेत् ॥ २५ ॥

कृष्णभूमिमें बलिपूजाके सहित उसको गाड़दे और फलपर्यन्त सींचता रहै उसीके समान बीजोंको लेकर ॥ २५ ॥

---

१ गुल्मंनिम्बफलंयुतम् पाठः ।

तत्तद्वीजेकृतेवक्रेतत्तद्रूपंभवेद्ध्रुवम् ॥
इत्येवंकौतुकंलोकेनानारूपस्यदर्शनम् ॥ २६ ॥

जैसे जैसे बीज मुखमें रखते जाय वैसा २ रूप दीखता है, इस प्रकार लोकमें रखते अनेकरूपका दर्शन होताहै ॥ २६ ॥

मुक्तबीजोभवेत्स्वस्थोनात्रकार्य्याविचारणा ॥
हरितालंशिलाचूर्णमङ्कुल्लीतैलभावितम् ॥ २७ ॥

बीजोंको त्यागनेसे स्वस्थ होजाताहै इसमें संदेह नहीं, हरिताल मनशिलका चूर्ण मालकांगनीके तेलमें भावितकर ॥ २७ ॥

तल्लिप्तवस्त्रंशिरसिस्थितंपश्यतिवह्निवत् ॥
तथैवांकोलतैलेनस्फुरत्येवनसंशयः ॥ २८ ॥

उसे वस्त्रपर लगाय शिरपर धारणकर अग्निके समान दीखताहै इसीप्रकार अंकोलके तेलसे दीखता है इसमें सन्देह नहीं ॥ २८ ॥

सिंदूरंगंधकंतालंसमम्पिष्ट्वामनःशिलाम् ॥
तल्लिप्तवस्त्रधृक्चासौरात्रौसंदृश्यतेऽग्निवत् ॥ २९ ॥

सिंदूर और गंधक हरताल मनशिलको पीसकर उसे कपड़ेमें लगाय धारणकर रातमें जाय तो अग्निके समान दीखताहै ॥२९॥

दूरेपिस्थितलोकैश्चरात्रौतुकौतुकंमहत् ॥
खद्योतभूलताचूर्णैर्ललाटेतिलकेकृते ॥ ३० ॥

इस्से दूरसे स्थित हुए पुरुषोंको रात्रिमें बड़ा कौतुक दीखता है, खद्योत और हरतालके चूर्णका माथेपर तिलक करनेसे ॥ ३० ॥

रात्रौसंदृश्यतेज्योतिस्तस्मिन्स्थानेतुकौतुकम् ॥
मुनिपुष्परसैःपुष्पैर्घृष्ट्वाश्वेतांजनंततः ॥ ३१ ॥

रात्रिमें बड़ी ज्योति और कौतुक दीखता है अगस्त्यके फूलोंके रसमें श्वेतअंजन घिसकर ॥ ३१ ॥

अंजिताक्षोनरःपश्येन्मध्याह्नेतारकामयम् ॥
वाप्यंवार्त्ताकुबीजंचनृकपालेमृदासह ॥ ३२ ॥

आंखोंमें लगानेसे मध्याह्नसमय मनुष्यको जलमें तारे दीखने लगतेहैं और बैंगनके बीज मनुष्यकी खोपड़ीमें डालकर बोनेसे ३२

तज्जातबीजमूलंवामुखेप्रक्षिप्यमानवः ॥
शतयोजनपर्य्यन्तंपश्येत्सर्वंयथान्तिकम् ॥ ३३ ॥

उससे उत्पन्न बीज वा जड़को मुखमें रखनेसे सौ योजनकी वस्तु निकट से दीखने लगती है ॥ ३३ ॥

वारिमक्षिकयासार्द्धंतज्जलंयस्यभक्षणे ॥
दीयतेनिःसरेत्तस्यह्यधोवायुस्तुकौतुकम् ॥ ३४ ॥

जलमक्षिकाके साथ जिसे भक्षण करनेको जल दिया जाय उसकी अधोवायुमें यही मक्खी कौतुकयुक्त निकलती है ॥ ३४ ॥

"ॐनमोभगवतेरुद्रायउड्डामरेश्वरायबहुरूपाय
नानारूपधरायहसहसनृत्यनृत्यतुदतुदना
नाकौतुकेन्द्रजालदर्शकायठःठःस्वाहा " ॥
अनेनसर्वयोगानामभिमंत्र्यसिद्धिः ॥
अष्टोत्तरजपेनपुरश्चरणम् ॥

इति नानाकौतुकम् ।

'ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय बहुरूपाय नानारूपाय हस हस नृत्यनृत्य तुद तुद नानाकौतुकेन्द्रजालदर्शकाय ठः ठः स्वाहा' इसमंत्रसे अभिमंत्रित करनेसे सब योगोंको जो ऊपर लिखेहैं सिद्धि होतीहै एकसौ आठ वार जपकर पुरश्चरण करै ॥

इति नानाकौतुकसिद्धि ।

---

१ 'सपश्येद्गरुडोयथा' वा इति पाठः । २ 'वज्ररूपाय' वा पाठः ।

अथ खड्गस्तम्भनम् ।

सिद्धिं "वस्तुसुमतिमोहरमाचान्द्रसुरजमोहोवरभाई मोहोवरंआंगेकोपखांडाफूटैरक्षाकरदेवीकालिका चंडीआईचांदसुरजतुजिमलेमुजिफूटैरामेरआज्ञा सिद्धि" उकवारत्रयाभिमंत्रितम् ॥
धूलिनाप्रोक्षितेगात्रेकृपाणधारारेखाभवतिनान्यतः ॥

इति खड्गस्तम्भनम् ।

इतिश्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेनानाकौतुकंनामैकादशोपदेशः ११

अथवा "वस्तु सुमति मोहोरमाचान्द्र सुरज मोहो वरभाई मोह वर आगे कोप खांडा फूटै रक्षाकर देवी कालिका चण्डी आइ चांद सुरज तुजि मले मुजि फूटैरामेर आज्ञा सिद्धि तीनवार" इस मंत्रसे अभिमंत्रित कर धूरिसे शरीरको आच्छादित करे तो कृपाण धारा रेखा हो जाती है. इसमें अन्यथा नहीं है अर्थात खड्ग बंधन हो जाता है ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पंडितज्वालाप्रसादमिश्रकृत भाषाटीकायां नानाकौतुकंनामैकादशोपदेशः ॥ ११ ॥

अथ काम्यासिद्धिः ।

पुष्यार्केतुसमागृह्यमूलंश्वेतार्कसंभवम् ॥
अंगुष्ठप्रमितातस्यप्रतिमांतुप्रपूजयेत् ॥ १ ॥
गणनाथस्वरूपांचभक्त्यारक्ताश्वमारजैः ॥
कुसुमैश्चापिगंधाद्यैर्हविष्याशीजितेन्द्रियः ॥ २ ॥

---

१ सिद्धिर्वसुमतिमोहोरमावादसुरजमोहोरमाइमोरअंगेकोपखाडाफूटइहुरक्षा करैदेवीकालिकाचण्डीआई०चंदसुरजइमइलेमुईफूटैरामेरआज्ञासिद्धहलव ॥

पूजयेन्नामसन्त्रैश्चतद्बीजानिनमोंतकैः ॥
यान्यान्प्रार्थयतेकामान्मासैकेनतुलभ्यते ॥ ३ ॥

अथ काम्यसिद्धिः। पुष्यनक्षत्रमें रविवारको श्वेत आककी जड़ ग्रहण कर उसकी एक अंगुष्ठकी समान प्रतिमाको बनाकर पूजन करै और गणनाथको भक्त्यादि उपचार तथा लाल कनेरके कुसुम गंधादिसे पूजनकर हविष्य अन्न खाय जितेन्द्रिय रहे;नाममात्र से पूजा करै और बीजादिके अन्तमें 'नमः' लगावै इस प्रकार पूजन करे तो जिस जिस वस्तुकी इच्छा करैगा वह एक मासमें पूर्ण होगी ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

प्रत्येकंकाम्यसिद्ध्यर्थंमासमेकंप्रपूजयेत् ॥ ४ ॥

प्रत्येक कामनाकी सिद्धिके निमित्त एक महीनेभरतक पूजा करै ॥ ४ ॥

गणेशबीजमाह ॥ पंचान्तकंॐअन्तरिक्षायस्वाहा ।
अनेनपूजयेत्।पंचांतकंगणेशशशिधरंबीजंगणपतेर्विंदुः ॥
ॐह्रींपूर्वदयांॐह्रींफट्स्वाहा ॥
अनेनमंत्रेणरक्ताश्वमारपुष्पाणिघृतक्षौद्रयुतानिजुहुयात् ॥
वांछितंददाति ॥
ॐह्रींश्रींमानसेसिद्धिकरिह्रींनमः ॥
अनेनमंत्रेणरक्तकुसुममेकंजपित्वानद्यांक्षिपेत् ॥
एवंलक्षंजपेत्ततोभगवतीवरदाअष्टगुणानामेकंगुणंददाति ॥
इतिकाम्यसिद्धिः ।

गणेशबीज कहते हैं-'ॐपंचान्तकं ॐअन्तरिक्षाय स्वाहा'-इससे

---

१ वाममन्त्रैरितिपाठः ।

पूजन करे पांच अक्षर नीचे लिखे यह गणपतिवीज है 'ॐ ह्रींपूर्व दयां ॐ ह्रीं फट्स्वाहा' इस मंत्रसे लाल कनेरका फूल घृत और शहदके सहित हवन करनेसे मनोवांछित फलकी प्राप्ति होती है 'ॐ ह्रीं श्रीं मानसे सिद्धिकारिह्रीं नमः' इस मंत्रसे एक लालफूल मंत्रितकर नदीमें डालदे इस प्रकार लक्ष जपकरनेसे वरदायक होता है अष्टगुणोंमें एक गुण देता है ॥

इति काम्यासिद्धिः ।

अथ वाक्सिद्धिः ।

कृत्तिकायांस्नुहीवृक्षवंदाकंधारयेत्करे ॥
वाक्यसिद्धिर्भवेत्तस्यमहाश्चर्यमिदंस्मृतम् ॥ ५ ॥

अथ वाक्सिद्धिः।कृत्तिकानक्षत्रमें सेंहुड़ (थूहर) नामके वृक्षका वन्दा हाथमें धारण करनेसे वाक्यसिद्धि होती है यह महाश्चर्य है ॥ ५ ॥

मंत्रेणग्राहयेत्स्वातीनक्षत्रेबदरीभवम् ॥
वन्दाकंतत्करेधृत्वायद्यद्वस्तुप्रार्थयतेनरैः ॥ ६ ॥

स्वातीनक्षत्रमें बेरका वन्दा ग्रहणकर उसे हाथमें धारणकर मनुष्योंसे जो जो प्रार्थना करै ॥ ६ ॥

तत्क्षणात्प्राप्यतेसर्वंमंत्रमत्रैवकथ्यते ॥ ७ ॥
ॐअन्तरिक्षायस्वाहा ॥
अनेनग्राहयेत् ॥ इतिवाक्सिद्धिः ।

वह वह सब प्राप्त कर सकताहै मंत्र यह है 'ओं अन्तरिक्षाय स्वाहा' इससे ग्रहण करै ॥ ७ ॥

इति वाक्सिद्धिः ।

अथ गुप्तधनगुप्तवेशचौरादिप्रकाशनम् ।

वन्दाशाखोटचूतस्थागोक्षुरंलवणंपदम् ॥ ७ ॥
अजाक्षीरेणसंपेष्यललाटेतिलकेकृते ॥
प्रकाशंजायतेसर्वंतच्छृणुष्वसमाहितः ॥ ८ ॥

शाखोटका वन्दा आमका वन्दा गोखरू लवण चौथाईभाग बकरीके दूधमें पीसकर माथेपर तिलक करै तो सब गुप्त प्रकाश होजाता है ॥ ७ ॥ ८ ॥

धनानियत्रवासंतियेवाचौरादिकास्तथा ॥
गुप्तवेशामहात्मानोगंधर्वायक्षिणीश्वराः ॥ ९ ॥

जहां धनादिक हों अथवा चोरादिक हों अथवा गुप्तवेशगन्धर्व यक्षिणी मनुष्य यक्षादि यावन्मात्र ॥ ९ ॥

जंतुर्द्धातुश्चवृक्षाद्यामर्त्यलोकेस्थिताध्रुवम् ॥
आश्लेषायांशनेर्वारे सायंदाडिमबीजकम् ॥ १० ॥

जो मनुष्यलोकमें स्थितहैं वे सब प्रगट होजाते हैं आश्लेषानक्षत्रमें शनिवारके दिन सायंकालमें दाडिमके बीजका रस ग्रहणकर॥ १० ॥

रसंसंगृह्यतुवरींकृष्णाष्टम्यांतुभूमिजे ॥
पद्ममूलंमंगलेहन्यंजनंकारयेत्सुधीः ॥ ११ ॥
प्रकाशंपूर्ववत्सर्वंजायतेनात्रसंशयः ॥ १२ ॥
इतिगुप्तधनगुप्तवेशचौरादिप्रकाशनम् ।

अष्टमी मंगलवारको कमलकी जड़ और शतावरीका रस ग्रहण-कर । इसे शुद्धकर अंजन बनाय लगावे तो पूर्ववत् सब प्रकाश होजाता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ११ ॥ १२ ॥

इति गुप्तधनगुप्तवेशचौरादिप्रकाशनम् ।

---

१ वंदा शाखोटवृक्षस्था गोक्षुरं लक्ष्मणापदम् वा लक्षणापदम् पाठः ।

अथधनुर्विद्या ।

इन्द्रेणयाविद्यापुराह्यर्ज्जुनंप्रतिकथिता ॥
सासप्तविंशत्यक्षराकालायुतरक्ताघोरा ॥
ॐकारशतगुणआधारेएकादशशतसहस्त्रइन्द्रआज्ञा ॥
एतन्मंत्रेणशरंधृत्वानवधापठित्वाआकर्णपूरितेधनु-
षिशरंमेलयेत् ॥ सहस्रधाभवति ॥ कलौदशधा ॥
महादेवेनइद्रंम्प्रतियाकथितासा सप्तदशाक्षरा ॥
चान्द्रधनुर्गुणरेखाकांडब्रह्मज्ञान ॥
ॐॐॐएतन्मंत्रंपठित्वापंचवारंतदाक्षिपेत्पूर्ववद्भवति ।
सर्पैःकवलितम्भेकमर्धमात्रंसमुद्धरेत् ॥
छित्वासर्पस्यमुंडंचआतपेशोषयेत्पृथक् ॥ १३ ॥
पिष्ट्वापृथग्वटीकार्यालक्ष्यलाभप्रदास्मृता ॥
लक्ष्येतुभेकातिलकंशराग्रेसर्पमुंडजम् ॥ १४ ॥
दत्वातिलकमाकर्ण्यगुणंधनुषिवेधयेत् ॥
लक्ष्यस्यतिलकंबाणोभिन्दत्येवनसंशयः ॥ १५ ॥
ॐरक्तेधनुरक्तेकाण्डरक्तेहलिजामामारोअमुकारअ
मुकंआंगआमुकटाईमारोंत्रिदशदेवगणरुद्रसाक्षीआ
मुकारमारों देवेनराखीअर्जुनकृष्णभवानीरआज्ञा ॥
एतन्मंत्रंपठित्वायस्ययदंगेमारयेत्तदंगंविध्यति ॥
किन्तुप्रथमपरीक्षायांशनिमङ्गलाह
निमृतंब्राह्मणस्यवंशमानीयधनुः ॥
कांडंसज्जीकृत्वातत्प्रमाणंगुणंदत्वातत्रतत्समयेवा

पुष्पहारमेकंदत्वामुष्टिस्थानेहंसजीवभेकंभंजयित्वा एकनारिकेलजलेनप्रक्षाल्यकाण्डत्रयेणलक्ष्यंविध्वा साधयेत्यदाद्रुतंधनुःकाण्डेनलक्ष्यंक्षत्रोरंगसमीपेवेधयेत्तदावृथानस्यात् ॥

इतिधनुर्विद्या।

अथ धनुर्विद्या । इन्द्रने जो विद्या पहले अर्जुन से कहीहै वह सत्ताईस अक्षर की है । ' ओंकालायुत रक्ताधरे ओंकारशतगुणआधारे एकादशशत सहस्र इन्द्रआज्ञा' । इसमंत्रसे धनुषपर बाणधारणकर कर्णपर्यन्त नौवार पढकर खैंचे तौ सहस्रप्रकार बाण होता है कलियुगमें दश प्रकारसे होता है और महादेवजीने जो इन्द्रसे कही है वह सत्रह अक्षर की विद्याहै (चान्द्रधनुर्गुणरेखाकाण्ड ब्रह्मज्ञान ओंओंओं) यह मंत्र पांचवार पढ़कर बाण चढावै तौ पूर्ववत् होता है सर्पसे अर्धखाये मेंडकको और सर्पके शिरको काटकर लावै उसे गरमीमें सुखाय पीस गुटिका करै यह लक्ष्यलाभकी देने वाली है लक्ष्यमें मेंडकका तिलक बाणके अग्रभागमें सर्पके मुण्डका तिलक करै फिर डोराधनुषपर चढाय निशाना लगावै अवश्य लक्ष्य के तिलकको बाण वेधैगा इसमें सन्देह नहीं ॥ १३॥

ॐरक्ते धनुरक्तेकाण्डरक्ते हालिजामा मारो असुकार अमुकं आसु कटाई मारों त्रिदशदेव गणरुद्र साक्षीअसुकार मारों देखनराखी अर्जुन कृष्ण भवानीर आज्ञा ।

यह मंत्र पढकर जिसके शरीरमें जहां मारे वहीं अंग विद्ध होगा किन्तु पहलीपरीक्षामें शनि मंगलके दिनमें मृतकहुए ब्राह्मणकी अर्थीके बांसका धनुष बनाय उसको उसके प्रमाणके डोरेमें चढा कर एक पुष्पहार प्रदान कर मुष्टिस्थानमें हंसशिशु भंजन कर नारियलके जलसे धोय तीन काण्डसे लक्ष्यवेधकर साधे तौ वृथा नहीं होगी ॥

इति धनुर्विद्या ।

अथ धनधान्याक्षयकरणम् ।

ऋक्षेचपूर्वफाल्गुन्यांदाडिमीवृक्षसंभवम् ॥
वृक्षादनीधनेदेयमक्षयंभवतिध्रुवम् ॥
वन्दाकंतुमघाऋक्षेबहुवारकवृक्षकम् ॥
धान्यागारेप्रदातव्यमक्षयंभवतिध्रुवम् ॥ १६ ॥

धनधान्य अक्षयकरण। पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रमें दाडिमके वृक्षका तथा विदारीकन्दका वन्दा रखनेसे धन अक्षय होता है मघानक्षत्रमें बहुवारके वृक्षका वन्दा लाकर धान्यमें रखनेसे अवश्य धान्य अक्षय होता है ॥ १६ ॥

शेफालिकायावन्दाकंहस्तर्क्षेचसमुद्धरेत् ॥
धान्यमध्येतुसंस्थाप्यंतद्धान्यमक्षयंभवेत् ॥ १७ ॥
भरण्यांकुशवन्दाकंगृहीत्वास्थापयेद्बुधः ॥
सम्पूर्णधनधान्यान्तःस्थःकरोत्यक्षयंध्रुवम् ॥ १८ ॥

हस्तनक्षत्रमें निर्गुण्डीवृक्षका वा हारसिंगारका वन्दा ग्रहणकर धान्यमें रक्खे तो धान्य अक्षय होता है भरणीनक्षत्रमें कुशका वन्दा लेकर स्थापन करनेसे सम्पूर्ण धनधान्य अक्षय होता है॥ १७॥

उदुंबरस्यवन्दाकंरोहिण्यांग्राहयेद्बुधः ॥
स्थापयेत्संचितार्थन्तुसदाभवतिचाक्षयम् ॥
मंत्रेणमंत्रितंकृत्वामंत्रोप्यत्रैवकथ्यते ॥
ॐनमोधनदायस्वाहा इतिधनधान्याक्षयकरणम् १९

रोहिणीनक्षत्रमें गूलरका वन्दा ग्रहणकर स्थापनकरै तो अवश्य अक्षय होता है अभिमंत्रित करनेका मंत्र इस स्थानपर कहते हैं (ॐनमो धनदाय स्वाहा) ॥ १९ ॥

इतिधनधान्याक्षयकरण ।

अथश्रुतिधरविद्यादिकरणम् ।

पथ्यापाठाकणाशुंठीसैंधवंमरिचंवचा ॥
शिग्रुप्रतिपलंचूर्णंद्वात्रिंशतिपलंघृतम् ॥ २० ॥
घृताच्चतुर्गुणंक्षीरंदत्वासर्वंविपाचयेत् ॥
घृतशेषंसमुत्तार्य्यलिहेद्वाग्बुद्धिदायकम् ॥ २१ ॥

श्रुतिधरविद्यादिकरण। हरड़ पाठा पीपल सोंठ कालीमिर्च सेंधा वच सहेंजना यह सब एक एक पल ले घीबत्तीसपल ले घीसे चौगुना दूध लेकर यह सब एक पात्रमें पकावै जब रस जल जाय घृतमात्र शेष रहजाय तब उतार ले नित्य इसके पानसे वाणी बुद्धि स्मृति बढती है " घृतशेषं पिबेन्नित्यं वाङ्मेधास्मृतिबुद्धिदम् " वा पाठः ॥ २० ॥ २१ ॥

अथ ब्राह्मीघृतम् ।

वचाब्राह्मीफलंकुष्टंसैंधवंतिलपुष्पका ॥
चूर्णयित्वाद्रवैर्भाव्यंमण्डुकीब्राह्मीसंभवैः ॥ २२ ॥
दिनमेकंततःपाच्यंकल्काच्चतुर्गुणंघृतम् ॥
घृताच्चतुर्गुणंदेयंक्षीरंब्राह्मीनियोजितम् ॥
घृतशेषंसमुत्तार्यलिहेद्वाबुद्धिदायकम् ॥ २३ ॥

ब्राह्मी वच ब्राह्मीफल कूठ सेंधा तिलपुष्प वा लालचन्दन इनको चूर्ण कर इसको मण्डूकपर्णी और ब्रह्मीके रसकी भावनादे इस प्रकार एक दिन इसको पचाकर इसके कल्कसे चौगुना घी डाले घीसे चौगुना गौका दूध और ब्राह्मी डाले जब रस जल जाय घृत मात्र रह जाय तब उतार ले चाटनेसे बुद्धि बढती है ३ मासे की मात्रा है ॥ २२ ॥ २३ ॥

द्वेहरिद्रेवचाकुष्टंपिप्पलीविश्वभेषजम् ॥
अजाजीचाजमोदाचयष्टीमधुकसंयुतम् ॥ २४ ॥

ब्रह्मीघृत दोनों हलदी वच कूठ पीपल सोंठ जीरा अजमोद मुलैठी ॥ २४ ॥

एतानिसमभागानिशुष्कचूर्णानिकारयेत् ॥
तच्चूर्णसर्पिषालेह्यंकर्षैकंवाक्यशुद्धिकृत् ॥ २५ ॥

यह सब बराबर भागले सुखाकर चूर्ण करै यह चूर्ण घृतके साथ एक कर्ष लेनेसे वाक्यसिद्धि होतीहै ॥ २५ ॥

भक्षयेन्मासमेकंतुबृहस्पतिसमोभवेत् ॥
ब्राह्मीमुण्डीवचाशुण्ठीपिप्पलीसमचूर्णकम् ॥ २६ ॥

एक महीने इसके सेवन से बृहस्पतिकी समान होताहै ब्राह्मी मुण्डी वच सोंठ पीपल इनका समान चूर्णकर ॥ २६ ॥

मधुनाभक्षयेत्कर्षंनष्टवाग्जायतेध्रुवम् ॥
वचास्थिकरवीगुन्द्राभुशलीमधुकंबला ॥
अपामार्गस्यपंचांगंक्षौद्रेणपूर्ववत्फलम् ॥ २७ ॥
अपामार्गवचाशुंठीविडङ्गंशंखपुष्पिका ॥
शतावरीगुडूचीचसमंचूर्णंहरीतकी ॥ २८ ॥

शहदके साथ एककर्ष सेवन करनेसे मनुष्य स्पष्ट बोलनेवाला हो जाता है इसमें सन्देह नहीं अथवा वचकी मींग हिगु पत्री भद्रमोथा मूशली मुलेठी खरैंटी चिरचिटेका पंचांग वच सोंठ. वाय विडंग शंखपुष्पी शतावरी गुडूची हरड़ इनका समान चूर्ण कर॥२७॥२८॥

घृतेनभक्षयेत्कर्षंनित्यंग्रन्थसहस्रधृक् ॥
अश्वगंधाजमोदाचपाठाकुष्टंकटुत्रयम् ॥ २९ ॥

घृतके साथ एककर्ष प्रतिदिन खाय तो सहस्र ग्रन्थका धारण करनेवाला होता है असगंध अजमोद पाठा कुटकी(कूट) त्रिकुटा॥२९॥

शतपुष्पीविश्वबीजंसैंधवंचसमंसमम् ॥
एतदर्द्धंवचाचैवचूर्णितंमधुसर्पिषा ॥ ३० ॥

सौंफ सोंठ सेंधा यह समान भाग लेकर चूर्ण कर इससे आधी वच ले शहद और घीमें मिलाय ॥ ३० ॥

भक्षयेत्कर्षमात्रंतुजीर्णान्तेक्षीरभोजनम् ॥
सहस्रग्रन्थधारीस्यान्मूकोपिवाक्पतिर्भवेत् ॥ ३१ ॥

एक कर्ष खाय ऊपरसे दूधका भोजन करै तो यह सहस्रग्रन्थका धारण करने वाला वाक्पति होता है ॥ ३१ ॥

लिहेज्ज्योतिष्मतीतैलंबलयावचयासह ॥
स्तोकंस्तोकंक्रमेणैवयावन्निष्कचतुष्टयम् ॥ ३२ ॥

मालकांगनीके तेलको खरैंटी और वचके सहित चाटे थोड़ा २ क्रमसे चारनिष्कतक बढावे ॥ ३२ ॥

निर्वातेमधुवासीस्याद्ब्रह्मचारीकविर्भवेत् ॥
सूर्यस्यग्रहणेवेन्दोःसमन्त्रामाहरेद्वचाम् ॥ ३३ ॥

निर्वातस्थानमें रहे शहद चाटे वह ब्रह्मचारी कवि होता है सूर्य वा चन्द्रग्रहणमें मंत्रके सहित वचका वन्दा लावे ॥ ३३ ॥

चूर्णितांसघृतांभुक्त्वासप्ताहेवाक्पतिर्भवेत् ॥
इत्येवमादियोगानांमंत्रराजःशिवोदितः ॥ ३४ ॥

इसे चूर्णकर घीके साथ खानेसे एक सप्ताहमें वाक्पति होता है इन योगोंका मंत्रराज शिवने कहा है ॥ ३४ ॥

जप्त्वायुतञ्चसिद्धिःस्यात्पश्चात्तैरेवभक्षयेत् ॥
ॐ ह्रूं हयशीर्षवागीश्वरायनमः॥सहस्रजपः ॥
धात्रीफलरसैर्भाव्यंवचाचूर्णंदिनावधि ॥
घृतेनलेहयेन्निष्कंवाक्शुद्धिस्मृतिबुद्धिकृत् ॥ ३५ ॥

१००००, मंत्र जपनेसे सिद्धि होती है पीछे उक्त पदार्थ भोजन करै 'ॐ ह्रूं हयशीर्षवागीश्वरायनमः । यह सहस्र जप है । वचका चूर्ण आमलेके रसमें एकदिन भावितकर एकनिष्क घृतके साथ चाटनेसे वाणीकी सिद्धि और बुद्धि होती है ॥ ३५ ॥

वचाचूर्णंक्षिपेत्क्षीरेपुनर्मंत्रेणमंत्रितम् ॥
भोज्यंक्षीरेणशाल्यन्नंसप्ताहेवाक्पतिर्भवेत् ॥ ३६ ॥

मंत्रको पढकर वचका चूर्ण मंत्र के सहित दूधके साथ लेनेसे वाक्पति होता है ॥ ३६ ॥

सप्तमेअष्टमेचैवसाक्षाच्छ्रुतिधरोभवेत् ॥
वचाचूर्णंपिबेत्क्षीरैर्घृतैःक्षौद्रैश्चयत्पुनः ॥
सप्ताहक्रमयोगेनलेह्यंस्यात्पूर्ववत्फलम् ॥ ३७ ॥

इसे सात दिन वा आठ दिन सेवन करनेसे वेदका धारणकरने वाला होता है अथवा वचका चूर्ण शहद और घृतके साथ चाटनेसे सप्ताहमें बुद्धि तीव्र होजाती है ॥ ३७ ॥

पुष्यार्कयोगेसंगृह्यश्वेतार्कस्यतुमूलकम् ॥
छायाशुष्कंचतच्चूर्णंमंत्रेणैवाभिमंत्रितम् ॥ ३८ ॥

पुष्यनक्षत्रमें श्वेत आककी जड़ ग्रहणकर उसे छायामें सुखाय चूर्ण करै मंत्र से अभिमंत्रितकर ॥ ३८ ॥

कर्षमर्द्धपलंवापिप्रातरुत्थायसंपिबेत् ॥
तक्रेणसर्पिषावापिजीर्णान्तेक्षीरभोजनम् ॥ ३९ ॥

एक कर्ष वा आधे पल इसको प्रातःकाल उठकर खाय पचनेके समय गौका मट्ठा घी अथवा क्षीर सेवन करै तौ ॥ ३९ ॥

एवंसप्ताहमात्रेणकविर्भवतिबालकः ॥
ॐमहेश्वरायनमः ॥ अनेनमंत्रेणाभिमन्त्र्यपिबेत् ॥४०॥

इति श्रुतिधरविद्यादिकरणम् ।

सात दिन में बालक भी कवि होजाता है 'ॐ महेश्वरायनमः' यह मंत्र है ॥ ४० ॥

इति श्रुतिधरविद्यादिकरण ।

अथकिन्नरीकरणम् ।

हरिद्राचवचाकुष्ठंपिप्पलीचयवानिका ॥
मरिचंसैन्धवंशुंठीमेषांचूर्णंतुकारयेत् ॥ ४१ ॥

हलदी वच कूठ पीपल अजवायन कालीमिर्च सैंधा सोंठ इन का चूर्ण कर ॥ ४१ ॥

मधुनासहितंचूर्णंपेषयित्वाशिलातले ॥
दिनैश्चसप्तभिश्चैवभक्षितव्यंनिरन्तरम् ॥ ४२ ॥

इसे शहद से पीस खाय तो सात दिन निरन्तर खानेसे ॥४२॥

जायतेसुस्वरःपुंसांकिन्नरैःसहगीयते ॥
विभीतकंकणाशुंठीसैन्धवंत्वक्समंसमम् ॥ ४३ ॥

किन्नरीकी समान कंठ होताहै बहेड़ा पीपल सोंठ सैंधा तज यह समान भागले ॥ ४३ ॥

गोमूत्रेणपिबेत्कर्षंकिन्नरैःसहगीयते ॥
जातीपत्रकणालाजामातुलुंगदलंमधु ॥
पलंलेह्यंभवेन्नादःकिन्नराधिकएवच ॥ ४४ ॥

एक कर्ष गोमूत्रके साथ पान करनेसे किन्नरोंके साथ गान कर सकता है उनकी समान स्वर होजाताहै जाती वृक्ष के पत्ते जीरा खीलैं और बिजोरानिंबूके पत्ते इनको मर्दन कर शहद के ८ तोला चाटनेसे किन्नरसेभी उत्तम स्वर होताहै ॥ ४४ ॥

देवदारुकणाव्योषंशताह्वापत्रकनिशा ॥
वचासैंधवशिग्रूत्थंमूलंपेष्यंसमंसमम् ॥ ४५ ॥

देवदारु सोंठ मिर्च पीपल जीरा सौंफ पत्रज हलदी वच सेंधा सहेंजनेकी मूली यह सब वस्तु समान लेकर ॥ ४५ ॥

कर्षैकंमधुसर्पिर्भ्यांमासमात्रंसदालिहेत् ॥
कंठशुद्धिर्भवेत्तस्यकिन्नरैःसहगीयते ॥ ४६ ॥

एक कर्ष मधु और घृतके साथ एक महीने चाटे तो कंठकी शुद्धि होती है किन्नरोंके साथ गासकताहै ॥ ४६ ॥

शुंठीचशर्कराचैवक्षौद्रेणसहसंयुता ॥
कोकिलस्वरएवस्याद्गुटिकाभुक्तिमात्रतः ॥ ४७ ॥

सोंठ और मिश्री शहद के साथ मिलाय इसकी गोली बना सेवन करै तो स्वर कोकिला के समान अच्छा हो ॥ ४७ ॥

आर्द्रकंभृंगकोरंटवासाब्राह्मीवचातथा ॥
वचाचूर्णसमांशेनपलैकंवारिणापिबेत् ॥ ४८ ॥

अदरख भांगरा दालचीनी पीपल अडूसा ब्राह्मी वचका चूर्ण यह समान भाग ले जलके साथ एक कर्षपीवे ॥ ४८ ॥

मासिमासिचतुर्दश्यांकृष्णपक्षेद्विसप्तकम् ॥
गंधर्वसदृशंगानंकोकिलानांस्वरोयथा ॥ ४९ ॥

महीने २ कृष्णपक्षकी चतुर्दशीतक चौदह दिन खाय तो गन्धर्व और कोकिलाके स्वरके समान गान कर सकताहै " कहीं माघ-महीने को लिखाहै " ॥ ४९ ॥

निर्गुण्डीमूलचूर्णन्तुतिलतैलेनयोलिहेत् ॥
कंठशुद्धिर्भवेत्तस्याकिन्नरैःसहगीयते ॥ ५० ॥

इतिकिन्नरीकरणम् ।

निर्गुण्डीकी जड़का चूर्ण तिलके तेलके साथ चाटनेसे कंठकी शुद्धि होती है किन्नरोंके साथ गासकता है ॥ ५० ॥

इति किन्नरीकरण ।

अथ चक्षुष्यम् ।

वर्षाकालेकाकमाचींसमूलांतैलपाचिता ॥
खादेत्समासतश्चक्षुर्गृध्रदृष्टिसमंभवेत् ॥ ५१ ॥

वर्षाकालमें समूल काकमाची तेलमें पकावे इसे एक महीने खानेसे गृध्रकी समान दृष्टि होती है ॥ ५१ ॥

श्वेतम्पुनर्नवामूलंघृतघृष्टंसदाञ्जयेत् ॥
जलस्रावंनिहंत्याशुतन्मूलंतुनिशायुतम् ॥ ५२ ॥

श्वेतपुनर्नवाकी जड़ घीमें पीसकर सदा आंजनेसे नेत्रोंसे जलका निकलना बंद होजाता है अथवा यही जड़ दारुहलदीके साथ नेत्रोंमें आंजे ॥ ५२ ॥

अंजनेचक्षुरोगाश्चनभवंतिकदाचन ॥
द्विनिशासैन्धवंत्र्यूषंबीजंकरंजकंसमम् ॥ ५३ ॥

तौ किसी प्रकारसे नेत्ररोग नहीं होताहै दोनों हलदी सेंधा त्रिकुटा करंजके बीज यह समान भाग लेकर ॥ ५३ ॥

भृंगीद्रवैर्युतंवापितिमिरंपटलंहरेत् ॥
शम्बूकंवावराटंवादग्धंशुष्कंविचूर्णितम् ॥ ५४ ॥

अतीसके रसमें बत्ती बनाय नेत्रोंमें आंजनेसे तिमिर दूर होताहै घोंघा या कौड़ी इन्हें जलाय चूर्णकर ॥ ५४ ॥

अञ्जयेन्नवनीतेनहन्तिपुष्पंचिरन्तनम् ॥
अजामूत्रेणभूधात्रीमूलंपिष्ट्वाचवर्तिका ॥ ५५ ॥

मक्खनके साथ नेत्रों में आंजै तौ बहुत दिनोंका फूला दूर होत है छागके मूत्रमें भुइआमलेकी जड़ पीस उसकी बत्तीको ॥ ५५ ॥

नवनीतसमायुक्तंहन्तिपुष्पंचिरन्तनम् ॥
अञ्जनान्नाशयेत्पुष्पंक्षौद्रैर्वास्वर्णमाक्षिकम् ॥ ५६ ॥

मक्खनके साथ लगानेसे पुराना फूला नष्ट होजाता है अथवा शहदके साथ सोनामक्खी मिलाय आंजनेसे फूला नष्ट होजाताहै ॥ ५६ ॥

मरीचेमर्दनैरक्तैर्वर्तीरात्र्यन्धताञ्जयेत् ॥
जयन्तीवाभयावाथघृष्ट्वास्तन्यैर्निशान्धहृत् ॥ ५७॥

कालीमिर्चको मर्दनकर बत्ती बनाय लगावै तौ नेत्रोंका रतौंधा दूर होता है अथवा जयन्ती वा हरड़को पीस लगावै तौ रतौंधा दूर हो जाताहै ॥ ५७ ॥

शोणितंचर्मकोपंचमांसवृद्धिंचनाशयेत् ॥
अजस्यकृष्णमासान्तःपिप्पलीमरिचंक्षिपेत् ॥ ५८॥

रुधिरविकार चर्मकोप और मांसवृद्धि भी इससे दूर होती है काले बकरेके मांसमें पीपल और कालीमिर्च डालै ॥ ५८ ॥

कारयित्वाघृतेपच्याद्वटिकान्तेतमुद्धरेत् ॥
मध्वाज्यस्तन्यसंपिष्टंरात्र्यन्धहरमञ्जनम् ॥ ५९ ॥

फिर एक घड़ी घीसे पकाय उसकी वटिका बनावै उसमें शहद घी स्त्रीके दूधसे पीस लगावै तौ रतौंधा दूर होजाता है ॥ ५९ ॥

अजापित्तगतंव्योषंधूमस्थानेविशोषयेत् ॥
चिरबिल्वरसैर्घृष्टंरात्र्यन्धहरमञ्जनम् ॥ ६० ॥

बकरीका पित्त सोंठ मिरच पीपलके साथ धूमस्थानमें सुखावै करंजके रसमें इसे घिसकर लगावै तौ रतौंधा दूर होजाताहै ॥ ६० ॥

घृतेनपुष्पंमधुनाश्रुपातंतैलेनकंडूंतिमिरंजलेन ॥
रात्र्यन्धकंकांजिकयानिहन्तिपुनर्नवानेत्रपुनर्नवङ्करी[1] ६१

घृतसे फूला शहतसे अश्रुपात तेलसे खुजली जलसे तिमिर

---

१ अत्र श्वेतपुनर्नवा ग्राह्या ।

काञ्जीसे रतौंधा दूर होताहै श्वेतपुनर्नवाकी जड़ नेत्रोंको नवीन कर देती है ॥ ६१ ॥

हरीतकीवचाकुष्टंपिप्पलीमरिचानिवै ॥
विभीतकस्यमज्जाचशंखनाभिर्मनश्शिला ॥ ६२ ॥

इसमें श्वेतपुनर्नवा लेनी । हरड़ वच कूट पीपल कालीमिर्च बहेड़े-की मींगी शंखनाभि मनशिल ॥ ६२ ॥

सर्वमेतत्समंकृत्वाछागीक्षीरेणपेषयेत् ॥
नाशयेत्तिमिरंकंडूंपटलान्यर्बुदानिच ॥ ६३ ॥

यह सब बराबर ले बकरीके दूधसे पीस लगावे तो तिमिर अष्टीला अर्बुदरोग नाश होते हैं ॥ ६३ ॥

अधिकानिचमांसानियश्चरात्रौनपश्यति ॥
अपिद्विवार्षिकंपुष्पंमासेकेनैवनाशयेत् ॥ ६४ ॥

जो नेत्रोंमें अधिक मांस बढजाता है, तथा जो रात्रिमें नहीं देखता है वह रोग तथा दोवर्ष का फूला एक मासमें अवश्य नष्ट होजाता है ॥ ६४ ॥

वर्तिश्चन्द्रोदयानामनृणांदृष्टिप्रसादिनी ॥ ६५ ॥

दृष्टिको बढाने वाली यह चन्द्रोदयनामबत्ती मनुष्यको प्रयुक्त करनी चाहिये ॥ ६५ ॥

छायाशुष्कावटीकार्य्यानामचन्द्रोदयावटी ॥
यस्त्रैफलंचूर्णमपथ्यवर्ज्यंसायंसमश्नातिहविर्मधुभ्याम् ॥
समुच्यतेनेत्रगतैर्विकारैर्भृत्यैर्यथाक्षीणधनोमनुष्यः ६६

इति चक्षुष्यम् ॥

यह वटी छायामें सुखाकर मनुष्यको प्रयोग करनी चाहिये यह दृष्टि निर्मल करती है जो मनुष्य त्रिफलेके चूर्णको संध्या समय घृत

और शहद के साथ खाता है वह नेत्रविकारोंसे ऐसे छूट जाता है जैसे धनहीन पुरुषको नौकर छोंड जाते हैं ॥ ६६ ॥

इति चक्षुरोगनिवारण ।

अथ कर्णस्यबधिरत्वनाशनम् ।

शिखरिक्षारजलेनतत्कृतकल्केनसाधितंतिलजम् ॥
अपहरतिकर्णनादंबाधिर्यञ्चापिपूरणात् ॥ ६७ ॥

चिरचिरेके खारयुक्त जलसे वा इसीके साथ तिलके तेलका कल्क कर कानोंमें डाले तौ बधिरता नाश होती है ॥ ६७ ॥

दशमूलीकषायेणतैलप्रस्थंविपाचयेत् ॥
एतत्कल्कंप्रदायैवबाधिर्य्येपरमौषधम् ॥ ६८ ॥

दशमूलके काढेको एकसेर तेलमें पकावे जब तेलमात्र रहजाय तौ उतारले कर्णबधिरता नाश करनेको यह परम औषधी है ॥ ६८ ॥

नीलीब्रध्नरसस्तैलंसिद्धकांजिकसंयुतम् ॥
कदुष्णपूरणात्कर्णौनिःशेषकृमिनाशनः ॥ ६९ ॥

नीली आक वृक्षकी जड़ कांजीमें मिलाकर तेलमें पकाय कुछ गरम गरम कानोंमें पूर्ण करनेसे सब कृमि नाश होजाते हैं ॥ ६९ ॥

दन्तेनचर्वयेन्मूलंनन्द्यावर्त्तपलाशकम् ॥
तन्नालीपूरितेकर्णेध्रुवंगोमक्षिकाञ्जयेत् ॥ ७० ॥

धव सोनामक्खी और पलाशकी जड़ दांतोंसे चबानेसे वा उसका रस कर्णमें उसका लेप करनेसे गोमक्षिका दूर होती है कहीं तगर और ढाकको चबाना लिखा है ॥ ७० ॥

ताम्बूलभक्षणंकृत्वातत्रसन्दापयेद्बुधः ॥
तत्रस्थितास्तुकृमयोनाशमायान्तिनिश्चितम्॥७१॥

---

१ बेल, सोंनापाढा, कंभारी, पाढल, अरणी, सरवन, पिठवन, छोटी कटेरी, बडी कटेरी और गोखरू यह दश मूल है ॥

फिर ताम्बूल भक्षण कर सेंक करै तौ कानके कृमि अवश्य नाश होजाते हैं ॥ ७१ ॥

मूषलीबाकुचीचूर्णखादेद्बाधिर्य्यशान्तये ॥
मनःशिलापामार्गोऽथमूलंचूर्णमधुप्लुतम् ॥ ७२ ॥

मूषली बकुचीका चूर्ण खानेसे बधिरता नाश होजाती है मनशिल अपामार्गके मूलका चूर्ण शहदमें मिलाकर ॥ ७२ ॥

भक्षयेत्कर्षमात्रन्तुबाधिरत्वप्रशान्तये ॥
लशुनामलकंतालंपिष्ट्वातैलेचतुर्गुणे ॥ ७३ ॥

एक कर्षमात्र खानेसे वह बहरापन शान्त होजाताहै ल्हसन आमला हरताल पीसकर इससे चौगुना तेल ले ॥ ७३ ॥

तैलाच्चतुर्गुणंक्षीरंपाच्यंतैलावशेषितम् ॥
तत्तैलंनिक्षिपेत्कर्णेबाधिर्य्यञ्चविनाशयेत् ॥ ७४ ॥

तेलसे चौगुना दूध डाले इसको पकाले जब रस जल जाय तेल मात्र रह जाय वह तेल कानमें डालनेसे बहरापन शान्त हो जाता है ॥ ७४ ॥

अथ कर्णपालीवर्द्धनम् ।

सिद्धार्थबृहतीचैवह्यपामार्गसमंसमम् ॥
छागीक्षीरैःप्रलेपोयंकर्णपालींविवर्द्धयेत् ॥ ७५ ॥

सफेद सरसों कटेरी चिरचिटा इनको समान भाग लेकर चूर्ण करै बकरी के दूधसे लेप करै तौ कर्णपाली बढती है ॥ ७५ ॥

मुषलीकन्दचूर्णंचमाहिषीक्षीरसंयुतम् ॥
लोडयेत्स्निग्धभाण्डेतुधान्यराशौनिवेशयेत्॥७६ ॥

मूषलीकन्दका चूर्ण कर भैंसके दूधसे साथ मिलाय बरतनमें मिलाय धान्यराशीमें धरै ॥ ७६ ॥

सप्ताहाद्दुत्थितेलेप्यंकर्णपालीविवर्द्धते ॥
गुंजामूलकृतंचूर्णमहिषीक्षीरसंयुतम् ॥ ७७ ॥

फिर सात दिनमें निकाल लेप करनेसे कर्णपाली बढती है चौंटलीकी जड़का चूर्ण कर उसमें दूध मिलाय ॥ ७७ ॥

शृतंदधिततःकुर्य्यान्नवनीतेतदुद्भवम् ॥
कर्णयोर्लेपयेन्नित्यंवर्द्धयेन्नात्रसंशयः ॥ ७८ ॥

दहीजमाय उसका मक्खन निकालकर कानोंपर लेप करै तो कर्णपाली बढती है ॥ ७८ ॥

अश्वगंधावचाकुष्टंगजपिप्पलिकासमम् ॥
महिषीनवनीतेनलेपात्कर्णौविवर्द्धते ॥ ७९ ॥

असगंध वच कूठ गजपीपल यह भैंसके मक्खन के साथ मिलाय लेप करनेसे कान बढता है ॥ ७९ ॥

वराहोत्थेनतैलेनलेपःकर्णविवर्द्धनः ॥
चर्मचटकस्यरक्तेनलेपात्कर्णौविवर्द्धते ॥ ८० ॥

अथवा वराहके तेलका कानोंपर लेप करनेसे कान बढता है अथवा चर्मचटक चिडयेका रक्तलेप करनेसे कर्णवृद्धि होती है॥८०॥

इति कर्णस्यबधिरत्वनाशनं कर्णपालीवर्द्धनंच ।

अथ दंतदृढीकरणम् ।

यमचिंचाजयापुंखामूलंवाहयमारजम् ॥
चलदंतादृढायंतेप्रत्यहंदन्तधावनात् ॥ ८१ ॥

इमली जयन्ती शरफोंका कनेरकी जड़ दांतोंमें लगानेसे दतौंनसे कैसे भी दांत हिलते हों दृढ होजाते हैं ॥ ८१ ॥

ताम्रपात्रेक्षणंपाच्यमभयाचूर्णकंमधु ॥
पिष्ट्वाचगुटिकाकार्यादंतैर्धार्याकृमीन्हरेत् ॥ ८२ ॥

हड्का चूर्ण और शहद यह तांबेके पात्रमें क्षणमात्र पकावै गुटिका कर दांतोंमें धारण करै तौ दांतोंके कृमि नाश होतेहैं॥८२॥

दंतैर्धार्य्यस्नुहीमूलंकृमिनाशंकरोत्यलम् ॥
काशीशंघृतसंपक्वंधार्य्यंदन्तेव्यथापहम् ॥ ८३ ॥

थूहरकी जड़ वा कसीसकी जड़ दांतोंमें धारण करनेसे कृमि नाश होजातेहैं कसीसको घृतमें पकाकर दांतोंमें धारण करनेसे दांतोंकी व्यथा दूर होती है ॥ ८३ ॥

विशालयोःपलंचूर्णंतप्तलोहेपरिक्षिपेत् ॥
तद्धूमस्पृष्टदंतानांकीटपातोभवत्यलम् ॥ ८४ ॥

इन्द्रायण महेंद्रवारुणीका चूर्ण एक पल तप्त लोहेपर डाल दे उसका धुआं छूतेही दांतोंका कीड़ा मरजाता है ॥ ८४ ॥

जातिकोरकपत्रंचचर्वयेत्प्रातरुत्थितः ॥
स्थिराःस्युश्चलितादंतास्तत्काष्ठैर्दंतधावनात् ॥ ८५ ॥

प्रातःकाल उठकर जातीके पत्ते कंकोलमिर्चके पत्ते चबावै तौ हिलते हुए दांत निश्चल होजाते हैं इन्हीं वृक्षोंकी दतोन करै ॥८५॥

गुंजामूलन्तुकर्णाभ्यांबद्धन्दन्तकृमिप्रणुत् ॥
त्रिसूतंरौप्यमेकन्तुजम्बीररसमर्द्दितम् ॥ ८६ ॥

चौंटलीकी जड़ कानोंमें बांधनेसे दांतका कीड़ा नष्ट होजाता है एक रुपयेभर पारा जम्बीरीके रसमें मर्दित करै ॥ ८६ ॥

जम्बीरफलमध्यस्थंवस्त्रैर्बध्वात्र्यहंपचेत् ॥
क्षीरमध्येसमुद्धृत्यगुटिकांतांततःपुनः ॥ ८७ ॥

फिर उसे जम्बीरी नीबूमें रख वस्त्रमें बांध तीन दिनतक दूधमें पकावै फिर उसे निकाल गुटिका करै ॥ ८७ ॥

भावितंभानुदुग्धेनतालकंसूक्ष्मपेषितम् ॥
तन्मध्येगुटिकांक्षिप्त्वावस्त्रेबध्वादिनत्रयम् ॥
मधुभांडगतंपश्चादुद्धृताचास्यधारिता ॥ ८८ ॥

इससे कालीमिर्च आकके दूध और हरतालसे सूक्ष्म पीसकर गुटिका बनाय वस्त्रमें तीन दिन बांध रक्खे फिर शहदके पात्रमें रक्खे इसको दांतोंमें घिसे तौ ॥ ८८ ॥

घर्षणाच्चलितान्दंतांस्तत्क्षणात्कुरुतेदृढान् ॥
तालकंभानुदुग्धेनदिनमेकंविमर्दयेत् ॥ ८९ ॥

हिलते हुए दांत दृढ होजाते हैं हरतालको आकके दूधमें एक दिन खरल करे ॥ ८९ ॥

तद्गर्भरसहोमोत्थांपिण्डिकांतारसंयुताम् ॥
जम्बीरफलमध्यस्थांदोलायंत्रेत्र्यहम्पचेत् ॥ ९० ॥

फिर उसको पारेके साथ पिंडीकर के एक स्थानमें रक्खे और जंबीरीके फल के बीचमें रखकर तीन दिन दोलायन्त्रमें पचावे९०

तैलक्षौद्रयुतेभांडेसमुद्धृत्याविधारयेत् ॥
दन्तरोगान्हरेत्सर्वान्घर्षणाच्चलितादृढाः ॥ ९१ ॥

फिर तेल और शहद मिलाय इसको बरतनमें रख छोडे यह मलतेही सम्पूर्ण दांतोंके रोगोंको दूर करताहै ॥ ९१ ॥

चलदन्तास्थिरकरंकार्य्यंवकुलचर्वणम् ॥
वकुलस्यतुबीजन्तुपिष्ट्वाकोष्णेनवारिणा ॥
मुखेचधारयेद्धीमान्दन्तदाढर्यकरम्परम् ॥ ९२ ॥

दांतोंको स्थिर और बलयुक्त करता है बकुल(मौलसिरी)के बीज कुछ गरम पानीके साथ पीसकर बुद्धिमान मुखमें धारण करै तो दांत दृढ होजाते हैं ॥ ९२ ॥

बकुलस्यत्वचाक्काथमुष्णंवक्रेणधारयेत् ॥
दृढाःस्युश्चलितादन्ताःसप्ताहान्नात्रसंशयः ॥ ९३
बकुल(मौलसिरी)की छालका क्काथ गरम २ मुखमें धारण करनेसे सातदिनमें हिलते हुए दांत दृढ होजाते हैं इसमें सन्देह नहीं॥९३॥
इतिदन्तदृढीकरणम् ।

अथ आहारकरणम् ।

ब्रध्नकेनापिवृक्षस्यपीठंकृत्वाशनैःस्थितः ॥
योसौभुंक्तेघृतैस्साद्धम्भोजनंभीमसेनवत् ॥ ९४ ॥
आकके वृक्षका पीढाकर शनैः २ उसपर बैठ घृतके सहित भोजन करै तो भीमसेनकी समान भोजन होगा ॥ ९४ ॥
संध्यायामाम्रवृक्षस्यकर्त्तव्यमभिमंत्रितम् ॥
प्रातःपुष्पाणिसंगृह्यमालांशिरसिधारयेत् ॥ ९५ ॥
संध्याके समय आमके वृक्षको अभिमंत्रितकर प्रातःकाल उसके मौरकी माला शिरपर धारण करै कहीं प्लक्षका अभिमंत्रण कहाहै९५
कौपीनंसंपरित्यज्यभुंक्तेसौभीमसेनवत् ।
उद्भ्रान्तपत्रमादायकपिलाश्वानदन्तकम् ॥
कट्यामेवद्वयंबध्वाभुंक्तेसौभीमसेनवत् ॥ ९६ ॥
और कौपीन त्याग भोजन करने बैठे तो भीमसेन की समान भोजन करै मूषकपर्णीके पत्तोंको लाकर रेणुका श्वानदन्त साथ इन दोनोंको कमरमें बांधे तौ भीमसेनकी समान भोजन करै ॥ ९६ ॥
गृहीत्वामंत्रितान्मंत्रीबिभीततरुपल्लवान् ॥
आक्रम्यदक्षिणांजंघांविंशत्याहारभुग्भवेत् ॥ ९७ ॥
मंत्रका जाननेवाला मंत्रपूर्वक बहेडेके पत्ते दाहिनी जांघसे आक्र-

१ मुष्क इति वा पाठः ।

मण कर ग्रहण करै अर्थात् जांघके तले रखकर भोजन करनेसे बीसगुना होता है ॥ ९७ ॥

ॐनमस्सर्वभूताधिपतयेग्रस २ शोषय २ भैरवी
आज्ञापयतिस्वाहा ॥ उक्तयोगानामयंमंत्रः ॥
अधरंकृकलासस्यशिखास्थानेविबंधयेत् ॥
वायुपुत्रइवाश्चर्य्यमसौभुंक्तेनसंशयः ॥ ९८ ॥

मंत्र 'ॐनमः सर्वभूताधिपतये ग्रस २ शोषय २ भैरवी आज्ञापयति स्वाहा' उपरोक्त योगका यह मंत्र है ॥ घिरघटका अधर शिखास्थानमें स्थित करनेसे भीमसेनकी समान भोजन होगा इसमें सन्देह नहीं ॥ ९८ ॥

ॐनाभिवेगेनउर्वशीस्वाहा ॥

'ॐनाभीवेगेन उर्वशी स्वाहा' ॥

इति आहारकरणम् ।

अथानाहारकरणम् ।

अंत्राणिकृकलासस्यमज्जाकरंजबीजकम् ॥
पिष्ट्वातद्गुटिकांकुर्य्यात्रिलोहेनतुवेष्टिताम् ॥ ९९॥

घिरघटकी अन्त्र और करंजके बीजोंकी मींग पीसकर उसकी गुटिका बना चांदी सोने अथवा तांबेमें मढकर ॥ ९९ ॥

तांवक्त्रेधारयेद्योसौक्षुत्पिपासानबाधते ॥ १०० ॥

मुखमें धारण करनेसे भूख और प्यास नहीं लगती है ॥ १०० ॥

ॐसांसांशरीरममृतमाकर्षयस्वाहा ।
पद्मबीजंमहाशालीछागीदुग्धेनपाचयेत् ॥
साज्यंचपायसंभुक्त्वाद्वादशाहंक्षुधापहम् ॥ १०१ ॥

---

१ शांचां वा पाठः ।

'ॐसांसांशरीरममृतमाकर्षय स्वाहा' कमलगट्टेकी गिरी महाशालिधान्य छागीके दूधसे पकावे घृतसहित वह खीर खाय तो बारह दिनतक भूख नहीं लगती है ॥ १०१ ॥

उदुम्बरस्यजंबीरशालिशिम्बीशिरीषजम् ॥
बीजंसंचूर्ण्यचाज्येनभुक्त्वापक्षंक्षुधापहम् ॥ १०२ ॥

गूलर जम्बीरी शालिधान्य शिम्बी शिरसके बीज इनका चूर्ण कर घीके साथ खानेसे पन्द्रह दिन भूख नहीं लगती है ॥ १०२ ॥

उदुम्बरफलंपक्वमिंगुदीतैलभावितम् ॥
भुक्त्वामासंक्षुधांहंतिपिपासांचनसंयशः ॥ १०३ ॥

गूलरका पक्का फल इंगुदीके तेलमें भावित कर खानेसे एक महीनेतक भूख और प्यास नहीं लगतीहै इसमें सन्देह नहीं१०३॥

अपामार्गस्यबीजानित्वग्वर्जानिप्रपाचयेत् ॥
पायसंछागलीक्षीरैर्भुक्तंमासक्षुधापहम् ॥ १०४ ॥
ॐनमोभगवतेरुद्रायअमृतार्कमध्येसं-
स्थितायममशरीरेअमृतंकुरु २ सःस्वाहा ॥ १०५ ॥
उक्तयोगानामयंमंत्रः ॥

अपामार्गके बीज छिलका दूरकर पकाय बकरीके दूधमें इसकी खीर खानेसे एक महीनेतक भूख नहीं लगती ॥ 'ओंनमो भगवते रुद्राय मृतार्क मध्ये संस्थिताय ममशरीरे अमृतं कुरु २ सः स्वाहा' ॥ उपरोक्त योगका यह मंत्र है ॥ १०४ ॥ १०५ ॥

इत्यनाहारकरणम् ।

अथ पादुकासाधनम् ।

अश्वनालेङ्गुदीतैलैःपेषयेच्छ्वेतसर्षपम् ॥
तल्लिप्तपादहस्तस्तुयोजनानांशतंव्रजेत् ॥ १०६ ॥

अश्वनाल अंकुलीका तेल श्वेत सरसों यह सब वस्तु पीसे उसको हाथ पैरोंमें सम्यक् लपेट कर सौ योजन जा सकता है ॥ १०६ ॥

अंकोलस्यतुमूलंतुतिलतैलेनपाचयेत् ॥
पादसंजानुपर्य्यन्तंलिप्त्वादूराध्वगोभवेत् ॥ १०७ ॥

अंकोलकी जड़ तिलके तेलमें पकावे इसको जंघापर्यन्त लेप करके मनुष्य दूरतक जासकता है ॥ १०७ ॥

ॐह्रींनमः ॥

ॐनमश्चंडिकायैगगनंगगनंचालय २
वेशय हिलि २ वेगवाहिनीह्रींह्रींस्वाहा ॥
उक्तयोगद्वयस्यायमेवमंत्रः ॥
काकस्यहृदयंनेत्रेजिह्वांचैवमनश्शिलाम् ॥
गैरिकंसिंधुजंचैवअजामारीचमालती ॥ १०८ ॥

'ॐह्रीं नमश्चंडिकाये गगनं २ चालय २ वेशय हिलि २ वेगवाहिनी ह्रीं ह्रीं स्वाहा' उक्त योगोंका यह मंत्र है काकका हृदय दोनों नेत्र जिह्वा मनशिल गेरू सैंधानोन शूकशिम्बी मालती ॥ १०८ ॥

समंरुद्रजटांचैवविदार्यासहपेषयेत् ॥
तल्लिप्तपादस्सहसासहस्रंयोजनंव्रजेत् ॥ १०९ ॥

इनकी समान रुद्रजटा विदारीकंद यह सब पीसके उसको हाथ पैरमें लपेटकर सहस्र योजनको जासकते हैं ॥ १०९ ॥

वलीपलितनिर्मुक्तोयावदाहृतसंप्लवम् ॥ ११० ॥
ॐनमोभगवतेरुद्रायनमोहरितगदाधरायत्रासय २॥
क्षोभय २ चालने २ स्वाहा ॥
कोकजिह्वाब्रह्मचारीगुडलोहेनवेष्टयेत् ॥
मुखेप्रक्षिप्यगच्छन्तियोजनंशतमेवच ॥ १११ ॥

वलीपलितसे निर्मुक्त होकर प्रलय तक विचरण करै ॥ "ॐनमो भगवते रुद्राय नमो हरितगदाधराय त्रासय २ क्षोभय २ चालने २ स्वाहा" ॥ कोक जिह्वा भारंगी गुड यह लोहसे वेष्टित कर मुखमें डालकर सौ योजन जासकते हैं ॥ ११० ॥ १११ ॥

आगच्छन्तितदातूर्णंसनरोनात्रसंशयः ॥ ११२ ॥

और बहुत शीघ्र आसकते हैं इससें संदेह नहीं ॥ ११२ ॥

अंकोलतैलसंपिष्टांश्वेतसर्षपलेपिताम् ॥
पादुकामुष्ट्रचर्मोत्थांसमारुह्यशतंव्रजेत् ॥ ११३ ॥

अंकोलके तेल और सरसोंके तेलसे ऊंटके चर्मकी पादुका लेपनकर उसपर चढ सौकोस जासकता है ॥ ११३ ॥

इतिपादुकासाधनम् ।

अथअनावृष्टिहरणम् ।

हूंह्रीं (अथवा) 'हुंश्रींहुं'इमंमंत्रंजलमध्येप्रविश्ययादिजपेत्
तदाअनावृष्टिंहरति ॥ महावृष्टिर्भवति ॥

इत्यनावृष्टिकरणम् ।

इति श्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेकामसिद्ध्यादि
अनावृष्टिनिवारणं नाम द्वादशोपदेशः ॥ १२ ॥

'हुं श्रीं हुं' इस मंत्र को जलके मध्यमें खड़ा होकर जपै तौ अनावृष्टि जाती रहती है महावृष्टि होती है ॥

इति अनावृष्टिकरण ।

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पंडितज्वालाप्रसादमिश्रकृतभाषाटीकायांकामसिद्ध्यादि अनावृष्टिनिवारणं नाम द्वादशोपदेशः ॥ १२ ॥

अथनिधिदर्शकमंजनम् ।

अञ्जनानांतुसर्वेषांमंत्रंसाध्यमघोरकम् ॥
विनामंत्रेणविद्याश्चनाशयन्तिपदेपदे ॥ १ ॥

सब अंजनोंमें अघोरमंत्र साधन करना उचित है विना मंत्रके पद पद में विद्या नष्ट होती है ॥ १ ॥

यक्षिणींमूर्त्तिमाश्रित्यजपेदष्टसहस्रकम् ॥
ततःसर्वविधानानिसुसाध्यानिचप्रारभेत् ॥ २ ॥

यक्षिणीमूर्तिके आश्रित होकर आठ सहस्र जप करे तो सब निधि उसको सुखपूर्वक विदित होजांयगी ॥ २ ॥

ॐबहुरूपंविश्वरूपंविद्याधरमहेश्वरम् ॥
जपाम्यहंमहादेवंसर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ ३ ॥

' ॐबहुरूप विश्वरूप विद्याधर महेश्वर ' सब सिद्धिके देनेवाले महादेवको मैं जपकरताहूं ॥ ३ ॥

ॐनमोरुद्रायरुद्ररूपायनमोबहुरूपायनमोविश्वरूपायनमोविश्वात्मनेनमः तत्पुरुषयक्षायनमोयक्षरूपायनमएकस्मैनमएकाय[१]नमएकरौरवायनमएकयक्षायनमएकेक्षणायनमोयक्षायनमोवरदायनमःतुदतुद स्वाहा ॥ सोपव सोजितेन्द्रियोभूत्वामहेशपूजां कृत्वाइमंमंत्रंजपेत्सिद्धिर्भवति ॥ कज्जलानांपातनार्थं ग्राह्योयत्नेनपावकः ॥ दीक्षितस्यगृहेश्रेष्ठंचितायान्तु विशेषतः ॥ ४ ॥

' ॐनमो रुद्राय रुद्ररूपाय नमो बहुरूपाय नमो विश्वरूपाय नमो विश्वात्मने नमः तत्पुरुषयक्षाय नमो यक्षरूपाय नमः एकस्मै नम एकाय नम एक रौरवाय नम एकयक्षाय नम एकेक्षणाय नमो यक्षाय नमो वरदाय नमः तुद तुद स्वाहा ' ॥ उपवास रख जितेन्द्रिय होकर शिवकी पूजाकर इसमंत्रको जपनेसे सिद्धि होती है ॥

---

१ एकरोमाय नमो वा पाठः ।

काजरके पारनेको यत्नपूर्वक अग्नि ग्रहण करै दीक्षितके घरकी अग्नि श्रेष्ठ है वा विशेष कर चिताग्नि उत्तमहै ॥ ४ ॥

रजकस्यगृहाद्वापि[१]तस्करस्यगृहाच्चयः ॥
ॐ"ज्वलितविद्युद्धूमायस्वाहा ॥ अयमग्निग्रहणमंत्रः
वा ज्वलितविद्युतेस्वाहा। ॐनमोभगवतेवासुदेवा-
यबंधबंधश्रीपतयेस्वाहा ॥
अनेनमंत्रेणवर्तिमभिमंत्रयेत् ॥

ॐनमोभगवतेसिद्धसाधकायज्वल २ पच २ पातय२बन्धय२
संहर २ दर्शय २ निधिनमः ॥ अनेनदीपंज्वालयेत् ॥
ॐऐंमंत्रःसर्वसिद्धेभ्योनमोविश्वेभ्यस्वाहा॥(विच्चेवापाठः)
अनेनकज्जलंग्राह्यम् ॥
ॐकालिकालिमहाकालिरक्षेदमंजनंनमोविश्वेभ्यः स्वाहा।
अनेनमंत्रेणयत्किंचिदंजनद्रव्यमभिमंत्रयेत् ॥
ॐसर्वेसर्वेहितक्लींसर्वेसर्वेहितेसर्वौषधिप्रयाहिते ॥
विरतेनमोनमः स्वाहा ॥
अनेनमंत्रेणांजनयोग्यांमूलिकामभिमंत्रयेत् ॥
आदौकेवलहेमशलाकयानेत्रमंजयित्वाततस्त
यैवशलाकयाअंजनद्रव्यमञ्जयेत्" ॥
अंजयित्वांजनंपश्चात्सप्तधारस्यपत्रकम् ॥
बंधयेत्प्रतिनेत्रन्तुअच्छिद्रंतदधोमुखम् ॥ ५ ॥

अथवा धोबीकेघरसे वा चोरके यहांसे लावै मंत्र यह है 'ओं ज्वलितविद्युद्धामाय स्वाहा अथ अग्निग्रहणका मंत्र ओं नमो भगवते

१ तक्षकस्य गृहाच्च इति वा पाठः ।

वासुदेवाय धरधर बंध बंध श्रीपतये स्वाहा इसमंत्रसे वत्तीको अभिमंत्रित करै ॐनमो भगवते सिद्धसाधकाय ज्वल २ पत २ पातय २ बंध २ संहर २ दर्शयदर्शय निधिर्मम इसमंत्रसे दीपक-जलावे ओं ऐं मंत्रःसिद्धेभ्यो नमोविश्वेभ्यः स्वाहा इसमंत्रसे कज्जल ग्रहणकरे ओं कालिकालिमहाकालि रक्षेदम जनं नमो विश्वेभ्यः स्वाहा इस मंत्रसे अंजन द्रव्यको अभिमंत्रित करै ओं सर्वं सर्वहिते क्लीं सर्वं सर्वहिते सर्वऔषधी प्रियाहिते विरते नमो नमः स्वाहा'इसमंत्रसे अंजनयोग्यवर्तिको अभिमंत्रित करै प्रथम सुवर्णशलाकासे नेत्रोंको आंजकर उस शलाकासे अंजन द्रव्यको अभिमंत्रितकरै ॥ इस प्रकार अंजनको आंजकर सात धारक पत्रको बांध प्रतिनेत्रको अच्छिद्र और अधोमुख बंधित करै ॥ ५ ॥

तस्योपरिसितंवस्त्रंपट्टजञ्चापिबंधयेत् ॥
नांज्यादधिकहीनांगंश्वदंष्ट्रंचाग्निदग्धकम् ॥ ६ ॥

इसके ऊपर सम्यक् प्रकारसे रक्खेहुए श्वेतवस्त्रको वेष्टन कर वा रेशमीनको बांधै और उस समय अधिक और हीन अंगवालों को न आंजे तथा श्वदंष्ट्रअग्निदग्ध को न आंजे ॥ ६ ॥

सम्पूर्णांगंशुचिस्नात्वाद्विदिनंनक्तभोजनम् ॥
क्षीरशाल्यन्नभोक्तव्यांत्रिदिनांतेततोञ्जयेत् ॥ ७ ॥

सम्पूर्ण प्रकार से पवित्र हो स्नान करके दोदिनपर्यन्त रात्रिमें भोजन करै दूध शालीधान खाय इस प्रकार तीन दिनके उपरान्त फिर आंजै ॥ ७ ॥

अंजितस्याशिखाबंधंकर्त्तव्यंमंत्रउच्यते ॥ ८ ॥
ॐनमोभगवतेरुद्रायतुलतुलमहेश्वरमाहेश्वल
नुज्वल२विज्वल २ मिज्वल २ हर२ यक्षरक्षपू-
जितेयक्षकुमारीसुलोचनेस्वाहा ॥ ॐनमोभग-

वतेरुद्राय ॐननन्नर२महेन्नविहेन्नविहेन्नमिहेन्न २
हरहररक्ष २ पूजितेयक्षकुमारिसुलोचनेस्वाहा ॥
यक्षाणांमूर्त्तिमाश्रित्यउदयास्तंमनुंजपेत् ॥
पूर्वमेवसमाख्यातंशिखाबंधंशिवोदितम् ॥ ९ ॥
इदंसर्वांजनेज्ञातव्यम् ।

आंजकर शिखावंधन करे उसका मंत्र कहते हैं 'ओंनमो भगवते रुद्राय तुल तुल माहिश्वल नुज्वल २ विज्वल २ मिज्वल २हर २ यक्ष रक्ष पूजिते यक्षकुमारी सुलोचने स्वाहा' ॥ यक्षोंकी मूर्त्तिके आश्रित होकर उदय और अस्तमें इसका जप करै शिखा बंधन शिवने पूर्व कहदिया है यह सब अंजनमें जानना चाहिये ॥ ८ ॥ ९ ॥

शरत्कालेतुसंग्राह्याभूलतारक्तवर्णका ॥
सिंदूरपूरितांकृत्वावर्त्तितूलेनवेष्टयेत् ॥ १० ॥

शरत्कालमें पृथ्वीसे इन्द्रगोप (वीर बहूटी) ग्रहण करनी चाहिये उसमें सिंदूर पूरित करके आककी रुई की बत्ती करे ॥ १० ॥

अतिकृष्णतिलातैलंग्राहयेद्रक्षयेत्सुधीः ॥
तैलवर्त्यौःप्रयोगेणकज्जलंचोत्तरायणे ॥ ११ ॥

और बहुत कालेतिलोंका तेल लेकर उसको रक्षित करै उसी प्रयोगसे बत्तीवाल उत्तरायणमें कज्जल ॥ ११ ॥

ग्राहयित्वाञ्जनंचक्षुर्निधिंपश्यातिसाधकः ॥
प्रमाणंचविजानातिगृह्णातिचयथेप्सितम् ॥ १२ ॥

ग्रहण करनेसे आंजै तो निधिका दर्शन होताहै और उसका प्रमाण जानकर यथेष्ट ग्रहण करसकताहै ॥ १२ ॥

अतिकृष्णस्यकाकस्याजिह्वामांसंसमाहरेत् ॥
वेष्टयेद्रवितूलेनवर्तितेनैवकारयेत् ॥ १३ ॥

बहुत काले कौएकी जिह्वाका मांस लावे उसको आककीरुईसे लपेटकर बत्तीकी समान कर ॥ १३ ॥

अजाघृतेनदीपन्तुप्रज्वाल्यादायकज्जलम् ॥
अंजिताक्षोनरस्तेननिधिंपश्यतिपूर्ववत् ॥ १४ ॥

बकरीके घीमें उसका दीपक जलाय कज्जल ग्रहण करे इसको लगानेसे मनुष्य अज्ञात निधिको पूर्ववत् देखताहै ॥ १४ ॥

सप्तधापद्मसूत्राणिभावयेदिक्षुजैरसैः ॥
उद्धृत्यज्वालयेद्दीपमंकुलीतैलसंयुतम् ॥ १५ ॥

ईखके रसमें पद्मसूत्रको सातवार भावना दे फिर उसे लेकर अंगुलीके तेलसे दीपक जलावे ॥ १५ ॥

ग्राह्यंकृष्णत्रयोदश्यांकज्जलंनिधिदर्शकम् ॥
सर्वांजनमिदंसिद्धंशंभुनापरिकीर्त्तितम् ॥ १६ ॥

कृष्णपक्षकी त्रयोदशीको कज्जल ग्रहण करनेसे निधिका दर्शन होताहै यह सर्व सिद्ध अंजन शिवजीने कहाहै ॥ १६ ॥

दीपकज्जलयोःपात्रंकर्त्तव्यंनरमुण्डजम् ॥
सर्वेषांकज्जलानांतुसत्यंस्याच्छिवभाषितम् ॥ १७ ॥

परन्तु सब प्रकारके इन दीपकसे[1] काजर पारनेका पात्र मनुष्यकी खोपडी ग्रहण करनी चाहिये यह शिवजीने कहाहै ॥ १७ ॥

रक्तेनकृकलासस्यभावयित्वामनःशिलाम् ॥
तेनैवांजितनेत्रस्तुनिधिंपश्यतिपूर्ववत् ॥ १८ ॥

गिरगटके रक्तसे मनशिलाको भावना देकर इससे नेत्ररंजित करके पूर्ववत् निधिको देखताहै ॥ १८ ॥

---

१ दीपकभी खोपड़ीकाहो ।

गृहीत्वाचानुराधायांवंदांशाखोटवृक्षजाम् ॥
गोरोचनसमांपिष्ट्वात्वंजनंनिधिदर्शकम् ॥
एतत्सर्वांजनख्यातंप्रसिद्धंशिवभाषितम् ॥ १९ ॥

शाखोटवृक्षका वन्दा अनुराधानक्षत्रमें ग्रहण करके गोरोचनके साथ पीसकर आंजनेसे निधिका दर्शन होताहै यह सब अंजन प्रसिद्ध शिवजीके कहे हैं ॥ १९ ॥

अगस्त्यवृक्षजांकुर्य्यात्पादुकांनिधिदर्शकाम् ॥
पादुकांजनयोगेनसिद्धियोगाभवंतिवै ॥ २० ॥

अगस्त्यके पेडकी पादुका बनानेसे निधिका दर्शन होताहै पादुका अंजनके योगसे सिद्धयोग होताहै ॥ २० ॥

ॐनमोभगवतेरुद्रायउड्डामरेश्वरायशिलि २ धूमरे नागवेतालिनीस्वाहा ॥ अनेनपादुकामभिमंत्रयेत् ॥
तुलसीमूलिकांपुष्येशनिवारेसमुद्धरेत् ॥
निष्पिष्यकांजिकेनाथमधुनापुनरंजयेत् ॥ २१ ॥

'ओंनमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय शिलि २ धूमरे नागवेता- लिनी स्वाहा' इससे पादुकाको अभिमंत्रित करै ॥ तुलसी की जड़ पुष्यनक्षत्र शनिवारके दिन ग्रहण करे उसे कांजीमें डाल शहतमें मिलाय आंजे ॥ २१ ॥

पादजातंकुमारंवाकन्यकांवातदानिधिम् ॥
दृश्यतेनात्रसन्देहःपातालंलम्बकावपि ॥ २२ ॥

श्रेष्ठ वर्णमें हुए कुमार वा कन्याको निधिका दर्शन होसकताहै इसमें सन्देह नहीं पातालपर्यन्त भी निधि हो तो उसका दर्शन हो सकता है ॥ २२ ॥

ॐनमोभगवतेरुद्रायकज्जललेपांजनंदर्शय २ स्वाहाठःठः ॥
अनेनमंत्रेणकज्जललेपांजनमभिमंत्रयेत् ॥
खन्यमानेचसर्पाश्चनिस्सरन्तिपदेपदे ॥ २३ ॥

'ओंनमो भगवते रुद्राय कज्जललेपांजनं दर्शय २ स्वाहा ठः ठः' इस मंत्रसे कज्जललेपांजनको अभिमंत्रित करै फिर खनन करनेसे पद पदमें बड़े २ सर्प निकलते हैं ॥ २३ ॥

औषधेनविनातेभ्योभयंस्यान्मंत्रिणामपि ॥
तस्मादौषधयोगेनपादलेपेनवाजयेत् ॥ २४ ॥

औषधीसे विना मंत्रवालोंको भी इनसे भय होसकताहै इस कारण औषधिके योगसे चरणमें लेप करके इनको जय करै ॥२४॥

अर्कस्यकरवीरस्यपनसस्यतुमूलिकाम् ॥
पिष्ठ्वापादप्रलेपाच्चदूरेगच्छंतिपन्नगाः ॥ २५ ॥
इतिनिधिदर्शकांजनम् ।

आक करवीर और पनसकी जड़ घीसकर चरणोंमें लेप करनेसे सर्प दूर भागजाते हैं कहीं 'उत्पल मूलिका' पाठ है तहां कमल की जड लेना ॥ २५ ॥

इतिनिधिदर्शकअंजन ।

अथ अदृश्यकरणम् ।

चतुर्लक्षमिमंमंत्रंश्मशानेप्रजपेच्छुचिः ॥
नग्नवृत्तिस्ततस्तुष्टापटंयच्छतियक्षिणी ॥ २६ ॥

पवित्र होकर आगे कहाहुआ मंत्र श्मशानमें नग्नहोकर ४००००० जपै तब यक्षिणी इसको एक वस्त्र देतीहै ॥ २६ ॥

तेनावृतोनरोदृश्योविचरेद्वसुधातले ॥
निधिम्पश्यतिगृह्णातिनविघ्नैःपरिभूयते ॥ २७ ॥

उससे यह मनुष्य किसीको न दीखता हुआ पृथ्वीतलमें विचरता है और निधि देखकर ग्रहण करसकता है कहीं विघ्नोंसे इसका तिरस्कार नहीं होताहै ॥ २७ ॥

ॐह्रांह्रींस्फेंश्मशानवासिनीस्वाहा ॥
निशाचरींनिशिध्यात्वाजस्वावामेनपाणिना ॥
अदृश्यकारिणींविद्यांलक्षजाप्येप्रयच्छति ॥ २८ ॥
ॐनमोनिशाचरमहामहेश्वरपर्यटतः
सर्वलोकलोचनानिबंधय २ देव्याज्ञापयतिस्वाहा ।
रात्रौकृष्णचतुर्दश्यांश्मशानान्तःशिवालये ॥
बलिनाचोपहारेणकुर्यादर्चनमुत्तमम् ॥ २९ ॥

'ओं हां हीं स्फें श्मशानवासिनी स्वाहा' रात्रिमें ध्यान कर वाम हाथसे जप करताहुआ एक लक्ष जप करके इस अदृष्टकरनीबिद्या को प्राप्त होता है ' ओंनमो निशाचर महामहेश्वर मम पर्यटतः सर्वलोकलोचनानि बंध बंध देव्याज्ञापयति स्वाहा' कृष्णचतुर्दशीकी रात्रिमें श्मशान शिवालय आदिमें बली उपहार आदिसे उत्तम अर्चन करे ॥ २८ ॥ २९ ॥

ततोदीपाङ्गुलीतैलैर्वर्तिस्यादर्कतन्तुभिः ॥
प्रज्वाल्यनृकपालेतुतत्पात्रेघृतकज्जलम् ॥ ३० ॥

और फिर अंगुलीके तेलसे युक्त आकके तन्तुओंकी बत्ती बनावै मनुष्यकी खोपडीमें बालकर खोपडीपरही काजल पारै ॥ ३० ॥

अंजयेन्नेत्रयुगलंदेवैरपिनदृश्यते ॥
अर्कशाल्मलिकार्पासपट्टपद्मजतन्तुभिः ॥ ३१ ॥

उसको दोनों आंखोंमें लगानेसे देवताओंकोभी नहीं दीखता है आक शालिधान्य कपासका वस्त्र कमलके तन्तु ॥ ३१ ॥

पंचभिर्वर्तिकाभिश्चनृकपालेषुपंचसु ॥
नवनीतेनदीपास्युःकज्जलंनृकपालतः ॥ ३२ ॥

पांच बत्ती करके यह अलग २ पांच मनुष्योंकी खोपड़ीमें पारै मक्खनको तेलके स्थानमें बारकर वा नरतेलसे मनुष्यकी खोपड़ीमें काजर पारै ॥ ३२ ॥

ग्राहयेत्पंचभिर्यत्नात्पूर्ववच्चशिवालये ॥
पंचस्थानीयजातंतुएकीकुर्य्यात्तुतंपुनः ॥ ३३ ॥

इन पांचोंको पूर्ववत् शिवालयमें ग्रहण करै पांचोंस्थानोंसे लेकर फिर उसे एकत्र करै ॥ ३३ ॥

मंत्रयित्वाञ्जयेन्नेत्रेदेवैरपिनदृश्यते ॥ ३४ ॥
ॐहूंफट्स्वाहाकालि२महाकालिमांसशोणितभक्षिणि रक्तकृष्णमुखेदेवीमामेपश्यतुमानुषेतिॐहूंफट्स्वाहा॥एतन्मन्त्रायुतजपात्सिद्धिदोभवति ॥
उक्तास्सैंअदृश्यीकरणप्रयोगाः ॥
अनेनमंत्रेणाष्टोत्तरशताभिमंत्रिताअंगुलीतैल प्रयोगात्सिद्धाभवन्ति ॥
अंगुलीतैलसंसिक्तायवाःसप्तदिनावधि ॥
त्रिलोहवेष्टितास्तेषांगुटिकांकारयेच्छुभाम् ॥ ३५ ॥

फिर अभिमंत्रित कर नेत्रोंमें लगानेसे देवताओंको भी नहीं दीखता है 'ॐहूं फट् कालि २ महाकाली मांसशोणितकी भक्षण करने वाली रक्तकृष्णमुखे देवि पश्यतु मानुषेति ओंहूं फट् स्वाहा' यह मंत्र १०००० जपनेसे सिद्धि होती है यह सब अदृश्य करनेके प्रयोग हैं इस मंत्रसे एक सौ आठबार अभिमंत्रित करनेसे सिद्धि

१ नरतैलेन इति वा पाठः (नरका तेल)

होती है ॥ अंगुली गजकर्णीके तेलसे सात दिनपर्यन्त जौको सिंचन करै और उनको त्रिलोहसे वेष्टित कर सुन्दर गुटिका बनावै कहीं जौके स्थानमें सप्तच्छद की जटाहै ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

अदृश्यकारिणीसातुमुखस्थानात्रसंशयः ॥
तत्तैलेसर्षपाश्वेतात्रिलोहेनतुवेष्टिता ॥ ३६ ॥

अवश्य अदृश्यकरणी विद्या प्राप्त होजातीहै इसमें सन्देह नहीं यह तेल श्वेतसरसों और त्रिलोहसे युक्त करके अर्थात् गुटिका बनाय चांदी ताम्बे आदिसे मढ ॥ ३६ ॥

गुटिकामुखमध्यस्थासाक्षाददृश्यकारिणी ॥
कृष्णकाकस्यरुधिरंपित्तंगोमायुसंभवम् ॥ ३७ ॥

मुखमें रखनेसे अदृश्य होजाताहै काले कौएका रुधिर गीदडका पित्ता ॥ ३७ ॥

काकारिनखचंच्वापिसमभागंविचूर्णयेत् ॥
ऋक्षेपुनर्वसौवर्त्तिकृत्वानेत्रेचरंजयेत् ॥ ३८ ॥

उलूकके नख चोंच यह समान भाग लेकर चूर्ण करै और पुनर्वसुनक्षत्रमें इसकी वत्ती बनाय नेत्रोंको आंजै ॥ ३८ ॥

अदृश्योभवतिक्षिप्रंसर्वकार्य्यप्रसाधकः ॥
कृष्णकुक्कुटपुच्छाग्रंनिर्माल्यंमृतकस्यच ॥ ३९ ॥

तो वह शीघ्र अदृश्य होजाताहै तथा सब कार्य सिद्ध होतेहैं कालेमुर्गेकी पूंछका अग्रभाग मृतकका निर्माल्य ॥ ३९ ॥

काकनेत्रंचमरिचंपिष्ट्वाकार्यंचमूत्रकैः ॥
कलायार्द्धप्रमाणेनवटींकृत्वाप्रशोषयेत् ॥ ४० ॥

---

१ सोना, चांदी, ताम्बा । २ शंकरस्यच इति पाठः ।

कौएका नेत्र कालीमिर्च अश्वबला यह गोमूत्र के साथ पीसकर बेरकी बराबर इसकी गोली बनाकर सुखाले ॥ ४० ॥

तेनैवांजितनेत्रस्तुअदृश्योभवतिध्रुवम् ॥
कृष्णमार्जारांतरस्थंरक्तंसंगृह्यभावयेत् ॥ ४१ ॥

इससे नेत्रोंको आंजै तो अवश्यही अदृश्य होजाताहै काले बिल्लीका रक्त ग्रहणकर भावना देनेसे ॥ ४१ ॥

नक्तमालस्यतैलेनतत्रश्वेतार्कसूत्रजाम् ॥
वर्तिंप्रज्वाल्यवज्रस्यदलेसंगृह्यकज्जलम् ॥ ४२ ॥

नक्तमाल (करंज) तेलद्वारा यत्नपूर्वक श्वेतआककी कपासकी बत्ती बालकर वज्रवृक्ष (सेहुड) के पत्तोंसे काजर ग्रहणकर॥ ४२ ॥

तेनांजनेनमनुजस्त्वदृश्योभवतिध्रुवम् ॥
सुकृष्णंचैवमार्जारंमारयित्वाचतुष्पथे ॥ ४३ ॥

उसके आंजनेसे अवश्यही मनुष्य अदृश्य होजाताहै अथवा चौराहेमें कालीबिल्लीको वधकर ॥ ४३ ॥

प्रोक्षणंकारयित्वातुदिनानांपंचविंशतिः ॥
तत्संगृह्यप्रयत्नेनक्षालयेच्छीतवारिणा ॥ ४४ ॥

पचीस दिनपर्यन्त उसे प्रोक्षण करै अर्थात् ग्रहण कर शीतल जलसे धोवै ॥ ४४ ॥

यदस्थिचश्रोत्रभेदीस्याद्ग्राह्यंयत्नतोभयम् ॥
पूजयित्वामहाकालींगोरोचनसमन्वितम् ॥ ४५ ॥

यदि अस्थि श्रोत्रभेदी हो तो यत्नसे ग्रहण कर गोरोचनसे महाकालीकी पूजा जप करै ॥ ४५ ॥

---

१ बदरस्य दले इति पाठः ।

नकुलस्यतुपित्तेनभावयित्वाप्रपेषयेत् ॥
तद्वर्त्तितिलकादेवनरोऽदृश्योभवेद्ध्रुवम् ॥ ४६ ॥

उसे नौलेके पित्तेकी भावना देकर पीसे उसकी बत्तीसे तिलक करनेसे अवश्य ही मनुष्य अदृश्य होजाता है ॥ ४६ ॥

नृमांसंचशिवामांसंयत्नतोग्राहयेद्बुधः ॥
प्रथमंरजस्वलायाश्चरुधिरेणवटींकुरु ॥ ४७ ॥

मनुष्य और गीदडीका मांस यत्नसे ग्रहण करके प्रथम रजस्वला हुई स्त्रीके रुधिरसे उसकी वटिका बनावे ॥ ४७ ॥

त्रिलोहवेष्टितासातुमुखस्थादृश्यकारिणी ॥
कृष्णमार्ज्जारमुण्डेतुकृष्णगुंजांप्रवापयेत् ॥ ४८ ॥

चांदी तांबे अथवा सोनेसे मढकर उसे मुखमें रखनेसे मनुष्य अदृश्य होजाताहै कालीबिल्लीके मुखमें काली चौंटली बोवे ॥४८॥

तत्फलंवंदनस्थंहिसाक्षाददृश्यकारकम् ॥
कोकायानयनंवामंत्रिलोहेनप्रवेष्टयेत् ॥ ४९ ॥

उससे उत्पन्न हुआ उसका फल मुखमें रखनेसे मनुष्य अदृश्य होजाताहै कोयलका बायां नेत्र त्रिलोहसे वेष्टित कर ॥ ४९ ॥

सावटीमुखमध्यस्थाअदृश्यंकुरुतेध्रुवम् ॥
दिवाभीतस्यनयनंत्रिलोहेनप्रवेष्टितम् ॥ ५० ॥

वटी बनाय मुखमें रखनेसे प्राणी अदृश्य होजाताहै अथवा उल्लूका नेत्र चांदी सोने आदिसे मढकर ॥ ५० ॥

मुखस्थंकुरुतेऽदृश्यंयथेच्छंविचरेन्महीम् ॥
अक्षेचैवानुराधायांवन्दांराक्षसवृक्षकाम् ॥ ५१ ॥

मुखमें रखनेसे मनुष्य अदृश्य होजाताहै फिर जहां इच्छाहो वहां विचरे, अनुराधनक्षत्रमें रोहितक वृक्षका वन्दा ग्रहणकर ॥ ५१ ॥

मुखेप्रक्षिप्यचनरोअदृश्यःस्यान्नसंशयः ॥
शाखोटस्यचवन्दाकंनक्षत्रेमृगशीर्षके ॥ ५२ ॥

मनुष्य मुखमें रखनेसे अदृश्य होजाताहै इसमें सन्देह नहीं मृगशिरनक्षत्रमें शाखोट वृक्षका वन्दा ग्रहणकरै ॥ ५२ ॥

गृहीत्वापानपात्रेणअदृश्योजायतेनरः ॥
भरण्यांतुसमागृह्यवन्दांकार्पाससम्भवाम् ॥ ५३ ॥

अर्थात् इसे पानपात्रद्वारा ग्रहण करनेसे मनुष्य अवश्यही अदृश्य होजाताहै इसमें सन्देह नहीं भरणीनक्षत्रमें कपासका वन्दा लेकर५३

हस्तेबध्वाह्यदृश्यःस्यात्स्वात्यांवानिम्बवृक्षजाम् ॥
पिबेदुत्तरषाढायामशोकवृक्षसंभवाम् ॥ ५४ ॥

हाथमें बांधनेसे मनुष्य अदृश्य होजाताहै अथवा स्वातीनक्षत्रमें नीमका वन्दा ग्रहण करै अथवा उत्तराषाढमें अशोकवृक्षका वन्दा ग्रहण करै ॥ ५४ ॥

वन्दांतदाअदृश्यःस्यादश्विन्यांबिल्ववृक्षजाम् ॥
वन्दाकंवाकरेधृत्वाअदृश्योजायतेनरः ॥ ५५ ॥

इति अदृश्यकरणम् ।

वा अश्विनीनक्षत्रमें बेलके पेडका वन्दा लावै और हाथमें धारण करनेसे मनुष्य अदृश्य होजाताहै ॥ ५५ ॥

इति अदृश्यकरण ।

अथमृतसंजीवनी ।

मृतसंजीवनींविद्यांप्रवक्ष्यामिसमासतः ॥
लिंगमंकोलवृक्षाधःस्थापयित्वाप्रपूजयेत् ॥ ५६ ॥

संक्षेपसे मृतसंजीवनी विद्याको कहताहूं । ढेरेके वृक्षके नीचे शिवलिंगको स्थापन कर पूजाकरै ॥ ५६ ॥

नवंघटंचतत्रैवपूजयेल्लिंगसंनिधौ ॥
वृक्षंलिंगंघटंचैवसूत्रेणैकेनवेष्टयेत् ॥ ५७ ॥

और उन्हींके निकट नवीन कलश वा घटको स्थापन करके पूजन करै उस वृक्ष लिंग और घटको एकही सूत्रसे वेष्टित करै॥५७

चतुर्भिस्साधकैर्न्नित्यंप्रणिपत्यक्रमेणतु ॥
एवंद्विद्विदिनंकुर्य्यादघोरेणसमर्चयेत् ॥ ५८ ॥

चार साधकोंसे नित्य प्रणाम करके दो दिन बराबर यह विधान कर अघोरमंत्रसे शंकरका आराधन करै कहीं दो तीन दिन करना कहा है ॥ ५८ ॥

पुष्पादिफलपाकांतंसाधनंकारयेद्बुधः ॥
फलानिपक्वान्यादायपूर्वोक्तंपूरयेद्घटम् ॥ ५९ ॥

पुष्प फल पाकतक इस साधनको करे अर्थात् पके फल लाकर पूर्वोक्त घटको पूर्ण करै ॥ ५९ ॥

तद्घटंपूजयेन्नित्यंगंधपुष्पाक्षतादिभिः ॥
तुषवर्ज्जन्ततःकुर्य्याद्बीजानांवर्षयेन्मुखम् ॥ ६० ॥

और उस घटको नित्य गंध अक्षतसे पूजन करै और छुकलें रहित बीजोंको मुखपर ढकदे ॥ ६० ॥

तन्मुखेबृंहणंवृत्तंकिंचित्किंचित्प्रलेपयेत् ॥
विस्तीर्णमुखभागान्तःकुम्भकारकरोद्भवाम् ॥६१ ॥

और मुख वृद्धिमें किंचित् किंचित् लेप करै तथा कुम्हारके यहांसे बडे मुखका बर्तन लाय ॥ ६१ ॥

मृत्तिकांलेपयेत्तत्रतानिबीजानिरोपयेत् ॥
कुंडल्याकारयोगेनयत्नादूर्द्ध्वमुखानिवै ॥ ६२ ॥

उसपर मृत्तिका लेपन कर पश्चात् बीजोंको रोपण करे अर्थात् कुंडलीके आकार बोवे ॥ ६२ ॥

शुष्कंतंताम्रपात्रोर्द्धंभाण्डंदेयमधोमुखम् ॥
आतपेधारयेत्तैलंग्राहयेत्तंचरक्षयेत् ॥ ६३ ॥

और जब वह सूख जाय तब उसपर तांबेका पात्र रखकर नीचेको उसका मुख कर दे आतपमें रखकर उससे तेल ग्रहणकर उसकी रक्षा करै ॥ ६३ ॥

मासार्द्धंचैवतत्तैलंमासार्द्धंतिलतैलकम् ॥
नस्यन्देयंमृतस्यैवकालदष्टस्यतत्क्षणात् ॥ ६४ ॥
(अथवा) पुंशुक्रंपारदेतुल्यंतेनतैलेनमर्दयेत् ॥
नस्यंदेयंमृतस्यैकंकालदष्टस्यवाक्षणात् ॥ ६५ ॥
तत्कृत्वाजीव्यतेसत्यंगतेनापियमालयम् ॥
रोगापमृत्युसर्पादिमृतोजीवतिहिस्वयम् ॥
जीवमायातिनोचित्रंमहादेवेनभाषितम् ॥ ६६ ॥
पुष्यभास्करयोगेनगुडूचीमूलमाहरेत् ॥
कर्षमुष्णजलैःपीतोमृतेमृत्युहरोभवेत् ॥ ६७ ॥

आधा मासा यह तेल और आधा मासा तिलका तेल ग्रहणकर इनकी नास देनेसे कालरूपी राक्षसका काटा पुरुष जीवित होजाता है अथवा पुरुषका शुक्र पारा यह रस तेलमें मर्दन कर नास दे तो काल दुष्ट जीवित हो यमालयको गया अपमृत्यु तथा सर्पादिका काटा अच्छा होता है इसमें सन्देह नहीं यह महादेवजीने कहा है पुष्यनक्षत्रसे जब सूर्यका योग हो तब गिलोय की जड लावै यह आठ कर्ष जलके साथ लेनेसे मृत्युका भय दूर होजाता है ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

ॐअघोरेभ्योथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वतःसर्व
सर्वेभ्योनमस्तेरुद्ररूपेभ्यः॥ उक्तयोगानामयंमंत्रः ॥

इति मृतसंजीवनी ।

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने निधिदर्शनअंजनादिमृत्यु संजीविनीकथनंनामत्रयोदशोपदेशः ॥ १३ ॥

'ॐ अघोरेभ्योथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः' ॥ उक्त योगोंका यही मंत्र है ॥

इति मृतसंजीवनी ।

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पंडितज्वालाप्रसादमिश्रकृतभाषा टीकायां निधिदर्शन अंजनादिमृत्युसंजीवनीनामत्रयोदशोपदेशः ॥ १३ ॥

अथ विषनिवारणम् ।

शम्भुनोक्तंसमासेनविषंस्थावरजंगमम् ॥
कृत्रिमंयोगजंचैववृश्चिकाद्यंतुसम्भवम् ॥ १ ॥

शीवजीने जो संक्षेपसे स्थावर जंगम कृत्रिम योगसे उत्पन्न तथा वृश्चिकादि विष कहा है ॥ १ ॥

क्रमाल्लक्षणमेतेषांमंत्रयुक्तंवदाम्यहम् ॥
नामवक्ष्येविषाणान्तुशम्भुनाकीर्त्तितंपुरा ॥ २ ॥

क्रमसे उनके लक्षण और मंत्र वर्णन करताहूं तथा उन विषोंके नाम कहताहूं जो पहले शिवजीने कहे हैं ॥ २ ॥

दरदोवत्सनाभश्चमुस्तकंपुष्करंविषम् ॥
क्रूरंशठंकर्मठंचहारिद्रंकालकूटकम् ॥ ३ ॥

उनमें दरद (हिंगुल) वत्सनाभ मुस्तक पुष्कर क्रूर शठ कर्मठ हारिद्र कालकूट ॥ ३ ॥

इन्द्रबीजंचैत्रबीजंहारितंगालवंविषम् ॥
शृंगीकर्कटशृंगीचमेषशृंगीहलाहलम् ॥ ४ ॥

इन्द्रबीज चित्रबीज हरित गालवविष शृंगी काकडाशिंगी मेढाशिंगी हलाहलविष ॥ ४ ॥

शाकूटंरक्तशृंगीचह्यञ्जनंपुण्डरीककम् ॥
संकोचंमधुपाकंचरोहिणंमेदुरन्तथा ॥ ५ ॥
पंचविंशतिभिर्भेदैर्विज्ञेयंस्थावरंविषम् ॥
एतन्मध्येह्यतिक्रूरंसंकोचंकालकूटकम् ॥ ६ ॥

शक्तक रक्तशृंगी अंजन पुण्डरीक संकोच मधुपाक रोहिणमेदुर यह पच्चीस नामका स्थावरविष जानने चाहिये इनमें संकोच और कालकूट विष बड़ा तीक्ष्णहै ॥ ५ ॥ ६ ॥

भृंगींमुस्तंवत्सनाभंपंचमंतुविषाद्विषम् ॥
एषान्देहप्रविष्टानांशृणुलक्षणमुच्यते ॥ ७ ॥

भृंगी मुस्त वत्सनाभ विष पांचवां विषसे विषहै और देहमें प्रविष्टहुए विषोंका लक्षण कहताहूं सुनो ॥ ७ ॥

वान्तिर्मूर्च्छातिसारंचभ्रांतिश्शूलंचकम्पनम् ॥
कासश्वासौतीव्रदाहौलक्षयेद्गद्गदस्वरम् ॥ ८ ॥

उवान्तहोना मूर्च्छा अतिसार भ्रान्ति शूल कम्पा खांसी श्वास तीव्रदाह गद्गदस्वर होना यह विष खायेहुएके लक्षण हैं ॥ ८ ॥

पुत्रंजीवफलामज्जांशीततोयेनपेषयेत् ॥
भोजनेचांजनेपानेलेपैःसर्वविषापहम् ॥ ९ ॥

जियापोतेकी मींग शीतलजलके साथ पीसकर भोजन पान लेपन अंजनमें सब प्रकारके विष दूर करताहै ॥ ९ ॥

स्थावरंजंगमंक्रूरंकृत्रिमंयोगजंतथा ॥
निष्कमात्रंनसन्देहःकालदष्टोपिजीवति ॥ १० ॥

स्थावर जंगम कृत्रिम योगज विष यह एक निष्क उपरोक्त

औषधीके सेवन करनेसे जाते रहतेहैं बहुत क्या इसके प्रताप-
से कालदष्टभी जीवित होताहै ॥ १० ॥

शाड्वलंटंकणंतुत्थंकट्फलंरजनीवचा ॥
नरमूत्रेणसंपीत्वाएकैकन्तुविषंहरेत् ॥ ११ ॥

शाड्वल शुद्ध सुहागा तृतिया कट्फल हलदी वच यह मनुष्यके मूत्रसे पीस एक एक विषको दूर करते हैं ॥ ११ ॥

समूलपत्रांसर्पाक्षींतथैवदेवदालिकाम् ॥
गिरिकर्ण्याश्चवामूलंनरमूत्रेणपूर्ववत् ॥ १२ ॥

पत्ते जड़के सहित सहदेई और देवदाली अथवा विष्णुक्रान्ताकी जड़ मनुष्यके मूत्रसे पूर्ववत् पीसकर ॥ १२ ॥

त्रिकटुंदेवदालिंचनस्येसर्वविषापहम् ॥
ब्रह्मदंडीयमूलंतुमधुनासहभक्षयेत् ॥ १३ ॥

वा त्रिकुटा देवदाली इनको पीसकर नास लेनेसेभी सब विष दूर होजाते हैं अथवा ब्रह्मदंडीकी जड़मधुके सहित भक्षण करे॥१३॥

श्वेतांकोलस्यमूलंतुमुखस्थेतिलकेथवा ॥
मुखस्थैरण्डमूलंवाछायाशुष्कंविषापहम् ॥ १४ ॥

अथवा श्वेतअंकोलकी जड मुखमें रखनेसे अथवा तिलक करनेसे अथवा छायामें सुखाई अंडकी जड मुखमें रखनेसे विष दूर करती है ॥ १४ ॥

टंकणंदेवदालिंचजलैःपानेविषापहम् ॥
नीलसर्पस्यपुच्छन्तुकृकलासस्यपुच्छकम् ॥ १५ ॥

सुहागा देवदाली (घघरबेल) जल और पानमें देनेसे विषकी दूर करनेवालीहै नीले साँपकी पुच्छ और गिरगटकी पूंछ ॥ १५ ॥

ताम्रेणवेष्टितंकृत्वामुद्रिकांतांचधारयेत् ॥
तयास्पृष्टजलंपीतंस्थावरंजंगमंहरेत् ॥ १६ ॥

ताम्बेसे लपेट मुद्रिका बनाय हाथमें धारणकरै तो इसका स्पर्श किया जल पान करनेसे स्थावर जंगम विष दूर होजाता है ॥ १६ ॥

मंत्र–आतरथाकीयातरथाश्लातोहातेउपजीलोवृक्षमुंच चुलुकरपापियोसिंदूरसावाणीकालकूटविषश्रीगोरक्षे रवाणीमुखेदिलेहयेअमृतवाणीविषखाउविषजारोवि षकरोतिभरविषुराहिआछेत्रिदशरईश्वरमहादेवेरआ ज्ञागोरक्षेरवाणी ॥ सिन्दूरसावाणीकालकूटविषशरी रमध्येहयापानीश्रीगोरक्षेरआज्ञा ॥२॥ खेदायगुरुआ दमसिखआमुकरिकान्देनाहीकालकूटविष २ महादे वेरआज्ञागोरक्षेरवाणीकालकूटविषशरीरमध्येहया पानीकालकूटविषदष्टिहन २ ॐपाणां । मंत्राभ्यु क्षितंविषंमंत्रेणवारत्रयमभिमंत्रितंभक्षयेत् ॥ यदिकिं चित्तथापिविक्रियतेतर्हिंचतुर्थमंत्रेणवारत्रयमभिमंत्र येत् ॥ जलवारत्रयंगंडूषमात्रेपयम् ॥

श्लोक–भूनागसत्वसंजातांमुद्रिकांधारयेत्करे ॥
नतस्याक्रमतेसत्यंविषंस्थावरजंगमम् ॥ १७ ॥

मंत्र–'आतरथाकी याथरथा इलाता हारत उपजीले वृक्षमुजि चलुक चिजा पिजो सिन्दूर सारणी कालकूट विष शरीरमध्ये हयापानी श्रीगोरक्षेर आज्ञा ॥ विशाखा विषाजारो विषाकरो भर विषहरिजाक्षे त्रिदशे ईश्वर महादेवेर आज्ञा गोरक्षेर वाणी सिन्दूर सारवाणी कालकूट विष शरीरमध्ये हयापानी' इसमंत्रसे विष खायेहुएके मुखमें तीन वार मंत्र पढकर जलदे और जो कुछ विकार किया होय तो चारवार मंत्र पढकर तीनवार अभिमंत्रित कर कुल्ले

मात्र जलपान करनेसे विष दूर होजायगा गण्डूषपदी और भूनागके सत्वकी मुद्रिका हाथमें धारण करनेसे स्थावर जंगम विष इसको आक्रमण नहीं करसकताहै ॥ १७ ॥

तत्स्पृष्टोदकपानेनविषंसर्वंविनश्यति ॥
शिरीषबन्धकंग्राह्यंरेवत्यांचन्दनान्वितम् ॥ १८ ॥

तथा इसीका स्पर्श किया जलपान करनेसे सब प्रकारके विष नाश होजातेहैं और जब रेवतीनक्षत्रमें चन्द्रमा होतो शिरसका वन्दा वा आक लावे ॥ १८ ॥

तद्घृष्टंमर्दितंगात्रेतस्यांगेविषनाशनम् ॥
वराहगोधानकुलशशकुक्कुटपित्तिकम् ॥ १९ ॥

उसको घिसकर शरीरमें मलनेसे विष नाश होताहै शूकर गोय नौला खरगोश कुत्ता सबका विषनाश होताहै ॥ १९ ॥

श्वेतायागिरिकर्ण्याश्चफलमूलंविपेषयेत् ॥
पानेसर्वविषंहंतिमृतोप्युत्तिष्ठतेक्षणात् ॥ २० ॥

श्वेत विष्णुक्रान्ताके फल और मूल दोनोंको पीसले इसके पान करनेसे सब विष दूर होकर मृतक पुरुष भी उसी समय उठ बैठताहै ॥ २० ॥

नाम्नाचामृतयोगोयंरुद्रेणाभाषितःपुरा ॥
पणवंपटहंचैवह्यनेनैवप्रलेपयेत् ॥ २१ ॥

यह अमृतयोग प्रथम शिवजीने कहाहै पणव और बाजेपर इसीका लेप करै ॥ २१ ॥

मृतोपिविषयोगेनश्रुत्वावाद्यंप्रबुध्यते ॥
श्वेतापराजितामूलंपीत्वादुग्धेनमानवः ॥ २२ ॥

विषसे भरा हुआ इस योगसे बाजेको सुनकर जाग उठेगा श्वेत अपराजिताकी जड दूधके साथ पीसकर पान करनेसे ॥ २२ ॥

स्थावरंचविषंहंतिउदरस्थंनसंशयः ॥
ससिंधुकांजिकंपीत्वास्थावरादिविषंहरेत् ॥ २३ ॥

उदरमें स्थित स्थावर विष दूर होता है इसमें संदेह नहीं सेंधा कांजीको पीसकर स्थावरविष जाता रहता है इसमें सन्देह नहीं ॥ २३ ॥

ॐनमोभगवतेउड्डामरेश्वरायकुंचितामृतमर्चतजटा यठःठःस्वाहा ॥ अनेनसर्वौषधमभिमंत्रयेत् ॥

इतिस्थावरविषनिवारणम् ।

मंत्र 'ओंनमो भगवते उड्डामरेश्वराय कुंचितामृतमर्चतजटाय ठःठः स्वाहा' इससे सब औषधियोंको अभिमंत्रित करै ॥

इति स्थावरविषनिवारण ।

अथ सर्पविषनिवारणम् ।

जातीन्नांनामरूपंचजंगमानामिहोच्यते ॥
ब्राह्मणाःश्वेतवर्णास्युःक्षत्रियारक्तवर्णकाः ॥ २४ ॥

अब जंगमविषकी जाति और स्वरूप कहते हैं श्वेतवर्णका सर्प ब्राह्मण लालवर्ण का क्षत्रिय ॥ २४ ॥

वैश्यास्तुपीतवर्णाश्चकृष्णवर्णास्तुशूद्रकाः ॥ २५ ॥

पीतवर्णका वैश्य और कृष्णवर्णका शूद्र होताहै ॥ २५ ॥

ॐमेघमालेधिमालेहरहरविषवेगहाहाहहासवारिहंअं वेलम्बेसर्वविषनाशिनीमहामायेहूंहूंलंसःठःठःस्वाहा जः जः जः सर्वविषनाशिनीमेघमालानामविद्या ॥ ॐ प्रौंठः नीलकंठायस्वाहाॐनमोभगवतिरक्तांगेरक्तलो चनेकपिलजटेकपिलशरीरेकट्टकट्टकहकहभंजभंज

शूलाग्रपाणिउग्रचण्डतपैंमहातपैंकृष्णेअतिकृष्णेइदं
मानुषंशरीरमनुप्रविश्य भ्रम भ्रम भ्रामय २ नृत्य २
बहुरूपेविलासिनिभक्तेकृष्णांगीपूरय २ ऽवेशय २
विश्वरूपिणीरक्तपाट्टिरुद्रोज्ञापयति-हूंफट् ठःठःएषा
स्वास्थावेषाविद्या ॐ नमोभगवतेपार्श्वयक्षायह्रीं २
-हूं २ धेनु २ कंप २ पुराणंदष्ट्वामावेशय २ स्वाहा ॥
यह सर्पविषनाशिनी विद्या है ॥

अनन्तःकुलिकश्चैववासुकीशंखपालकः ॥
तक्षकश्चमहापद्मःकर्कोटःपद्मएवच ॥
कुलनागाष्टकंह्येतेतेषांचिह्नंशिवोदितम् ॥ २६ ॥

अनन्त कुलीक वासुकी शंखपालक तक्षक महापद्म कर्कोटक पद्म यह आठ कुलनाग हैं इनके चिह्न शिवजीने कहे हैं ॥ २६ ॥

श्वेतपद्ममनंतस्यमूर्ध्निपृष्ठेचदृश्यते ॥
शंखंशेषस्यशिरसिवासुकेःपृष्ठउत्पलम् ॥ २७ ॥

अनन्तनागके शिर और पीठमें श्वेत पद्म विराजमान होताहै शेषके शिरपर शंखका चिह्न वासुकीके पृष्ठपर कमलका चिह्न होताहै ॥ २७ ॥

त्रिनेत्रांकस्तुकर्कोटस्तक्षकःशशकांकितः ॥
ज्वलत्रिशूलचन्द्रार्द्धंशंखपालस्यमूर्द्धनि ॥ २८ ॥

कर्कोटक नागपर त्रिनेत्रका चिह्न तक्षकपर शशका अंक शंखपालके शिरपर जलते हुए त्रिशूलका और अर्ध चन्द्रका चिह्नहै २८

राजवत्तुसमोबिन्दुर्महापद्मस्यपृष्ठतः ॥
पद्मपृष्ठेचदृश्यन्तेसुरक्ताःपंचबिन्दवः ॥ २९ ॥

महापद्मकी पीठपर राजाकी समान बिन्दु होते हैं पद्मनागकी पीठपर लाल पंचबिन्दु होते हैं इन लक्षणोंसे इन्हें पहचाने ॥ २९॥

एवंयोवेत्तिजात्यादीन्नामबिन्दुंशिवोदितम् ॥
तस्यमंत्रौषधान्येवसिध्यन्तेनान्यथापुनः ॥ ३० ॥

इस प्रकार शिवके कहे नाम बिन्दु जाति आदिको जो जानता है उसीको मंत्र औषधी सिद्ध होती है अन्यथा नहीं ॥ ३० ॥

दूरतस्तस्यसर्पाद्याःपतंतिगरुडंयथा ॥
कालाख्यानामताश्चिह्नंशिवेनोक्तंयथापुरा ॥ ३१ ॥

सर्पादि उससे ऐसे दूर रहतेहैं जैसे गरुडसे, यह वार्ता पूर्वमें शिवने कही है ॥ ३१ ॥

ज्ञेयोदशविधोदंशोभुजंगानांभिषग्वरैः ॥
भीतोन्मत्तःक्षुधार्तश्चआक्रान्तोविषदर्पितः ॥ ३२ ॥

सर्पोंका दंश दशविधिका होताहै ऐसा वैद्योंको जानना उचित है भीत उन्मत्त क्षुधार्दित आक्रान्त विषदर्पित ॥ ३२ ॥

आहारेक्षुःक्षुधार्तश्चस्वस्थानंपरिरक्षणे ॥
नवमोवैरिसन्धानोदशमःकालसंज्ञकः ॥ ३३ ॥

आहारकी इच्छामें भूखा अपने स्थानकी रक्षामें नवमा वैरिसंधान दशमा कालसंज्ञक है ॥ ३३ ॥

उद्यानेजीर्णकूपेचवटश्रृंगाटचत्वरे ॥
शुष्केवृक्षेश्मशानेचप्लक्षश्लेष्मातशिग्रुके ॥ ३४ ॥

बगीचे में जीर्णकूपमें वट शृंगाट चौराहा सूखेवृक्ष श्मशानमें शेलुवृक्ष सहिजनेमें ॥ ३४ ॥

देवतायतनागारेतथाचशाकवृक्षके[1] ॥
एषुस्थानेषुयेदष्टास्तेनजीवंतिमानवाः ॥ ३५ ॥

---

१ रसाले इति वा पाठः (आम)

देवताओंके स्थानमें शाकवृक्षमें इतने स्थानोंमें जो काटेगये हैं वे मनुष्य जीवित नहीं होसकते हैं शाक आकवृक्ष वा सेगुन वृक्ष ३५

भ्रूमध्येचाधरेमूर्ध्निजंघेनेत्रेभ्रुवौतथा ॥
ग्रीवाचिबुककंठेषुकरमध्येचतालुके ॥ ३६ ॥

भ्रूमध्य अधर (होंठ) शिर जंघा नेत्र दोनों भौं गर्दन ठोडी कंठ हथेली तालु ॥ ३६ ॥

स्तनयोःसंधयोःकुक्षौलिंगंवृषणनाभिषु ॥
मर्मसंधिषुसर्वत्रसर्पदष्टोनजीवति ॥ ३७ ॥

दोनों स्तनोंकी संधि कोख लिंग अण्ड वृषण नाभि सब मर्मकी संधियोंमें सर्पका काटाहुआ नहीं जीता है ॥ ३७ ॥

रवौभौमेशनेर्वारेसर्पदष्टोनजीवति ॥
अष्टमीपंचमीपूर्णाअमावास्याचतुर्दशी ॥ ३८ ॥

रवि मंगल और शनिवारको सर्पकाटा नहीं जीताहै अष्टमी पंचमी पूर्णा अमावास्या चतुर्दशी ॥ ३८ ॥

अशुभास्तिथयःप्रोक्तास्सर्पदष्टोनजीवति ॥
कृत्तिकाश्रवणामूलंविशाखाभरणीतथा ॥ ३९ ॥

यह अशुभ तिथि हैं इनमें सर्पका काटा नहीं जीताहै कृत्तिका श्रवण मूल विशाखा भरणी ॥ ३९ ॥

पूर्वास्तिस्रस्तथाचित्राश्लेषाभेषुनजीवति ॥
मध्याह्नेसंध्ययोश्चैवह्यर्द्धरात्रेनिशात्यये ॥ ४० ॥

तीनों पूर्वा चित्रा आश्लेषा इनमें काटा हुआ नहीं जीताहै मध्याह्न दिनरातकी संधि अर्धरात निशाके अवसान होनेमें ॥ ४० ॥

कालवेलावारवेलासर्पदष्टोनजीवति ॥
सर्पस्यतालुमध्येतुयोदन्तोकुशसन्निभः ॥ ४१ ॥

और कालवेला वारवेला इसमें सर्पसे काटा हुआ नहीं जीताहै सर्पके तालुमूलमें अंकुशकी समान एक दाँत है ॥ ४१ ॥

विमुंचतिविषंघोरंतेनायंकालसंज्ञकः ॥
चक्राकृतिश्चवादंशःपक्कजम्बूफलाकृतिः ॥ ४२ ॥

उसीमेंसे यह कालसंज्ञक घोर विषको त्यागताहै जहां सर्प काटै उस स्थानमें चक्राकार हो जाय या पकी जामुन सा हो जाय ॥४२॥

सुनीलःश्वेतरक्तोवात्रिदशोपिनजीवति ॥
स्रवेन्मूत्रपुरीषंवाहृच्छूलंछर्दिदाहकृत् ॥ ४३ ॥

नीलवर्ण श्वेत अथवा लालवर्ण होनेसे देवताभी उसकी रक्षा नहीं करसकते नहीं जीता है जिसका मूत्र निकलने लगे हृदयमें शूल दाहहो वह नहीं जीता है ॥ ४३ ॥

सानुनासिकयावाक्यंसंधिभेदमथापिवा ॥
ताम्राभंनेत्रयुगलमथवाकाकनीलकम् ॥ ४४ ॥

जिस्के गुनगुना शब्द संधिभेद होता है जिसके दोनों नेत्र ताम्रवर्ण अथवा काककी समान नील वर्ण होजांय ॥ ४४ ॥

वियोगोदेवदष्टाख्यंतंविद्यात्कालपाशगम् ॥
सेचनादुदकेनांगेशीतलेनमुहुर्मुहुः ॥ ४५ ॥

यह दैवका वियोग है जान लेना कि, यह कालपाशको प्राप्त है जिसके शरीरमें शीतल जल छिडकनेसे ॥ ४५ ॥

रोमांचोनभवेद्यस्यतंविद्यात्कालपाशगम् ॥
वेदनादंशमूलेवानष्टदंशोऽथवाभवेत् ॥ ४६ ॥

रोमांच न हों उसको कालपाशमें प्राप्तजानो जिसके दंशमें वेदना हो वा जिसने दंशमूल न देखाहो ॥ ४६ ॥

तत्क्षणात्तीव्रदाहश्चसोपिकालेनभक्षितः ॥
सोमंसूर्य्यंयदादीप्तंनपश्यतिचतारकम् ॥ ४७ ॥

और जलन महादाह विसंज्ञाहो उसेभी कालसे भक्षित जानो जब चन्द्रमा सूर्य और दीप्तिमान् तारोंको न देखै ॥ ४७ ॥

दर्पणेसलिलेवाथघृततैलेनवामुखम् ॥
नपश्येद्वीक्ष्यमाणोपिकालदष्टोनसंशयः ॥ ४८ ॥

तथा घृत तेल जलमें मुखकी परछाँई जिसको न दीखै उसेभी निःसन्देह कालका काटाहुआ जानो ॥ ४८ ॥

ज्ञात्वाकालमकालंचपश्चाद्भेषजमाचरेत् ॥
सर्पदंशेविषंनास्तिकालदष्टोनजीवति ॥ ४९ ॥

काल अकालको जानकर औषधी करनी चाहिये कारण कि, सर्पके काटेमें विष नहीं है, परन्तु जिसको काल काट ले वह नहीं जीता है ॥ ४९ ॥

तस्यतत्रापिकर्त्तव्याचिकित्साजीवनावधिः ॥
रसदिव्यौषधीनान्तुप्रभावात्कालजिद्भवेत् ॥ ५० ॥

तौभी प्राणीके जीनेके निमित्त चिकित्सा करै रस मात्रा तथा औषधियोंके प्रभावसे काल जीता जाता है ॥ ५० ॥

सूतकंगंधकन्तुल्यंटंकणंरजनीसमम् ॥
देवदाल्याद्रवैर्मर्थ्यंदिनंनिष्कन्तुभक्षयेत् ॥ ५१ ॥

शोधा पारा गंधक बराबरले तथा हलदी और सुहागा बराबरले इसे देवदालीके रसमें युक्तकर प्रतिदिन एक कर्ष ले ॥ ५१ ॥

कालशैलाशनिर्नामरसःसर्वविषापहः ॥
नरमूत्रंपिबेच्चानुकालदष्टोपिजीवति ॥ ५२ ॥

यह बनाले इस रसका नाम काल शैलाशनि है यह सब विषोंका हरनेवाला है इसको मनुष्यके मूत्रके साथ लेनेसे कालका काटा-भी जीवता है ॥ ५२ ॥

श्वेतापराजितामूलंदेवदालीयमूलकम् ॥
वारिणापेषितंनस्यंकालदष्टोपिजीवति ॥ ५३ ॥

श्वेतविष्णुक्रान्ताकी जड़ देवदाली (बडी तोरई)की जड़ जलमें पीस नास देनेसे कालका काटाभी जी सकता है ॥ ५३ ॥

दधिमधुनवनीतंपिप्पलीशृंगवेरं
मरिचमपिचकुष्टंचाष्टमंसैधवंस्यात् ॥
यदिदशतिसरोषस्तक्षकोवासुकिर्वा
यमसदनगतस्यादानयेत्तत्क्षणेन ॥ ५४ ॥

दही शहत मक्खन पीपल अदरख कालीमिरच कूट इनसे अठवां भाग सैंधा इनका सेवन करनेसे साक्षात् तक्षक और वासुकीका काटाभी क्षणमें मृत्युसे लौटि आता है ॥ ५४ ॥

कटुकीमुशलीमूलंपीत्वातोयैर्विषापहम् ॥
वृश्चिकावीरणामूलंलेपात्सर्वविषापहम् ॥ ५५ ॥

अथवा कुटकी और ताल मुशलीकी जड जलके साथ पीनेसे विष दूर होजाता है वृश्चिकाली वा वीरणकी जड़का लेप करनेसे सर्पविष दूर होता है ॥ ५५ ॥

वारिणाटंकणंपीतमथवार्कस्यमूलकम् ॥
सैधवंवानृमूत्रेणप्रत्येकंविषनाशनम् ॥ ५६ ॥

जलके साथ सुहागा पीनेसे अथवा आककी जड़ पीनेसे अथवा मनुष्यके मूत्रसे सैंधा पीसकर पान करनेसे विष नाश होजाताहै५६

इन्द्रवारुणिमूलंतुशुक्लाचाथपुनर्नवा ॥
वंध्याककोंटकीमूलंमुशलीशिखिमूलकम् ॥ ५७ ॥

इन्द्रायणकी जड श्वेत पुनर्नवा वंध्या कर्कोटकीकी मूली तालमूली अपामार्गकी मूली ॥ ५७ ॥

तंडुलोदकपानेनप्रत्येकंविषनाशनम् ॥
गोक्षीरैरजनीकुष्टंक्काथपानंविषापहम् ॥ ५८ ॥

यह प्रत्येक चावलके जलके साथ पान करनेसे विष दूर होता है अथवा हलदी और कूट इनका काढाकर गौके दूधमें मिलाकर पीनेसे विष दूर होताहै ॥ ५८ ॥

भृंगराजस्यमूलंतुत्रिशूलिन्यास्तुमूलकम् ॥
तोयैर्वातण्डुलीमूलंप्रत्येकंविषजिद्भवेत् ॥ ५९ ॥

भांगरेकी जड़ त्रिशूलिनी (शिवलिंगी[1]) की जड़ अथवा चौलाईकी जड़ जलके साथ पीनेसे विष हरतीहै चावलोंके जलके साथ प्रत्येक वस्तु विषहर होतीहै ॥ ५९ ॥

सोमराजीबीजचूर्णंसकृद्गोमूत्रभावितम् ॥
चराचरविषघ्नंतन्मृतसंजीवनंपिबेत् ॥ ६० ॥

सोमराजीके बीजोंका चूर्ण कर एकबार गोमूत्रमें भावित करके दे तो यह चर अचरका विषनाशक साक्षात् मृतसंजीवन है ॥ ६० ॥

कटुतुंब्युद्भवंमूलंसूक्ष्मंगोमूत्रपेषितम् ॥
छायाशुष्कवटीमूत्रैःपानैर्लेपैर्विषापहा ॥ ६१ ॥

कड़वी तूंबीकी जड़ एकबार गोमूत्रमें भावितकर इसकी वटी बनाय छायामें सुखाले यह वटी गोमूत्रके साथ पान करने वा लेपन करनेसे विष दूर करसकतीहै ॥ ६१ ॥

गोमूत्रैर्नरमूत्रैर्वापुराणेनघृतेनवा ॥
हरिद्रापानमात्रेणविषंहन्तिचराचरम् ॥ ६२ ॥

गोमूत्रसे वा नरमूत्रसे वा पुराने घृतमें हलदीको मिलाकर पान मात्रसे स्थावर जंगम का विष दूर होजाताहै ॥ ६२ ॥

---

१ शिवलिंगी-औषधी ।

दशवर्षात्परंसर्पिःपुराणमितिकथ्यते ॥
यदिसर्पविषार्तानांसर्वस्थानगतंविषम् ॥ ६३ ॥

दशवर्षमें घृत पुराना होजाताहै यदि सर्पादिका विष सब शरीरमें प्राप्त होगया हो तो ॥ ६३ ॥

गोक्षीरैरजनीक्काथंपिबेत्सर्वविषापहम् ॥
हरिद्राकुष्ठमध्वाज्यंभुक्तंसर्वविषापहम् ॥ ६४ ॥

गौके दूधसे हलदीका क्काथ पीनेसे सब विषका हरने वालाहै हलदी कूट शहत घृत यह खानेसे सब विष दूर होतेहैं ॥ ६४ ॥

मूलन्तुश्वेतगुंजायावक्त्रस्थंविषनाशनम् ॥
पुष्योद्धृतंतस्यमूलन्नस्येनविषनाशनम् ॥ ६५ ॥

श्वेतचौंटलीकी जड मुखमें रखनेसे विष दूर होताहै पुष्यनक्षत्रमें उखाडी हुई इसीकी जडकी नास लेनेसे विषका नाश करने वालाहै ॥ ६५ ॥

पाठाद्रवेणतन्मूलंपानेस्यात्कालकूटजित् ॥
अर्कमूलेनसंलिप्यदंशंविषहरंमहत् ॥ ६६ ॥

पाठाके साथ उसी जड पान करनेसे कालकूटको जीतनेवाली है आककी जडके साथ इसीका लेप करनेसे सर्पका विष दूर होताहै ॥ ६६ ॥

रक्ताचित्रेन्द्रगोपाभ्यांतथाविषविनाशकम् ॥
सर्पंहरितवर्णञ्चपुच्छाग्रेपाटयेच्छिरः ॥ ६७ ॥

लालचीता वीरबहूटी यहभी विषका नाश करनेवालीहै हरितवर्ण सर्पकी पूंछ काटले और शिर काटले इसे शोध सुखा ले ॥ ६७ ॥

शुक्लंकृष्णंपृथक्कार्य्यंनस्यंसर्वविषापहम् ॥
शुक्लंशुक्लेदक्षिणांगेकृष्णंकृष्णेचवामके ॥ ६८ ॥

शुक्ल कृष्ण इनकी पृथक् नास लेनेसे सबप्रकारका सर्पविष दूर होजाताहै शुक्लको शुक्ल दक्षिण अंगमें और कृष्णको कृष्ण वाम अंगमें न्यास करै ॥ ६८ ॥

मृतसंजीवनंह्येतत्कालदष्टोपिजीवति ॥
तिक्तकोशातकीक्काथंमध्वाज्यसंयुतंपिबेत् ॥ ६९ ॥

यह मृतसंजीवन है इसके प्रयोगसे कालका काटाहुआभी जीताहै कुड़ा झिमनीलताका काढा घृत शहतके साथ पीनेसे ॥ ६९ ॥

तत्क्षणाद्वमयेद्यस्तुविषयोगाद्विमुंचति ॥
कटुकीजम्बुमूलंवातक्राम्लैर्वापिबेज्जलम् ॥ ७० ॥

तत्काल वमन होनेसे विषके संयोगसे छूट जाताहै कुटकी और जामुनवृक्षकी मूल तक्र और अम्ल पदार्थोंके साथ पीसकर जलसे पिये ॥ ७० ॥

तत्क्षणाद्वमतेशीघ्रंविषयोगाद्विमुच्यते ॥
राजवृक्षत्वचंग्राह्यंशुक्लंकृष्णम्पृथक्पृथक् ॥ ७१ ॥

तो उसी समय वमन करनेसे विषके संयोगसे छूट जाता है अमलतासवृक्षकी छाल ग्रहण करे जो शुक्ल और कृष्ण हों इनको पृथक्पृथक् ग्रहण करे ॥ ७१ ॥

शुक्लवृक्षेतुशुक्लान्तांचतुर्विंशतिभिःसह ॥
मरिचैःपानंनिष्ठस्यकृष्णेकृष्णत्वचंतथा ॥
पीत्वातैर्निर्विषोदष्टःकथितंहरमेखले ॥ ७२ ॥

धववृक्षमें शुक्ल छालको चौवीस पूर्ण दक्षिणी मिरचोंके साथ पान करै और कृष्ण मिरचोंमें काली छालको पीनेसे निर्विष हो जाता है ऐसा हरमेखलामें कहा है ॥ ७२ ॥

कुंकुमालक्तकंलोध्रंशिलाचैवाथरोचना ॥
गुटिकालेपनाद्धंतिविषंस्थावरजंगमम् ॥ ७३ ॥

कुमकुम लाख लोध मनशिला गोरोचन इनकी गुटिका बनाय लेप करै तो स्थावर जंगम सब प्रकारका विष दूर होजाताहै कुम कुम रोली आलक्त महावर ॥ ७३ ॥

द्वेहरिद्रेशिलातालंकुंकुमंकुष्ट[1]कंजलैः ॥
गुटिकालेपमात्रेणविषंहन्तिमहद्भुतम् ॥ ७४ ॥

दोनों हलदी मनशिल ताल कुमकुम कूट (वा मोथा) जल इनकी गुटिका बनाय लेप करनेसे स्थावर जंगम विष दूर होताहै ॥७४ ॥

पूतीकरंजबीजस्यमज्जानंकारवेल्लजम् ॥
पिष्ट्वापिबेत्ससर्पिष्कंनिहन्तिनात्रसंशयः ॥ ७५ ॥

पूती करंजके बीजकी मींग करेली इनको पीसकर घीके साथ पान करै तो सर्व विष अवश्य दूर होते हैं इसमें सन्देह नहीं॥७५॥

पिप्पलीमरिचंकुष्टंगृहधूमंमनःशिलाम् ॥
तालकंसर्षपाःश्वेतागवां[2]पित्तेनलोडयेत् ॥ ७६ ॥

पीपल कालीमिर्च कूठ घरका धूम मनशिल हरताल सफेद सरसों यह गोपित्तके (वा गौके दूधके) साथ मिलावै ॥ ७६ ॥

गुटिकांजननस्येनपानाभ्याञ्जनलेपनात् ॥
तक्षकेणापिदष्टस्यनिर्विषीकुरुतेक्षणात् ॥ ७७ ॥

इसकी गुटिका बनाय अंजन और नास करे तथा पान करे वा लेप करे तो तक्षकका काटा हुआ भी क्षणमात्रमें निर्विष होजाता है ॥ ७७ ॥

[3]पथ्याक्षौद्रंमरीचंचपत्रंहिंगुशिलावचा ॥
जलेनगुटिकांनस्येत्कालदष्टोपिजीवति ॥ ७८ ॥

---

१ मुस्तकं इति वा पाठः (मोथा)। २ गवांक्षीरेण लोडयादिति वा पाठान्तरम् । ३ पत्रंपलमिति वा पाठः ।

हरड शहत कालीमिर्च तेजपात हिंगु मनशिल वच इनकी गुटिका कर जलके साथ नास लेनेसे कालका काटाहुआभी जीवित हो जाता है ॥ ७८ ॥

अश्वगंधामेघनादोगोमूत्रंमहिषाक्षकम् ॥
गृहधूमेनवालेपःशिरःकंठविषंहरेत् ॥ ७९ ॥

असगंध चौलाईकी जड़ गोमूत्र भैंसका मूत्र गृहधूम इनका लेप शिर और कंठ तक प्राप्त हुए विषको दूर करता है ॥ ७९ ॥

पंचांगमश्वगंधायाछागमूत्रेणपेषयेत् ॥
लेपपानेनसन्देहोनानाविषविनाशनम् ॥ ८० ॥

असगंधका पंचांग छागके मूत्रसे पीसकर इसका लेप और पान करनेसे नाना प्रकारके विष नाश होजाते हैं ॥ ८० ॥

शिलाहिंगुवचाव्योषमभयात्वक्चपत्रकम् ॥
नस्येवासुकिदष्टस्यनिर्विषंशीतवारिणा ॥ ८१ ॥

मनशिल हिंगु वच सोंठ मिर्च पीपल हरड़की बकली तज तेजपात इनकी नास लेनेसे वासुकीका काटा हुआ ठंडे जलके सहित नाश लेनेसे निर्विष होजाता है ॥ ८१ ॥

पुत्रजीवफलान्मज्जागवांक्षीरेणपेषयेत् ॥
लेपनांजननस्येनकालदष्टोपिजीवति ॥ ८२ ॥

जियापोतेके फलकी मींग गौके दूधसे पीसे उसके लेप अंजन और नाससे कालका काटा हुआ भी जी जाताहै ॥ ८२ ॥

कृष्णधत्तूरमूलस्यचूर्णंग्राह्यंपलोन्मितम् ॥
करंजतैलकर्षेणवटींकृत्वातुधारयेत् ॥ ८३ ॥

कालेधतूरेकी जडका एकपल चूर्ण लेकर करंजके तेलसे काली वटी बनाय धरै ॥ ८३ ॥

जंबीररस्यरसैःपीत्वारौद्रीविषनिवारणम् ॥
लज्जालुमूलंनील्यांवामूलंस्वच्छेनवारिणा ॥ ८४ ॥

उसे जम्बीरीके रससे पिये तो कठिन विष नाश होजाताहै लज्जा-वन्तीकी जड़ अथवा नीली की जड़ स्वच्छ जलसे पीस ॥ ८४ ॥

पीत्वारौद्रीविषंहंतिलेपाद्भुंजाबलांततः ॥
गृहधूमंहरिद्रेद्वेसमूलंतन्दुलीयकम् ॥ ८५ ॥

पीनेसे महाविष और चौंटली खरैंटीके लेपन करनेसे भी सर्पका विष दूर होताहै घरका धुआं दोनों हलदी चौंलाईकी जड ॥ ८५ ॥

अपिवासुकिनादष्टःपिबेद्दधिघृतान्वितम् ॥
तन्दुलीयकमूलन्तुपीतंतंदुलवारिणा ॥ ८६ ॥

दधि और घीके साथ पीनेसे वासुकीका काटा हुआभी निर्विष होजाताहै चौंलाई की जड़ चावलके जलके साथ पीनेसे ॥ ८६ ॥

तक्षकेनापिदष्टस्यनिर्विषंकुरुतेध्रुवम् ॥
कुलिकंमूलनस्येनकालदष्टोपिजीवति ॥ ८७ ॥

तक्षकका काटाहुआभी क्षणमें निर्विष होजाताहै कोकिला-वृक्षकी जड़के नास लेनेसे कालका काटाभी जीताहै ॥ ८७ ॥

ॐआदित्यचक्षुषादष्टःदष्टोऽहंहरविषंस्वाहा ॥
अनेनमंत्रेणोक्तयोगानामभिमंत्रयेत् ॥
अपराजितामूलन्तुघृतेनत्वग्गतंविषम् ॥
पयसारक्तगंहान्तिमांसगंकुष्टचूर्णतः ॥ ८८ ॥

'ॐ आदित्य चक्षुषा दष्टः दष्टोऽहं हर विषं स्वाहा' इस मंत्रसे पिछले कहे योगोंको अभिमंत्रित करै अपराजिताकी जड़ घृतसे युक्त पान करनेसे त्वचामें प्राप्त हुआ विष जाता रहता है और दूधके साथ पान करनेसे रक्तमें प्राप्त विष दूर होता है कुष्टके चूर्णके साथ मांसमें प्राप्त हुआ विष दूर होताहै ॥ ८८ ॥

अस्थिगंरजनीयुक्तंमेदोगंलाङ्गलीयुतम् ॥
मज्जगंपिप्पलीयुक्तंचंडालीमूलसंयुताम् ॥
शुक्रगंहंतिलौहित्यंतस्माद्देयापराजिता ॥ ८९ ॥

हलदीसे युक्त हड्डीमें प्राप्त हुआ विष और कलिहारी (काकिली) की जड़से मेदमें प्राप्त हुआ, पिप्पलीसे मज्जामें प्राप्त हुआ और पचगुगरियाकी जडके साथ वीर्यमें प्राप्त हुआ विष दूर होताहै इस कारण अपराजिता देनी चाहिये ॥ ८९ ॥

इतिभावोभवेद्यस्यआत्मरूपमिदंजगत् ॥
तत्सर्वैर्विषकीटाद्यैर्भक्ष्यमाणोनबाध्यते ॥ ९० ॥

जो पुरुष ऐसा समझता है कि, यह जगत् आत्मस्वरूपहै उस पुरुषको किसी कीटादिका विष व्याप्त नहीं होताहै ॥ ९० ॥

सद्यःसर्पेणदष्टस्यवामनासिकयाकृतः ॥
लेपःकर्णमलेनापिनृमूत्रैःसेचनेनवा ॥ ९१ ॥

जिस समय कोई काटे उसी समय हाथकी अनामिका अंगुलीसे बाईनासिकाका मल लेपन करनेसे अथवा नरमूत्रसे सेचन करनेसे ९१

स्तम्भतेगरलंतेननोर्द्ध्वंधावतिधातुषु ॥
वराहकर्णिकामूलंहस्तेबद्धंविषापहम् ॥ ९२ ॥

विष स्तंभित होजाताहै धातुओंमें फैलता नहीं अथवा असगंधकी जड़ हाथमें बाँधनेसे विषकी हरनेवाली है ॥ ९२ ॥

शिरीषपुष्पस्वरसैःसप्ताहंमरिचंसितम् ॥
भावितंसर्पदष्टानांपानेनस्येऽञ्जनेहितम् ॥
स्वच्छन्दभैरवीविद्याकथ्यतेविषनाशिनी ॥ ९३ ॥

शिरसके फूलके स्वरसमें सात दिन कालीमिरचको रख मिश्रीके

---

१ काकलीयुतंवापाठः। २ जयन्ती।

साथ लेप करनेसे पान करनेसे आंजनेसे नस्यसे हितकारक है सर्पविष उतरताहै और स्वच्छन्दभैरवीविद्याको भी विषनाशनी कहाहै ॥ ९३ ॥

ॐनमोभगवतीस्वच्छन्दभैरवीमहाभैरवीकालकूट विषंस्फोटय २ विस्फारय २ खादय २ अवतारय२ नास्तिविषहालाहलविषकृत्तिमंविषंसंयोगविषह्यत्यु ग्रविषस्थावरविषजंगमविषकालचंचुयापराइष्टमंत्र स्तडदर्घायणइथयइथय ॐकालाय महाकालाय कालमर्द्देवीअमृतगर्भदेविॐॐफट्फट्स्वाहाअने नमंत्रेणझाडयेत् ॥ सप्तधानवधाजलमभिमन्त्र्यते नाभिषिञ्च्यतज्जलंपाययेच्चानिर्विषंस्यादियंस्वच्छ- न्दभैरवीविद्याॐह्रूंह्रूंसंस्वःहंसः॥ वा ॐक्रूंक्रूंसंस्वः हंसः। अनेनमंत्रेणाभिमंत्रितपानीयपानेनापिमार्ज्जने नवानिर्विषःस्यात् ॥ देवदारुचित्रकंचकरवीरार्कलां गली॥मूलानिवारिणापिष्ट्वाकालदष्टहरम्पिबेत्॥९४॥

'ओंनमो भगवती स्वच्छन्दभैरवी कालकूटविषं स्फोटय स्फोटय विस्फारय विस्फारय खादय २ अवतारय २ नास्ति विष हलाहल विष कृत्तिमंविषं संयोगज विष ह्यत्युग्र विष स्थावर जंगम विष काल चंचुपापरा इष्टमंत्र तडदर्घायण इथय इथय ओं कालाय महाकालाय कालमर्द्देवी अमृतगर्भदेवी ओं ओं फट् फट् स्वाहा इसमंत्रसे झाडदें सातवार अभिमंत्रितकर जलदे वा नौवार पढकर देतौ निर्विष होजायगा यह स्वच्छन्दभैरवी विद्या है ओं ह्रूं ह्रूं संस्वःहंसः'इसमंत्रसे अभिमंत्रित जलके पानसे मार्जनसे मनुष्य विषरहित होजाता है ॥ देवदारु चीता कनेर आक कलिहारी इन की जड़ जलसे पीसकर पीनेसे कालदष्टभी जीवित होताहै ॥९४॥

मंत्रौषधिप्रयोगेणयदिदष्टोनजीवति ॥
छेदयेत्तीक्ष्णशस्त्रेणदंशस्थानंभिषग्वरः ॥ ९५ ॥

जो काटाहुआ मंत्र औषधीके प्रयोगसे न जियै तो काटे हुए स्थानको तीक्ष्ण शस्त्रसे छेदन करदे ॥ ९५ ॥

स्थावरन्तुविषन्दद्यादष्टोदष्टेनहन्यते ॥
यस्तुसंरोषितःसर्पोधूमंवक्त्राद्विमुंचति ॥ ९६ ॥

अथवा उसको स्थावर विष दे क्योंकि काटसे काटाहुआ हनन होताहै वा विष को विष मारताहै और जो क्रोधित सर्प मुखसे धूम निकालताहो ॥ ९६ ॥

तुण्डाग्रेपिशितंभुक्त्वाबहुशस्तेनदंशितः ॥
अशक्यमगदैरन्यैर्विषेणैवचिकित्सयेत् ॥ ९७ ॥

उसके मुखके आगे मांस रखकर उसको बहुतवार कटवादे जो और औषधियोंसे अशक्य होतो यह देकर विशेष चिकित्सा करनी ॥ ९७ ॥

क्षीरक्षौद्रघृतैर्युक्तंद्विगुंजांपाययेद्विषम् ॥
विषेणलेपयेद्दंशंकालदष्टोपिजीवति ॥ ९८ ॥

दूध शहत घीसेयुक्त दो चौंटली भर विषदे और काटेहुए पर विषका लेप करे तो कालका काटाहुआ भी जीता है ॥ ९८ ॥

मृतसंजीवनंख्यातंनिर्गुंडीतगरंविषम् ॥
पिंडीतगरमूलञ्चपुष्येनोत्पाट्ययोजितम् ॥ ९९ ॥

यह मृतसंजीवननामसे विख्यात है निर्गुंडी तगर विष गंधक और तगर की मूल पुष्यनक्षत्रमें उखाडकर उसमें मिलावै ॥ ९९ ॥

दंशेदेयंमृतस्यापिदष्टोजीवतितत्क्षणात् ॥
सर्पदष्टोयदावीरस्तंसर्पदशतेस्वयम् ॥ १०० ॥

जहां सर्पने काटा हो वहां यह वस्तु लगानेसे गुण होगा अथवा धीर पुरुष उस सर्पको स्वयं काट ले ॥ १०० ॥

मुक्तोसौम्रियतेसर्पःस्वयंनिर्विषतांव्रजेत् ॥
यद्वानद्वाफलन्दन्तैस्सर्पभावेनभक्षयेत् ॥ १०१ ॥

तब यह विषसे छूटताहै सर्प मरजाता है और यह निर्विष होजाताहै अथवा सर्पकी भावनासे किसी फलको चबाले ॥ १०१ ॥

दन्तैर्वादंशयेद्भूमिंदण्डवत्पतितोनरः ॥
सर्पाभावेनसन्देहोनतस्यक्रमतेविषम् ॥ १०२ ॥

अथवा दंडकी समान गिरकर दांतोंसे पृथ्वीको काटे और सर्पकी भावना करै इसमें सन्देह नहीं उसको विष नहीं चढैगा ॥ १०२ ॥

अत्यंतविषयोगार्त्तंजलमध्येविनिःक्षिपेत् ॥ १०३ ॥
मूलंतन्दुलवारिणापिबतियःप्रत्यंगिरासंभवं
निष्पिष्टंशुचिभद्रयोगदिवसेतस्याहिभीतिःकुतः ॥
दर्पादेवफणीयदादशतितंमोहान्वितंमानवं
स्थानेतत्रसएवयातिनियतंचक्रीयमस्याचिरात् ॥१०४॥

अथवा जो अत्यन्त विषसे व्याकुलहो उसे जलमें डालदे तौ निर्विष होजायगा अथवा श्वेतपुनर्नवाको चावलके पानीके साथ अच्छे मुहूर्त योगमें पीताहै उसको सर्प के काटनेका भय नहीं होता जो मोहसे सर्प मनुष्यको दंशित करता है तो वह शीघ्रही उसके स्थानमें यमराजके लोकको जाता है ॥ १०३ ॥ १०४ ॥

आषाढशुक्लपंचम्यांकट्यांशिरीषमूलकम् ॥
तन्दुलोदकपानेनसर्पदंशोनजायते ॥ १०५ ॥

आषाढशुक्ल पंचमीके दिन जो अपनी कमरमें शिरसकी जड़ बांधता है और तन्दुलका जलपान करता है उसको सर्पदंश नहीं होता है ॥ १०५ ॥

भ्रमाद्वादशतेसर्पस्तदासर्पोविनश्यति ॥
पुष्येश्वेतार्कमूलन्तुश्वेतवर्षाम्बुमूलकम् ॥ १०६ ॥

और जो कदाचित् भ्रमसे सांप खाय तो वह सर्प नष्ट होजाताहै पुष्यनक्षत्रमें श्वेतआककी जड़ और श्वेतपुनर्नवाकी जड़ लाकर ॥ १०६ ॥

संगृह्यपेयंतद्दक्षेस्नात्वातंदुलवारिणा ॥
सर्पभीतिविनाशार्थंप्रतिसंवत्सरंनरैः ॥ १०७ ॥

स्नानकर तंदुलके जलके साथ पिये तो उसको कभी सर्पसे भय नहीं होता है ॥ १०७ ॥

मसूरनिम्बपत्राभ्यांखादेन्मेषगतेरवौ ॥
अब्दमेकंनभीतिःस्याद्विषार्तस्यनसंशयः ॥
अतिरोषान्वितस्तस्यतक्षकःकिंकरिष्यति ॥१०८॥

मेषके सूर्यमें एक मसूरको दो निम्बके पत्तोंके साथमें भक्षण करे तो एक वर्ष तक उसको सर्पसे भीति नहीं होती है तथा तक्षक भी क्रोध कर उसका कुछ नहीं कर सकता ॥ १०८ ॥

कृकलासस्यदन्तांश्चश्वेतसूत्रेणवेष्टयेत् ॥
बाहौबध्वाविषंहंतिविषंभुक्त्वानबाध्यते ॥ १०९ ॥

गिरगटके दांत श्वेतसूत्रसे लपेट कर भुजामें बांधनेसे विष दूर होजाता है विष खानेपर भी बाधा नहीं होती ॥ १०९ ॥

सर्पवृश्चिकमूषाणांमुखस्तम्भःप्रजायते ॥
ॐशबरीकीर्त्तयसंजावसंजावस्वाहा ॥ ११० ॥

तथा सांप बिच्छू और चूहोंका मुख स्तंभित होजाता है मंत्र है ॐ शबरी कीर्तय संजाव संजाव स्वाहा सहस्र जपसे सिद्धि होतीहै

अनेनमंत्रेणहस्तेबंधयेत् ॥ पातालगरुडीमूलंलंब
मानंगृहेस्थितम् ॥ दृष्ट्वागच्छन्तितेदूरंसर्पाद्या-
विषकीटकाः ॥ १११ ॥

इसमंत्रसे हाथमें बांधे ॥ छिरहिटाकी जड़ घरमें लाकर रखदे-नेसे सर्पादि विषके कीडे उसे देखकर दूर पलायन करतेहैं॥१११॥

ॐप्लुःसर्पकुलायस्वाहा ॥ वाअशेषसर्पकुलायस्वाहा
अनेनसप्ताभिमंत्रितामृत्तिकागृहमध्येक्षिपेत्सर्पाःप
लायन्ते ॥

'ॐ प्लुः सर्पकुलाय स्वाहा' इसमंत्रसे सात वार अभिमंत्रितकर मट्टी घरमें डालदेनेसे सर्पादिक दूरसे पलायन करजातेहैं ॥

इति सर्पविषनिवारणम् ।

अथ वृश्चिकविषनिवारणम् ।

शिरीषबीजंगोमेदंदाडिमस्यतुमूलकम् ॥
अर्कक्षीरयुतंहंतिधूपोवृश्चिकजंविषम् ॥ ११२ ॥

शिरसके बीज गोमेद दाडिमीकी जड़ आकका दूध इनकी धूप बिच्छूके विषको दूर करती है ॥ ११२ ॥

मयूरपारावतकुक्कुटानांग्राह्यंपुरीषंसहभानुमूलैः ॥
धूपोनिहंत्याशुविषंसमस्तंचतुर्विधंवृश्चिकसर्पजातम् ११३॥

मोर कबूतर मुरगा इनकी बीट और आककी जड़ लेकर धूप देनेसे वा लेपसे चार प्रकारके बिच्छू सर्पादिके विषको दूर करतीहै॥ ११३॥

रजनीचूर्णधूपेनाविषंवृश्चिकजंहरेत् ॥
वस्त्रेणाच्छाद्यगात्राणिधूपधूमञ्चपाययेत् ॥
दंशंचधूपयेच्छीघ्रंसर्वधूपेष्वयंविधिः ॥ ११४ ॥

हलदीका चूर्णकर उसकी धूप देनेसे बिच्छूका विष उतर जाता है वस्त्रसे शरीर ढककर धूपका धुआं प्यावै धूप शीघ्रतासे दंशपर देनी चाहिये सब धूपोंकी यही विधि है ॥ ११४ ॥

तोयैर्वानागरंनस्यंपिबेद्वासैंधवंघृतम् ॥
अर्कधत्तूरमूलंवाजलपानेविषापहम् ॥ ११५ ॥

अथवा जलके साथ सोंठकी नास दे वा सैंधा और घृतको पान करै अथवा आक धतूरेकी जडको जलके साथ पान करनेसे विष दूर होता है ॥ ११५ ॥

पुत्रजीवफलान्मज्जांपलाशोत्थांकरंजजाम् ॥
मज्जातोयैःप्रलेपोयंहन्तिवृश्चिकजंविषम् ॥ १६ ॥

जियापोतेके फलोंकी मींग तथा ढाकको लेकर और करंजकी मींगको जलमें पीस लेप करनेसे बिच्छूका विष उतरता है ॥ १६ ॥

हिंगुवाजललेपेनवृश्चिकोत्थंविषंहरेत् ॥
तिलमात्रंविषंखादेल्लेपाद्वानाशयेद्विषम् ॥ १७ ॥

हिंग और जलका लेप बिच्छूके विषकोदूर करता है अथवा तिलमात्र विष खाने वा लेप करनेसे विष उतरता है ॥ १७ ॥

घृतार्कदुग्धलेपेनयष्ट्यावाधूपितेनवा ॥
बीजपूरकमूलस्यलेपाद्वापिहरीतकी ॥ १८ ॥
सिक्थकंसप्तधाभाव्यंस्नुह्यर्कपयसातपे ॥
तत्तप्तंवह्निनास्पृष्टंदंशस्थानेविषंहरेत् ॥ १९ ॥

अथवा घी और आकके दूधके लेपसे वा मुलैठीके धूप देनेसे अथवा बिजौरे की जड़ हरडेके साथ पीस लेप करनेसे थूहर और आकके

---

१ कुरंजलमिति वा पाठः। २ "पथ्याभिर्धूपिते न वा" इस पाठमें हरडों से धूपित अर्थ जानना।

दूधकी सात भावना मोमको देकर गरमकर काटे स्थान पर लगानेसे वृश्चिकका विष उतर जायगा ॥ ११८ ॥ ११९ ॥

लेपोजातीगुडाभ्यांवाहरिद्रालेपनेनवा ॥
वृश्चिकस्यविषंहन्तिप्रत्येकंनैवसंशयः ॥ १२० ॥

अथवा जाती गुड़ वा हलदीके लेपसे बिच्छूका विष दूर हो जाता है इसमें सन्देह नहीं ॥ १२० ॥

मातुलुंगस्यमूलन्तुरविवारेसमुद्धरेत् ॥
उत्तराभिमुखेनैवहूं(वा क्रूं)मंत्रोच्चारणात्स्पृशेत् ॥१२१॥

मातुलुंगकी जड़ रविवारके दिन लावै और उत्तरको मुखकर 'हूंवाक्रूं' मंत्रको उच्चारण कर उसे स्पर्श करे ॥ १२१ ॥

वामांगेदक्षिणेदष्टेवामेदष्टेचदक्षिणे ॥
मार्जनेनविषंहन्यात्सदंशंदृष्टप्रत्ययम् ॥
सप्तधामार्जनेनैवाविषंवृश्चिकजंहरेत् ॥ १२२ ॥

जो दहिने अंगमें काटा हो तो वाममें और वाममें काटा हो तो दक्षिणमें मार्जनकर विष उतर जायगा यह देखा हुआ है सात वार मार्जन करनेसे बिच्छूका विष नष्ट होजाता है ॥ १२२ ॥

असगंधीयमूलन्तुमूलंश्वेतपुनर्नवा ॥
रविवारेसमुद्धृत्यद्वाभ्यांवृश्चिकदंशकम् ॥ १२३ ॥

असगंधकी जड़ श्वेत पुनर्नवाकी जड़ रविवारके दिन उखाड़ कर इन दोनोंको बिच्छूने जहां काटा हो वहां ॥ १२३ ॥

मार्जनेनाविषंहन्यात्स्वदृशाह्यनुभावितम् ॥
कार्पासमूलंचर्वित्वाविषाजित्कर्णफूत्कृते ॥ १२४ ॥

मार्जन करे तो अवश्य विष उतर जाताहै यह देखा है तथा कपासकी जड़ चबाकर कानमें फूंक मारनेसे विष उतर जाताहै१२४

ग्राह्यंहंसपदीमूलंप्रातरादित्यवासरे ॥
मुखस्थंफूत्कृतंकर्णेविषंवृश्चिकजंहरेत् ॥ १२५ ॥

हंसपदीकी जड़ रविवारके दिन प्रातःकालमें लावै उसे मुखमें रख कानमें फूंक मारनेसे विच्छूका विष उतर जाता है ॥ १२५ ॥

ॐक्षःफट्स्वाहा ॥
अनेनापमार्जयेन्निर्विषोभवति ॥

'ओंक्षःफट्स्वाहा' इसमंत्रसें मार्जन करनेसे निर्विष होताहै । औरभी तीन मंत्र लिखे हैं तीसरेसे कनेरकाष्ठसे जल मार्जन करै निर्विष होगा ॥

बकुलंत्वचबीजंवानिष्पीडयदंशनस्थले ॥
प्रलेपात्वृश्चिकविषहरणंचाभिमंत्रितात् ॥ १२६ ॥
ओं झं हुं यं क्रं डं वं वं लं क्षं एं ऐं ओं औं हं हः ।
इतिमंत्रेणअभिमंत्र्यप्रलेपयेत् । हां हीं मं चं ओं
इतिमन्त्रेण ओलवृन्तमभिमन्त्र्यतेनमार्जनात् वृश्चि
कविषनाशोभवति ।
शिवेनभाषितोयोगोनावहेलनीयोह्ययम् ॥

मौलसिरीकी छाल और बीज मसलकर दंशपर लेप करनेसे विच्छूका विष उतरताहै नीचे लिखे मंत्रसे लेपकरै दूसरे मंत्रसे जिमीकंद और बैंगनको अभिमंत्रितकर मार्जन करै विष उतर

---

१ 'आदित्यरथवेगेन विष्णोर्बाहुबलेनच । गरुडपक्षनिपातेन भूम्यांगच्छ महाविष ॥ ओं ठःठःठः जःजःजःओं श्रीपक्षयोगिपादाज्ञा इतिमंत्रः' दूसरा मंत्र 'हिमवत्युत्तरे पार्श्वेकपिलोनामवृश्चिकः । तेनाहंप्रेषितोदूतोगच्छ गच्छ-महाविष ॥ क्रीं क्रीं स्वाहा डाकिनी स्वाहा फट् ' इति ॥ इक्कीसवार दंशको छूकर कानमें जपै । अथवा ' शांखो मांखो मांहीं खौंहीं ' अनेन गरुड मंत्रेण वृश्चिकदष्टे करवीर काष्ठनापोमार्जयेन्निर्विषो भवति ॥

जायगा यह शिरका कहा योग अवज्ञाके योग नहीं है म्यौंडीके पत्तौं की नास देनेसे मोह नाश होय । ज्वर कंपा होय तौ घृत मर्दनसे छूटै । चंदन कपूर पानसे वायु छूटै ॥ १२६ ॥

इति वृश्चिकविषनिवारणम् ।

कानखजूरेकाविषनिवारणम् ।

दीपकोच्छिष्टतैलंतुदंशस्थानेप्रलेपयेत् ॥ १२७ ॥

दियेके बचे तेलको दंशपर लगावै अथवा गूगलकी धूपदे पीछे आकके पत्ते लपेट बांधे विषछूटै ॥ १२७ ॥

अथमूषकविषनिवारणम् ।

शिलातालककुष्टञ्चभाव्यंनिर्गुंडिकाद्रवैः ॥
पानंमूषिकदष्टानान्दत्तंतीव्रविषंहरेत् ॥ १२८ ॥

मनशिल हरताल कूट इनको निर्गुण्डीके रसमें भावित करके पान करनेसे मूसेका विष उतर जाता है ॥ १२८ ॥

गृहगोधांसमादायपिष्टातन्दुलवारिणा ॥
लेपादाखुविषंहंतिपिबेद्वाक्षीरपाचिताम् ॥ १२९ ॥

गृहगोधा लाकर चावलके जलसे पीस लेप करनेसे चूहे का विष शान्त होजाता है अथवा क्षीरको पाचित कर पीनेसे चूहेका विष शान्त होजाता है ॥ १२९ ॥

सर्षपंकुंकुमंतक्रंसमभागंघृतम्पिबेत् ॥
विषंमूषिकदष्टानांशममाप्नोतितत्क्षणात् ॥ १३० ॥

सरसों कुमकुम मट्ठा यह समान भाग लेकर घृतके साथ पान करै तौ उसी समय चूहेका विष उतर जाता है ॥ १३० ॥

चिंचाफलसमायुक्तंगृहधूमंपलार्द्धकम् ॥
पुराणाज्येनसप्ताहंलिहेदाखुविषंहरेत् ॥ १३१ ॥

चिचाफलके साथ आधे पल घरका धूम पीस सात दिन पुराने घृतके साथ चाटे तो चूहेका विष उतर जाता है ॥ १३१ ॥

इति मूषकविषनिवारणम् ।

अथश्वानविषनिवारणम् ।

शिरीषस्यचबीजैर्वास्नुहीक्षीरेणघर्षितम् ॥
तल्लेपेनवरारोहेनश्येत्कुक्कुरजंविषम् ॥ १३२ ॥

शिरसके बीज थूहरके दूधमें पीसकर लेप करनेसे कुत्तेका विष दूर होजाताहै ॥ १३२ ॥

गुडन्तैलार्कदुग्धश्चलेपाच्छ्वानविषंहरेत् ॥
पिष्ट्वापामार्गमूलंचकर्षैकम्मधुनालिहेत् ॥ १३३ ॥

तथा गुड़ तेल और आकका दूध लेप करनेसे श्वानविष उतर जाताहै अथवा चिरचिटेकी जड पीस एक कर्ष शहदके साथ पीस चाटे ॥ १३३ ॥

श्वानदष्टविषंहंतिलेपात्कुक्कुरविष्टया ॥
उन्मत्तश्वानदंष्ट्राणांकुमारीदलसैंधवम् ॥
सुखोष्णंबंधयेत्पिंडंत्रिदिनान्तेसुखावहम् ॥ ३४ ॥

वा कुक्कटकी विष्ठाका लेप करे तो कुत्तेका विष उतर जाताहै उन्मत्त कुत्तेके विषपर घीकुंआरका पत्ता सैंधा कुछ गरम कर तीन दिन बांधनेसे विष उतर जाताहै ॥ ३४ ॥

ॐहडवडकुत्ताखडवडदांत,कुत्तेकीबांधोसातौडाढ
आवैनलोहूपाकैनघावकुत्तेकाविषउतरजाववीरहनुम
न्तकीदुहाइरामलछमनकीदुहाई,फुरोमंत्रईश्वरोवाचा ॥

इस मंत्रसे सातवार अभिमंत्रित कर कुत्तेके काटे हुएको खानेको गुडदे तो निर्विषहो ॥

इति श्वानविषनिवारणम् ।

अथमत्स्यभेकादिविषनिवारणम् ।

शिरीषफलत्वक्क्षीरंपिबेद्भेकविषापहम् ॥
त्र्यूषमाज्यंमेघनादोभेकमत्स्यविषापहम् ॥ ३५ ॥

शिरकी फली और मूल जलके साथ पीनेसे मेंडकका विष दूर होताहै सोंठ मिरच पीपल घृत चौलाई यह मेडकका मत्स्यके विषको दूर करतीहै ॥ ३५ ॥

शृंगीमत्स्यविषंस्वेदाघृतचिक्कांसपिंडिताम् ॥ ३६ ॥

अथवा काकडासिंगी और घृतसे विष दूर होताहै ॥ ३६ ॥

अथ गोधाविषनिवारणम् ।

गृहगोधाविषंहन्यात्काश्मी[२]रीफलनस्यतः ॥
पिबेन्मधुसितायुक्तंगृहगोधाविषंहरेत् ॥ ३७ ॥

गंभारीके फलकी नास सेवनसे घरकी गोयका विष शान्त होजाताहै अथवा यही शहत और मिश्रीके साथ सेवन करनेसे घरकी गोयका विष दूर करताहै ॥ ३७ ॥

अथ व्याघ्रविषनिवारणम् ।

वृकव्याघ्रशृगालाख्याभल्लकद्विपवाजिनाम् ॥
रुधिरंस्त्रावयेद्दंशाद्दहेल्लोहशलाकया ॥ ३८ ॥

भेडिया व्याघ्र चीता गीदड रीछ गेंडा इनके काटने पर वहांका रुधिर निकाल डाले वा उस काटे स्थानपर लोहेकी शलाकासे जलादे ॥ ३८ ॥

लेपात्सर्पविषंहंतिमूलंश्वेतपुनर्नवा ॥
किमत्रबहुनोक्तेनतत्क्षणाद्विषनाशनम् ॥ ३९ ॥

---

१ भिंडीफलस्नुहीक्षीरं इति वा पाठः । २ दाक्षिणात्य काश्मरीनाम हरकिसीरको कहते हैं ।

अथवा श्वेतपुनर्नवाकी जडका लेप करनेसे विष दूर होता है बहुत कहनेसे क्या है! उसी समय विषनाश होता है ॥ ३९ ॥

विडंगस्यचपानेनव्याघ्रव्यालविषंहरेत् ॥
धत्तूरपत्रतोयेनचूर्णंत्रिकटुसम्भवम् ॥ १४० ॥

वायविडंगके पानसे व्याघ्रका और व्यालका विष दूर होजाता है धतूरेके पत्तोंका अर्क और त्रिकुटा ॥ १४० ॥

उदरस्थंविषंहन्तिव्याघ्रव्यालसमुद्भवम् ॥
करंजतैललेपेनज्वालांव्याघ्रनखोद्भवाम् ॥ ४१ ॥

यह पान करनेसे व्याघ्रविष व्यालविष पेटमें प्राप्त होगया होतौ भी दूर होताहै अथवा करंजके तेलका लेप करनेसे व्याघ्रके नखों-की ज्वाला शांत होजाती है ॥ ४१ ॥

गोजिह्वामूलिकांपिष्ट्वाजलेनमधुनासह ॥
लेपोहिसर्वजन्तूनांनखतुण्डविषंहरेत् ॥ ४२ ॥

गोजिह्वालताकी मूलिका शहत और जलके साथ पीस लेप-करनेसे सब जन्तुओंके नख तुंडका विष दूर होजाता है गोजिह्वा गवेधुका ॥ ४२ ॥

तथानिम्बवचांचैवशमीवृक्षत्वचन्तथा ॥
उष्णोदकेनलेपस्यान्नखतुण्डविषापहः ॥ ४३ ॥

नीम वच शमीकी छाल इनका लेप गरम जलसे करे तो सब जीवोंके नख और मुख लगनेका विष दूर होजाता है ॥ ४३ ॥

तथादारुहरिद्रायालेपोदन्तविषापहः ॥ ४४ ॥

इसी प्रकार देवदारु हलदीको लेप करनेसे दाँतोंका विष दूर होजाता है ॥ ४४ ॥

अथ कीटविषनिवारणम् ।

आज्येनतन्दुलीमूलंतुलसीमूलिकापिवा ॥
तन्दुलोदकपानेनकीटकोत्थंविषंहरेत् ॥ ४५ ॥

घृतके साथ चौंलाईकी जड़ तुलसी की जड़ चावलके जलके साथ पान करनेसे कीटविष नष्ट होजाताहै ॥ ४५ ॥

लांगल्याःकटुतुंब्यावादेवदारुनिशापिवा ॥
मूलंबीजंकांजिकेनलेपःकीटविषापहः ॥ ४६ ॥

कलिहारी कडवी तूंबी देवदारु हलदी इनको मूल बीज कांजी-के साथ लेप करनेसे कीटविष दूर होजाताहै ॥ ४६ ॥

तिलंचसर्षपंकुष्टंबीजंकरंजसम्भवम् ॥
उद्वर्त्तनात्प्रलेपाद्वासर्वकीटविकारजित् ॥ ४७ ॥

तिल सरसों कूट करंजके बीज इसके उद्वर्तन वा लेपसे सब प्रकार के कीडोंका विष शान्त होजाता है ॥ ४७ ॥

करंजबीजंसिद्धार्थतिलैर्लेपोविषापहः ॥
ऐरण्डतैललेपोवासर्वकीटविषापहः ॥ ४८ ॥

करंजके बीज सरसों तिल इनका लेप करनेसे विष दूर होताहै अथवा एरण्ड के तेलका लेप सब कीटोंके विषको दूर करता है ४८

निशादारुनिशाचैवमंजिष्ठानागकेशरम् ॥
एषांलेपोनिहंत्याशुविषंलूतादिसम्भवम् ॥ ४९ ॥

इति कीटविषनिवारणम् ।

हलदी देवदारु मँजीठ नागकेशर इनका लेप करनेसे लूतादिका[1] विष दूर होताहै ॥ ४९ ॥

इति कीटविषनिवारण ।

अथ सर्वजन्तूनांविषनिवारणम् ।

पुत्रजीवफलान्मज्जांशीततोयेनपेषिताम् ॥
लेपनांजननस्यैस्तुपानाद्वानिष्कमात्रतः ॥ १५० ॥

---

१ मकड़ी ।

जियापोताके फलकी मींगी शीतल जलके साथ पीस लेप कर तथा अंजन करनेसे वा एक निष्कमात्र पान करनेसे ॥ १५० ॥

व्याघ्रमूषकगोनासवृश्चिकादिविषंहरेत् ॥
दुस्सहंयद्विषंचाशुविस्फोटंचविनाशयेत् ॥ ५१ ॥

व्याघ्रमूषक गोनास (सर्प) वृश्चिकादिका विष दूर होजाताहै यह दुस्सह विषसे उत्पन्न हुए विस्फोटक रोगकाभी नाश करताहै ५१

वंध्याककौटकीकन्दंजलैःपिष्ट्वाप्रलेपयेत् ॥
सर्पमूषकमार्जारवृश्चिकादिविषंहरेत् ॥ ५२ ॥

वन्ध्या ककोंटकी (वनककोडा) की जड़ जलसे पीस लेप करनेसे सर्प चूहा बिलाव वृश्चिकादिका विष दूर होजाताहै ॥ ५२ ॥

अथोपविषादिपनिवारणम् ।

स्नुह्यर्कोन्मत्तकश्चैवकरवीरश्चलांगली ॥
वज्रीजैपालकःकृष्णाकुटंगुंजातथैवच ॥ ५३ ॥

स्नुहि (थूहर) अर्क धतूरा कनेर लांगली (कलिहारी) हड़ संधारी (दूसराथूहर) जमालगोटे सुरमा कूड़ चौंटली ॥ ५३ ॥

महाकालश्चइत्याद्याःस्मृतास्तूपविषाबुधैः ॥
ससिंधुकांजिकंपीत्वासमस्तोपविषंहरेत् ॥ ५४ ॥

महाकाललता यह वस्तु उपविष हैं सैंधा कांजीके साथ पान करनेसे सम्पूर्ण उपविषोंकी शान्ति होती है ॥ ५४ ॥

करवीरविषंहंतिघृतेनापिहरीतकी ॥
निम्बपत्रंघृतंहन्तिघृतेनमधुपानतः ॥ ५५ ॥

घृत और हरडका सेवन करनेसे कनेरका विष शान्त हो जाता है नीमके पत्तोका घृतसे अथवा घृत और मधुपानसे दूर होजाता है ॥ ५५ ॥

अथ कृत्रिमविषनिवारणम् ।

अनेकविषजीवानांचूर्णंह्युपविषैर्युतम् ॥
मिश्रितंनखकेशाद्यैर्लोहाद्यैश्चूर्णसंचयम् ॥ ५६ ॥

अनेक विषेले जीवोंका चूर्ण अर्थात् उनके नखकेशादि मिलाकर तथा लोहादि चूर्णके सहित ॥ ५६ ॥

कृत्रिमंचविषंख्यातंपक्षान्मासाद्विबाधते ॥
आलस्यंकुरुतेजाडयंकासंश्वासंबलक्षयम् ॥ ५७ ॥

सेवन करनेसे कृत्रिमविष नष्ट होता है इसका पखवारे तथा महीनेके आगे भी उपाय न करे तो आलस्यके कारण कास श्वास होकर बलका क्षय होता है ॥ ५७ ॥

रक्तस्रावोज्वरःशोषःपीतचक्षुश्चलक्षयेत् ॥
मृतंसूतंमृतंस्वर्णंशुद्धंवैहेममाक्षिकम् ॥ ५८ ॥

रक्तस्राव ज्वर शोष नेत्रोंमें पीलापन होजाता है औषधी यह है कि, शोधा पारा सोना शोधी सोनामाखी ॥ ५८ ॥

त्रयाणांगंधकंतुल्यंमर्द्यंकन्याद्रवैर्दिनम् ॥
तच्चशुष्कंसिताक्षौद्रैर्मासमेकंलिहेत्सदा ॥ ५९ ॥

इन तीनोंकी तुल्य गंधक घीकुवारके रसमें एक दिन खरल करे उसको सुखाय मिश्री और शहदके साथ एक महीनेतक सदा चाटे ॥ ५९ ॥

वह्निमूलयुतंक्षीरंमनुष्यगरनाशनम् ॥
पुत्रजीवफलान्मज्जांनिष्कमात्रंगवांपयः ॥ १६० ॥

पीपलामूल दूधमें औटाय खायतो मनुष्यका विष नाश हो अथवा जियापोताके फलकी मींग एक निष्क और गौका दूध १६०

पीत्वाचोग्रगरंहन्यान्नानाकृत्रिमयोगजम् ॥
शठीपुष्करमूलस्यपानमद्यविषापहम् ॥ ६१ ॥

पान करनेसे तीव्र कृत्रिम और योगजविष दूर होजाताहै कचूर पुहकरमूलसे अत्यन्त मद्यका विष दूर होता है ॥ ६१ ॥

तत्पिबेत्क्षीरपानेनगरतृष्णाज्वरापहम् ॥
क्षीरंमुद्गयुतंपथ्यंशाल्यन्नंपरमंहितम् ॥ ६२ ॥

क्षीरके साथ पान करनेसे तृषा विष और ज्वर दूर होताहै बारंवार दूध मूँग शालिअन्न खाना यह इसपर पथ्य और परम हित है " तत्पिबेच्छीतलेपाने" इस पाठमें वा शीतल जलके साथ पिवे ऐसा अर्थ करना ॥ ६२ ॥

गृहधूमंजलैःपिष्टातन्दुलीमूलतुल्यकम् ॥
कल्काच्चतुर्गुणंचाज्यंघृतात्क्षीरंचतुर्गुणम् ॥ ६३ ॥

घरका धुआं जलके साथ पीसकर तथा चौराईकी जड़ की मूलका कल्क कर कल्कसे चौगुना घृत डाले उससे चौगुना दूध डाले ॥ ६३ ॥

घृतशेषंपचेत्सर्वंपिबेत्सर्वगरापहम् ॥
समूलपत्रांसर्पाक्षींजलेनक्वथितांपिबेत् ॥ ६४ ॥

और पकावै जब रस जलजाय घृतमात्र शेष रहजाय तब इसके खानेसे सर्व प्रकारके विष दूर होजाते हैं अथवा सर्पाक्षी के (नाकुली कंद) मूल और पत्तोंका लेप करनेसे वा क्वाथ कर पान करनेसे ॥ ६४ ॥

नरमूत्रैश्चवापिष्टांपिबेत्सर्वगरापहाम् ॥
एलातालीशपत्राणीत्र्यूषणंजीरकंसमम् ॥ ६५ ॥

अथवा नरमूत्रके साथ पीसकर पान करनेसे सर्वविष दूर होता

है इलायची तालीस पत्र सोंठ मिरच पीपल जीरा यह समान भागले ॥ ६५ ॥

चूर्णाद्द्विधासितायोज्याभुक्त्वागरहरंभवेत् ॥
पयसारजनीकुष्टंमध्वाज्यंगृहधूमकम् ॥ ६६ ॥

चूर्णसे दूनी मिश्री मिलाय खानेसे विष दूर होताहै अथवा दूधके साथ हलदी कूट शहद घृत गृहका धूम ॥ ६६ ॥

तन्दुलीमूलसंयुक्तंकर्षंगरहरंलिहेत् ॥ ६७ ॥

चौलाईकी जड़के साथ कर्षमात्र सेवन करनेसे विष दूर होताहै ६७

इति कृत्रिमविषनिवारणम् ।

अथ योगजविषनिवारणम् ।

तैलकर्पूरजंबीरसंयोगाद्योगजंविषम् ॥
समांशेनतुमध्वाज्यमेवंसंयोगजंविषम् ॥ ६८ ॥
नारिकेलांबुकर्पूरसंयोगाद्योगजंविषम् ॥
मरिचन्तुंबिकामूलंयोगजंविषमेवतत् ॥ ६९ ॥

तैल कपूर और जम्बीरीके योगसे योगज विष होताहै बराबर शहत और घीसे योगज विष होता है, नारियल जल कपूरके योगसे योगज विष होताहै और कालीमिर्च कडवी तूंबीकी जडके योगसे विष होताहै विषम योगसे उत्पन्न विष होता है॥६८॥६९ ॥

पुत्रंजीवफलेनैवरजनीमारनालकैः ॥
देवदालीनृमूत्रैर्वासर्पाक्षीचेन्दुवारुणी ॥ १७० ॥

जियापोताके फलको लेकर जलके साथ पीसकर लेनेसे तथा हलदी कांजी और देवदाली मनुष्यके मूत्रके साथ सर्पाक्षी इन्द्रवारुणी ॥ १७० ॥

गिरिकर्णीयमूलंवाप्रत्येकंविषजिद्भवेत् ॥
मध्वाज्यंकाकजंघायाद्रवैःपिष्टापिषंहरेत् ॥
गिरिकर्णीनागपुष्पीमुण्डीपानाद्विषंहरेत् ॥ १७१॥

अथवा गिरिकर्णी (अपराजिता) की जड यह प्रत्येक विषको जीतने वाली है और मधु घृतके साथ काकमाचीका रस पीनेसे विष दूर होताहै तथा अपराजिता नागकेशर और मुण्डीके पानसे विष दूर होजाताहै ॥ १७१ ॥

अथ भल्लातकविषनिवारणम् ।

भल्लाततैलसंपर्कात्स्फोटःसंजायतेनृणाम् ॥
नवनीतंतिलंपिष्टातल्लेपेनतुतंजयेत् ॥ १७२ ॥

भिलावे और तेलके सम्पर्कसे मनुष्यके शरीरमें फोडे होजातेहैं मक्खनके साथ तिलोंको पीस लगानेसे आराम हो जाताहै॥१७२॥

निंबीपत्रप्रलेपाद्वातंजयेत्तत्पदेनवा ॥
भल्लातकस्यमूलस्यमृत्तिकाभिःप्रलेपनात्॥१७३॥

अथवा नीमके पत्तोंका लेप करनेसे आराम होता है अथवा भिलावेकी जडका विष मृत्तिकालेपनसे जाता है ॥ १७३ ॥

तत्संजातविकारांश्चनाशयत्येवनिश्चितम् ॥ १७४॥

इतिश्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्नेविषनिवारणंनामचतुर्दशोपदेशः१४

यह मृत्तिका उससे उत्पन्न हुए विकारोंको अवश्य नाश करती है१७४

इति श्रीनित्यनाथविरचित कामरत्ने पंडितज्वालाप्रसादमिश्रकृत भाषाटीकायां विषनिवारणंनामचतुर्दशोपदेशः ॥ १४ ॥

अथ यक्षिणीसाधनम् ।

सर्वासांयक्षिणीनांतुध्यानंकुर्य्यात्समाहितः ॥
भगिनीमातृपुत्रीस्त्रीरूपन्तुल्यंयथेप्सितम् ॥ १ ॥

---

१ काकमाच्या वा इति पाठः ।

यक्षिणीका साधन करै तो सावधान होकर करना चाहिये इसमें सावधानी होनेसे सिद्धि होती है अपनी इच्छानुसार किसीको भगिनी किसीको माता किसीको स्त्री तथा किसीको पुत्रीकी प्रकारसे सम्बोधन देकर ध्यान करै ॥ १ ॥

भोज्यंनिरामिषंचान्नंवर्ज्यंतांबूलभक्षणम् ॥
उपविश्याजिनादौचप्रातःस्नात्वानकंस्पृशेत् ॥ २ ॥

इसमें निरामिष अन्न खाना चाहिये ताम्बूलका भक्षण न करै अजिनमृगछालापर बैठे प्रातःकाल स्नान कर किसीको स्पर्श न करै ॥ २ ॥

नित्यकृत्यंतुकृत्वाचस्थानेनिर्जनकेजपेत् ॥
यावत्प्रत्यक्षतांयांतियक्षिण्योवांछितप्रदाः ॥ ३ ॥

और अपनी नित्य क्रिया करके निर्जन स्थानमें जप करै जबतक प्रत्यक्ष होकर मनवांछित न दे तबतक बराबर जप करता रहे ॥ ३ ॥

जपेल्लक्षद्वयंमंत्रंश्मशानेनिर्भयोमुनिः ॥
दशांशंगुग्गुलुंसाज्यंहुत्वातुष्यतिविभ्रमा ॥ ४ ॥

निर्भय और मौन होकर श्मशानमें दो लक्ष मंत्रका जप करै और इसका दशांश हवन घृत और गूगलका करै तौ विभ्रमा यक्षिणी प्रसन्न होती है ॥ ४ ॥

पंचाशन्मानुषाणाञ्चददातिभोजनंसदा ॥
ॐह्रींवांविभ्रमरूपेएहि २ भगवतिस्वाहा ॥
ॐह्रींविभ्रमरूपेविभ्रमंकुरुएह्येहि भगवतिस्वाहा (१)

रतिप्रियासाधन ।

शंखालिप्तपटेदेवींगौरवर्णांधृतोत्पलाम् ॥
सर्वालंकारिणींदिव्यांसमालिख्यार्चयेत्ततः ॥ ५ ॥

तो यह प्रसन्न हो ५० मनुष्योंको सदा भोजन देती है 'ह्रींॐवां विभ्रमरूपे एहि२भगवति स्वाहा' 'ॐह्रीं विभ्रमरूपे विभ्रमं कुरु एह्येहि भगवति स्वाहा' (१) शंखलिप्त पटपर देवीको इस प्रकार लिखे कि, कमलधारण किये गौरवर्ण सम्पूर्ण अलंकारयुक्त दिव्यमूर्ति है ऐसी बनाकर अर्चन करै ॥ ५ ॥

जातीपुष्पैस्सोपचारैःसहस्रैकंततोजपेत् ॥
त्रिसंध्यंसप्तरात्रन्तुततोरात्रिषुनिर्जपेत् ॥ ६ ॥

और षोडशोपचारसे चमेलीके फूलोंसे पूजन करे और एक सहस्र मंत्र जपे सात दिनतक तीनों संध्याओंमें इसी प्रकार जप करे फिर रात्रिमें भी इसी प्रकार जपे ॥ ६ ॥

अर्द्धरात्रेगतेदेवीसमागत्यप्रयच्छति ॥
पंचविंशतिदीनारान्प्रत्यहंतोषितासती ॥ ७ ॥

तो आधीरातके समय आकर देवी प्रत्यक्ष दर्शन देती है और नित्य प्रति पच्चीस दीनारोंको संतुष्ट करने पर नित्य प्रदान करती है॥

ॐह्रींकनकनकमैथुनप्रियेरतिप्रियेस्वाहा (२)

'ॐह्रीं कनकनकमैथुनप्रिये रतिप्रिये स्वाहा' (२) वा ॐह्रींरति प्रियेस्वाहा ॥

एकलिंगंमहादेवंत्रिसंध्यंपूजयेत्सदा ॥
धूपंदत्वाजपेन्मंत्रंत्रिसंध्यंत्रिसहस्रकम् ॥ ८ ॥

तीनों संध्याओंमें सदा एकलिंग महादेवका पूजन करे और धूप देकर तीनों संध्याओंमें तीन सहस्र मंत्र जपे वा श्वेतमूर्तिका आराधन करै ॥ ८ ॥

मासमेकंततोयातियक्षिणीसुरसुन्दरी ॥
दत्वार्घ्यंप्रणमेन्मंत्रीब्रूतेसात्वंकिमिच्छसि ॥ ९ ॥

---

१ दीनार सुवर्ण मुद्रा । २ कर्पूरांगमिति वा पाठः । ३ प्रत्यक्षमितिवापाठः ।

ऐसा एक महीने जप करनेसे सुरसुन्दरी यक्षिणी आनकर प्राप्त होती है उसे अर्घ्य देकर प्रणाम करै जब वह कहै क्या इच्छा है ॥ ९ ॥

देविदारिद्र्यदग्धोस्मितन्मेनाशकरीभव ॥
ततोददातिसातुष्टावित्तायुश्चिरजीवितम् ॥ १० ॥

तब कहै हेदेवि मैं दारिद्र्यादिसे युक्त हूं मेरे दारिद्र्यका नाश करो तब वह प्रसन्न होकर वित्त आयु और चिरकालतक जीवन प्रदान करती है ॥ १० ॥

ॐह्रींआगच्छ २ सुरसुन्दरिस्वाहा (३)
कुंकुमेनसमालिख्यभूर्जपत्रेसुलक्षणाम् ॥
प्रतिपत्तिथिमारभ्यपूजांकृत्वाजपेत्ततः ॥ ११ ॥

' ओंह्रीं आगच्छ २ सुरसुन्दरि स्वाहा (३) ' यह मंत्र भोजपत्र पर कुमकुमसे लिखै शुक्ल प्रतिपदासे पूजा आरंभकर जप करै ११॥

त्रिसंध्यंत्रिसहस्रन्तुमासान्तेपूजयेन्निशि ॥
सञ्जपेदर्द्धरात्रन्तुसमागत्यप्रयच्छति ॥
दीनाराणांसहस्रैकंददातिपरितोषिता ॥ १२ ॥

तीनों संध्याओं में तीन सहस्र जपकरै एक महीनेके उपरान्त रात्रिमें पूजन करै जप करनेसे अर्धरात्रिमें आनकर मनोरथ पूर्ण करती है प्रसन्न होकर एक सहस्र दीनार प्रति दिन देती है ॥ १२ ॥

ॐह्रींह्रींअनुरागिणिमैथुनप्रियेस्वाहा (४)
ध्यात्वाजपेत्ततोरात्रौसागरस्यतटेशुचिः ॥
लक्षजापेकृतेसिद्धिर्दत्तेसागरचेटकः ॥
रत्नत्रयंतथाभोज्यंसौम्योमन्त्रीसुखीभवेत् ॥ १३ ॥

---

१ प्रत्यहमिति वा पाठः ।

'ॐ अनुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा (४)' इसमंत्रको ध्यान करके पवित्र होकर सागरके किनारे जपे तो सिद्ध होनेसे सागर चेटक तीन रत्न बडे मोलके देताहै भोजन देताहै सौम्य रहनेसे मंत्री मुखी भी होताहै ॥ १३ ॥

ॐभगवन्समुद्रदेहिरत्नानिजलवासो-ह्रींनमोस्तुतेस्वाहा ५

त्रिपथेतुवटस्थानेरात्रौमंत्रीजपेत्स्वयम् ॥

लक्षत्रयंततःसिद्धादेवीचवटयक्षिणी ॥ १४ ॥

'ॐ भगवन् समुद्र देहि रत्नानि जलवासो ह्रींनमोस्तुते स्वाहा (५) पवित्र होकर त्रिमार्गमें वटके नीचे रात्रिमें इस मंत्रको अकेला जपे तीन लक्ष जप करनेसे सिद्ध होकर देवी वटयक्षिणी १४

वस्त्रालंकारकंदिव्यंरससिद्धिरसायनम् ॥

दिव्यांजनन्तुसातुष्टासाधकायप्रयच्छति ॥ १५ ॥

ॐह्रींवटवासिनीयक्षकुलपताकेवटयक्षिणिएह्येहिस्वाहा(६)

ॐवटवृक्षंसमारुह्यलक्षमेकंजपेन्मनुम् ॥

ततस्सप्ताभिमंत्रेणकांजिकैःक्षालयेन्मुखम् ॥ १६ ॥

मासत्रयंजपेद्रात्रौवरंयच्छतियक्षिणी ॥

रसंरसायनंदिव्यंक्षुद्रकर्मह्यनेकधा ॥

सिद्धानिसर्वकार्याणिनान्यथाशंकरोब्रवीत् ॥ १७ ॥

वस्त्र दिव्यअलंकार रससिद्धि और रसायन दिव्य अंजन प्रसन्न होकर साधकके निमित्त देती है 'ओंह्रीं वटवासिनि यक्षकुलपताके वटयक्षिणि एह्येहि स्वाहा' (६) रातमें वटके वृक्षपर चढकर एक लक्ष मंत्र जपकरै जपकरने उपरांत सात वार अभिमंत्रित कर कांजीसे मुख धो डाले रात्रिमें तीन महीने जपे तो यक्षिणी वर देती है और

---

१ प्रसूतेइतिवापाठः ।

इसको दिव्यरसायन अनेक क्षुद्रकर्म भोज्य पदार्थभी और सब कर्म सिद्ध हो जाते हैं इसमें अन्यथा नहीं ऐसा शंकरने कहा है१५।१६।१७

ॐनमश्चन्द्राद्यावाकर्णकारणक्लींस्वाहा ॥
ॐनमोभगवतेरुद्रायचंडवेगिनेस्वाहा (७)

‘ ॐनमश्चंद्राद्यावाकर्णकारण क्लीं स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय चंडवेगिने स्वाहा’ (७)

मंत्रद्वयस्यैकैवसिद्धिः ।

इन दोनों मंत्रोंमें कोई एक जपनेसे सिद्धि होती है ॥

अथ विशालासाधनम् ।

चिंचावृक्षतलेलक्षंमंत्रमावर्त्तयेच्छुचिः ॥
शतपुष्पोद्भवैःपुष्पैःसघृतैर्होममाचरेत् ॥ १८ ॥

यह विशाला साधन अगला मंत्र इमली वृक्षके नीचे बैठ कर पवित्र होकर जपे, इसीके वा सोंफके पत्र पुष्पोंसे घृतके साथ हवन करे१८

विशालाचततोतुष्टारसंदिव्यंरसायनम् ॥
ॐऐंविशालेत्रांत्रींक्लींस्वाहा ॥
अथवा ॐऐंविशालेक्रोंह्रींत्रींक्लींक्रींस्वाहा (८)

तब प्रसन्न होकर विशाला दिव्यरस रसायन देती है ‘ ॐ ऐं विशाले त्रां त्रीं क्लीं स्वाहा ’ (८)

आभेयासाधनम् ।

नरास्थिनिर्मितामालागलेपाणौचकर्णयोः ॥ १९ ॥

मनुष्यकी अस्थिसे बनी माला गले हाथ और कर्णमे धारण कर १९

धारयेज्जपमालांचतादृशींतुश्मशानतः ॥
लक्षमेकंजपेन्मंत्रंसाधकोनिर्भयश्शुचिः ॥ २० ॥

पवित्र हो निर्भय हृदयसे अकेला स्मशानमें वास करै नरास्थि मालाको हाथमें धारण कर एक लक्ष मंत्र जपै ॥ २० ॥

ततोमहाभयायक्षीप्रयच्छतिरसायनम् ॥
तस्यभक्षणमात्रेणसर्वरत्नानिचालयेत् ॥ २१ ॥

तब यह महाभया यक्षिणी प्रसन्न होकर साधकको सिद्धि और रसायन देतीहै उसके भक्षणमात्रसे सब रत्नोंको यथा स्थानसे चलायमान करनेमें सामर्थ्य होजाती है ॥ २१ ॥

वलीपलितनिर्मुक्तश्चिरंजीवीभवेन्नरः ॥ २२ ॥

और वलीपलितसे निर्मुक्त होकर मनुष्य चिरंजीवी होताहै २२

ॐह्रींत्रांमहाभयेक्लींस्वाहा ॥
वा ॐक्रींमहाभयेक्लींस्वाहा (९)

' ओं ह्रीं त्रां महाभये क्लीं स्वाहा ' (९)

चन्द्रिकासाधनम् ।

शुक्लपक्षेजपेत्तावद्यावत्संदृश्यतेविधुः ॥
प्रतिपत्पूर्वपूर्णांतंनवलक्षमिदंजपेत् ॥ २३ ॥
अमृतंचंद्रिकादत्तंपीत्वाजीवोमरोभवेत् ॥ २४ ॥

शुक्लपक्ष की प्रतिपदासे जप आरंभ करै तबतक जपकरै जबतक आकाशमें चन्द्रमा दीखतारहै इस प्रकार प्रतिपदासे पूर्णातक नौ लक्ष इसका जपकरे तब चन्द्रिका देवी प्रसन्न हो साधकको अमृत देती है उसके दिये अमृतको पान करनेसे अमर होजाताहै ॥ २३ ॥२४॥

ॐह्रींचन्द्रिकेहंसःक्रींक्लींस्वाहा (१०)

' ओं ह्रीं चन्द्रिके हंसः क्रीं क्लीं स्वाहा' (१०)

अथरक्तकंबलासाधनम् ।

जप्यंमासत्रयंरक्तकंबलासाप्रसीदति ॥
मृतकोत्थापनेकुर्य्यात्प्रतिमांचालयेत्तथा ॥ २५ ॥

रक्त कम्बलाका मंत्र तीन महीने जपने से लालकम्बला प्रसन्न होतीहै इससे मृतक उत्थापन और प्रतिमाचालन कर सकताहै॥२५॥

ॐह्रींरक्तंकंबलेमहादेविमृतकमुत्थापयप्रतिमाञ्चा लयपर्वतांकंपय २ नीलयनीलयविहस २ हूं हूं(११)

ॐ ह्रीं रक्तकंबले महादेवि मृतकमुत्थापय प्रतिमां चालय पर्वतान्कंपय २ नीलय २ वियस २ हूं हूं (११)

विद्युज्जिह्वासाधनम् ।

अष्टोत्तरशतंजप्त्वायत्किंचित्स्वादुभोजनम् ॥
तद्बलिंदीयतेतस्यैवटाधोमासमेकतः ॥ २६ ॥

एक सो आठ वार जप कर जो कुछ अपने निमित्त स्वादु भोजनहै उसकी बलि वटके नीचे उसके निमित्त दे ऐसा एक मास पर्यन्त करे॥

ततोदेवीसमागत्यहस्ताद्गृह्णातिभोजनम् ॥
तत्रैवसावरन्दत्तेनित्यंसांनिध्यकारकम् ॥ २७ ॥

तब देवी आनकर अपने हाथसे उसका भोजन ग्रहण करती है और नित्य समीप रहती है ॥ २७ ॥

अतीतानागतंकर्मस्वस्थास्वस्थंब्रवीतिसा ॥
प्रतिमाःपर्वतान्सर्वांश्चालयत्येवतत्क्षणात् ॥ २८ ॥

अतीत अनागत कर्मको स्वस्थ होकर वह कह देती है जिससे प्रतिमा और सब पर्वतोंकोभी चलायमान कर सकता है ॥ २८ ॥

ॐकारमुखेविद्युज्जिह्वे । ॐह्रूंचेटकेजयजयस्वाहा (१२)

कर्णपिशाचिनीसाधनम् ।

पूर्वमेवायुतंजप्त्वाकृष्णकन्याभिमंत्रितः ॥
हस्तपादप्रलेपेनसुप्तेवक्तिशुभाशुभम् ॥
त्रैलोक्येयादृशीवार्तातादृशंकथयेत्फलम् ॥ २९ ॥

---

१ ओंसुमुखेविद्युज्जिह्वओंह्रूं चेटकेश २ स्वाहा इति वा पाठः ।

कर्णपिशाचनी साधन पहले अगला मंत्र दश सहस्र जप करके कृष्णकन्यासे अभिमंत्रित कर हाथ पांवको लेप करके सोनेसे शुभ अशुभ त्रिलोकमें जो वार्ता है उसका फलाफल कहती है ॥ २९ ॥

ॐह्रींसः नमोभगवतिकर्णपिशाचिनिचण्डवेगिनि
वदवदस्वाहा (१३)
अथवा ॐक्रींसनामशक्तिभगवतिकर्णपिशाचिनि
चण्डरोपिणिवदवदस्वाहा ॥

येदोनों मन्त्र हैं ॥

स्वप्नावतीसाधनम् ।

मृद्गोमयैर्लिपेद्भूमिंकुशांस्तत्रसमास्तरेत् ॥
पंचोपचारनैवेद्यैर्देवदेवींप्रपूजयेत् ॥ ३० ॥

मिट्टी और गोबरसे पृथ्वीको लीपकर बहुकुश बिछावै और पंचोपचारनैवेद्यसे देव देवीका पूजन करे ॥ ३० ॥

अक्षसूत्रंकरेधृत्वापूर्वमेवायुतंजपेत् ॥
सूर्यकोटिसमांध्यात्वारात्रौपाणितलेजपेत् ॥
अर्द्धरात्रेगतेदेवीवार्त्तांवक्तिशुभाशुभाम् ॥ ३१ ॥

अक्षसूत्र (रुद्राक्षमाला) हाथमें रखकर पूहले दश सहस्र जपे कोटिसूर्यकी समान प्रकाशमानका ध्यानकरे आधीरातके समय देवी सोनेपर शुभ अशुभ कहती है ॥ ३१ ॥

ॐह्रींआगच्छ२चामुंडेश्रींस्वाहा (१४)
रोचनैःकुंकुमैःक्षीरैःपद्मंचाष्टदलंलिखेत् ॥
नीरंध्रेभूर्जपत्रेचमायाबीजंदलेदले ॥ ३१ ॥

' ओं ह्रीं आगच्छ २ चामुण्डे श्रीं स्वाहा (१४) गोरोचना

कुमकुम दूधसे आठ दलका कमल लिखै छिद्ररहित भोजपत्रपर मायाबीज प्रत्येक दल पर ॥ ३२ ॥

लीखित्वाधारयेन्मूर्ध्निइमंमंत्रंततोजपेत् ॥
पूर्वमेवायुतंजप्त्वाचैवंकुर्य्यात्प्रयत्नतः ॥
अतीतानागतंसर्वंस्वप्नेवदतिदेवता ॥ ३३ ॥

लिखकर शिरपर धारणकर १०००० इस मंत्रको जपै सात दिन पर्यन्त यत्नसे इस कार्यको करे तो सोतेमें देवी भूत भविष्य वर्त-मान तीनों कालकी बात कहती है ॥ ३३ ॥

ॐह्रींचिंचिपिशाचिनिस्वाहा (१५)
अलाबुमूलिकांपुष्येतथासर्पाक्षिमूलिकाम् ॥
ग्राह्याभिमंत्रितायत्नाद्रक्तसूत्रेणवेष्टयेत् ॥
मूर्ध्निबद्धातथासुप्तेवदत्येवशुभाशुभम् ॥ ३४ ॥

' ओंह्रीं चिंचि पिशाचिनि स्वाहा (१५) पुष्यनक्षत्रमें कडवी तूंबीकी मूल तथा सर्पाक्षिकी मूलको ग्रहणकर लालसूत्रसे वेष्टनकरे इसे शिरपर रखनेसे सोतेमें देवता सम्पूर्ण शुभाशुभ कथन करता है ॥ ३४ ॥

ॐनमोभगवतेरुद्रायकर्णपिशाचायस्वाहा (१६)

येकर्णपिशाच मन्त्र है ॥

विचित्रसाधनम् ।

लक्षमेकञ्जपेन्मंत्रंवटवृक्षतलेशुचिः ॥
बंधूककुसुमैःपश्चान्मध्वाज्यैःक्षीरमिश्रितैः ॥ ३५ ॥

पवित्र होकर वट वृक्षके नीचे एक लक्ष मंत्र जपै पीछे बंधूक (दुपहरिया) के फूल मधु घृत दूध मिलाकर ॥ ३५ ॥

---

१ सप्ताहं वा इति पाठः ।

दत्तेधूपेदशांशेनजुहुयात्पूर्णयान्वितम् ॥
ततःसिद्धाभवेद्देवीविचित्रावांछितप्रदा ॥ ३६ ॥

कुंडमें दशांश धूप दे हवन करे तब विचित्रादेवी सिद्ध होकर विचित्र जयकी देनेवालीहै ॥ ३६ ॥

ॐविचित्रेविचित्ररूपेसिद्धिंकुरु २ स्वाहा (१७)
जपहोमयोरयंमंत्रः ॥

'ओं विचित्रे विचित्ररूपे सिद्धिं कुरु २ स्वाहा' यह जप और होमका मंत्र है (१७)

अथ हंसिसाधनम् ।

प्रविश्यनगरस्यांतंलक्षसंख्यंजपेच्छुचिः ॥
पद्मपत्रैःकृतोहोमोघृतोपेतैर्दशांशतः ॥ ३७ ॥

नगरके अन्तमें जाकर एक लक्ष मंत्र जपै कमलपत्रोंयुक्त घृतसे दशांश हवन करै ॥ ३७ ॥

प्रयच्छत्यंजनंहंसीयेनपश्यतिभूनिधिम् ॥
सुखेनतंचगृह्णातिनविघ्नैःपरिभूयते ॥ ३८ ॥
ॐहंसिहंसिजनेह्रींक्लींस्वाहा (१८)
ॐनमोहंसिनिहंसगतेमांस्वाहाइतिवा ॥

ऐसा करनेसे हंसी अंजन देती है जिस्से पृथ्वीका खजाना दीखता है और वह सुखपूर्वक ग्रहणकर ऐश्वर्य से पूर्ण हो जाताहै विघ्न नहीं होते ॥ ३७॥ 'ॐ हंसिहंसिजने ह्रीं क्लीं स्वाहा' 'नमो हंसिनी हंसगते मां स्वाहा' चाहैं यह मंत्र पढ़ै (१८.)

मदनासाधनम् ।

लक्षसंख्यंजपेन्मंत्रंराजद्वारेशुचिःस्थिरः ॥
सक्षीरैर्मालतीपुष्पैर्घृतहोमोदशांशतः ॥ ३९ ॥

पवित्र हो स्थिरतासे राजद्वारमें एक लक्ष मंत्र जपै दूध मालतीके फूल और घृतसे दशांश हवन करे ॥ ३९ ॥

मदनायक्षिणीसिद्धिंगुटिकांसंप्रयच्छति ॥
तयामुखस्थयादृश्यश्चिरस्थायीभवेन्नरः ॥ ४० ॥

तो मदनायक्षिणी सिद्ध होकर गुटिकाप्रदान करतीहै उसको मुख में रखनेसे मनुष्य अदृश्य और चिरस्थायी होताहै ॥ ४० ॥

ॐऐंमदनेमदनविद्रावणेअनंगसंगमंदेहि२क्लींक्लीं स्वाहा (१९)

'ओं ऐं मदने मदनविद्रावणे अनंगसगंदेहिहेहि क्लींक्लीं स्वाहा'१९

कालकर्णीसाधनम् ।

लक्षसंख्यंजपेन्मंत्रंपलाशतरुजेन्धनैः ॥
मधुनाज्यैःकृतेहोमेकालकर्णीप्रसीदति ॥ ४१ ॥

यह मंत्र एक लक्ष ढाकके पेडके नीचे बैठकर जपे और शहदसे होम करे तो कालकर्णी प्रसन्न हो जातीहै ॥ ४१ ॥

सैन्यधारास्त्रबंधंचगतिस्तंभकरीभवेत् ॥
सततंतांस्मरेन्मंत्रीविविधैश्वर्य्यकारिणीम् ॥ ४२ ॥

प्रसन्न होकर सैन्यधारा अस्त्रबंध और गतिको स्तंभ करतीहै मंत्र जाननेवाला अनेक ऐश्वर्य करने वाली भगवतीको निरन्तर स्मरण करै ॥ ४२ ॥

ॐह्रींक्लींकालकर्णिकेठःठःस्वाहा (२०)

' ॐ ह्रीं क्लीं कालकर्णिके ठःठःस्वाहा' यह जपका मंत्र है (२०)

लक्ष्मीयक्षिणीसाधनम् ।

स्वगृहेसंस्थितोरक्तैःकरवीरप्रसूनकैः ॥
लक्षमावर्त्तयेन्मंत्रंहोमंकुर्याद्दशांशतः ॥ ४३ ॥

---

१ ओंऐंमदनेमदनविडम्बिनिआलिंगयर संगमदेहि संगमदेहिस्वाहावापाठः.

अपने घरमें स्थित लाल कनेरके फूलोंसे अर्चन करै और लक्ष मंत्र जप करके उसके दशांश हवन ॥ ४३ ॥

होमेकृतेभवेत्सिद्धिर्लक्ष्मीनाम्नीचयक्षिणी ॥
रसंरसायनंदिव्यंविधानंचप्रयच्छति ॥ ४४ ॥

हवन करनेसे लक्ष्मी नाम यक्षिणी सिद्ध होजाती है इसे दिव्य रसायन और विधानको प्रदान करती है ॥ ४४ ॥

ॐऐंलक्ष्मींश्रींकमलधारिणींकलहंसीस्वाहा (२१)

'ओं ऐं लक्ष्मीं श्रीं कमलधारिणीं कलहंसी स्वाहा' यह मंत्र है (२१)

शोभनासाधनम्।

रक्तमाल्यांबरोमंत्रंचतुर्दशीदिनेजपेत् ॥
ततःसिद्धाभवेद्देवीशोभनाभोगदायिनी ॥ ४५ ॥

लाल माला और वस्त्र धारण कर यह मंत्र चतुर्दशीके दिन जपै तब शोभना भोगदायिनी देवी प्रसन्न होजाती है ॥ ४५ ॥

ॐअशोकपल्लवाकारकरतलेशोभनींश्रींक्षःस्वाहा (२२)

'ओं अशोकपल्लवाकारां करतले शोभनीं श्रींक्षःस्वाहा' (२२)

नटीसाधनम् ।

पुण्याशोकतलंगत्वाचन्दनेनसुमण्डलम् ॥
कृत्वादेवींसमभ्यर्च्यधूपंदत्वासहस्रकम् ॥ ४६ ॥

पवित्र हो अशोकवृक्षके नीचे जाकर चन्दनसे सुन्दर मण्डलकर देवीको पूज धूप दे ॥ ४६ ॥

मंत्रमावर्तयेन्मासंनक्तभोजीनरस्तदा ॥
रात्रौपूजांशुभांकृत्वाजपेन्मंत्रंनिशार्द्धके ॥ ४७ ॥

सहस्र मंत्र सदा जपै रात्रिके समय भोजन करै रात्रिमें अच्छी प्रकार पूजाकर अर्धरात्रिके समय मंत्र जपै ॥ ४७ ॥

नटीदेवीसमागत्यनिधानंरसमंजनम् ॥
ददातिमंत्रिणेमंत्रंदिव्ययोगंचनिश्चितम् ॥ ४८ ॥

तब नटी देवी प्राप्त होकर निधियुक्त रस अंजन मंत्रीको देतीहै और दिव्य योग तथा मंत्र देतीहै यह निश्चय है ॥ ४८ ॥

ॐह्रींक्रींनटिमहानटिसरूपवतीस्वाहा (२३)

'ओं ह्रीं क्रीं नटि महानटि स्वरूपवति स्वाहा यह मंत्र हैं. (२३)

पद्मिनीसाधनम् ।

स्रक्सुगंधिगृहस्थानेचन्दनेनसुमंडलम् ॥
कृत्वाहस्तप्रमाणेनपूजयेत्तत्रपद्मिनीम् ॥ ४९ ॥

माला सुगन्ध द्रव्य और चन्दनसे अपने स्थानमें सुंदर मंडल बनावे एक हाथके प्रमाणमें मण्डल बनाय उसमें पद्मिनीका पूजन करै ॥ ४९ ॥

धूपंसगुग्गुलुंदत्वाजपेन्मंत्रसहस्रकम् ॥
मासमेकन्ततःपूजांकृत्वारात्रौपुनर्ज्जपेत् ॥ ५० ॥

गुग्गुलुसहित धूप देकर एक सहस्र मंत्र जपै इस प्रकार एक महीने पूजाकर रात्रिमें फिर जप करै ॥ ५० ॥

अर्द्धरात्रेगतेदेवीसमागत्यप्रयच्छति ॥
निधानंदिव्ययोगंचतस्मान्मंत्रीसुखीभवेत् ॥ ५१ ॥

ॐह्रीं (वाक्रीं) पद्मिनीस्वाहा (२४)

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने यक्षिणीसाधनं नाम पंचदशोपदेशः ॥ १५ ॥

आधीरात बीतने पर देवी आनकर निधि और दिव्य योग देती

---

१ 'वस्त्रं च' इति वा पाठः ।

है उससे मंत्र जपने वाला सुखी होता है ॥ ५१ ॥ मंत्र यह है कि–
'ओं ह्रीं पद्मिनी स्वाहा' (२४)

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पंडितज्वालाप्रसादमिश्रकृत-
भाषाटीकायां यक्षिणीसाधनंनामपंचदशोपदेशः ॥ १५ ॥

अथवीर्यस्तंभनवाजीकरणादिरसस्यप्रयोगसिद्ध्यर्थेरसादिशोधनम् ।

पलान्न्यूनंनकर्तव्यंरससंस्कारमुत्तमम् ॥
अघोरेणैवमंत्रेणरसराजस्यपूजनम् ॥ १ ॥
ॐअघोरेभ्योथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः ॥
सर्वतःसर्वसर्वेभ्योनमस्तेस्तुरुद्ररूपेभ्यः ॥ २ ॥

एक पलसे न्यून पारेका संस्कार न करे और अघोरमंत्रसेही रसराजका पूजन करे ॥ १ ॥ ओं अघोरेत्यादि मंत्र है ॥ २ ॥

कुमार्य्याश्चनिशाचूर्णैर्दिनंसूतंविमर्दयेत् ॥
पातयेत्पातनायंत्रेसम्यक्शुद्धोभवेद्रसः ॥ ३ ॥

घीकुवार और हलदीके चूर्णसे एक दिन पारेको खरल करे और पातनायंत्रसे उसको पातन करे तो भली प्रकारसे शुद्ध होता है॥३॥

अथवाहिंगुलात्सूतंग्राहयेत्तन्निगद्यते ॥
पारिभद्ररसैःपेष्यंहिंगुलंयाममात्रकम् ॥ ४ ॥

अथवा हिंगुल (सिंगरफ) मेंसे पारा निकाले उसके निकालने की विधि कहते हैं निम्बके रसमें एक पहर हिंगुलकी डलीको खरल करे ॥ ४ ॥

जम्बीराणांद्रवैर्वाथपात्यंपातालयंत्रके ॥
तंसूतंयोजयेद्योगेसप्तकंचुकवर्जितम् ॥ ५ ॥

अथवा जम्बीरी नीबूके रसमें खरल कर पातालयंत्रसे पातन करे तो सात कैचलीसे वर्जित हुए उस पारेको कार्यमें प्रयुक्त करे ५

सूतस्यदशमांशन्तुगंधंदत्वाविमर्दयेत् ॥
जंबीरोत्थद्रवैर्यामंपात्यंपातालयंत्रके ॥ ६ ॥

पारेसे दशमांश गंधक मिलाकर खरल करे तथा जंभीरीके रसमें एक पहर मर्दन कर पातालयंत्रमें पातन करे ॥ ६ ॥

पुनर्मर्द्यंपुनःपात्यंसप्तवारंविशुद्धये ॥
इत्येवंशुद्धयःख्यातास्तासामेकांतुकारयेत् ॥ ७ ॥

इति रसशोधनम् ।

इस प्रकार फिर मर्दन कर फिर पातन करे. सात बार विशुद्धिके निमित्त कृत्य करे. इस प्रकार पारेकी शुद्धि कही है इनमें कोई एक करे ॥ ७ ॥

इति रससोधन ।

अथ पातालयन्त्रम् ।

उपर्यापोह्यधोवह्निर्मध्येचरसपिष्टिका ॥
क्रमादग्निर्विदध्यात्तत्पातनायंत्रमुच्यते ॥ ८ ॥

इति पातालयंत्रम् ।

ऊपर जल नीचे अग्नि बीचमें रसकी पोटली रक्खै, क्रमसे अग्नि दे पातन करे पीछे १४९ का चित्र दिया है इसका नाम पातालयंत्र है ॥ ८ ॥

इति पातालयंत्र ।

अथ रसमारणम् ।

मुक्तंसर्वस्यसूतस्यतप्तखल्वेविमर्दनम् ॥
अजाशकृत्तुषाग्निंतुभूगतैत्रितयंक्षिपेत् ॥ ९ ॥

तस्योपरिस्थितंखल्वंतत्तखल्वमिदंभवेत् ॥
खल्वंलोहमयंशस्तंपाषाणोष्णमथापिवा ॥ १० ॥
अजीर्णंचाप्यबीजंवायःसूतंघातयेन्नरः ॥
ब्रह्महासुदुराचारोमंत्रद्रोहीमहेश्वरि ॥ ११ ॥

सब प्रकार पारेको तप्त खल्वमें मर्दन करना श्रेष्ठ कहा है बकरीकी मसेंगन तुषाग्निसे तीन दिन पृथ्वीके गर्तमें पाचित करे, उसके ऊपर लोहेका खरल रक्खै यह तप्त खल्व कहलाता है, अच्छा खरल लोहेका है, वह न हो तो पाषाणकाभी उत्तम है विना जीर्ण किये अर्थात् अबीज और अजीर्ण पारा जो मनुष्य घात करता है, हे महेश्वरि ! वह ब्रह्महत्या करनेवाला दुराचारी और महाद्रोही है ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥

रामठंपंचलवणंतथाक्षारचतुष्टयम् ॥
त्रिकटुंशृंगवेरंचमातुलुंगरसाप्लुतम् ॥ १२ ॥
पिंडमध्येरसंदत्त्वास्वेदयेत्सप्तवासरान् ॥
सारनालेतुमृद्भाण्डेग्रासार्थीजायतेध्रुवम् ॥
एतदेवरसंयत्नाज्जंबीरद्रवसंयुतम् ॥
दिनैकंधारयेद्धर्मेमृत्पात्रेवामृतोभवेत् ॥ १४ ॥
ग्रासंतत्रैवदातव्यंस्वर्णशुद्धिःशनैःशनैः ॥
चतुष्षष्ट्यादितुल्यांशंदेयंजीर्णंञ्चचालयेत् ॥ १५॥

हींग और पांचोंनोन चारों खार सोंठ मिरच पीपल अदरख मातुलुंग (बीजपूर बिजौरे) के रससे पीस इसको एक अंगुल के गाढ़े स्वच्छ कपड़ेमें लेप कर उसके मध्यमें पारेको रख कर सात दिन स्वेदन (औटावे) संस्कार करे और फिर मट्टीके बरतनमें

---

१ जारण।

रख कांजीके साथ ग्रास स्वीकार करता है इस प्रकारसे यत्नपूर्वक उस रसको जंबीरीके रसमें खरल कर एक दिन धूपमें सुखाय फिर मट्टीके बरतनमें सुवर्णके शुद्ध ग्रास शनैः २ देने चाहिये और चौसठवां भाग शुद्ध सुवर्णका दे अर्थात् ॥ १२ ॥ १३ ॥१४॥१५॥

चतुष्षष्ट्यंशकंचादौद्वात्रिंशत्तदनन्तरम् ॥
पुनर्विंशतिमंग्राह्यंद्विरष्टंद्वादशंक्रमात् ॥ १६ ॥

पहले चौंसठ मिलाकर पीछे बत्तीस मिलाकर फिर सोलह फिर बारह क्रमसे ग्रास देकर खरल करे ॥ १६ ॥

अष्टमांशंचतुर्थंवाप्यर्द्धंचैवसमांशकम् ॥
प्रतिग्रासेतप्तखल्वेदिनमम्लेनमर्दयेत् ॥ १७ ॥

फिर आठवां अंश चौथा अंश आधा अथवा बराबर दे, प्रति ग्रासको तप्त खरलमें अम्ल वर्गके साथ एक दिन खरल करे॥ १७ ॥

तंक्षिपेच्चारणायंत्रेजंबीरंनीरसंयुतम् ॥
तद्यंत्रंधारयेद्धर्मेदिनंस्याज्जारितोरसः ॥ १८ ॥

जंबीरीके रसके सहित उसको चारणायंत्रमें डाले और उसको धूपमें रक्खे तो एक दिनमें रस बने ॥ १८ ॥

तंछागक्षीरगोमूत्रस्नुक्क्षीराम्लैःप्रलेपिते ॥
दृढवस्त्रेबहिर्बध्वामृद्धटेस्वेदयेद्बुधः ॥ १९ ॥

फिर उसको छाग गोमूत्र थूहरके दूध अम्ल वर्गसे लिप्त करके वस्त्रमें दृढ बांधकर मृत्तिकाके घटमें स्वेदन करे ॥ १९ ॥

कांजिकाक्षारमूत्रैर्वादोलायंत्रेत्त्वहर्निशम् ॥
तमुद्धृतंरसंदाविखल्वेसंशोधयेत्क्षणात् ॥ २० ॥

कांजी क्षार और गोमूत्रके साथ दोलायंत्रमें एक दिनरात स्थित करे फिर उसमेंसे रसको निकाल कर खरलमें शुद्ध करे ॥ २० ॥

संमर्द्यपूर्ववत्खल्वेयंत्रेलिप्तपुटेपुनः ॥
क्रमेणानेनदेवेशित्रिभिर्ग्रासैःप्रजीर्यते ॥ २१ ॥

फिर पूर्ववत् खरल करे और वस्त्र आदिमें लपेट कर पुट दे, हे देवि ! इस क्रमसे तीन ग्रासोंसे जीर्ण हो जाता है ॥ २१ ॥

यावत्तेनयदातस्मात्तावत्तेनविमर्दयेत् ॥
प्रतिग्रासेतप्तखल्वेयथाशक्त्याचजारयेत् ॥ २२ ॥

जबतक ठीक न हो बराबर मर्दन करता रहै और प्रतिग्रासमें तप्त खरलमें यथाशक्ति जलावे ॥ २२ ॥

तंजीर्णमारयेत्सूतंमारणंकथ्यतेद्रवैः ॥
तंहिसर्वरसोपेतं पिष्ट्वाखल्वेविमर्दयेत् ॥ २३ ॥
सूतंगंधकसंयुक्तंदिनान्तेतन्निरोधयेत् ॥
पुटयेद्भूधरेयंत्रेदिनान्तेतत्समुद्धरेत् ॥ २४ ॥

उस जीर्ण हुए पारेको मारे. अब द्रवद्वारा उसका मारण कहते हैं–उसको रसोंके साथ खरलमें डालकर घोटे, पारे और गंधककी कजली कर पुट देकर भूधरयंत्रमें पचानेसे पारा मर जायगा अथवा ॥ २३ ॥ २४ ॥

कृष्णधत्तूरतैलेनसूतोमर्द्योद्रियामकम् ॥
दिनैकंतत्पचेद्यंत्रेकच्छपाख्येनसंशयः ॥ २५ ॥

एक पैसे भर सिद्ध पारेमें काले धतूरेका रस डालकर एक दिन घोटे एक दिन नियामक औषधी (बंदालका रस आकका दूध कबूतरकी बीट गीली हंसपदिका रस इन्द्रायन के फलका रस) इनमें घोटे पीछे गोला बनाय कच्छपयंत्रमें रख आंच दे तो ॥२५॥

मृतःसूतोभवेत्सद्यःसर्वरोगेषुयोजयेत् ॥
रसगंधसमंमर्द्यदिनंनिर्गुण्डिकाद्रवैः ॥ २६ ॥

निःसन्देह पारा मरे इस्से सबीज निर्बीज पारा मरता है इसे सबरोगोंमें दे पारे और गंधक को एकदिन निर्गुण्डीके रसमें मर्दन कर ॥ २६ ॥

चक्रमूषान्वितेध्मातेभस्मसूतंभवेन्मलम् ॥
टंकणंमधुलाक्षाचकुर्णा[1]गुंजायुतोरसः ॥ २७ ॥
मर्दयेद्भृंगजंद्रावैर्दिनैकंचांधयेत्पुनः ॥
ध्मातोभस्मत्वमाप्नोतिशुद्धःस्फटिकसन्निभः ॥२८॥

मूषामें रख कर फूंकनेसे पारेकी भस्म हो जायगी. सुहागा शहद लाख पीपल चौंटली भांगरा इनके रसमें पारेको खरल कर एक दिन अंधरा करे फिर फूक देनेसे शुद्ध स्फटिकके समान भस्म होती है ॥ २७ ॥ २८ ॥

द्विपलंसूतराजस्यपलैकंगंधकस्यच ॥
मर्दयेन्मार्कवद्रावैर्दिनमेकंनिरन्तरम् ॥ २९ ॥

दोपल पारा दोपल गंधक इनको निरन्तर एक दिन भांगरे के रसमें मर्दन करे ॥ २९ ॥

रुध्वातद्भूधरेयंत्रेदिनैकंमारयेत्पुटात् ॥
इत्येवंजारितेसूतेमारणंपरिकीर्तितम् ॥ ३० ॥

और भूधरयंत्रमें उसको एक दिन पुटित कर मारे इसप्रकार जारित पारेका मारण कहा है ॥ ३० ॥

अथवाग्रासयोग्यंतुनिहन्यात्सान्वितंरसम् ॥
सूतकंघनसत्वंचमर्दयेत्कंगुणीद्रवैः ॥ ३१ ॥

अथवा ग्रासयोग्यबलिष्ठ रसको (पारेको) मालकांगनीके रससे निरन्तर मर्दन करे ॥ ३१ ॥

---

१ मधुलाक्षावाऊर्णेति पाठे ऊर्णा (ऊन)।

दिनैकंगोलकंतच्चशोषयेदातपेखरे ॥
गर्भयंत्रगतंपाच्यात्रिदिनंहितुषाग्निना ॥ ३२ ॥

इस प्रकार एक दिन मर्दन कर उसका गोला बनाय तीक्ष्ण धूपमें सुखावै फिर गर्भयंत्रमें रखकर तीन दिन तुष अग्निसे पचावै ॥ ३२ ॥

करीषाग्नौदिवारात्रौपचेत्तद्भस्मतांनयेत् ॥
सूतंस्वर्णंव्योमशंखंसमंरंभाद्रवैर्दिनम् ॥ ३३ ॥
मर्दयेद्बीजसंयुक्तंचर्षिचारणयंत्रके ॥
सर्वकैर्मूलिकाद्रावैर्दिनमेकन्तुमर्दयेत् ॥ ३४ ॥

एक दिनरात करीष (उपले गोबर सूखा) अग्निमें पचावै तो पारेकी भस्म होजायगी पारा सुवर्ण अभ्रक केलेका रस और बीज इनके साथ मर्दन करै तथा चारणयंत्रमें पारेको मूलिका रसोंके साथ एक दिन मर्दन करै "१५५नम्बरका चित्र देखो" ३३ ३४

गर्भयंत्रगतंपाच्यंम्रियतेपूर्ववद्रसः ॥
ब्रह्मदंडीमेघनादोचित्रकंकटुतुम्बिका ॥ ३५ ॥
वज्रवल्लीवलाकन्यात्रिकुटार्कस्नुहीपयः ॥
कंदोरंभाचनिर्गुंडीलज्जाजातीजयंतिका ॥ ३६ ॥

और गर्भयंत्रमें रखकर पारेको पचावै तो वह पूर्ववत् मरजाताहै ब्रह्मदण्डी चौलाई चीता कडवी तूंबी वज्रवल्ली खरैंटी घीकुवार सोंठ मिर्च पीपल आक थूहरका दूध रंभाकंद निर्गुण्डी लाजा (लज्जावंती) जाती जयन्ती ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

विष्णुक्रान्ताहास्तिशुण्डीदद्रुघ्नोभृंगराट्पटुः ॥
गुडूचीलांगलीनीरकणाकालीमहोरगा ॥ ३७ ॥

विष्णुक्रान्ता हाथीशुण्डी पमाड और भांगरा पितपापड़ा गिलोय कलिहारी सुगंधवाला नीली कटसरैया पीपल सर्पाक्षी वा तगर ३७

काकमाचीचदन्तीचएतापारदमारकाः ॥
व्यस्ताःसमस्तावासर्वादेयाह्यष्टदशाधिकाः ॥
उक्तस्थानेप्रयोक्तव्यारसराजस्यासिद्धये ॥ ३८ ॥

काकमाची दन्ती यह सब समस्त वा पृथक् २ पारेकी मारने वाली अठारह मूलिका हैं. रसराजकी सिद्धिके निमित्त निजकथित स्थानमें प्रयोग करनी चाहिये ॥ ३८ ॥

अथ गर्भयन्त्रप्रकारः ।

चतुरंगुलदीर्घातुमृन्मयीदृढमूषिका ॥
अंगुलामध्यविस्तारेवर्तुलंकारयेन्मुखम् ॥ ३९ ॥
लोनस्यविंशतिर्भागाएकोभागस्यगुग्गुलुः ॥
सुश्लक्ष्णंपेषयित्वातुतोयंदत्वापुनःपुनः ॥ ४० ॥
मुखालेपंततःकुर्याद्रसंतत्रविनिक्षिपेत् ॥
अंधयित्वापुटंदेयंगर्भयंत्रमिदंभवेत् ॥ ४१ ॥

गर्भयन्त्रकार-चार अंगुल दीर्घ और तीन अंगुल चौडी मिट्टीकी दृढ मूष बनावै उसका गोल मुख करै, लोनके वीसभाग गूगल एक भाग महीन पीसकर मूषापर दृढलेप करै लवणादि मिट्टीमें प्रथम पारेकी पिट्ठी रक्खै पीछे मुख बंदकर लेप करै पीछे जमीनमें गढा खोदकर तुषाग्निसे मंद मंद स्वेदन करै तो एक दिनरात्रि वा तीन-रात्रिमें पारा भस्म होवे यह गर्भयन्त्रविधान है ॥ ३९ ॥ ४०॥४१॥

इति रसमारणम् ।

अथ हिंगुलशुद्धिः ।

मेषीक्षीराम्लवर्गाभ्यांदर्दचघर्मभावितम् ॥
सप्तवारंप्रयत्नेनशुद्धिमायातिनिश्चतम् ॥ ४२ ॥

हिंगुल (सिंगरफ) को भेड़के दूध और अम्लवर्गकी घर्ममें सात भावना देनेसे हिंगुल शुद्ध होता है ॥ ४२ ॥

इति हिंगुलशुद्धिः।

अथ गंधकशुद्धिः।

शुकपक्षसमच्छायोनवनीतसमप्रभः ॥
मसृणःकठिनःस्निग्धःश्रेष्ठोगंधकउच्यते ॥ ४३ ॥

शुकपक्षके समान छायावान् मक्खनके समान कान्तिमान् एकसा कठिन और चिकना गंधक श्रेष्ठ होताहै ॥ ४३ ॥

साज्यंभाण्डेपयःक्षिप्त्वामुखंवस्त्रेणवेष्टयेत् ॥
तत्पूर्वंचूर्णितंगंधंक्षिप्त्वातस्योपरिन्यसेत् ॥ ४४ ॥
कपालमेकमुत्तानंगंधकस्याविंयोगितत् ॥
दुग्धभाण्डंन्यस्यभूमौदेयमूर्ध्वंपुटंलघु ॥ ४५ ॥

घी डालकर और दूध डालकर उस हांडीका मुख वस्त्रसे ढकदे आमलासार गंधक १६ तोले पीसकर घीमें गलावे गलनेपर वस्त्रपर डालदे गंधक उस वस्त्रसे टपककर दूधमें जम जायगी ॥४४॥४५॥

ततःक्षीरेद्रुतंगंधंशुद्धंयोगेषुयोजयेत् ॥
गंधंघृतेविपक्तव्यंयावत्तैलनिभंभवेम् ॥ ४६ ॥

तब उस दूधसे निकली हुई शुद्ध गंधकको कार्यमें लावै गंधकको घृतमें तबतक पकावै जबतक कि, वह तेलके समान हो जाय ॥ ४६ ॥

वस्त्रेणान्तारितंकृत्वाचालयेत्त्रिफलाम्भसि ॥
एवंगंधकशुद्धिःस्यात्ततोयोगेषुयोजयेत् ॥ ४७ ॥

उसे फिर वस्त्रमें छानकर त्रिफलेके जलमें डालदे इस प्रकारसे गंधक शुद्धकर योगोंमें लगाना उचित है ॥ ४७ ॥

इति गंधकशुद्धिः।

अथ अभ्रकशुद्धिः ।

कृष्णःपीतःश्वेतरक्तोयोज्योयोगरसायने ॥
पिनाकंदर्दुरंनागंवज्रंचेतिचतुर्विधम् ॥ ४८ ॥

काला पीला श्वेत लाल अभ्रक रसायनके योग्यहै. पिनाक, दर्दुर, नाग और वज्र ये चार भेद काले अभ्रकके हैं ॥ ४८ ॥

पिनाकाद्यास्त्रयोवर्ज्यावज्रंयत्नात्समाहरेत् ॥
मुंचत्यग्नौचानिक्षिप्तःपिनाकोदलसंचयम् ॥ ४९ ॥

इनमें पिनाकादि तीन त्यागन करके वज्र अभ्रकको यत्नसे ग्रहण करै, पिनाक अभ्रक अग्निमें डालनेसे दलसंचय अर्थात् पत्तोंको छोड़ता है ॥ ४९ ॥

अज्ञानाद्भक्षणात्तस्यमहादुःखप्रदोभवेत् ॥
दर्दुरोऽग्नौविनिःक्षिप्तःकुरुतेदर्दुरध्वनिम् ॥ ५० ॥

इसको अज्ञानसे खानेसे महादुखदायक कुष्ठ होता है, दर्दुर अभ्रक अग्निमें डालनेसे मेडककीसी ध्वनि करता है ॥ ५० ॥

तच्चभक्षणमात्रेणनानारोगंप्रयच्छति ॥
नागश्चाग्निस्थितःसद्यःफूत्कारंचविमुंचति ॥ ५१ ॥

उसके खानेसे अनेक रोग होते हैं. नाग अभ्रक अग्निमें डालनेसे सर्पवत् फूत्कार करताहै ॥ ५१ ॥

सचदेहगतोनित्यंव्याधिंकुर्याद्भगंदरम् ॥
वज्राभ्रकंतुवह्नौचनकिंचिद्विक्रियांव्रजेत् ॥ ५२ ॥

वह खानेसे भगन्दर रोग होता है. वज्राभ्रक अग्निमें रखनेसे कुछ भी विकारको प्राप्त नहीं होता है ॥ ५२ ॥

तस्माद्वज्राभ्रकंयोज्यंव्याधिवार्धक्यमृत्युजित् ॥
धमेद्वज्राभ्रकंवह्नौयावद्ग्निनिभंभवेत् ॥ ५३ ॥

इस कारण व्याधि बुढ़ापा मृत्युका दूर करनेवाला वज्राभ्रक प्रयुक्त करे, उसको अग्निमें फूंके जब यह अग्निके समान होजाय ५३

गोक्षीरेचततःसेच्यंगोक्षीरेचपुनःपुनः ॥
भिन्नपात्रेचतत्कृत्वामेघनादद्रवाम्बुना ॥ ५४ ॥

तब इसपर गौका दूध वारंवार छिड़के अर्थात् इसमें बुझावै फिर इसे अलग रख चौलाईके रसमें ॥ ५४ ॥

भावयेदष्टयामंचजायतेदोषवर्जितम् ॥
अथवाभ्रस्यभागौद्वौमुस्ताचैकंजलैस्सह ॥ ५५ ॥

आठ पहर भावना दे तौ दोषवर्जित होता है अथवा अभ्रक दो भाग मोंथेका और जलका एक भाग यह ॥ ५५ ॥

त्रिदिनंस्थापयेत्पात्रेततःसूक्ष्मंप्रपेषयेत् ॥
एतदभ्रकचूर्णन्तुनिस्तुषंव्रीहिसंयुतम् ॥ ५६ ॥

तीन दिन पात्रमें स्थापन कर फिर सूक्ष्म पीसले वह अभ्रकका चूर्ण भूसी रहित जौके सहित ॥ ५६ ॥

वस्त्रेणबध्वासारनालेभांडमध्येविमर्दयेत् ॥
हस्ताभ्यांस्वयमायातियावदम्लंतुरेणुताम् ॥ ५७ ॥

उसको वस्त्रमें बांध कांजीके साथ पात्रमें मर्दन करै. हाथसे तब तक मलै जब तक वह सर्वथा चूर्ण होजाय ॥ ५७ ॥

अदोषाभ्रगतंशुद्धंशुष्कंधान्याभ्रकंभवेत् ॥
धान्याभ्रकंरविक्षीरेरविमूलद्रवैश्चवा ॥ ५८ ॥

तब वह दोषरहित शुभ्र अभ्रक होती है धान्यअभ्रकको आकके दूधमें वा आककी जड़के रसमें ॥ ५८ ॥

दिनमर्धंपुटेपाच्यात्सप्तधैनंमृतंभवेत् ॥
धान्याभ्रकस्यभागैकंद्वौभागौटंकणस्यतु ॥ ५९ ॥

आधेदिन पुट देकर पाचित करै तो ऐसा सातवार करनेसे अभ्रक मरता है धान्याभ्रकका एक भाग सुहागा दो भाग ॥ ५९ ॥

पिष्ट्वातदंधमूषायांरुद्ध्वातीव्राग्निनाधमेत् ॥
स्वभावशीतलंचूर्णंसर्वयोगेषुयोजयेत् ॥ ६० ॥

दोनोंको पीस अंधमूषामें रस धान्याभ्रक बंदकर तीव्र अग्नि दे जब स्वांगशीतल हो जाय तब निकाल चूर्णकर सब योगोंमें दे ॥ ६० ॥

इति अभ्रकशुद्धिः ।

अथामृतीकरणम् ।

सर्वेषांघातितानान्तुह्यमृतीकरणंशृणु ॥
त्रिफलोत्थकषायस्यपलान्यादायषोडश ॥ ६१ ॥

अब सब मारी धातुका अमृतीकरण सुनो, त्रिफलेका काढा सोलह पल ॥ ६१ ॥

गोघृतस्यपलान्यष्टौमृताभ्रस्यपलान्दश ॥
एकीकृत्वालोहपात्रेपाचयेन्मृदुवह्निना ॥ ६२ ॥

गौका घी आठ पल अभ्रक दश पल यह सब एकत्र कर कढा-मृदु अग्निसे पकावै ॥ ६२ ॥

द्रवेजीर्णेसमादायसर्वयोगेषुयोजयेत् ॥ ६३ ॥

जब रस जल जाय अभ्रक मात्र शेष रहे तब सब योगोंमें युक्त करे ॥ ६३ ॥

इति अमृतीकरणम् ।

अथ अभ्रकसत्वपातनम् ।

चूर्णीकृतंगगनपत्रमथारनाले
धृत्वादिनैकमथशोष्यचसूरणस्य ।

भाव्यंरसस्तदनुमूलरसेकदलया-
वेदांशटंकणयुतंशफरीसमेतम् ॥ ६४ ॥

अभ्रकके चूर्णको एक दिन कांजी और एक दिन जमीकंदके रसमें भिगोदे पीछे केलाकंदके रसमें भावना दे चतुर्थांश सुहागा और छोटी मछली मिलाय ॥ ६४ ॥

पिंडीकृतंतुबहुधामहिषीमलेनसंशोष्यकोष्ठगतमाशु
धमेद्यताग्नौ ॥ भस्त्रीद्वयेनचततोवमतेहिसत्वंपाषा
णधातुगतमात्रनसंशयोस्ति ॥ ६५ ॥
इति अभ्रकसत्वपातनम् ।

भैंसके गोबरके साथ छोटी छोटी गोली बनावै फिर धूपमें सुखाय कोष्ठिकामें रख बंकनाल धौंकनीसे महा अग्नि देवे तो सत्व निकले यह महारसायन जारण योग्य तथा सब रोगोंको दूर करे है ॥ ६५ ॥

इति अभ्रकसत्वपातनम् ।

अथ मनःशिलाशुद्धिः ।

जयन्तीभृंगराजोत्थंरक्तागस्तिरसःशिलाम् ॥ ६६ ॥
दोलायंत्रेपचेद्यामंयामंछागोत्थमूत्रकैः ॥
क्षालयेदारनालेनसर्वयोगेषुयोजयेत् ॥ ६७ ॥

हलदी भाँगरा अगस्तिया इनके साथ मनशिलको दोलायंत्रमें छागमूत्रके साथ एक पहरतक पकावै तौ शुद्ध हो पीछे कांजीसे प्रक्षालन कर सब योगोंमें प्रयोगकरै, दोलायंत्र १५२ का चित्र है ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

इति मनःशिलाशुद्धिः ।

अथ हरतालशुद्धिः ।

तालकंपोटलींबध्वासचूर्णकांजिकेक्षिपेत् ॥
दोलायंत्रेणयामैकंततःकूष्माण्डजेरसे ॥ ६८ ॥

हरतालको चूर्णकर पोटली बांध कांजीमें डालदे और एक पहर तक दोलायंत्रमें पचावै फिर पेठेके रसमें ॥ ६८ ॥

तिलतैलेपचेद्यामंयामंत्रिफलाजलैः ॥
एवंयंत्रेचतुर्याममंपाच्यंशुद्धयतितालकम् ॥ ६९ ॥

तिलके तेलसे एक पहरतक पकावै फिर एक पहर त्रिफलाजलसे पाचित करै तो चार प्रहरोंमें हरताल शुद्ध होजाता है ॥६९॥

इति हरतालशुद्धिः ।

अथ तुत्थशुद्धिः ।

विष्ठयामर्दयेत्तुत्थंमार्जारककपोतयोः ॥
दशांशंटंकणंदत्वापाच्यंमृदुपुटेतुयः ॥ ७० ॥

तुत्थ (तूतिया) को बिलाव और कबूतरकी बीटमें मर्दन करै उससे दशवाँ हिस्सा सुहागा डालकर मृदु पुटमें पचावै ॥ ७० ॥

पुटंदध्नापुटंक्षौद्रेदेयंतुत्थविशुद्धये ॥

तथा इसकी शुद्धिके निमित्त दही और शहदकी पुट देनी चाहिये ॥ इति तुत्थशुद्धिः ॥

अथ काशीशशुद्धिः ।

घर्मेशुध्यतिकाशीशंदिनंजंबीरभावितम् ॥ ७१ ॥

एक दिन जंभीरीके रसमें भावना देकर धूपमें सुखावै तो काशीश शुद्ध होवै ॥ ७१ ॥

शंखनाभंचसंदग्ध्वाभाव्यमम्लेनसप्तधा ॥
प्रक्षाल्यंग्राहयेत्तावच्छुद्धिमायातिनान्यथा ॥ ७२ ॥

शंखनाभि (नाभिशंख) को जलाकर सातबार अम्ल पदार्थसे

भावना देकर प्रक्षालनं करै तो शुद्ध हो जाता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ७२ ॥

इति काशीशशंखनाभिशुद्धिः ।

अथ शातकुम्भादिधातुशोधनम् ।

मृत्तिकामातुलुंगाम्लैःपंचवासरभाविता ॥
सभस्मलवणैर्हेमशोधयेत्पुटपाकतः ॥ ७३ ॥

पांच प्रकारकी मृत्तिका भस्मके साथ जम्बीरी अम्ल इनसे पुटपाकद्वारा सुवर्णको शोधे ॥ ७३ ॥

वल्मीकमृत्तिकाधूमंगैरिकंचेष्टिकापटुः ॥
इत्येतामृत्तिकाःपञ्चजम्बीरैरारनालकैः ॥ ७४ ॥

बँबई की मिट्टी धूम्र गेरू और ईंट ये पांच मृत्तिका जम्बीरी नीबूके रस और कांजी में खरल कर ॥ ७४ ॥

पिष्ट्वालिप्तंस्वर्णपत्रंपुटेनपरिशुध्यति ॥
नागेनटंकणेनैवधूमेशुध्यतिरौप्यकम् ॥ ७५ ॥

उसके द्वारा स्वर्णके पत्तोंपर लेपकर पुटपाक करनेसे सुवर्ण भले प्रकारसे शुद्ध होजाता है रूपा, वंग और सुहागेके साथ लगानेसे शुद्ध होता है ॥ ७५ ॥

खटिकालवणंतक्रैरारनालैश्चपेषयेत् ॥
तेनलिप्तंताम्रपत्रंतप्तंतप्तंनिषेचयेत् ॥ ७६ ॥

खडिया और सैंधानोनको तक्र और कांजीमें पीसकर तांबेके पत्रोंपर लेप कर वारंवार आगमें तपाकर शुद्ध करै ॥ ७६ ॥

खादिरारनालतक्रान्तनिर्गुण्डीचविशुद्धये ॥ ७७ ॥
रोहणंराजवंचैवतृतीयंचपुटीरकम् ॥
इतितीक्ष्णंत्रिधातंचशोधयेद्योगसिद्धये ॥ ७८ ॥

खैर तथा कांजी मट्ठा और निर्गुण्डी राजवृक्ष रोहिण और पुटीरकका प्रयोग करना चाहिये इस प्रकार तीक्ष्ण त्रिधातको सिद्धकर योगों में लगावै ॥ ७७ ॥ ७८ ॥

अथ तुत्थटंकणकाचलोहशोधनम् ।

शशरक्तेनसंलिप्तंत्रिवारंचाग्निपाचितम् ॥
तुत्थटंकणकाचैर्वाधामितंशुद्धिमृच्छति ॥ ७९ ॥

तीनवार रक्तवर्ग[1]की वा शशाके रक्तकी भावना देकर तीनवार अग्निमें पचावै बार २ लेपकर अग्निमें रखनेसे तूतिया सुहागा और काच ये तापसे शुद्ध होते हैं ॥ ७९ ॥

अथवालोहचूर्णन्तुगोमूत्रैःषड्गुणैःपचेत् ॥
प्रक्षालयेदारनालैःशोष्यंशुद्धिमवाप्नुयात् ॥ ८० ॥

अथवा लोहचूर्ण छः गुने गोमूत्रमें पकाकर पीछे कांजीसे प्रक्षालन कर धूपमें सुखानेसे शुद्ध होता है ॥ ८० ॥

सर्वेषांमतेमारणम् ।

शुद्धसूतंसमंस्वर्णंखल्वेकुर्य्याच्चगोलकम् ॥
अधोर्द्धगंधकंदत्वासर्वतुल्यंनिरुध्यच ॥ ८१ ॥
त्रिंशद्वनोपलैर्दद्यंपुटान्येवचतुर्दश ॥
निरुत्थंजायतेभस्मगंधंदेयंपुनःपुनः ॥ ८२ ॥

शुद्ध पारेके समान सोना लेकर खरल करे गोली बनावै उससे आधा गंधकका चूर्ण गोलेके नीचे धर गोलेको मूषामें रख तीस वनकी उपलियोंके द्वारा चौदह बार पुट देनेसे स्वर्णकी भस्म बन जाती है हरेक पुटमें गंधकका चूर्ण देता जाय॥८१॥८२॥

---

१ कसूम, खैर, लाख,मजीठ, लालचन्दन, सांहिजना, दुपहरिया कपूरगंधी सोनामाखी; यह रक्तवर्गहै ।

रौप्यंपत्रंचतुर्भागंगंधंभागेनलेपयेत् ॥
जंबीरनीरपिष्टेनपंचविंशद्वनोपलैः ॥ ८३ ॥

चार भाग चांदीके पत्र एक भाग गंधक जम्भीरी नींबूके रसमें खरल कर उन पर लेप करे फिर संपुटमें रख पचीस वनके उपलोंकी ॥ ८३ ॥

बध्वात्रिभिःपुटेपच्याद्गंधंदेयंपुनःपुनः ॥
म्रियतेनात्रसन्देहस्तत्तत्कर्मणियोजयेत् ॥ ८४ ॥

अग्निके द्वारा हरेक पुटमें गंधक देकर तीन बार पुटपाक करे अवश्य चांदीकी भस्म हो जायगी फिर कार्यमें लावे ॥ ८४ ॥

ताम्रतुल्येनगंधेनह्यम्लपिष्टेनलेपयेत् ॥
कंटवेधीकृतंपत्रमंधयित्वापुटेपचेत् ॥ ८५ ॥

तांबेके कंटकवेधी पत्र लेकर उसके बराबर गंधकको कांजीमें खरल कर उसको तांबेके पत्रोंपर लपेटे, फिर उन कंटकवेधी तांबेके पत्रोंको गजपुटमें पचावे ॥ ८५ ॥

उद्धृत्यचूर्णयेत्तस्मिन्पादांशंगंधकंक्षिपेत् ॥
जम्बीरैरारनालैर्वापिष्ट्वाबध्वापुटेपचेत् ॥ ८६ ॥

फिर महीन पीस चूर्ण करले इसके उपरान्त चौथा भाग गंधक मिलाय जम्भीरीनींबू कांजीमें पृथक् पृथक् पीस कर गंधक मिलाय ॥ ८६ ॥

एवंचतुःपुटैःपाच्यंगंधंदेयंपुनःपुनः ॥
मातुलुंगद्रवैःपिष्ट्वापुटमेकंप्रदापयेत् ॥ ८७ ॥

चार पुट दे और जंबीरीके रसमें पीस कर वा बिजौरेके रसमें पुट दे तो पुटपाक करनेसे भस्म होजाती है ॥ ८७ ॥

अथास्यदोषहरणम् ।

सितशर्करयाप्येकंपुटंदेयंमृतंभवेत् ॥
मृतंताम्रंतुजम्भीरैर्यामंखल्वेविमर्दयेत् ॥ ८८ ॥

एक भाग तांबा और दो भाग पारा इनको जम्भीरीके रसमें खरल कर खांड मिला तीन वार पुटपाक करनेसे तांबेकी भस्म हो जाती है ॥ ८८ ॥

तद्गोलंसूरणेक्षिप्त्वारुध्वासर्वंचलेपयेत् ॥
शुष्कंगजपुटेपाच्यंनिर्दोषंसर्वरोगहृत् ॥ ८९ ॥

मरे ताम्रको जम्भीरीके रसमें एक पहर खरल कर गोला बनावै उसको जिमीकंदके बीचमें धर लेपकर गजपुटमें पचानेसे सर्व रोगों की हरनेवाली भस्म हो जाती है ॥ ८९ ॥

नायंपचेत्पंचपलादर्वागूर्द्ध्वंत्रयोदश ॥
आदौमंत्रस्तथाकर्मकर्तव्यंमंत्रउच्यते ॥ ९० ॥
ॐअमृतोद्भवायस्वाहा ॥

लोह मारण ॥ लोहमारण श्रेष्ठ कर्म है इससे प्रथम इसको पांच पलसे तेरह पल पर्यन्त लोहेको लेकर पहले मंत्र पढ़ै फिर कर्म करै ॥ ९० ॥

ॐ अमृ० मंत्रको पढ़ कर मर्दन करे ॥ इति मर्दनमंत्रः ॥

ॐअमृतोद्भवायस्वाहा ॥

अनेनमंत्रेणलोहस्यतत्साधकस्यरक्षाकर्तव्याॐनम-
श्चण्डचक्रपाणयेस्वाहायक्षसेनाधिपतयेसुरगुरुम
हाविद्याबलायस्वाहा अनेनमंत्रेणबलिंदत्वाततःकुर्यात्॥
दन्तीपत्रद्रवंतस्यांलोहचूर्णंदिनोदये ॥
घर्मेधार्यंदिनंकांसेद्रवंदेयंपुनःपुनः ॥ ९१ ॥

पहले मंत्रसे लोह और साधककी रक्षा करै और दूसरे ॐ नमश्चं० इस मंत्रसे बलि दे। दन्तीके पत्तोंके रसमें लोहेका चूर्ण खरलकर तीन दिन धूपमें रक्खे बार बार इसकी भावना दे ॥ ९१ ॥

रुध्वारात्रौपुटेपाच्यंप्रातर्द्रवैश्चभावयेत् ॥
एवमष्टदिनंकुर्य्यात्रिविधंम्रियतेतुयः ॥ ९२ ॥

फिर रातमें लोहेको शरावसंपुटमें रख कर प्रातःकालमें पूर्वोक्त दूर्वोंसे पचाना. इसप्रकार आठ दिन करनेसे लोहा मर जाता है ९२

मृतस्य लक्षणम् ।

मध्वाज्यंमृतलोहंचरौप्यंसंपुटकेक्षिपेत् ॥
रुद्धाध्मातेतुसंग्राह्यंरोप्यंचेत्पूर्वमानकम् ॥ ९३ ॥
तदालोहंमृतंविद्यादन्यथासाधयेत्पुनः ॥

उसके मृतलक्षण, शहद घी और मृत लोहको रूपेके सम्पुटमें रख मुख बंद कर अग्नि जलानेसे लोहभस्म यदि पूर्ण ही रहै ॥ ९३ ॥ तौ लोहको मृत जानै यदि न हो तो फिर पुटपाक करे ॥

अथ शोधनम् ।

गंधकंतुल्यकंलोहंतुल्यंखल्वेविमर्दयेत् ॥ ९४ ॥

(शोधनम्) गन्धक और मृत लोहेको खरलमें डालकर ॥९४॥

दिनैकंकन्यकाद्रावैरुध्वागजपुटेपचेत् ॥
इत्येवंसर्वलोहानांकर्तव्यंस्यान्निरुत्थनम् ॥ ९५ ॥

एकादिन घीकुवारके रसमें मर्दन करे फिर गोला बनाय सम्पुटमें रख गजपुटमें पचावे इस प्रकार सब लोह शुद्ध हो जाते हैं ॥९५॥

अथास्यामृतीकरणम् ।

घृततुल्यंमृतंलोहंलोहपात्रगतंपचेत् ॥
जीर्णेघृतेसमादाययोगवाहेषुयोजयेत् ॥ ९६ ॥

अमृतीकरण-घृत और लोहेकी भस्मको बराबर लेकर लोहेके बासनमें पकावे जब घी जीर्ण हो जाय तब उतारले यह योगवाही योगोंमें प्रयोग करे ॥ ९६ ॥

इति लोहमारणम् ।

अथ भूनागसत्वम् ।

सद्योभूनागमादायक्षालयेच्छिथिलंबुधः ॥
अथवाकुक्कुटंक्षीरंकृत्वामंदिरमाश्रितम् ॥ ९७ ॥
मलमूत्रंगृहीतेनसदम्बुप्रथमांशकम् ॥
आलोड्यटंकंमध्वाज्यैर्घर्मेसर्वार्थमादरात् ॥ ९८ ॥
मुंचेत्तुताम्रवत्सत्वमेतद्भूनागसत्वकम् ॥

इति नागवर्गः ।

प्रथम भूनागको लाकर जो कि वर्षाकालमें ताम्रभूमिमें हुआ हो उसको क्षालित करके अथवा देवकरुड कनेर मिलाकर वा मुरगेकी वीटके साथ उसको मिलाकर अथवा गौके मलमूत्रके साथ जल मिलाय तत्कालके जलसे उसके चूर्णको शहद घृतमें मिलाय धूपमें धर दे फिर मर्दन कर पंकनालमें रख फूके तो तांबेके समान सत्व निकले ॥ ९७ ॥ ९८ ॥

इति नागवर्गः ।

अथ लवणम् ।

सामुद्रंसैंधवंकाचंचुल्लिकाचसुवर्चलम् ॥
मूलिकानवक्षारश्चज्ञेयंलवणपंचकम् ॥ ९९ ॥

समुद्रलवण सेंधा काच चूलिका काला नमक मूलिका नवक्षार यह पांच लवण जानने ॥ ९९ ॥

इति लवण ।

अथ क्षाराः ।

त्रिक्षारष्टंकणक्षारोयवक्षारश्चस्वर्जिका ॥ १०० ॥

सुहाग जवाखार और सज्जीखार ये तीन क्षार हैं ॥ १०० ॥

इति क्षाराः ।

अथ वृक्षक्षारः ।

तिलापामार्गकदलीपलाशःशिग्रुपौंड्रकौ ॥
मूलकार्द्रकचित्राश्चसर्वमंतःपुटेपचेत् ॥ १०१ ॥

अथ वृक्षक्षार ॥ तिल चिरचटा केला ढाक सहेंजना पौंड्रक मूली अद्रक चीता यह पृथक् पृथक् अन्तःपुटमें पचावे " कहीं पौंड्रकका अर्थ इक्षु है " ॥ १०१ ॥

समालोड्यजलैर्बध्वावस्त्रेग्राह्यमधोर्जलम् ॥
शोधयेत्पाचयेदग्नौमृद्भाण्डेनतुतज्जलम् ॥
ग्राह्यंक्षारावशेषन्तुवृक्षक्षारमिदंस्मृतम् ॥ १०२ ॥

और जलमें अच्छी प्रकार आलोडित कर वस्त्रमें ग्रहणकर छानले और उस जलको शोधन कर अग्निमें पचाय मिट्टीके बर्तनमें रक्खे फिर जो शेष रहै वह क्षारहै यह वृक्षक्षार जानो ॥ १०२ ॥

इति वृक्षक्षारः ।

अथ विडः ।

मूलिकार्द्रकवह्नीनांक्षारंगोमूत्रयोजितम् ॥
वस्त्रपूतंजलंग्राह्यंगंधकंतेनभावयेत् ॥ १०३ ॥
सप्तवारंखरेघर्मेबीजोयंहेमजारणे ॥
कन्याहयारिधत्तूरद्रवैर्भाव्यंतुगंधकम् ॥ १०४ ॥
शतवारंखरेघर्मेबीजोयंहेमजारणे ॥

गंधकंशंखचूर्णवागोमूत्रैःशतभावितम् ॥
बीजोयंजारणेश्रेष्ठोबीजानांद्रावणेहितः ॥ १०५ ॥

मूली अद्रक चीता इनको गोमूत्रसे पीस बस्त्रसे छानले उसमें गंधककी भावना दे इस प्रकार सातवार कर कठिन धूपमें रखदे यह सुवर्णके जारण करनेका बीज है गंधक और शंखके चूर्णको सौवार गोमूत्रसे भावना दे यह हेमजारणमें श्रेष्ठबीज बीजोंके द्रावणमें हितकारक है " विरिया सौंचरनोनको भी विड कहते हैं " ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥

इति विडः ।

अथ अम्लवर्गः ।

जम्बीरंनागरंगश्चमातुलुंगाम्लवेतसम् ॥
चांगेरीचणशुक्रश्चअम्लवर्गःप्रकीर्तितः ॥ १०६ ॥

जम्भीरीनींबू नागरंग (नारंगी) मातुलुंगी बिजौरानींबू अम्लवेतस अम्ललौना चना चीता यह अम्लवर्ग है ॥ १०६ ॥

इति अम्लवर्गः ।

अथ वज्रमूषा ।

वल्मीकीमृत्तिकाभागंगवास्थितुषभस्मनोः ॥
भागंरसंसमादायवज्रमूषाविरच्यते ॥ १०७ ॥

इति श्रीपार्वतीपुत्रनित्यनाथविरचिते कामरत्ने रसादिशोधनंनामषोडशोपदेशः ॥ १६ ॥

अथ वज्रमूषानिर्माणविधि । तिनकोंकी राख दो भाग बंबई की मट्टी एक भाग रस एक लेकर अर्थात् लोहेका मैल एक भाग ले बकरीके दूधसे पीसकर दृढ मूषा बनावे धूपमें सुखा ले

उपरोक्त कल्क लेपन कर मुख बंद करे यह वज्रमूषा है इसमें उत्तम पारेकी भस्म होती है ॥ १०७ ॥

इति वज्रमूषा ।

अथ दीर्घायुष्यकरणम् ।

नीमकी छाल ४ मासे नीमकीजड़ ५ नीमके फूल ५ हरिद्रा ७ अपामार्ग चिरचिटा ५ त्रिकुटा २ बेलकी जड़ १ । २५ श्वेतचीता १ मासे अजवायन १ तोला लवण ४ मासे यह सब एकत्रकर तत्ते पानीसे वस्त्रमें शोध ले तीन मासेकी गोली बनाकर प्रति दिन एक गोली खाय तीनसौ साठ वर्ष जिये.

पहले महीने अग्निकी प्रबलता दूसरे महीने व्याधिनाश तीसरेमें पुष्टि चौथेमें जनैकदृष्टि पांचवेमें सुन्दरता छठेमें कोकिलास्वर सातवेमें पलितनाश आठवेमें वज्रकाय नौवेमें निद्रानाश दशवेमें यशवृद्धि ग्यारहवेमें श्रुतिधर बारहवेमें सर्वसिद्धिः ॥

"ॐस्वस्तिनानंदग्रामात् नानंदग्रामात् नानंदगृहात् नानंदविराहात् नानंदकोनामाभिक्षुः एकाहिकद्व्याहिक त्र्याहिकचातुर्थिक नित्यज्वर मासिक वार्षिक द्विवार्षिक डाकिनी कृत्यावातिक पैत्तिक श्लैष्मिक सन्निपातादीन् सर्वज्वरान् समादिशति भवाद्भिः प्रहितराजादेश श्रवणयत्रदर्शनात् श्रीअमुकस्य शरीरे मुहूर्तमपि न स्थातव्यं ज्वर रेरे फट् २ हुं स्वाहा ॥ मारीच २ अमुकस्य ज्वरं हर २ स्वाहा "

इदं पत्रं लिखित्वा शिरसि बद्धं सर्वज्वरान् हन्ति । यह पत्र लिख शिरपर बांधनेसे सब ज्वर दूर होते हैं ॥

इति दीर्घायुष्यकरणम् ।

इति श्रीपार्वतीपुत्रनित्यनाथविरचितेकामरत्नेपण्डितज्वालाप्रसादमिश्रकृतभाषाटीकायां रसादिशोधनं नाम षोडशोपदेशः ॥ १६ ॥

शुभमस्तु ॥

सम्वत गुणशर अंग विधु, पौष कृष्ण गुरुवार ॥
सकल कामप्रद पंचमी, मन इच्छा दातार ॥ १ ॥
पूर्ण कियो शुभग्रंथ यह, भाषा तिलकबनाय ॥
लखहिंसजनहियलहहिं मुद; काम अर्थको पाय ॥ २ ॥
कामरत्न सब कामप्रद, सेवहिं जो करिनेम ॥
ते पावहिं सुख संपदा, बढ़हि वंशमें क्षेम ॥ ३ ॥
वसत रामगंगा निकट, नगर मुरादाबाद ॥
तहां रहत हरिभजनरत, द्विज ज्वालापरसाद ॥ ४ ॥
तिन भाषाटीका कियो, गौरि गिरीशमनाय ॥
भक्तन सुखदायक सदा, जनकी करैं सहाय ॥ ५ ॥

इति कामरत्नं समाप्तम् ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना--मुंबई.

कामरत्नम् ॥

परिशिष्ट भाग.

पुरसुन्दरी मनोहरी कलावती कामेश्वरी रक्तकरी पद्मिनी नटी अनुरागिणी यह आठ यक्षिणी हैं। ॐ आगच्छ पुरसुंदरी स्वाहा इति मंत्रः यह पढ घर जाय गूगलकी धूपदेकर तीनों संध्याओंमें उपरोक्त मंत्र सहस्रवार जपै तो एक महीनेमें आती है. उस समय चन्दन जलसे अर्घ्यदे. इसके तीन भाव हैं माता, भगिनी. पत्नी, जो माताका भाव करै तौ वस्त्रद्रव्य रस रसायन देती है. भगिनी भावमें भी पूर्ववत् वस्त्र देती है. यदि भार्या हो तौ महा ऐश्वर्य आश्चर्य करती है इन सबको पूजन करै इसमें दूसरेके साथ शयन तथा मैथुन न करै जो करै तौ नाश होताहै. मनोहरी ध्यान कहते हैं.

ॐ आगच्छ मनोहरिस्वाहा - इस मंत्रको पढ नदी तटमें मंडलकर अगर धूपदेकर महीने भरतक पूजन करै सहस्र जप करै जब आवै तब चन्दन अर्घ्यदे. फूल वाटिकामें एकचित्तसे अर्चन करै आधीरातमें अवश्य आती है. आनेही कहै सभाग्यदे तब सौ अशरफी प्रतिदिन देती है.

अथ कलावती साधनम् ॥

ॐ ह्रीं कलावती मैथुनप्रिये आगच्छ स्वाहा ॥ वट वृक्षके नीचे मद्यमांस देकर सुराकी प्रार्थना सहित जपै सात दिनतक आधी रातको सर्वालंकारसे भूषित परिवार सहित जब आतीहै तब भार्याहोतीहै बारहजनोंको वस्त्रालंकार भोजन देतीहै. आठ फल दिनमें देती है.

कामेश्वरीसाधनम् ॥

ॐ ह्रीं आगच्छकामेश्वरी स्वाहा ॥ इसकी भोजपत्रपर गोरोचनसे प्रतिमा लिखे देवीका पूजन करै शय्यामें चढकर एकमास सहस्र मंत्र प्रतिदिन जपै मासान्तमें देवीकी पूजा करे घृत मधुयुक्त प्रतिरात्रदे मौन हो जपकरे आधीरातको अवश्य आती है आनेपर इच्छा करै तो भार्या होती है. शयनमें दिव्य अलंकारोंको छोडकर चली-

जातीहै. इसमें परस्त्रीसे मैथुन न करै.

अथ रतिकरी साधनम् ॥

ॐ ह्रीं आगच्छ रतिकरीस्वाहा ॥ अय पटमें चित्ररूपसे लिखकर कनक वस्त्रालंकारसे भूषितकर कमल हाथमें लिये कुमारीको पूजन करै गूगल धूपदे आठ सहस्त्र जप करै मासान्त पर्यंत पूजाकर घृत धूपदे तब आधी रातको आकर प्राप्त होती है. स्त्री भावसे कामनाकरै भार्याहोती है साधककी सकुटुम्ब रक्षा करती है. दिव्यकामना वाले भोजनको देतीहै.

अथ पद्मिनी साधनम् ॥

ॐ ह्रीं आगच्छ पद्मिनीस्वाहा ॥ अपने घरमें मंडलकरशिवकरे गूगुल धूपदेकर एक सहस्त्र जपकरै पूर्णमासीको विधिपूर्वक पूजाकर जपै आधीरातको आती है. कामना करनेसे भार्या होती है सब कामार्थ सिद्धि करती है. रसरसायन सिद्धि द्रव्यदेती है.

अथ नटी साधनम् ॥

ॐ ह्रीं आगच्छ नटीस्वाहा ॥ अशोक वृक्षके नीचे जाय मांस उपहार गंध पुष्प धूप दीपादि बलिदेकर सहस्त्रजपकरे तो एक महीनेमें अवश्य आती है. आनेपर यदिमाता होतो कामिक भोजन देतीहै वस्त्र सुवर्ण देतीहै भगिनीहोतो सौ योजनसे लक्ष्मीला देती है वस्त्र अलंकार भोजन रसायन देती है. जोस्त्री होतो दिव्य रसायन आठ दिन स्थित हो देती है.

अथ अनुरागिणीसाधनम्.

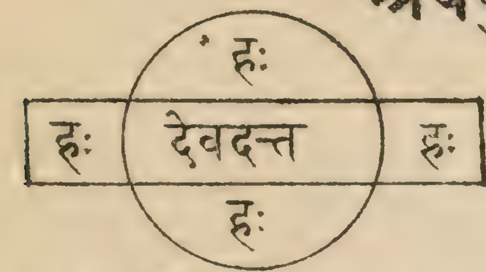
ॐ ह्रीं आगच्छ अनुरागिणीस्वाहा ॥ कुमकुमसे यह मंत्र लिखे भूर्जपत्रपर और प्रतिदिन गंधादिसे पूजनकर सहस्त्र जपकरै तीनों कालमें एक महीना पूजाकर घृत दीपदे सम्पूर्ण रात्रि जपकरे एक महीनेमें अवश्य आती है. और सब पूर्ववत्.

॥ इतिद्वाविंशद्यक्षिणी साधनम् ॥

मंत्रओर यंत्र दोनोंही मिलकर तंत्रसिद्ध होता है इसकारण दो-नोंही इस ग्रंथमें लिखे हैं. मंत्रोंके स्थानमे यंत्रोंका अंक लिखदिया है उसअंकके अनुसार यहां देखलेना.

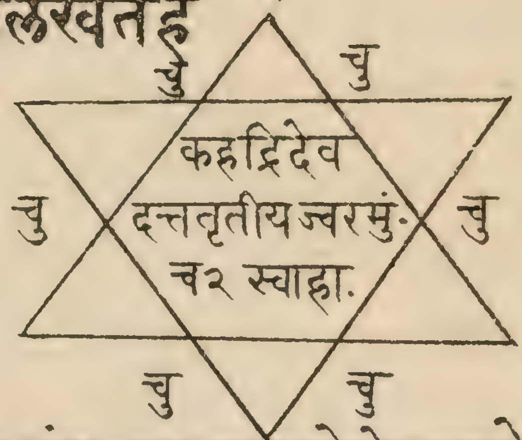
अबकुछयंत्रलिखतेहैं

१



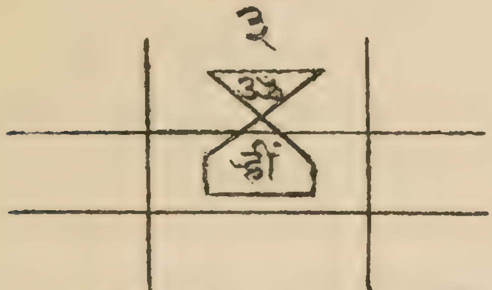
यह यंत्र गोरोचन लाल चन्दनसे भूर्जपत्रपर लिख कंठमे बांधे तो कंठमाला जाय.

२



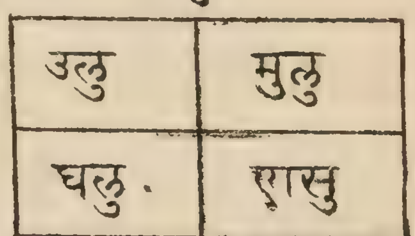
यह यंत्र कुमकुम गोरोचनसे भूर्ज पत्रपर लिखे कंठमें बांधनेसे तिजारी नष्टहोती है.

३



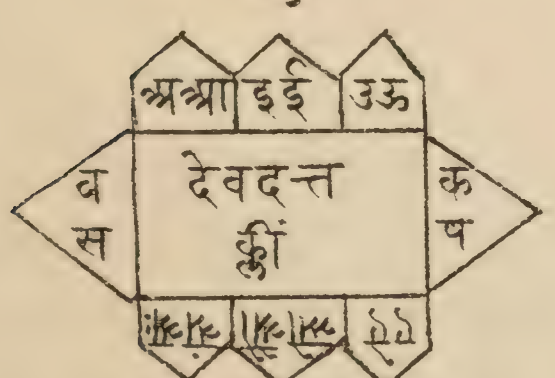
कुमकुम गोरोचनसे भूर्जपत्रमें जिसको लिखकर दे निश्चय उसका सौभाग्य होताहै.

४



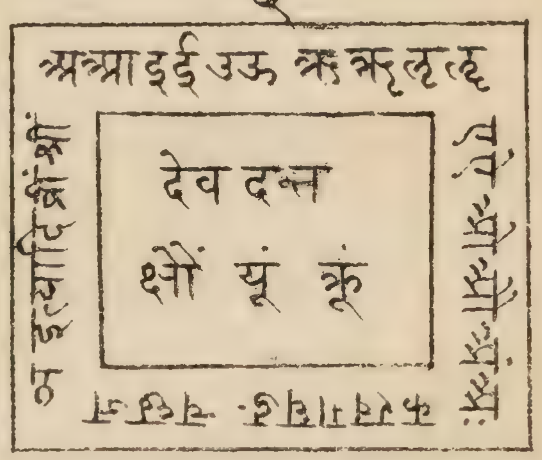
गोरोचन कुमकुमसे भूर्जपत्रपर लिखकर धान्य राशीमें स्थापन करनेसे कीटादि दोष नहीं होते हैं.

५



यह यंत्र कुमकुम गोरोचनसे लिख बांधैतो बंध मोक्षण होताहै.

६



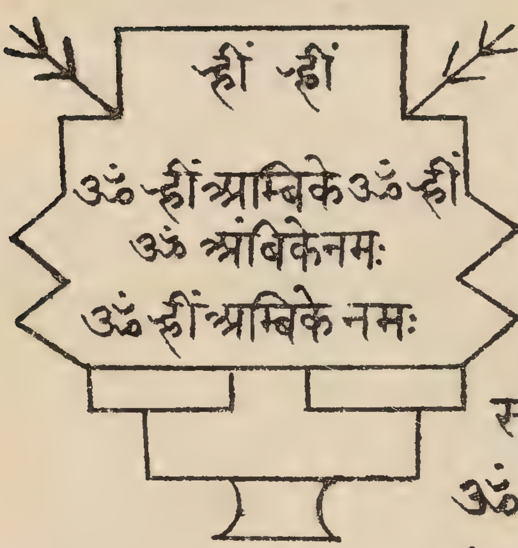
कुमकुम भूर्जपत्रपर लिख रखनेसे राजावशमें होताहै.

७



यह यंत्र मिष्ट रसपान रससे भूर्जपत्रपर लिख कपोल मध्यमें जबतकरक्खे तबतक निश्चय वीर्यस्तंभन होता है.

८



यह चंदन कर्पूर लेपदे कर दुर्भांकुर मूलनाम यंत्र लिखकर वलयाकारकरै ॐ सिद्धोलिंनमः ॐ शंसोलिंनमः ॐ यं शोलिंनमः ॐ कं कोलिंनमः ४ ॐ खिदाखिद विंदविंद जोलीन महानमद २ महाधरणवर्णेनेनमः सर्व सुखदारायधरण मडतो रेमाधरण ॐ ह्रीं आम्बिके ॐ ह्रीं अम्बिके नमः इति यंत्रमध्ये लिखित्वा पश्चात् ॐ अम्बे अम्बाले अम्बिके अवतारय ठः ठः स्वाहा। इस मंत्र से ३६००० छतीस सहस्त्र जपनेसे सिद्धि होती है फिर जपकर २१ चमेलीके फूल यंत्रपर अम्बिकाकी मूर्ति पर रक्खैतो दीपमें प्रसन्न मुखी दीखती है कुमारीके मुखसे आम्बिकादेवी शुभाशुभ कहती है. फिर अम्बिके देवी ह्रूं ह्रूं ह्रीं क्षौं यूं क्लीं पढकर विसर्जन करै.

९

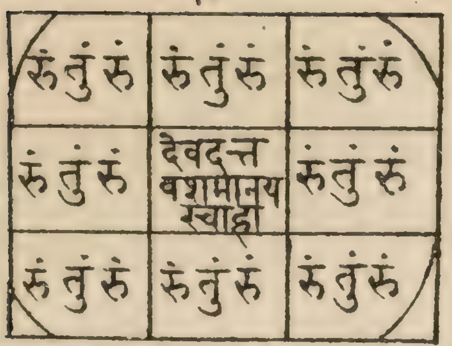
ईशान		पूर्व		आग्नेय
	अं अः ल क्षः	अ आ क खगघङ	इ ई चछजझञ	
उत्तर	ॐ औं शषसह ४		ऋ ॠ तथदधन	दक्षिण
	एऐ यरलव ४	ऌ ॡ पफबभम	ऋ ॠ तथदधन	
वायव्य		पश्चिम		नैऋत्य

यह यंत्र कुमकुम भूर्जपत्रपर लिखदक्षिण भुजासें धारणकरै तौ सर्वार्थ सिद्धिदेता है.

—०—

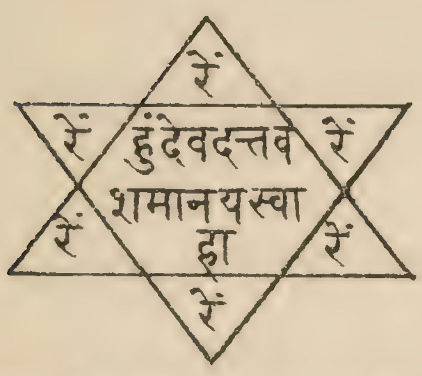
समाप्तं पंचदशोपदेशान्तर्गत परिशिष्टम् ॥

१०



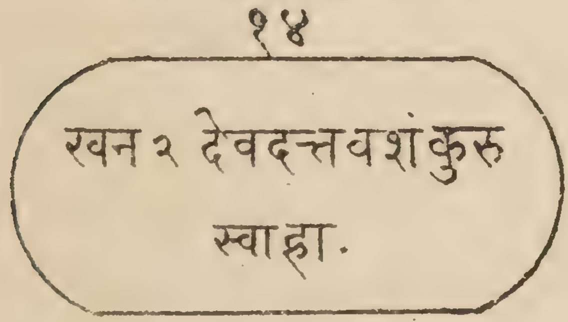
इसयंत्रको भोजपत्रपर लिखै ला-
ल चन्दनसे घी और शहतमें तीन
रात्रिस्थापनकरै वह वशी भूतहोताहै

१२



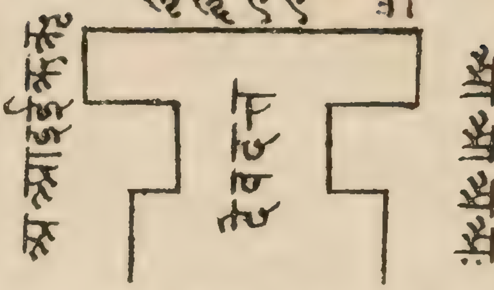
गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका
नाम लिखकर सदा फूलोंके वृक्षके
नीचेस्थापन करै इससे रातको
प्लावित करै वह वशमें होताहै.

१४



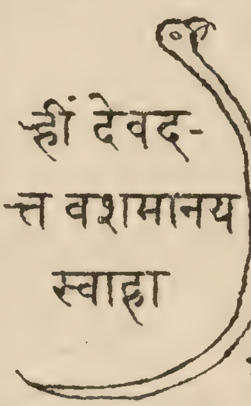
गोरोचनसे भोजपत्रमें लिखला-
ल सूत्रसे बांध मुखमें डाल जिसे
देखै वह वशमें होताहै.

११



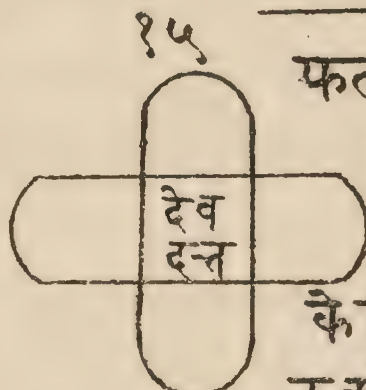
यह यंत्र गोरोचनसे भूर्जपत्रपर
लिख पृथ्वीमें गाडनेसे शत्रु वशमें
होताहै.

१३



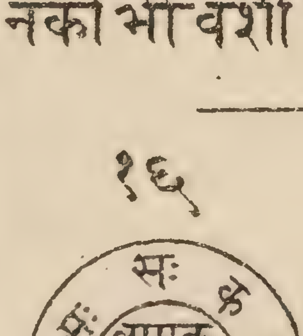
अनामिका अंगुलीके
रक्तसे गोरोचनसे
जिसका नामलिखै म-
धुमें स्थापन करै वह
वशमें होता है.

१५



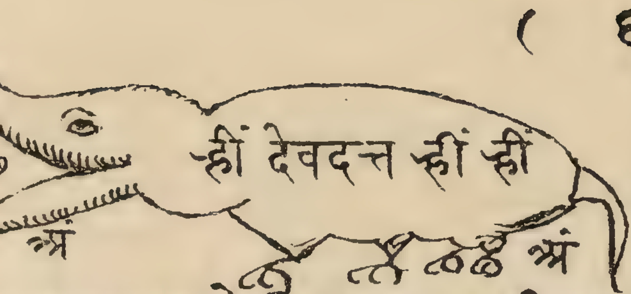
फल कंटक द्वारा
जिसका ना-
मलिखजन्तु-
के विवरमें स्थाप-
न करै वह त्रिभुव-
नको भी वशी भूतकर सक्ता है.

१६



गोरोचनसे भोज
पत्रमें जिसका ना-
मलिख मधुमें
स्थापन करैवह वशी
भूत होता है.

१७



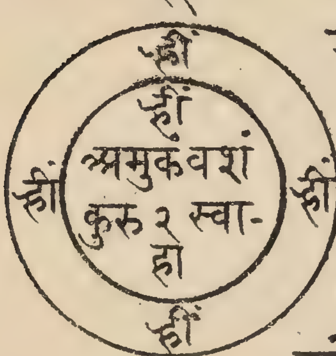
लालचन्दनसे जिसकानामलिखपानीमेंस्थापनकरे वह वशमें होजाता है

१९



गोरोचनसे भोजपत्रमेंसाध्यकानामलिख बाहु कंठमें धारण करै वह शत्रु वशमें होताहै.

२१



गोरोचनसे भोजपत्र पर जिसकानाम लिख मधुमें स्थापन करै वह वशमें होताहै.

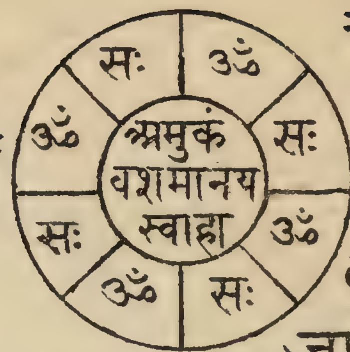
इतिसर्वजनवशीकरणम्

२३

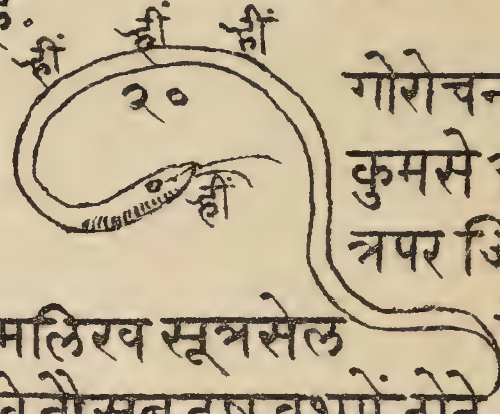


कुंसकुम गोरोचनसे भोजपत्र परजिसकानाम लिख भुजामें धारण करै तो सौभाग्य और स्त्री वशमेंहोतीहै

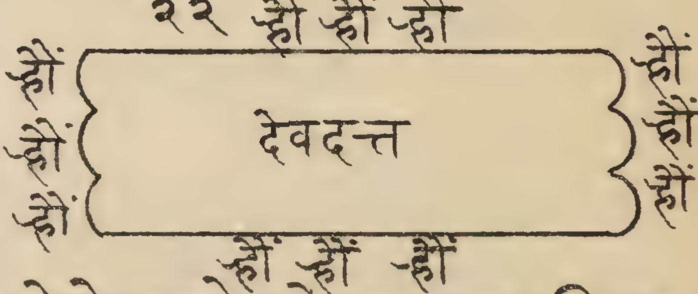
१८



चमेलीके फूलऔर आकके दूधसे भोजपत्रपरलिख भुजामें धारण करै वह वशमेंहोताहै.

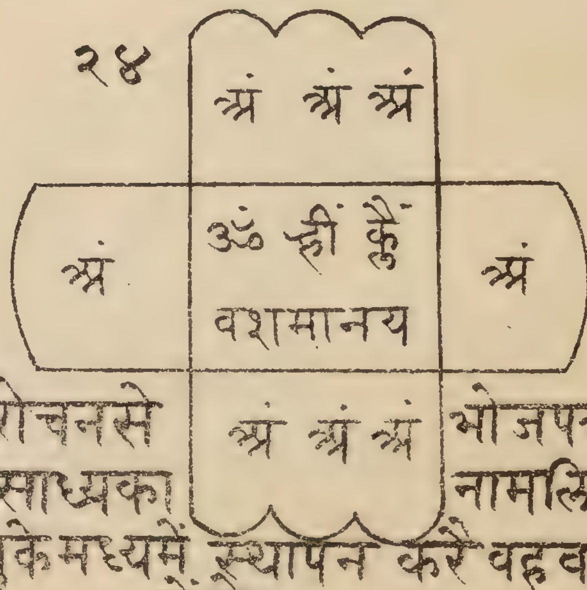


गोरोचनकुमकुमसे भूर्जपत्रपर जिसका नामलिख सूत्रसेलपेटरक्खे तौसब दुष्ट वशमें होते हैं.

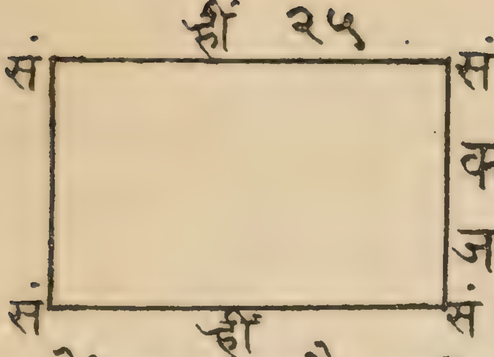


गोरोचनसे भोजपत्र पर जिसका नामलिख देवता स्थानमें स्थापन करै वह वशमें होता है.

२४



गोरोचनसे भोजपत्र परसाध्यका नामलिख मधुके मध्यमें स्थापन करै वह वश में हो.



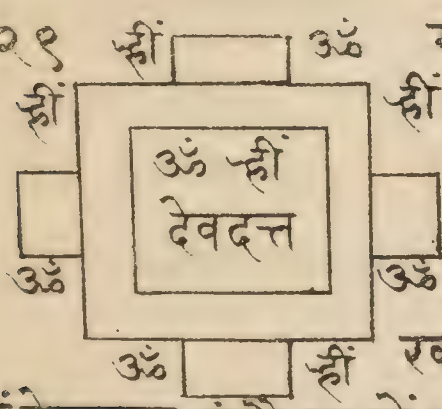
अनामिकारक्तसे भोजपत्रपर लिख बाहु वा कंठमें धारण करै वशीभूत होताहै

२७

ॐ तारे ॐ तारे ॐ तारेस्वाहा	ॐ तारे ॐ तारे ॐ तारेस्वाहा	ॐ तारे ॐ तारे ॐ तारेस्वाहा
ॐ तारे ॐ तारे ॐ तारेस्वाहा	ॐ तारे ॐ तारे ॐ तारे स्वाहा	ॐ तारे ॐ तारे ॐ तारेस्वाहा
ॐ तारे ॐ तारे ॐ तारेस्वाहा	ॐ तारे ॐ तारे ॐ तारेस्वाहा	ॐ तारे ॐ तारे ॐ तारेस्वाहा

गोरोचन कुमकुम कर्पूरसे भोजपत्रसे जिसका नाम लिखकर घृत मधुमें स्थापन कर तीन दिन लाल फूलसे पूजन करै राजा वशमें हो.

२९



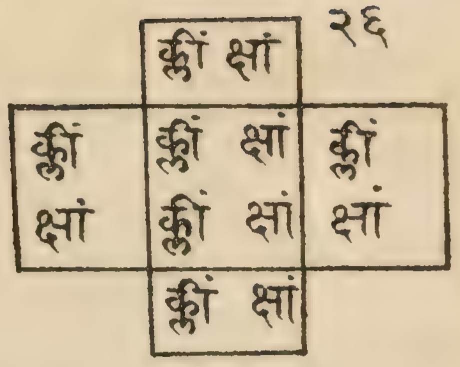
गोरोचन से भोजपत्रपर जिसका नामलिखकर लाल सूत्रमें वेष्टनकर बांधे हाथमें वह वशीभूत हो॰

३०



गोरोचनसे यह चक्र लिखकर जिसके नामसे कंठ बाहु वा वस्त्रके अञ्चलमें बांधे शत्रुके समान भी वह हो वशी होताहै.

२६



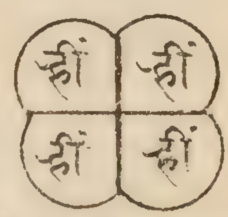
कुमकुम गोरोचनसे अनामिका अगस्तके साथ राजाके नामको लिख खैरको अंगारेसे तापदे वशमें होताहै.

२८



गोरोचनसे भोजपत्रपर लिखकर खैरके अंगारेसे तीनसंध्याओंमें तपावे उर्वशी भी बल पूर्वक आजाय.

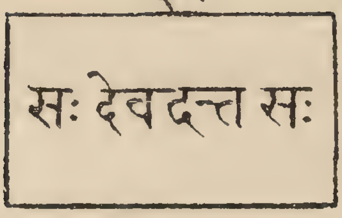
३१



गोरोचनसे तथा कुमकुमसे जिसका नाम लिख घृत मधुमें स्थापन करै वह वशमें हो.

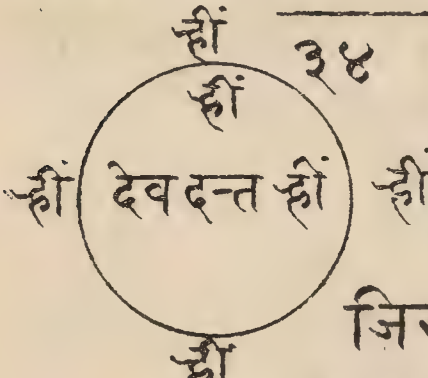
इति वशीकरणम्

३२



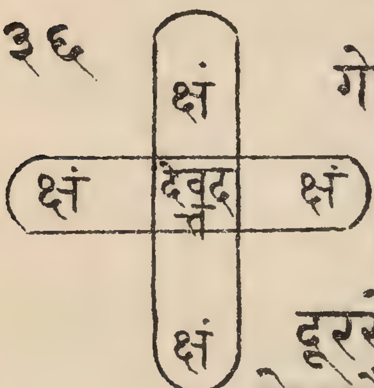
कुमकुम रक्त गोरोचन से लिखकर धारण करै सौभाग्य होताहै. घृतमें स्थापन करनेसे वश होताहै.

३४



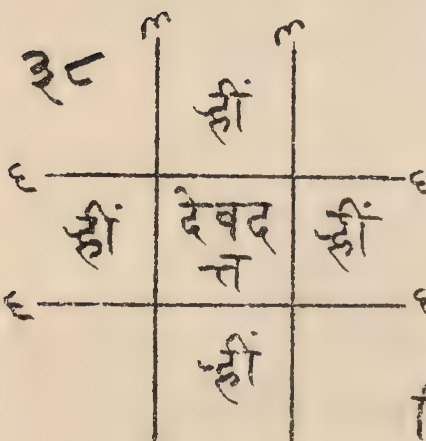
कुमकुमरक्त गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका नाम लिख मधुमध्यमें स्थापन करै वह वशमें होताहै.

३६



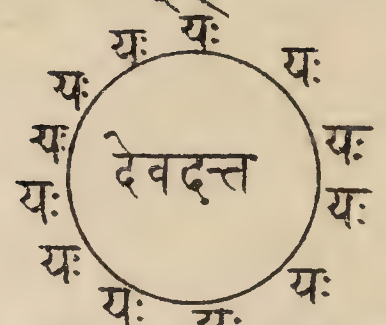
गोरोचन भोजपत्रपरलिख मधुमें स्थापनकरे दूरसे भी आकर्षण होताहै.

३८



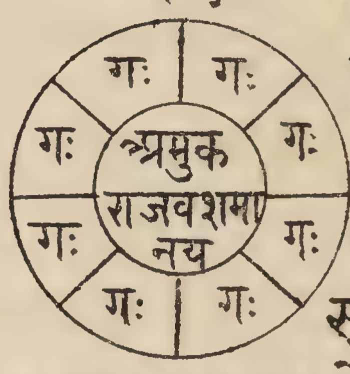
अनामिका के रक्तसे भोजपत्रमें लिख अग्निमें तपावे आकर्षण होताहै.

३३



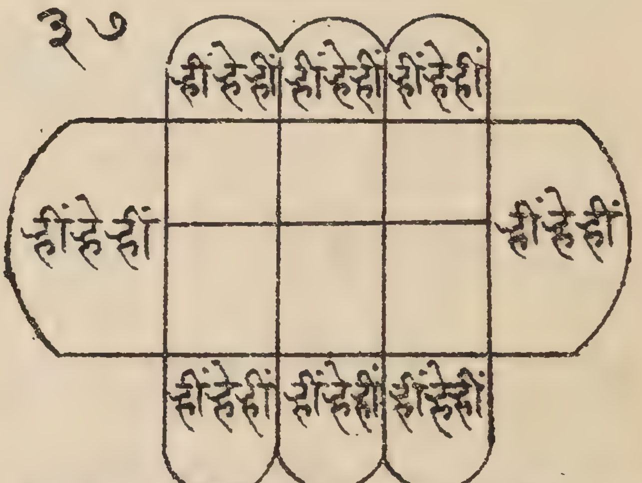
गोरोचन कुमकुमसे जिसका नाम भोजपत्रपर लिखकर घृत मधुमें स्थापन करे पृथ्वीमें रक्खै आकर्षण होताहै.

३५

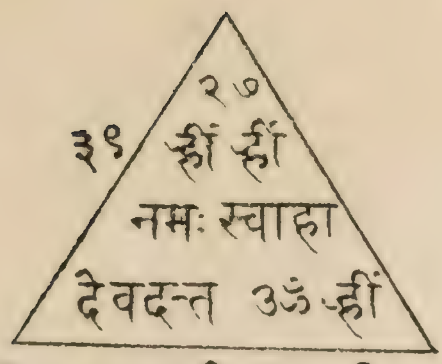


गोरोचन कुमकुम कर्पूर अर्कके दूधसे साध्यका नामलिखकर घृतमधुमें स्थापन कर तीन दिन लाल फूलसे पूजन करै वह राजावशमें होता है.

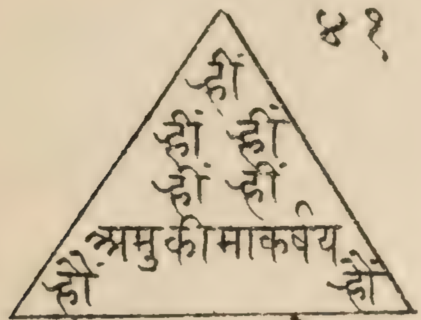
३७



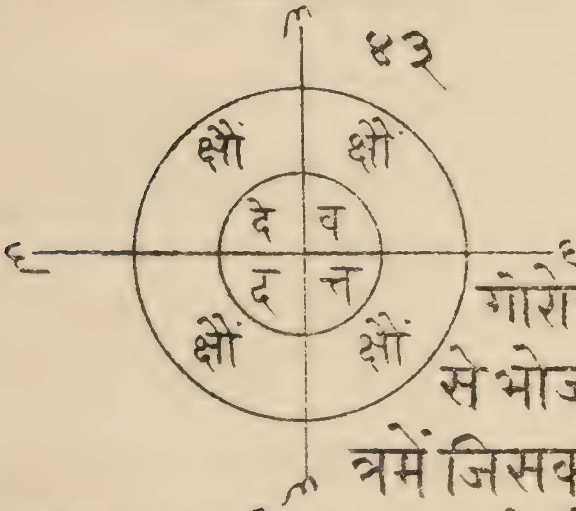
गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका नाम लिखकर मधुमें स्थापन करै आकर्षण होता है.



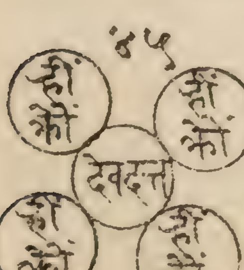
अनामिकारक्तसे हाथमें लिखरात्रिमें जपै संध्यामें आकर्षण हो॰



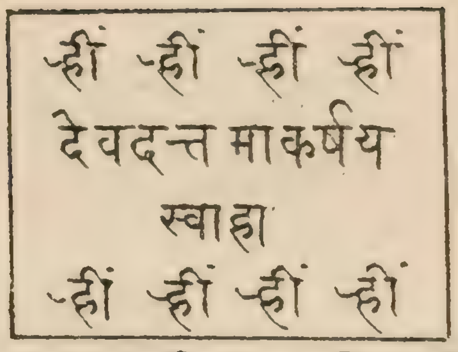
गोरोचन कुमकुमसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख मोमघीमें स्थापनकर तपावै वह स्त्री आकर्षीत हो॰



गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका नाम लिख मधुमें स्थापन करे सो योजनसे आकर्षित होताहै.



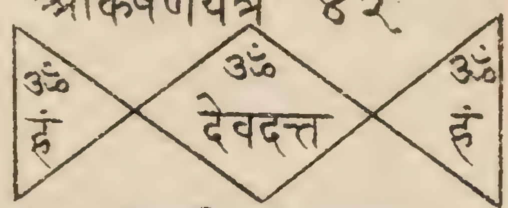
कुमकुम गोरोचनसे भोजपत्रमें लिख मोमसे लपेट खैरके अंगारेसे तपावै वह शीघ्र आकर्षित होताहै.



४०

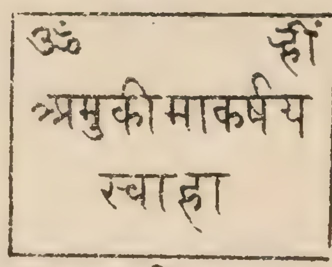
लालचंदन और अपने रुधिरसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख घरमें स्थापन करै वह आकर्षित होताहै.

आकर्षणयंत्र ४२



अपने रुधिरसे जिसका नाम लिखकर कागमें बांधकर छोडदे वह शीघ्र आकर्षित होता है.

४४



गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिखकर घीमें स्थापन करै वह स्त्री दूरसे आकर्षित होती है.

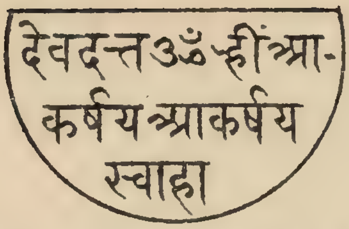
४६

गोरोचनसे लिखकर खैरके अंगारोंपर तपाय तीनों कालमें जपै



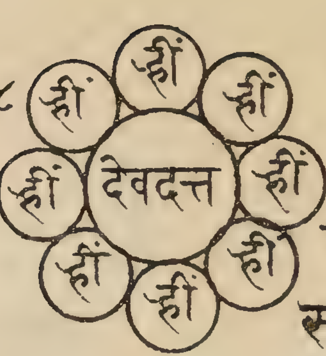
तो उर्वशी भी आकर्षित होती है

४७



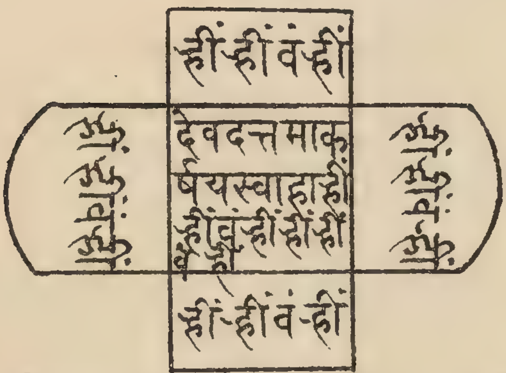
गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका नाम लिख मधुमध्यमें स्थापन करै उसे सौ योजनसे आकर्षित करताहै

४८



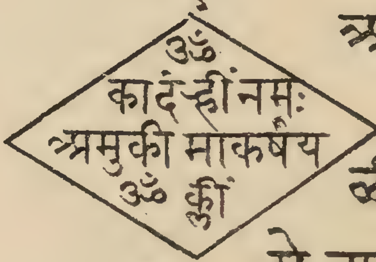
गोरोचन से भोज पत्रपर जिसका नाम लिख घृतमें स्थापन करे वह आकर्षित होताहै.

४९



धतूरेके पत्तेके रससे और गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिखकर वीरकी नलिकामें स्थापन करे खैरके अंगारसे तपावै सौ योजनसे भी आकर्षित होती है.

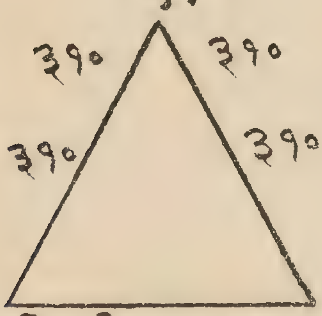
५०



अनामिकाउंगलीके रक्तसे वाम हाथमें लिख हृदयमें रखकर जपै रात्रिमें शय्यापर आ जाय.

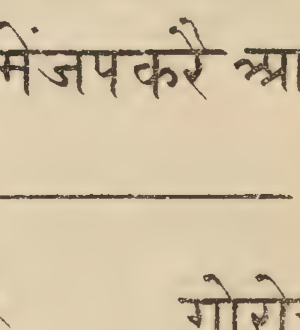
इति आकर्षणे द्वितीयदेशः

५१



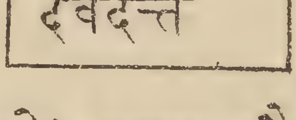
गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नामलिख पानीमें स्थापित करै वह आकर्षित होताहै.

५२



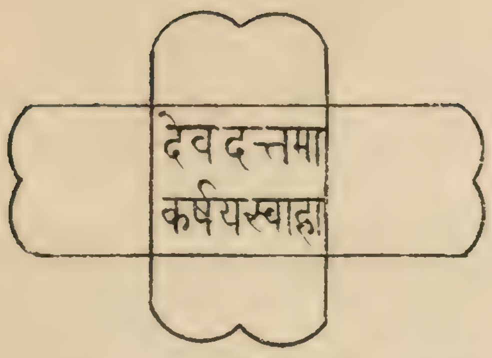
अनामिकाके रक्तसे वाम हाथमें लिख रात्रिमें मनमें जप करै आकर्षण होताहै.

५३



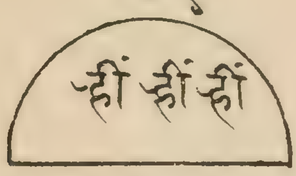
गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका नाम लिख शिखामें धारण करै सौभाग्य होताहै जय होती है.

५४



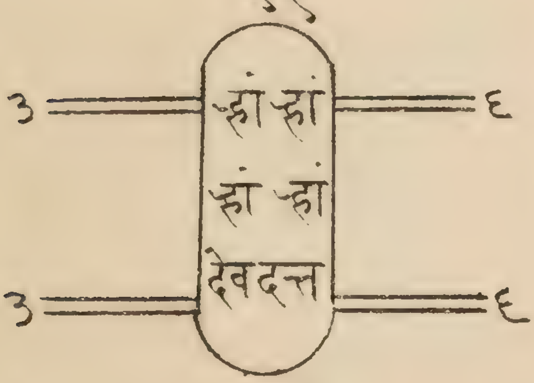
गोरोचन चन्दनसे भोजपत्र पर जिसका नाम लिख शहत-में डाल नलिकामें रख पृथ्वीमें गाडदे तौस्त्री शीघ्र आकर्षित होतीहै.

५६



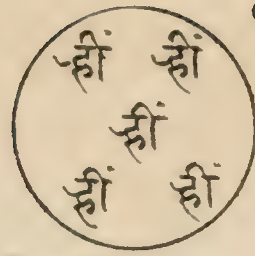
भोजपत्रपर गोरोचनसे जिस-का नाम लिख भुजाकंठ शिखा-में धारण करै संग्राममें जयहोती है

५९



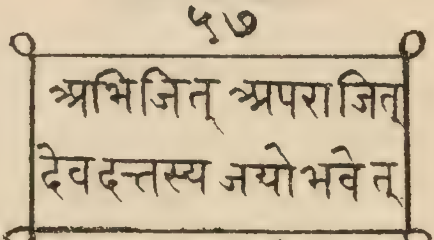
गोरोचनसे भोजपत्रमें लिख भोजपत्रमें स्थापन करे तो यु-द्धमें जय होती है.

५५



गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख भुजवा कंठमें धारणक-रे संग्राममें जय होती है. यह महाम-हेश्वरी विद्या है.

५७



शिला पट्टमें हरतालसे लिखकर जिसकानाम लिख नीचेको मुख-कर रखदे वह जयी होता है.

५८

	१	२६	१	२४
	८	२७	२०	१५
	२४			
	२१			

गोरोचनसे भोजपत्रमें लिख भुजामें बांधै संग्राममें जयहोतीहै

६०



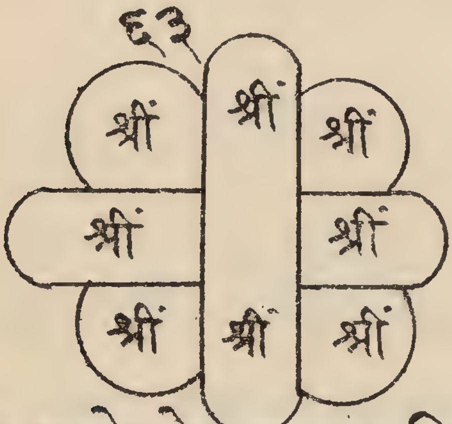
गोरोचनसे भोजपत्रमें लिख भुजा कंठमें धारण करै संग्राममें जय होती है.

६१

ॐ	क्षः	ॐ
क्षः	ॐ	क्षः
	देव	दत्त

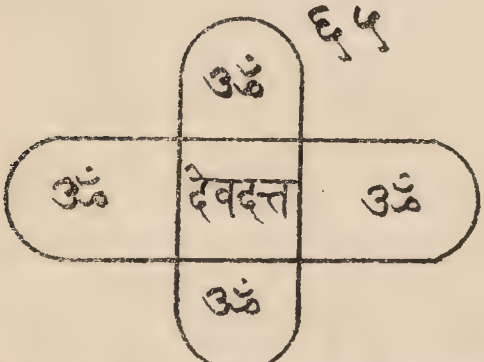
गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिखकर मधुमध्यमें स्थापन करै जय होती है.

६३



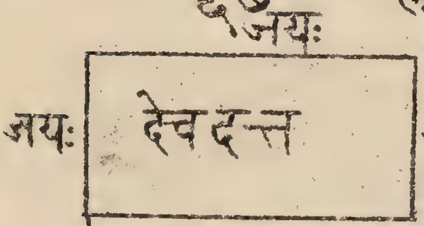
गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नामलिखकर रणकरै राज कुलमें देनाचाहिये. व्यवहारमें जय होतीहै

६५



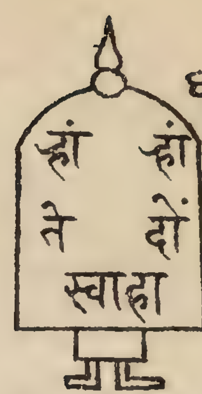
गोरोचनसे कुमकुमसे राजाका नाम लिख भुजामें धारण करै जय होती है.

६७



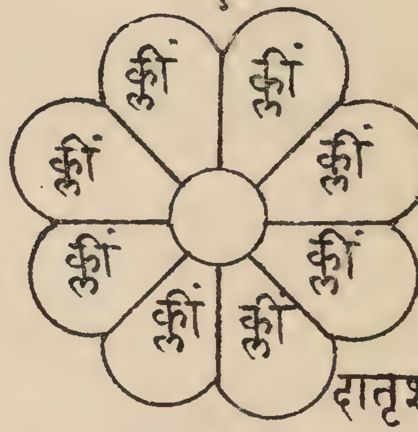
लाखकेरससे जिसकानाम लिखमधु मध्यमेंडालै सौभाग्य होता है.

६२



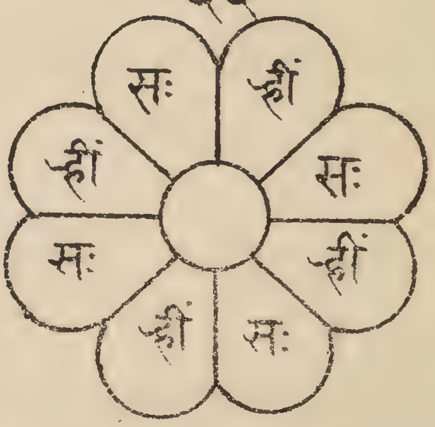
गोरोचनसे भोजपत्रमें लिख भुजामें धारण करै सर्वत्र जयहोती है

६४



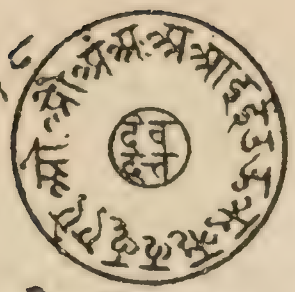
गोरोचन और अनामिकाके रक्तसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख घृतमें स्थापन करै दाता होता है अदातापन छूट जाता है.

६६



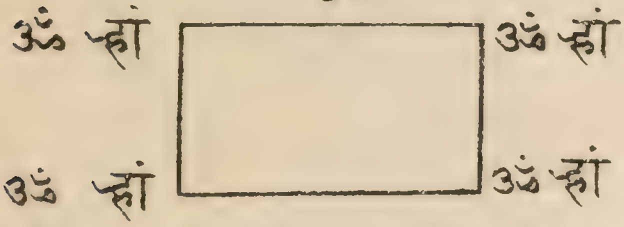
कुमकुम रक्तक गोरोचनसे भोजपत्रमें लिख भुजा कंठमें धारण करै सौभाग्य होता है.

६८



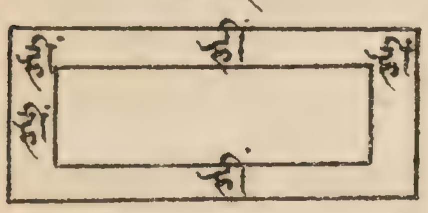
गोरोचनसे जिसका नामलिख शहतमें स्थापन करै सौभाग्य होता है.

७०



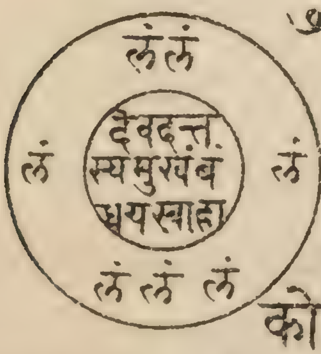
गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख दूधमें स्थापन करै क्रोधित हुआ प्रसन्न होता है इति क्रुद्धप्रसाद.

७२



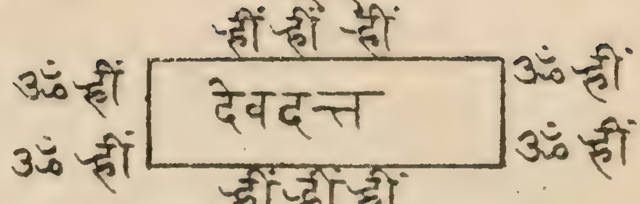
गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नामलिख मधुमें स्थापन करै सौभाग्य होता है.

७४



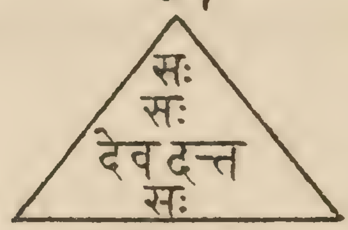
हरिताल हलदीसे साध्यका नाम लिखदोसि कोरोंमें स्थापनकर पूजनकर नीचेको मुखकर स्थापन करै मुख स्तंभन होता है.

६९



तालपत्रमें कंटकसे लिख कर्दममें स्थापन करै तो क्रोधी पुरुष प्रसन्न होता है.

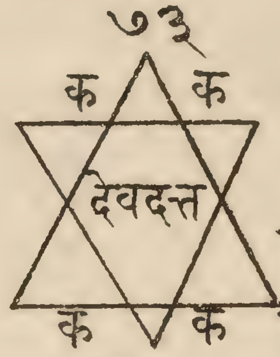
७१



कुमकुम गोरोचन लाखसे जिसका नामलिख बाजीकर शरीरमें धारण करै सौभाग्य होता है

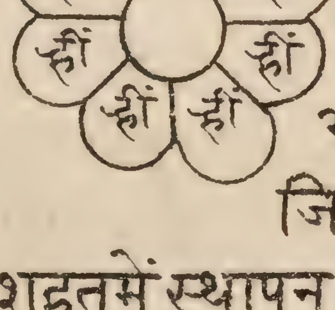
इति सौभाग्य०

७३



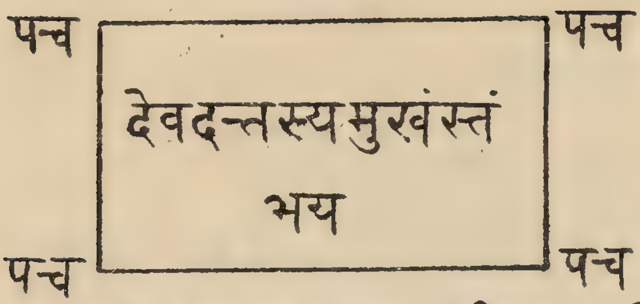
कुमकुम गोरोचनसे जिसका नामलिख मधुमें स्थापन करै तो सौभाग्य हो०

७५



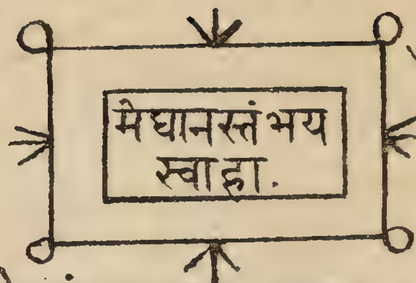
गोरोचन और अनामिकारक्तसे भूर्जपत्रपर जिसका नाम लिख शहतमें स्थापन करै अदाता दाता होता है.

७६



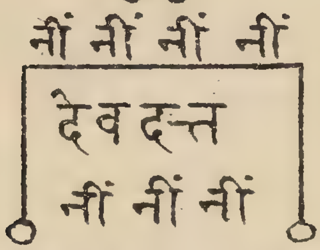
यह लिख ऊषा मध्य ईशानको-एमें स्थापन करै उसका मुखस्तंभ होता है.

७७



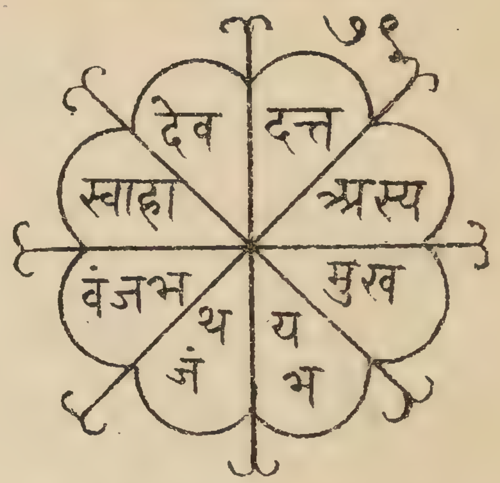
दोईटे संपुट करै उसपर श्मशान अंगारसे लिख स्थापन करै मेघों को स्तंभन करता है.

७८



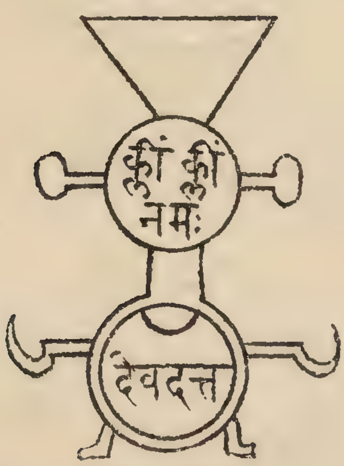
साध्यके पैरोंकी धूरि और हरतालसे दोनोंमें नाम लिख बरतनमें स्थापन कर श्मशानमें गाडदे बंधन होताहै.

७९



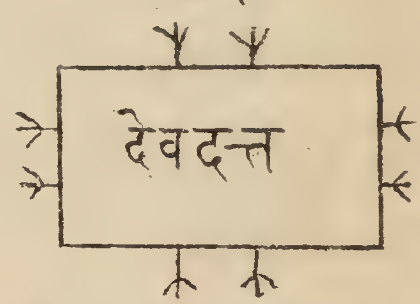
किसी भीतपर जिसका नाम लिखै उसका मुखबंध होता है

८०



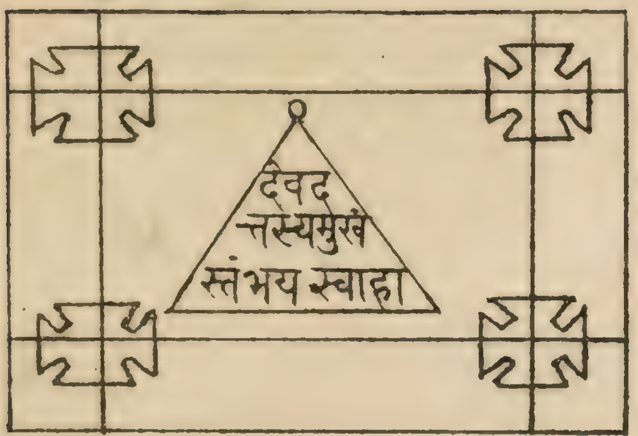
शिलापट्टमें हलदीसे जिसका नाम लिख नीचे मुखकर स्थापन करै उसका मुख बंधन होता है

८१



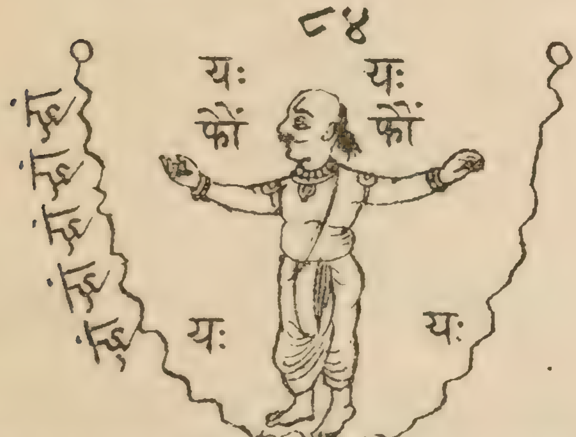
साध्यके चरणकी धूलि हरितालके साथ मिलाय भोजपत्रपर लिख पाटल मध्यमें साध्यके दोनों हाथ भांडसे लिख उसपर सूअकर धर देतो हाथ स्तंभन हो अर्थात् किसीको कुछ नहीं देताहै.

८२



हलदीसे भोजपत्रपर जिसका नामलिखकर इसके नीचे स्थापित करै स्तंभित होता है.

८४



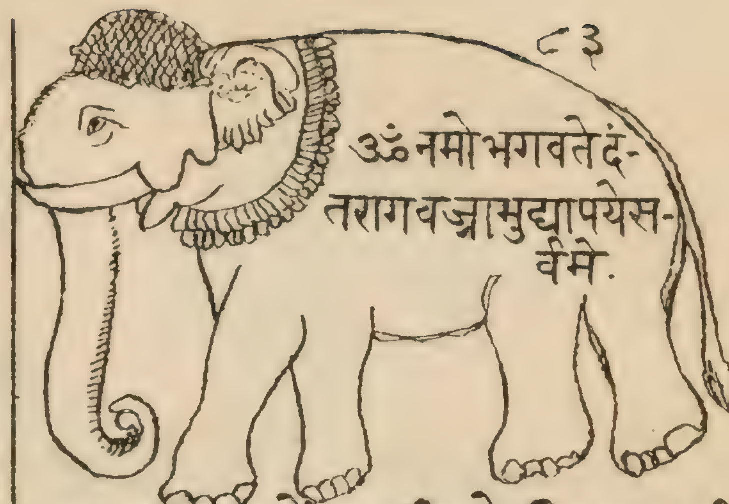
पीतसूत्र पीतद्रव्यसे भोजपत्र परलिख मोमसे लपेटै जलसे पूर्ण घटस्थापन करै अग्निस्तंभन करै इदं अग्निस्तंभनं पूर्णपात्रे पतितम्

८६

	ह्रींसः	ह्रींसः	ह्रींसः	
ह्रींसः	ह्रींसः	ह्रींसः	ह्रींसः	ह्रींसः
	ह्रींसः	ह्रींसः	ह्रींसः	

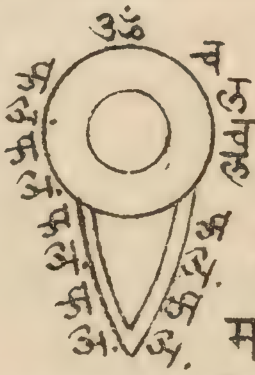
गोरोचनसे कुमकुम और लाखसे भोजपत्रमें लिख तन्तीसरैयामें बंद करै तो दिव्य स्तंभन हो.

८३



ताल पोटमें हाथीको लिख हाथीका दांत उखाड मट्टीका हाथी बनावै इससे हाथी आदि सब स्तंभित होते हैं

८५



पीतद्रव्यसे कर्पटपर लिख मोमसे लपेट पूजै तो जलस्तंभन होता है.

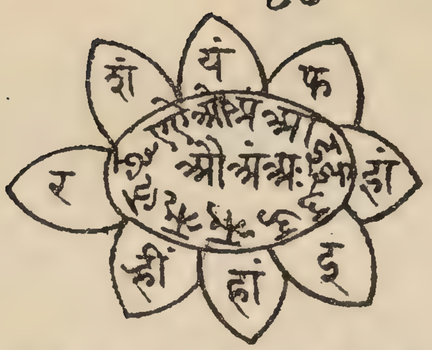
८७

ह्रां	ह्रां	ह्रां	ह्रां	ह्रां
ह्रां	ह्रां	ह्रां	ह्रां	ह्रां
ह्रां	ह्रां	ह्रां	ह्रां	ह्रां
ह्रां	ह्रां	ह्रां	ह्रां	ह्रां



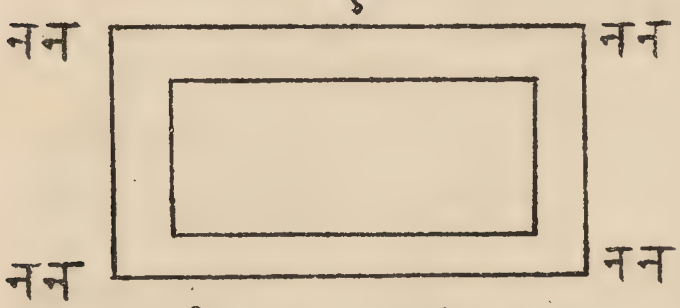
यह पीत द्रव्यसे पटपर लिख मोमसे वेष्टित कर जलमें स्थापित करै उससे जलस्तंभन होता है. इतवारके दिन शिरसकी जड लाय माथेपर तिलक करै जलसे धिसतिलक करै.

८८



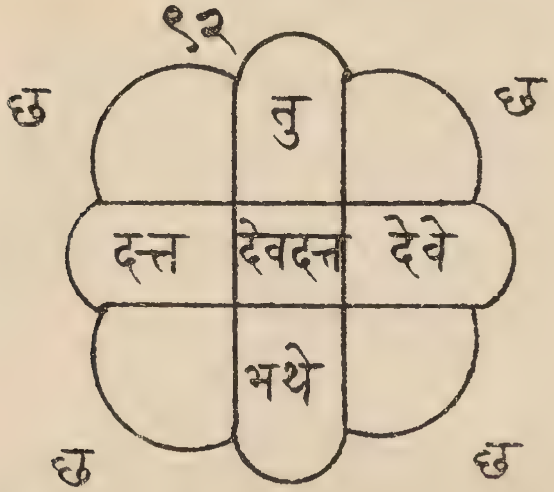
गोरोचन कुमकुमसे टेसूके फूलके रसके सहित भोजपत्र पर लिख दूधके घडेमें रक्खै सब दिव्यस्तंभ होतेहैं.

९०



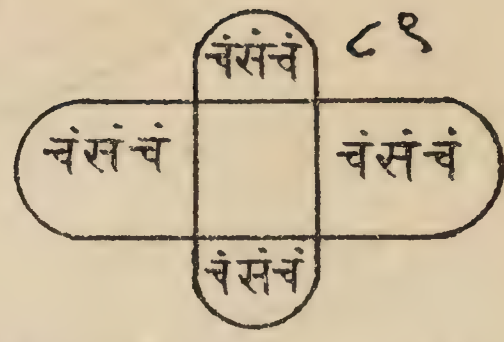
हलदी और हरतालसे भोजपत्र पर लिख निर्जनमें स्थापन करैत्रि भुवन स्तंभनकर सकताहै

९२



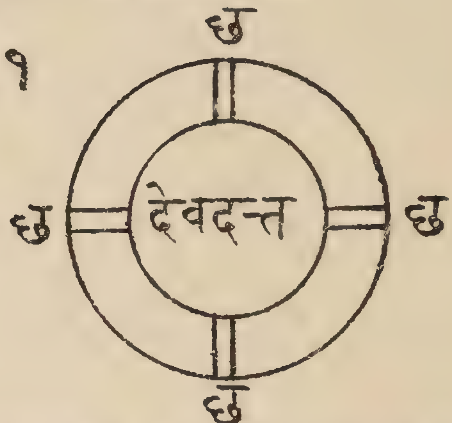
गोरोचनसे जिसका नाम लिख सिकोरेमें स्थापन करै उसका स्तंभन होताहै.

८९



गोरोचनसे भोजपत्रमें लिख निर्जनमें स्थापन करै त्रिभुवन स्तंभन करता है.

९१



गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख शिकोरेमें स्थापनकरै उसका स्तंभन होताहै.

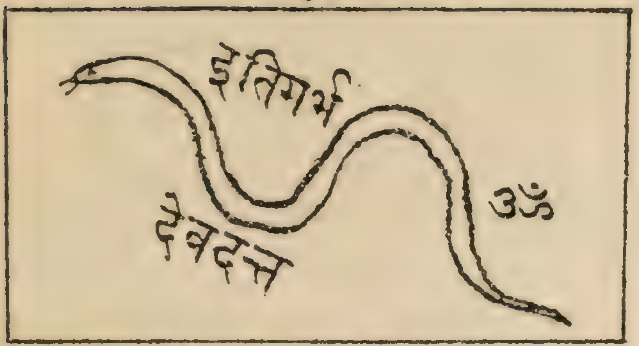
९३



गोरोचनसे जिसका नाम लिखै और कंपावै वह स्तंभित होताहै (कालीकंकाली अमुकंस्तंभयस्वाहा) इसमंत्रसे साध्यका नाम हृदयमें रखकर छुकरवा दर्शनकर जपै शीघ्रस्तंभित होताहै

इति मनुष्यस्तंभनम् ॥

९४



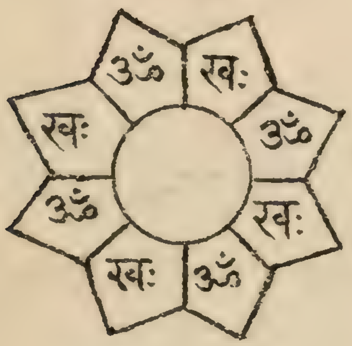
अनामिकाके रक्तसे भोजपत्र पर लिख पृथ्वीमें गाडदे गर्भस्तंभन होगा.

९५



कुमकुम गोरोचनसे अनामिकारक्तसे जिसका नामलिख भुजामें बांधै उसे मोहित करताहै.

९६



लाल द्रव्यसे भोजपत्रपर लिखे मधुमें स्थापन करे दुष्ट भी मोहित हो जाताहै.

९७



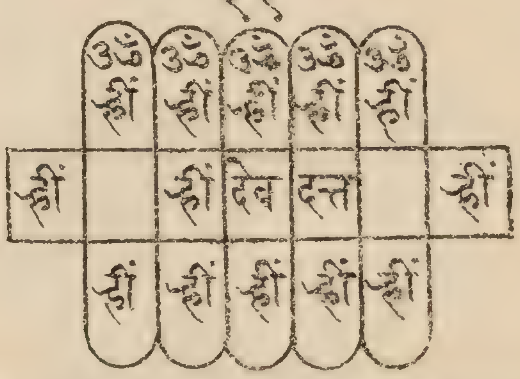
गोरोचनसे जिसका नाम लिख भोजपत्रमें पुष्पादि खण्डसे पूजन कर स्थापन करै उससे दुष्ट मोहित होताहै.

९८



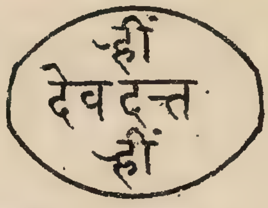
गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका नाम लिखकर भुजामें बांधै उसको मोह होताहै.

९९



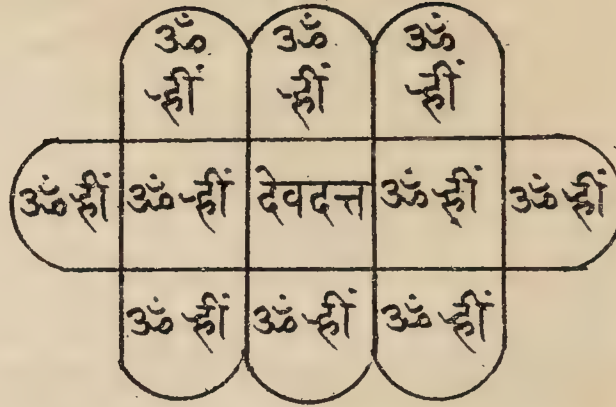
गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका नामलिख भुजाकंठमें धारण करै दुर्भगा सुभगा हो गर्भरक्षा हो.

१००



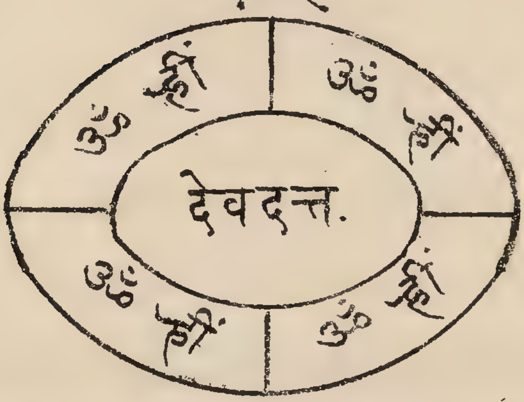
गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नामलिख कनेर वृक्षके नीचे स्थापन करनेसे नष्टपुष्पा अपुष्पा रजोबती होवै है.

१०१



गोरोचन कुमकुम लाखसे भोजपत्रपर जिसका नामलिख पंचामृतमें स्थापन करै वंध्या गर्भिणीहो पुत्रवती हो गर्भरक्षा होय यह सत्य है.

१०२



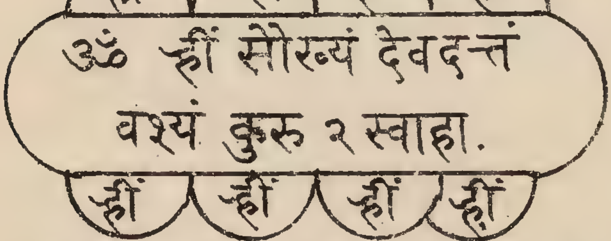
पीले रससे गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका नामलिख भुजामें धारण करै वंध्या पुत्रिणीहो. निश्चय पुत्रहो.

१०३

०८	०१	३४	२९
३०	३३	०४	०५
०२	०७	२८	३५
३२	३१	०९	०३

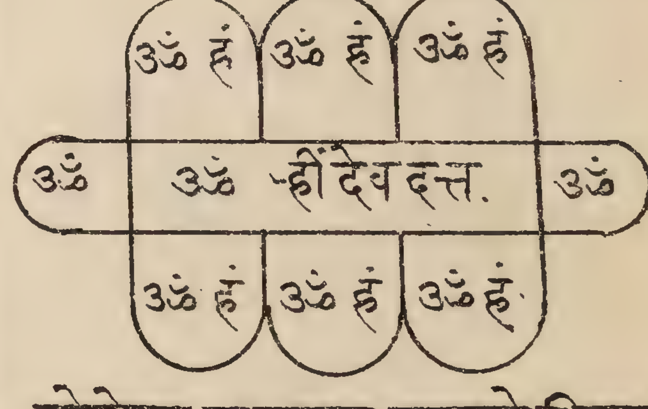
गोरोचनसे भोज पत्रपर लिख बाहु कंठ कमरमें धारण करनेसे वंध्या पुत्रिणी होती है.

१०४



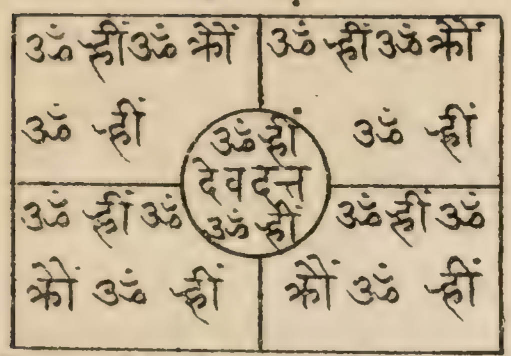
भोजपत्रमें गोरोचनसे जिसका नाम लिख कोषमें धारण करै दुर्भगा सुभगा होती है.

१०५



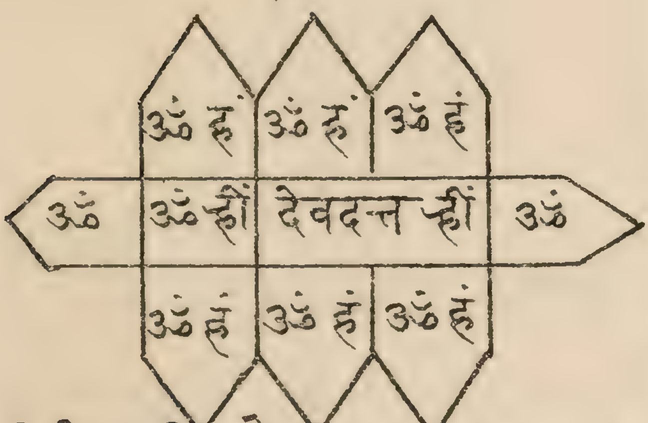
गोरोचन कुमकुम लाखसे जिसका नामलिख पंचामृतमें स्थापन करै तो काकवंध्या प्रसूती गर्भवती होती है.

१०६



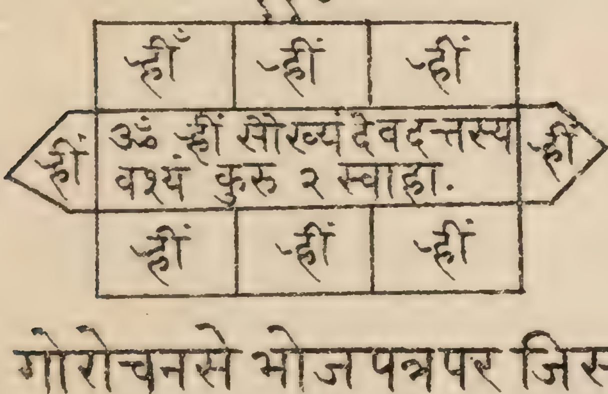
गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसकाना म लिख हाथमें धारणकरै दुर्भगा सुभगाहो काकवंध्या प्रसूती होती है.

१०८



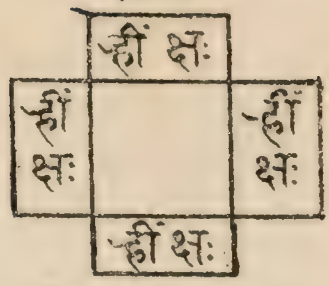
गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख धारणकरै अपुत्रिका पुत्रवाली मृतवत्सा जीववत्सा ऋतुवती गर्भवती सौभाग्यवती होती है.

११०



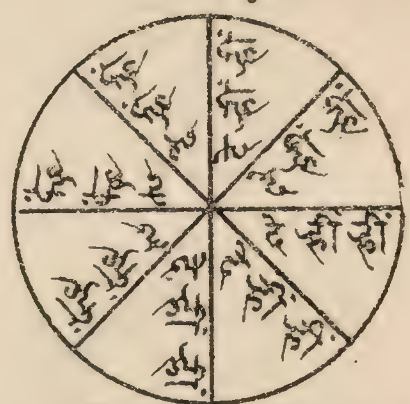
गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिखकर कोखमें धारण करे दुर्भगासुभगा होती है.

१०७



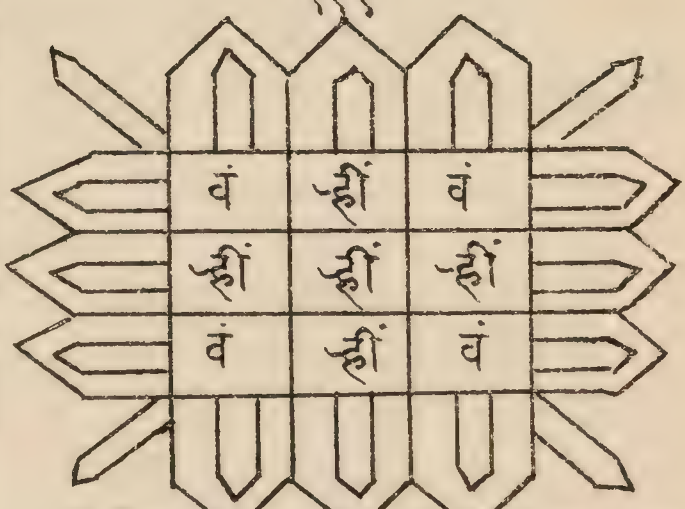
कुमकुमसे भोजपत्रपर लिख स्त्रियोंके हाथमें बांधै तोजीव पुत्रिणीहो.

१०९



गोरोचनसे कुमकुम लाख रंगसे जिसका नाम लिख पंचामृतमें स्थापनकरै मृतवत्सा पुत्रिणी होती है.

१११



गोरोचन कुमकुमसे भोजपत्रपर जिसकानाम लिखकर कंठशिरमें धारण करे मृत अपत्या वंध्या अपुत्रिणीके सब अरिष्ट दूर होते हैं. ज्वरनाश होता है.

११२

०८	०१	२२	१९
१९	२२	००४	०५
०२	०७	१७	१४
२१	२०	०९	०३

यह यंत्र गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख बालकके कंठमें बांधै बालक का रोनाथमजाय.

११४



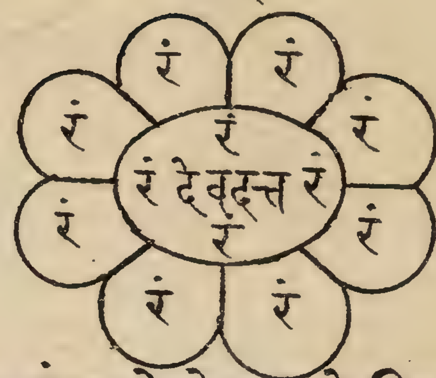
गोरोचन और कुकुमसे भोजपत्र पर लिख धारण करै महारक्षा होतीहै यह गणपति विद्याहै.

११६

ॐ	ह्रं	ॐ
ह्रं	ॐ ह्रं देवदत्त	ह्रं
ॐ	ह्रं	ॐ

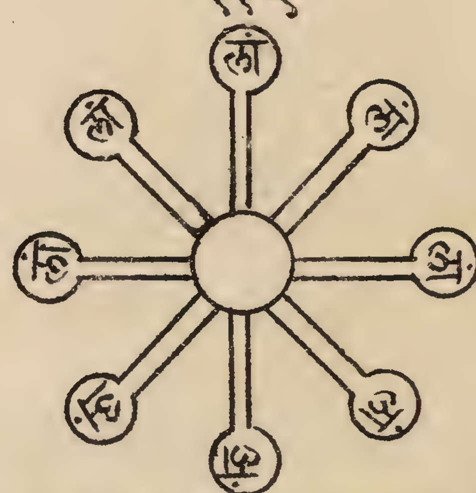
गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख धारण करै सब उपद्रवोंसे रक्षा होती है.

११३



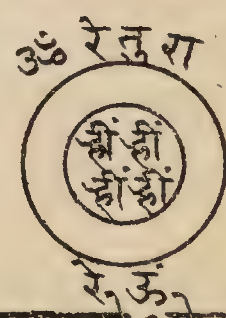
यह यंत्र गोरोचनसे लिखकर धारण करनेसे वैश्वानर सुखी रक्षा बालकोंके सब ग्रह नाशिनी है यह बाल ग्रहोंसे तिरस्कृतहुओंको परम रक्षाहै.

११५



गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख धारण करै तो ज्वर पिशाच डाकिनी कुग्रह अपस्मार आदि शीघ्र नाशहोजातेहैं-इसमें (लां) बीजहै.

११७



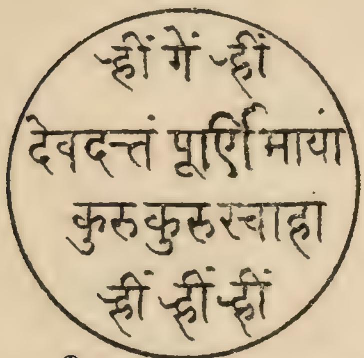
गोरोचनकुमकुमसे भोजपत्रपर लिखबाहुबा कंठमें धारणकरै डाकिनी प्रेतबाधाज्वर नाशहो. अमृतविजया विद्याहै.

११८

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	देवदत्त	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

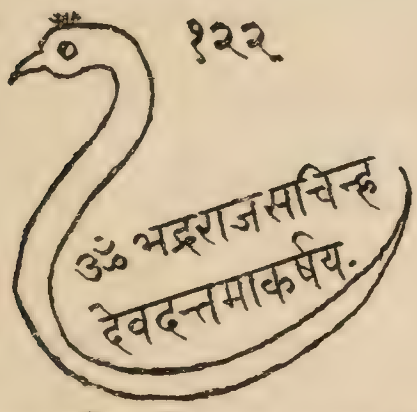
गोरोचनसे भोजपत्रपर जिस का नामलिख धारण करै उसके सबज्वरनाश होते हैं.

१२०



गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख दक्षिण भुजामें धारण करैतो क्षेम और रक्षा हो.

१२२



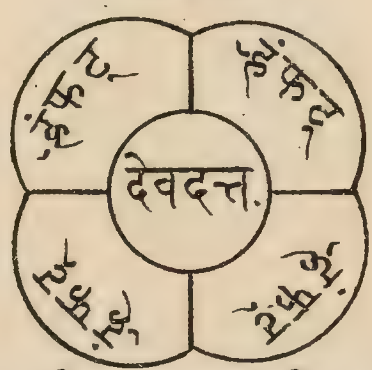
गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नामलिख इस विद्यासे अभिमंत्रितकर (सुखनामापिशाची अमुकं हन २ पच २ शीघ्रंवशमानय-स्वाहा) करसंपुटमें स्थापन कर जपै बंधनसे छूट जायगा.

११९



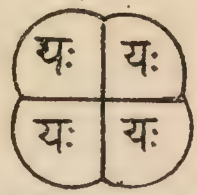
गोरोचनकुमकुमसे भोजपत्रमें लिख भुजामें धारण करै अपमृत्यु दूर हो. मृत्युंजयायनमः यह सिद्धि दायक है.

१२१



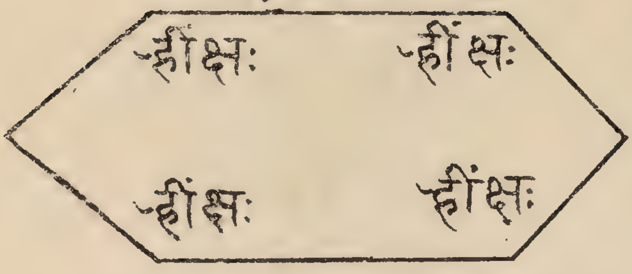
श्मशानके अंगारसे श्मशान के चैलवस्त्रसे लिखकर उसस्थानमें रखदे एक रात्रिमें उच्चाटन होताहै.

१२३



काक और उल्लूके रक्तसे जिस का नाम लिखकर कोएके गलेमें बांध छोडदे तो देवताओंका भी उच्चाटन होजाय यह सत्य है.

१२४



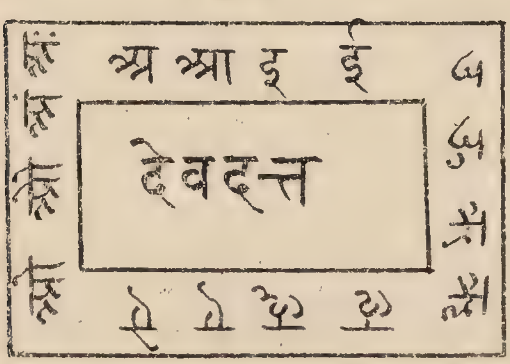
यह गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख ग्रीवा या शिखामें धारणकरै निश्चय बंधनसे मुक्ति हो.

१२६



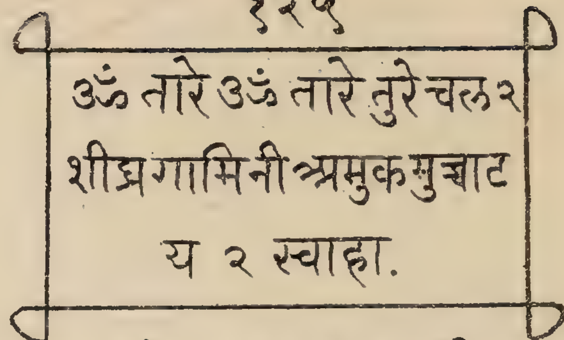
हलदी हरताल से शिलापट्टपर लिख अधोमुख धरदे बंधनसे मुक्त होगा.

१२८



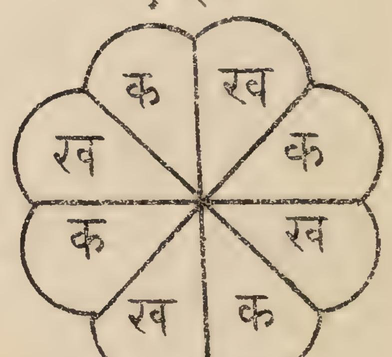
गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख शिखामें बांधनेसे मुक्त बंधन होगा.

१२५



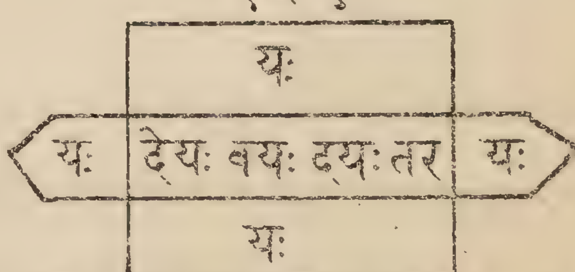
श्मशानके वस्त्र बिष और राई धतूरा लवण निम्बसे साध्यका नाम लिख श्मशानमें गाडनेसे उसका उच्चाटन होताहै. संदेह नहीं. ॐ तारे ॐ तारे ॐ तुरे स्वाहा. यह मंत्रहै.

१२७



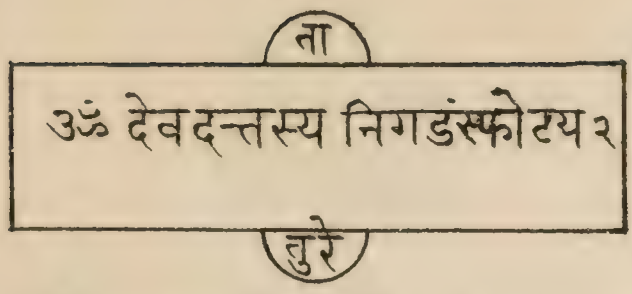
बहडेके पत्रोंके रससे भोजपत्र पर जिसका नाम लिख खर मूत्रमें स्थापनकरै उसका उच्चाटन होताहै.

१२९



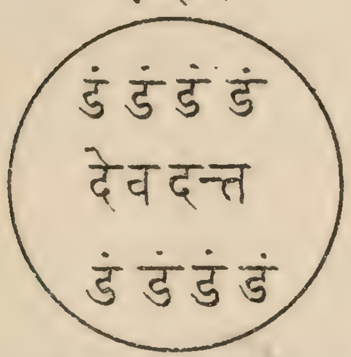
बहडेके पत्रके रससे भोजपत्रसे जिसका नाम लिख खरमूत्रमें डाल तपावे शीघ्र उसका उच्चाटन होताहै.

१३०



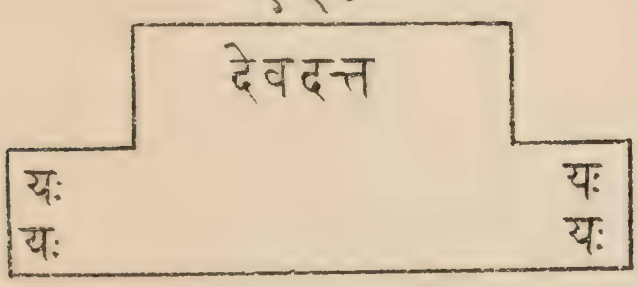
गोरोचन कुमकुमसे भोजपत्रपर लिख शंख संपुटमें स्थापन कर त्रिकाल संपूज्य शिरमें धारण करै निगड भंजन होगा.

१३२



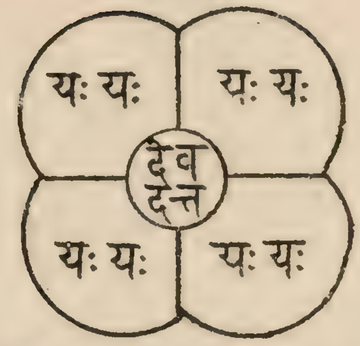
हरतालसे पीपलके पत्रपर लिखनेसे उसका उच्चाटन होताहै.

१३४



रक्तसे ध्वजपीठपर लिखकर काकके गलेमें बांधकर काकको छोडदे उसका उच्चाटन होताहै.

१३१



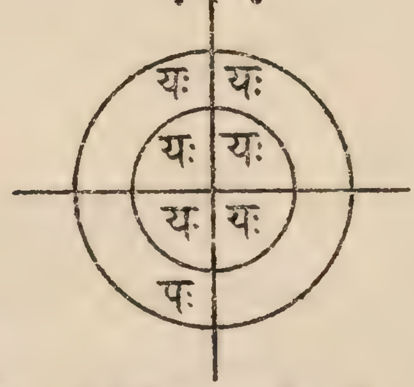
उलूकके रुधिरसे ध्वजवस्त्रमें पक्षलेखन्यास लिखकर गलेमें कागके बांध छोडे उच्चाटन होगा.

१३३



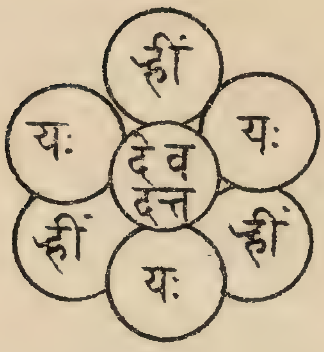
उद्भ्रान्त पत्रमें ध्वज वस्त्रमें कौएके रक्तसे जिसका नाम लिख कौएके गलेमें बांध पश्चिम दिशामें प्रेषण करै उसका उच्चाटन होगा.

१३५



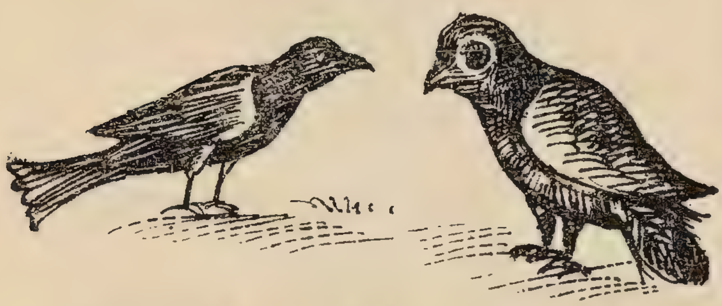
बहडेके पत्तोंके रसमें भोजपत्रसे जिसका नाम लिखकर गधेके मूत्रमें डाल तपावै उसका उच्चाटन होगा.

१३६



भोजपत्रपर काक उलूकके रुधिरसे लाक्षा रससे जिनदोका नाम लिख विषमें स्थापन करै उनका विद्वेषण होगा

१३८



विष और धतूरेके जलसे कौआ और उलूक लिखै इनका जैसा वैर है वैसा हो. ॐ देवदत्तयज्ञदत्तयोस्तु स्वाहा. एक घरमें नित्य जपकर लिखै भोजपत्रपर विद्वेषण होगा.

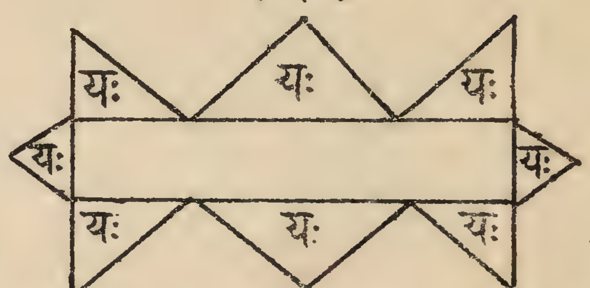
तथा विष और बिडालके रुधिरसे श्मशानके अंगारसे जिनका नाम लिखकाकोलूकीय यादृशंवैरंतादृशंवैरं देवदत्तयज्ञदत्तयोर्भव तु स्वाहा काक उलूक भोजपत्रपर लिखै विद्वेषण होगा.

१३७



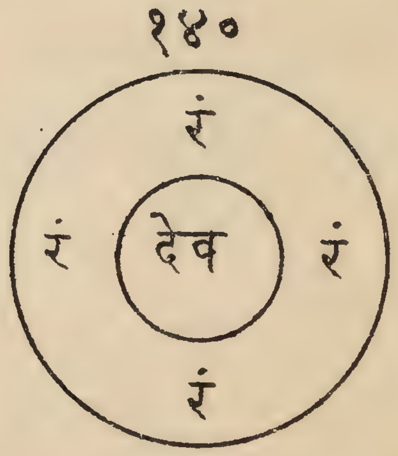
आकके पत्तेके रसमें भोजपत्र पर जिसका नाम लिखकर मधुमें स्थापन करै उसका उच्चाटन होगा.

१३९



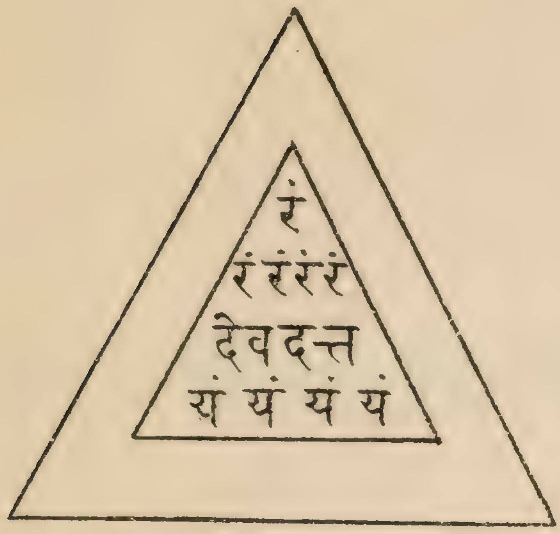
बहडेके रसवाखर सूत्रसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिखै उसका उच्चाटन होगा.

१४०



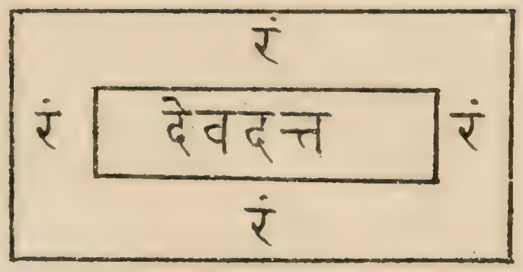
चीतेके फूलके रससे भोजपत्र पर जिसका नाम लिख आककी नलिकामें स्थापन करै उसेज्वरहो.

१४१



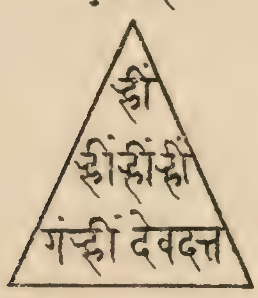
कपिलाके दूधसे साध्यका नाम लिखकर कहीं गुप्त स्थानमें रक्खै तो ज्वरहो.

१४२



चित्रक पुष्पके रससे भोजपत्र पर लिख आककी नलिकामें रख- नेसे ज्वर तत्काल होताहै.

१४३



नीमके रससे यंत्रपर लिख गाडै तो शत्रुका गात्र संकोच नहो

१४४



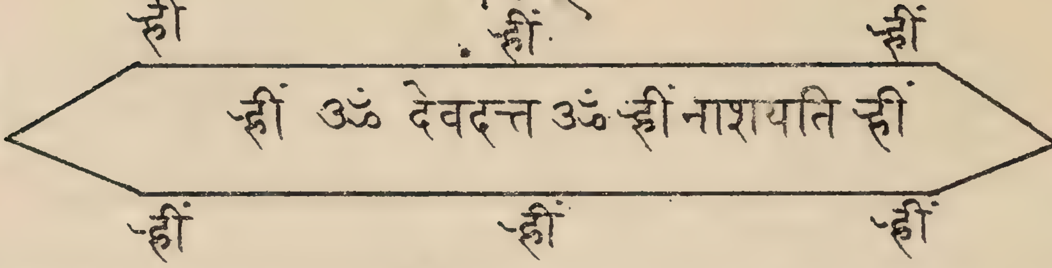
मृतपिधान कर्पटमें लिख रक्तसे लिख वायव्य दिशामें डालनेसे वैरी भ्रमता है. अर्थात् मरे पुरुषके वस्त्रपर लिखै.

१४५

	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं सां ह्रीं ह्रीं	ह्रीं
सां		ॐ	ह्रीं दें ॐ ह्रीं व ॐ ह्रीं द ॐ ह्रीं त ॐ ह्रीं	सां
	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं सां ह्रीं ह्रीं	ह्रीं

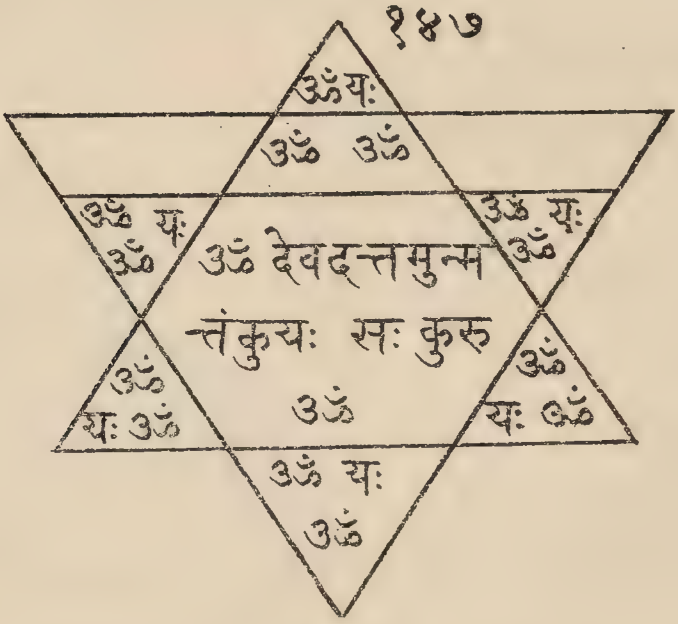
सहेंजनाविष और रुधिर राईको एकत्र कर जिसका नाम लिख स- हें जनेकी नलिकामें डालकर तपावै वह ज्वरसे ग्रहीत होताहै. अथवा उपरोक्त वस्तुओंमें राईभी मिलावै यह अनुभव कियाहै.

१४६



गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख पात्रमें रख दूधसे प्लावित कर जलमें डालदे शत्रुकी शांति हो.

१४७



धतूरेके रस और काकके रुधिरसे उद्भ्रान्तपत्रपर लिख नीमकी शाखामें वायव्य दिशामें धारण करै तो उन्मत्त हो यह अनुभव किया है सत्य है.

१४८

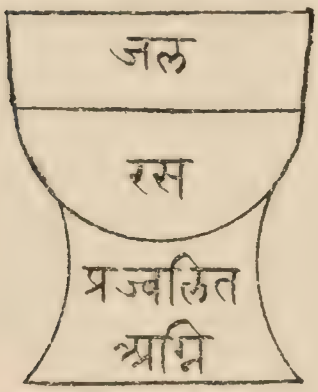


भोजपत्रसे इष्टवा हरिद्रा हरितालसे जिसका नाम लिख प्रच्छन्न स्थापन करै वह नष्ट हो निकालनेसे स्वस्थ हो.

मंत्र और यंत्र दोनोंहीके करने-से शीघ्र सिद्धि होती है. निजनिज विधिके मंत्रविधिसे समझ लेना.

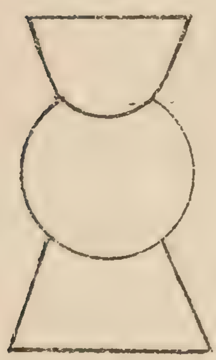
१४९

पातालयंत्र

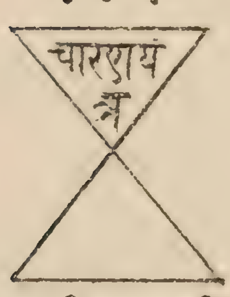


दोलायंत्र.

१५२



१५५



मट्टीके पात्रमें

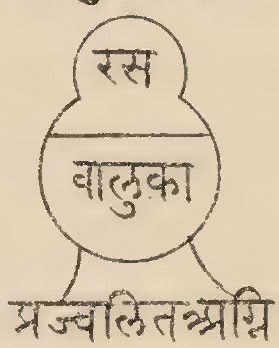
१५०

स्वस्वाहारहृभ्याम्

साध्यके रक्तसे शत्रुका नाम भोज पत्रपर लिख सिकोरेमें डाल ज्वलित अग्निमें स्थापन करै उसीसमय शत्रु नष्ट हो.

१५१

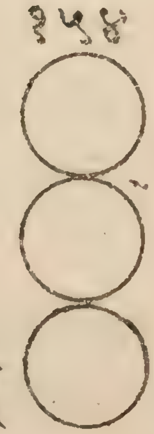
वालुकायंत्र.



कच्छपयंत्र १५३



१५४



भूधरयंत्र

इतिकामरत्नपरिशिष्टम्

सूचीपत्र.

वैद्यक ग्रंथाः ।

नाम	कि॰रु॰आ॰	ट॰म॰रु॰आ॰
हारीतसंहिता भाषाटीका संहित	३—०	०—८
अष्टांगहृदय (वाग्भट्ट) भाषाटीका अत्युत्तम वैद्यकग्रंथ- भिषग्वरोंके देखने योग्य	८—०	०—१२
रसरत्नाकर भाषाटीका समेतं	५—०	०—१०
बृहन्निघंटु रत्नाकर भाषाटीका प्रथम भाग	३—०	०—६
बृहन्निघंटु रत्नाकर भाषाटीका द्वितीय भाग	३—०	०—६
बृहन्निघंटु रत्नाकर भाषाटीका तृतीय भाग	३—८	०—८
बृहन्निघंटु रत्नाकर भाषाटीका चतुर्थ भाग	२—८	०—५
बृ॰रत्ना॰भा॰टी॰५वाँ भाग ६रु॰ छठवाँ भाग	५—०	०—१०
बृहन्निघंटु रत्नाकर-सप्तम अष्टम भाग अर्थात् शालग्राम निघंटु भूषण (अनेकदेशदेशांतरीय संस्कृत, हिंदी, बंगला, महाराष्ट्री, गौर्जरी, द्राविडी, तैलंगी, औत्कली, इंग्लिश, लैटिन, फारसी, अरबी भाषाओंमें सर्व औषधोंके नाम और गुणोंका वर्णन औषधियोंके चित्रोंसहित	८—०	१—४
रसराज सुंदर भाषाटीकासह	३—४	०—८
पथ्यापथ्य भाषाटीका	०—१२	०—१॥
शार्ङ्गधर निदानसह भाषाटीका पं॰ दत्तराम चौबे मथुरानिवासीका बनाया.	३—०	०—६
चिकित्साखंड भाषाटीका प्रथम भाग	४—०	०—८
चिकित्साक्रम कल्पवल्ली संस्कृत काशिनाथकृत भिषग्वरोंके देखने योग्य	२—८	०—८
माधव निदान उत्तम भाषाटीका ग्लेज	२—०	०—४
रफ	१—८	०—३
अंजन निदान भाषाटीका अन्वय सहित	०—८	०—१
हंसराज निदान भाषाटीका	१—०	०—२

नाम	कि॰रु॰ आ॰	ट॰म॰रु॰आ॰
चर्याचंद्रोदय भाषाटीका (व्यंजनबनानेका)	१—८	०—२
योगतरंगिणी (बहुतही उत्तम)	२—०	०—४
राजवल्लभ निघंटु भाषाटीका	१—८	०—२
वैद्यकपरिभाषाप्रदीप भा॰टी॰ (वैद्योपयोगी) औषधियोंकी योजनामें तौल, मान, औरबदलातथा वर्गचूर्ण आदिकोंकी योजनाकावर्णन	०—१२	०—१॥
वैद्यरत्न भाषाटीका (सर्वरोगोंकीचिकित्सा-उत्तम प्रकारसे वर्णन कियाहै.	०—१४	०—२
वैद्यवल्लभ भाषाटीका (चिकित्साउत्तम)	०—६	०—०॥·
चरकसंहिता भाषाटीका समेत	१०—०	माफ·
वीरसिंहावलोकन ज्योतिषशास्त्रादि कर्मविपाक चिकित्सावर्णन	१—१२	०—४
योगचिंतामणि भाषाटीका दत्तराम चौबे कृत	१—४	०—४
तथा रफ कागजकी	१—०	०—२
लोलिंबराजवैद्यजीवनसंस्कृतटीकाऔरभा॰टी॰	१—०	०—२
नाडीदर्पण (नाडी देखनेमें अत्यंत उत्कृष्ट)	०—६	०—१
अनुपानदर्पण भाषाटीका सहित	०—१०	०—१
बालबोध पाकावली	०—२	०—०॥·
कूटमुद्गराख्य सटीक	०—३	०—०॥·
कालज्ञान भाषाटीका	०—३	०—०॥·
वैद्यरहस्य भाषाटीका	२—०	०—४
रसमंजरी भाषाटीका (सब प्रकारके रस बनाने और धातू फूकनेकी क्रिया)	१—०	०—२
शरीर पुष्टि विधान भाषा (शरीरपुष्टकरनेकीरीति)	०—६	०—०॥·
पाकप्रदीप बाजीकरण भा॰टी॰	०—८	०—१
आयुर्वेद सुषेण भा॰टी॰	०—१४	०—२
कूट मुद्गर भा॰टी॰	०—३	०—०॥·
वङ्गसेन (कलकत्ता)	५—०	०—१२

	किं·रु·आ·	ट·म·रु·आ·
सुश्रुतसंहिता सूत्रस्थान-निदानशारीरस्थान-केवल शारीरस्थान-चिकित्सितस्थान-श्रौर कल्पस्थान भा॰ टी॰ सान्वय ———	११—४	१—१०
कुमार तंत्र रावणकृत भाषाटीका ———	०—८	०—१
बालतंत्र भाषाटीका (इसमें बालकों कोडाकिनी शाकिनी छुडाने के यंत्र मंत्र तथा पोषणचिकित्सा वंध्यायत्न श्रादि विषय वर्णित हैं यह पुस्तक सभी गृहस्थोंको रखना योग्य है ———	१—०	०—२
शालग्रामौषधशब्दसागर श्रर्थात् श्रायुर्वेदीय श्रौषधिकोष ———	२—०	०—४
बोपदेव शतक वैद्यक भाषाटीका समेत ———	०—५	०—॥
श्रर्कप्रकाश भा॰टी॰ रावणकृत (इसमें सब श्रौषधियोंके गुणव श्रर्क निकालनेकी क्रियाहै)-	१—०	०—२
ज्ञान भैषज्यमञ्जरी भा॰ टी॰ वैद्यक ———	०—४	०—॥
मदनपाल निघंटु भाषाटीका ———	२—८	०—४
विषचिकित्सादर्पण ———	०—४	०—॥

वैद्यकभाषा.

चिकित्सा धातुसार भाषा ———	०—६	०—१
रसराज महोदधि भाषा प्रथमभाग वैद्यक यूनानी हिकमत श्रौर यूनानी दवा श्रौर फकीरोंकी जडी बूटी श्रौर सन्तोंकी पुस्तकोंका संग्रह है ———	०—१२	०—२
रसराज महोदधि दूसरा भाग (उपरोक्त सर्वालंकारों समेत छपकर तैयार है. ———	०—१२	०—२
श्रमृतसागर कोशसहित हिंदुस्थानी भाषामें सर्वदेशोपकारक ———	२—४	०—८
डाक्टरी चिकित्सासार (श्रं·दे·वै·) ———	०—१०	०—१
शिवनाथसागर (वैद्यक) ———	४—०	०—८
व्यंजनप्रकाश (नैमित्तिकभोजनके समस्तप-		

नाम	किं·रु·आ·	ट·म·रु·आ·
-दार्थ अचारादि बनानेकी सुगमता और गुण—	०—८	०—१
शालिहोत्र नकुल कृत (घोडोंके शुभाशुभल-क्षण और उनके रोगोंकी औषधि)——	०—८	०—२
पशुचिकित्सा छन्दबन्द अर्थात्-वृषकल्पद्रुम [इसमें बैल, गऊ, भैसोंके] शुभाशुभलक्षण यंत्र चिकित्सापहिचान भली भांति लिखीहै.——	१—०	०—२

अनुष्ठानमंत्रशास्त्रस्तोत्रपाठग्रंथाः

नाम	किं·रु·आ·	ट·म·रु·आ·
शाक्त प्रमोद दशमहाविद्या और पांचोंदेवतों का पंचांग द्वादशांग सहित इसमें १८४ विषय-हैं शाक्त लोगोंको अवश्य लेना चाहिये——	५—०	०—६
नित्यतंत्र भाषाटीका (नैमित्तिककर्मोंमें उपयो०)	०—१२	०—१
मंत्रमहोदधि सटीक सटिप्पण मातृका कोष तथा अनुष्ठानिक यंत्रोंसमेत ——	३—४	०—६
महानिर्वाणतंत्रम् भाषाटीकासमेतम् चौसठ तंत्रोंमें सर्वतंत्रोत्तमोत्तम है.——	२—४	०—४
माहेश्वरीतंत्र भाषाटीका मारण मोहन वशी करण उच्चाटनादि विधि वर्णित है——	०—४	०—॥
मातृकाविलास ——	२—८	०—८
इंद्रजाल (संस्कृत और भाषामंत्रतंत्र मारणमो-हनउच्चाटन वशीकरण प्रयोग और वैद्यक तथा समस्त कार्योंके सिद्ध करने वाले यंत्रों समेत)-	०—१२	०—२
दुर्गासप्तशती शान्तनवी टीकासहित——	१—४	०—४
दुर्गासप्तशती भट्टनागोजी कृतटीका सहित—	०—१२	०—२
दुर्गासप्तशती भा०टी० शान्तनवीटीकाके अ-नुकूल ——	१—०	०—२
तथारफ कागज ——	०—१२	०—२
दुर्गासप्तशती मोटे अक्षर टाईप खुली सांची	१—०	०—२
दुर्गासप्तशती ७ पंक्तिवाली बडा अक्षर खुला	०—१२	०—२

नाम	कि·रु·आ·	ट·म·रु·आ·
दुर्गासप्तशती ७ पंक्तिकी जिल्दबंधी	१—०	०—२
दुर्गासप्तशती ९ पंक्तिवाली बंधेली रेशमी	०—१२	०—२
टाईप खुला पत्रा	०—८	०—१
श्रीतत्त्वनिधि, इसमें संपूर्ण देवताओंके ध्यान हैं.	२—८	०—४
दुर्गासप्तशती ३२ पेजी गुटका	०—१०	०—२
तथा खुला पत्रा	०—७	०—१
दुर्गासप्तशती छोटा गुटका बारीख	०—६	०—१
बृहत्स्तोत्ररत्नाकर स्तोत्रसंख्या १४४	१—०	०—२
छोटा अक्षर गुटका	०—१०	०—१
स्तोत्ररत्नाकर दूसरा तैयार है	१—०	०—२
प्रत्यङ्गिरा पंचांग.	०—८	०—१
वेंकटेश सहस्रनाम सटीक	०—८	०—१
वेंकटेश सहस्रनाम मोटा	०—४	०—ण।·
राधाकृष्ण भूषण	०—३	०—ण।·
कालिका सहस्र नाम	०—४	०—ण।·
गायत्री पुरश्चरण	०—२	०—ण।·
गायत्री पंचांग	०—१२	०—२
लक्ष्मी नारायण हृदय	०—४	०—ण।·
लक्ष्मीस्तोत्र	०—२	०—ण।·
आदित्य हृदय बडा	०—३	०—ण।·
आदित्य हृदय छोटा अक्षर	०—१॥	०—ण।·

खेमराज श्रीकृष्णदास,

श्री· वेङ्कटेश्वर यंत्रालय (छापखाना)
खेतवाडी ब्याकरोड - मुम्बई.